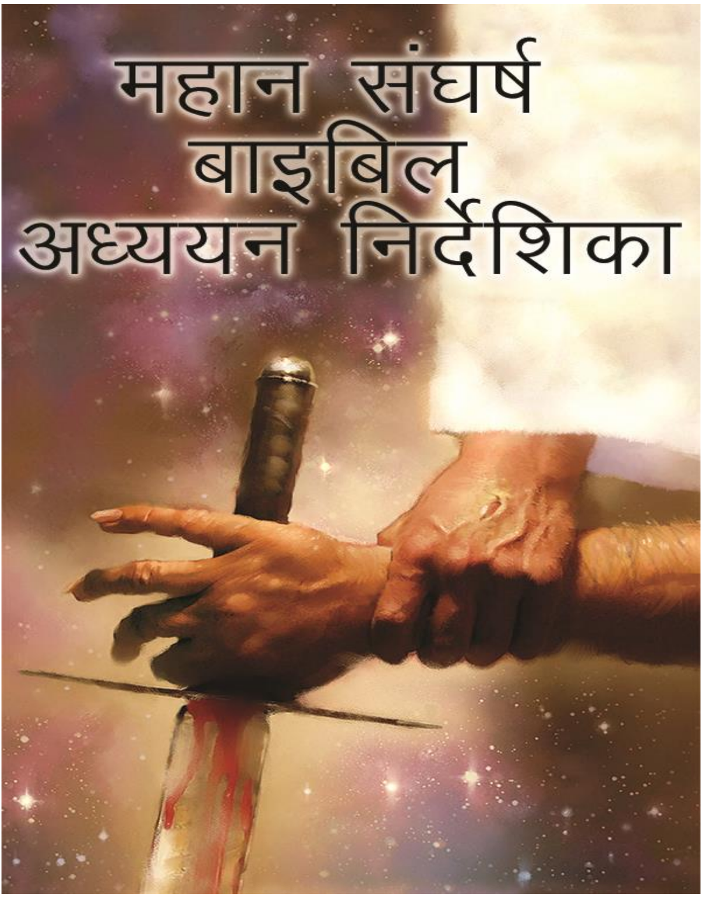

महान संघर्ष

बाइबिल अध्यन निर्देशिका

कॉपीराइट (ब) 2003 द्वारा

मर्लिन बीरमैन एवं रिवलेशन प्रकाशन।

पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित।

वितरण की शर्तें

हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि आप इसे दूसरों के साथ कॉपी और साझा नहीं करते हैंए तो आपको प्रभु के प्रति जवाबदेह ठहराया जाएगाए इसलिए हम आपको साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और आपको निम्न शर्तों के तहत इतनी रॉयल्टी मुक्त करने की अनुमति देते हैं। यह अध्ययन गाइड एक पीडीएफ प्रारूप में संग्रहीत किया जा सकता है या फोटो कॉपी और साझा करने के लिए मुद्रित किया जा सकता है। इसे किसी भी तरह से बेचा या बदला नहीं जा सकता है और यह कॉपीराइट

नोटिस प्रत्येक क्रमिक प्रतिलिपि में रहना चाहिए।

www.Bible-Lessons.org
PublisherForGod@gmail.com

प्रश्न और संकलन मर्लिन बीरमन द्वारा
दृष्टांत - कॉपीराइट (ब) लार्स जस्टिनन
अभिप्रेरित अध्याय कमेंट्री महान संघर्ष ई.जी. व्हाइट से है

अनुवाद बाइबिल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रकाशित बाइबिल से किया गया हैं । सभी अधिकार सुरक्षित।

इस गाइड की टिका को पुस्तक द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी से और बेहतर बनाया गया है। इससे भी बड़ी समझ हासिल करने के लिए हम आपको पूरी किताब प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

<u>अनुक्रमणिका</u>

1. **पाप की उत्पति**
2. **मनुष्य और शैतान के बिच शत्रुता**
3. **दुष्टआत्मा के कार्य**
4. **शैतान का फंदा**
5. **प्रथम महा छल**
6. **क्या मृतक हमसे बात कर सकते हैं?**
7. **भावी संघर्ष**
8. **पवित्रशास्त्र हमारी सुरक्षा की नाई**
9. **आखिरी चेतावनी**
10. **संकट का समय**
11. **परमेश्वर के लोगों का उद्धार**
12. **पृथवी का उजड़ जाना/निर्जन होना**
13. **विवाद (संघर्ष का अंत)**

परिशिष्ट

विवेक की स्वतंत्रता को धमकाया गया

परिचय

यह पुस्तक आपको यह बताने के लिए प्रकाशित नहीं हुई है कि पाप और उसकी तबाही मौजूद है, यह तथ्य बहुत स्पष्ट है। अच्छे और बुरे जीवन और मौत के बीच इस अपरिवर्तनीय चुनाव-विवाद में एक मजबूर प्रतिभागी के रूप में क्या आप कभी पूछते हैं?

यह महान युद्ध कैसे शुरू हुआ ?
कौन से सिद्धांत शामिल हैं ?
यह कब तक चलता रहेगा ?
इसका अंत कैसे होगा ?
मुझे कैसे धोखा नहीं दिया जा सकता है ?
भलाई के लिए जीत में मेरे दिल की लड़ाई कैसे तय हो सकती है ?
क्या हम मृतकों के साथ संवाद कर सकते हैं ?
मेरे अस्तित्व का उद्देश्य क्या है ?
मुझे कैसे पता चलेगा कि अंत निकट है ?
क्या वास्तव में दर्द पीड़ा अन्याय और मृत्यु से मुक्त भविष्य की आशा है ?

हिम्मत रखें! परमेश्वर जिसने आपके लिए एक बेहतर अस्तित्व और सत्य की इच्छा की लालसा पैदा की है, उसने आपसे इस जीवनदायी ज्ञान को वापस नहीं लिया है। आपको द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी बाइबल स्टडी गाइड का उपयोग करके बाइबल के माध्यम से एक अविश्वसनीय यात्रा पर आमंत्रित किया जाता है। जैसा कि आप उपरोक्त सवालों के जवाब पाते हैं और कई और अधिक आप अंतिम दिन की महत्वपूर्ण घटनाओं की समझ-बूझ हासिल करेंगे जो आपको उन निर्णयों को लेने के लिए तैयार करेंगे जो आपके शाश्वत भाग्य का निर्धारण करेंगे।

पाठ 1
पाप की उत्पति

(1) पाप के लिए परमेश्वर जिम्मेवार क्यों नही हैं ?

जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। (याकूब 1:13)

पाप के आरंभ को समझाना असंभव ही केवल नहीं है पर उसके अस्तित्व के लिए उचित कारण भी नहीं बताया जा सकता, फिर भी पाप का आंरंभ और अंत होने के बारे में इतना तो स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि परमेश्वर ने दुष्ट के संग न्याय और उदारता के साथ व्यवहार किया था। धर्मशास्त्र में इस बात की शिक्षा स्पष्ट रूप से दी गई है कि परमेश्वर किसी भांति पाप के प्रवेश होने का उत्तरदायी नहीं है, कि अनुग्रह ईश्वर की इच्छा से वापस

नहीं ली गई , कि ईश्वरीय शासन में त्रुटि होने के कारण उपद्रव नहीं हुआ

(2) बाइबिल के अनुसार पाप की परिभाषा क्या हैं ?

जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; ओर पाप तो व्यवस्था का विरोध है। (1 यूहन्ना 3:4 KJV)

पाप आप ही घुमता है इसकी उपस्थिति का कारण कोई नहीं बता सकता यह बात रहस्य पूर्ण है। उसे कोई नहीं समझ सकता। उसकी उपेक्षा करना उसकी रक्षा करना है। यदि उसके अस्तित्व का कोई कारण बताने की कोशिश की जाए तो पाप को कोई पाप नहीं कहेगा। पाप की एक ही परिभाषा है जो परमेश्वर के बचन में दी हुई है।

(3) परमेश्वर का शासन का कौन सी चार मौलिक सिद्धांत चित्रण करती हैं ?

तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है; करूणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती है। (भजन संहिता 89:14)

प्रेम की व्यवस्था के राज्य की नींव है इसीलिए धार्मिकता के बड़े सिद्धान्तों के अनुकूल चलने पर ही सश्ष्टि के सब प्राणियों को सुख प्राप्त हो सकता है। परमेश्वर यह चाहता है कि उसके सश्जे हुए सभी जीवन उसकी सेवा प्रेम से करें उसकी सच्चे अर्थ में उपासना करने के लिए उसका चरित्र के गुणों को समझना चाहिए। विवश होकर भक्ति दिखाने से आनंद प्राप्त नहीं होता। इसीलिए उसने सबों को स्वतंन्त्रता प्रदान की है कि वे उसकी अपनी इच्छा से हर्षचित उपासना करें।

(4) किसने परमेश्वर का नियम को उल्लंघन किया एवं पाप का लेखक बन गया ?

हे भोर के चमकने वाले तारे तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काट कर भूमि पर गिराया गया है? (यशायाह 14:12)

यह वही था जिस ईश्वर मसीह यीशु के बाद प्रतिष्ठित स्थान देकर बहुत आदर मान करता था। स्वर्ग के निवासियों में इसी की अधिक महिमा और शक्ति थी। इसी ने सब से पहले पाप किया।

(5) किस अवस्था में परमेश्वर ने लुसिफर को रचना किया ?

जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चालचलन में निर्दोष रहा। (यहेजकेल 28:15)

पतन से पहले लूसीफर छानेहारा, पवित्र और निष्पाप था।

(6) किस भौतिक गुण के कारण लूसिफर ने निवास करना चुनाए जो अंततः उसे आत्म-बहिष्कार की पापपूर्ण इच्छा के लिए लाया ?

सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और वैभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी। मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं के साम्हने तुझे रखा कि वे तुझ को देखें। (यहेजकेल 28:17)

लूसिफर ईश्वर का प्रेमपात्र बना रहता, दूतगण उसे प्रेम और आदर करते तथा वह अपनी शक्ति दूसरों को अशिष देने और ईश्वर की महिमा के लिए प्रयोग करता, पर नबी उसके विषय में कहता है, ''सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था और विभव के कारण तेरी बुद्धि गिड़ गई थी।'' (यहेजकेल २८ः१७) लूसिफर के मन में अपने को ऊँचा करने की इच्छा धीरे-धीरे उत्पन्न हुई। ''तू जो अपना मन परमेश्वर का सा दिखाता है।'' 'तू अपने मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढुँगा, मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढुंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।'' (यहेजकेल २८ः६, यशायाह १४ः१६, १४) प्रेम और भक्ति के आचरण से अपने परमेश्वर को ऊंचा उठाना सशष्टि किए हुए प्राणियों का काम था पर लूसिफर की इच्छा और ही कुछ थी। वह चाहता था कि वे उसकी सेवा करें और उसे ऊंचा उठावें। अनन्त पिता ने अपने पुत्र को ऊंचा स्थान देकर प्रतिष्ठित किया था। ख्रीष्ट को जो प्रभुत्व का अधिकार दिया गया था उसे, दूतों का युवराज चाहता था।

(7) परमेश्वर के कानून के खिलाफ पाप-विद्रोह का परिणाम क्या है ?

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥ (रोमियो 6:23)

स्वर्ग के सभी प्राणी सशष्टिकर्त्ता की महिमा और

प्रशंसा करने में आनन्द प्राप्त करते थे। और जब कि सब ईश्वर का आदरमान करते थे सभी के मन में शन्ति और प्रसन्नता थी। परन्तु फूट को एक स्वर ने स्वर्ग में जो मेल था उसे नष्ट कर दिया। अपनी सेवा चाहना और अपने को ऊंचा उठाने की कोशिश करने की नीति सशष्टिकर्त्ता की योजना के विरूद्ध थी। इस आचरण ने जिनके मन में ईश्वर की महिमा का राग गूंजता था उन्हें भविष्य का भय जगा दिया। स्वर्गीय सभासदगण ने लूसिफर को बहुत समझाया बुझाया। परमेश्वर के पुत्र ने सशष्टिकर्त्ता के महत्व, भलाई और न्याय और उसकी व्यवस्था के पवित्र अपरिवर्तनशील रूप का वर्णन किया। परमेश्वरने स्वयं स्वर्ग की व्यवस्था बनाई थी पर उसे त्याग देने पर लूसिफर अपने सशष्टिकर्त्ता का अपमान कर अपने ऊपर संकट ला रहा था। पर प्रेम और करूणा से दी गई चेतावनी ने केवल विरोद्ध की भावना को जागश्त किया। लूसिफर ने सशष्टि के विरूद्ध ईर्ष्या को बढ़ने दिया और अपने बिचार को और भी कठोर कर दिया।

(8) लूसिफर के आत्म-स्वाभिमान ने उसे किस अभिलाषा के लिए प्रेरित किया ?

तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर बिराजूंगा; मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।

(यशायाह 14:13-14)

उसकी आत्म-प्रशंसा के घमंड ने बड़े होने की इच्छा को पनपने दिया। लूसिफर को जिस आदर और मान से उच्च्व पद पर प्रतिष्ठित किया गया था उसके द्वारा सशष्टिकर्त्ता के प्रति कश्तज्ञता प्रकट करना था। जो तेज और पराक्रम दिया

गया था उसे उसने ईश्वर का वरदान नहीं समझा और उसने अपने पर घमंड किया और परमेश्वर के बराबर होना चाहा। स्वर्ग के निवासी उसे प्रेम ही केवल नहीं पर उसका आदर मान भी करते थे। दूतगण प्रसन्न मन से उसकी आज्ञा का पालन करते थे क्योंकि वह सबों से बुद्धि और महिमा में बढ़कर था, फिर भी परमेश्वर के पुत्र को स्वर्ग का राजा मानते थे क्योंकि यह पिता के संग सामर्थ और अधिकार में एक था। परमेश्वर के सब सभाओं में खीस्ट जा सकता था जब कि लूसिफर को ईश्वर की योजना सभा में भाग लेने की अनुमति नहीं मिली थी इसीलिए इस पराक्रमी दूत ने प्रश्न किया, ‘‘क्योंकि खीस्ट को प्रभुत्व का अधिकार दिया गया ? क्योकि उसको लूसिफर से अधिक सम्मान मिलता है ?’’

(9) धोखे की साजिश ने उसके लिए क्या प्रतिष्ठा अर्जित करवाया ?

तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है। (यूहन्ना 8:44)

परमेश्वर के सामने से दूर हो कर लूसिफर दूतों के मन में असंतोष की भावना का बीज बोने लगा। गुप्त रीति से कार्य करते हुए कुछ समय तक परमेश्वर की प्रतिष्ठा करने का ढकोसला दिखाकर उसने अपने वास्तविक उद्धेश्य को छिपा रखा और उन व्यवस्थाओं के संबंध में जिनसे स्वर्गीय प्राणियों का शासन होता था असंतोष फैलाने का प्रयास किया। उसने उन व्यवस्थाओं के विषय में यह प्रचार किया कि ये नियम

अनावश्यक प्रतिबंध लगाते हैं। दूतों का स्वभाव पवित्र था, इसलिए उसने उन्हें अपने निज अन्तः करण की बात मानने की सलाह दी। उसने उन्हें बताया कि ईश्वर ने केवल खीस्ट को ही मान मर्यादा से प्रतिष्ठित किया है। इस प्रकार के स्वार्थ आचरण से उसने अन्याय किया है। ईश्वर के विषय में ऐसा झूठा आरोप लगाकर वह अपने प्रति दूतों को सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था। वह अधिक शक्ति और सम्मान प्राप्त करना चाहता था इसको वह इस प्रकार समझाता था। उंचे स्थान पर प्रतिष्ठित होना मेरा एक लक्ष्य नहीं है पर मेरा यह विशेष उद्वेश्य है कि स्वर्गीय निवासियों को स्वतंत्रता मिले। स्वतंत्र होकर ही केवल हम जीवन की ऊंची स्थिति तक पहुंच सकते हैं।

(10) लुसीफर से निपटने के लिए चरित्र का कौन सा लक्षण परमेश्वर ने प्रदर्शित किया जैसा कि वह हमारे लिए भी करता है ?

क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है और कया यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है? (रोमियो 2:4)

परमेश्वर ने बड़ी करूणा और दयालू होने के कारण लूसिफर के इस आचरण को सहा। उच्च पद के लिए प्रथम असंतोष की भावना प्रकट करने पर लूसिफर को पदच्यूत नहीं किया गया था न उस समय जब वह अपनी अनुचित मांग को ईश्वर भक्त दूतों के सामने प्रस्तुत करने लगा था। उसकी ऐसी अभिवशक्ति के होने पर भी उसे स्वर्ग में लम्बें समय तक रहने दिया गया था। वह पश्चाताप करके अधीनता मान लेगा ऐसे विचार से उसे एक बार नहीं पर कई वार क्षमा कर दिया गया था। वह अपनी भूल को समझ

जाए ऐसा विचार से उसके लिए जो प्रयत्न किया गया था वह तो उसी से संभव हो सकता है जो बुद्धिमान है और जिसके हृदय में असीम प्रेम है। इसमें पहले स्वर्ग में असंतोष की भावना किसी के मन में उत्पन्न नहीं हुई थी। लूसिफर को स्वंय यह पता नहीं लगा कि वह किस ओर भटक रहा है। उसने स्वयं अपने मन की भावना को नहीं समझ सका था। जैसे ही उसे यह मालूम हो गया कि मेरे मन में असंतोष है तब वह समझ गया कि मैं भूल में पड़ा हूँ और ईश्वर जो कुछ कर रहा है सब ठीक है इस बात के सामने मुझे मान लेना चाहिए। इन बातों को वह अपने मन में समझ तो गया और यदि सबों के सामने मान लेता तो न केवल वह स्वयं अपने को बचाता पर साथ साथ दूसरे बहुत से दूतगण भी सत्यानाश होने से बच जाते। इस समय तक उसने ईश्वर की अधीनता को पूर्ण रूप से अस्वीकार नहीं किया था फिर भी यदि वह सश्ष्टिकर्त्ता के ज्ञान को मान्यता देता और परमेश्वर की महान योजना के अनुसार अपने प्रतिष्ठित पद पर संतुष्ट होकर रहता और पश्चाताप करता तो अवश्य परमेश्वर उसे अपने पद पर रहने देता। पर वह अपने घमंड में इतना चूर हो गया कि उसके अधीन में रहना उसे अच्छा नहीं लगा। वह अपने ही मार्ग को अच्छा समझ कर उस पर चलना चाहा। उसने यह कहा कि पश्चाताप करने की मुझे आवश्यकता नहीं है। अपनी इस धारणा के प्रतिपादन करने के लिए अपने सश्ष्टिकर्त्ता के विरूद्ध महा वादविवाद में वह पूर्ण रूप से लग गया।

(11) लुसीफर से निपटने के लिए चरित्र का कौन सा लक्षण परमेश्वर ने प्रदर्शित किया जैसा कि वह हमारे लिए भी करता है ?

और उस की पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींच कर पृथ्वी पर डाल दिया, और वह अजगर उस स्त्री से साम्हने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ, कि जब

वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए। (प्रकाशित वाक्य 12:4)

अब वह अपनी सारी शक्ति से धोखे के कार्य में लग गया और स्वर्ग दूत जो उसके अधीन थे उनकी सहानुभूति प्राप्त करने की कोशिश करने लगा। यहाँ तक कि ख्रीस्ट ने उसे जिस बात की चेतावनी देकर परामर्श दिया था। उसका वह अपने विश्वासघाती उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुचित प्रयोग करने लगा।

जुट गया और परमेश्वर के पुत्र पर षड़यंत्र का दोष लगाने लगा कि मुझे वह स्वर्ग के निवासियों के सामने नीचा दिखाना चाहता है। इस प्रकार उसने स्वयं अपने आज्ञाकारी दूतों के बीच में व्यर्थ का झगड़ा खड़ा कर दिया। जितनों को बहका न सका तथा पूर्ण रूप से अपनी ओर खींच न सका, उनपर उसने ये दोष लगाया कि वे स्वर्गीय प्राणियों के हित पर रूचि नहीं रखते। जो ईश्वर के भक्त थे उन्हें वह उसी दोष को अपराधी प्रमाणित करने लगा जिसका वह स्वयं दोषी था। इस बात को प्रमाणित करने के लिए कि परमेश्वर ने उस पर अन्याय के उद्वेश्य के संबंध में अपने कपटपूर्ण तर्क से दूतों को घबड़ा देने की नीति अपनाया। प्रत्येंक बात जो सरल थी उसे उसने रहस्यमय बनाई और बड़ी चतुराई से परमेंश्वर की सरल सी सरल बात को संशयात्मक बना डाला। उच्च पद में प्रतिष्ठित होकर वह ईश्वर के शासन कार्य में सहायता करता था इसीलिए उसकी बातों पर जो सत्य नहीं थी दूतगण विश्वास करने लगे और परमेश्वर के विरूद्ध उपद्रव करने के लिए उसके दल में मिल गए।

(12) परमेश्वर ने अपनी असीम बुद्धि में शैतान को उसके वास्तविक चरित्र को पूरी तरह से प्रकट करने की अनुमति क्यों दी ?

जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है। (नीतिवचन 10:9)

परमेश्वर ने शैतान को अपना कार्य उस समय तक करने दिया जब तक घश्णा विद्रोह का रूप न ले लिया। शैतान की योजना का पूरी तरह विकास होना आवश्यक था। ऐसी स्थिति में सभी वह (शैतान) क्या है और उसका क्या प्रयोजन है उसे समझ सकते थे। लूसिफर एक करूब के रूप में अभिषिक्त किया गया था इसलिए वह एक प्रतिष्ठित पद में था। स्वर्ग के सभी निवासी उसे प्रेम करते थे और उन पर उसका प्रभाव भी अधिक था। परमेश्वर के राज्य में केवल स्वर्ग के निवासी ही नहीं परन्तु जितनी दुनियाँ को उसने बनाया था सभी सम्मिलित थे। इसलिए शैतान ने अपने मन में यह विचार किया कि यदि मैं उपद्रव करने की योजना में स्वर्ग के दूतों को अपने दल में मिला सकूं तो दूसरी दुनियाँ के लोगों को अपनी ओर लाना कठिन नहीं होगा। इस उद्वेश्य को पूरा करने के लिए छल और कपट द्वारा अपने पक्ष के प्रश्न को उनके सामने उसने बड़ी चतुराई से रखा। दूसरों को भरमाने की उनमें बड़ी शक्ति थी। उसने अपने
उनको जिनके साथ उसका घनिष्ठ संबंध था और जिन पर वह प्रेम के साथ भरोसा रखता था उन्हें बताने लगा कि उसके पद का कोई आदर मान नहीं किया गया, इतना ही नहीं पर उसकी स्व. तंत्रता छीन ली गई। इस प्रकार वह खीस्ट के वचन का निरादर करने लगा। घुमा फिरा कर झुठ प्रमाणित करने के लिए हर संभव प्रयस में झूठे रूप को ढंक कर बहुत लाभ उठाया, यहां तक कि ईश्वर के भक्त दूत भी उसके चरित्र के गुणें को पूर्ण रूप से नहीं समझ सके न ही यह कि उसका काम किस ओर ले जा रहा था।

(13) परमेश्वर ने अपने विद्रोह की शुरुआत में शैतान को क्यों नष्ट नहीं किया ?

सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता। (अय्यूब 37:23)

यह निर्णय हो चुका था कि शैतान स्वर्ग में अधिक समय तक नहीं ठहर सकता था फिर भी परमेश्वर उसे नाश करना अच्छा नहीं समझा ईश्वर प्रेम की सेवा ग्रहण करता है इसीलिए उसके न्याय और करूणा को समझकर उसके राज्यभक्त बनाना उसकी प्रजा के लिए उचित है। स्वर्ग के तथा अन्य लोक के निवासी पाप क्या है उसे नहीं समझ सकते थे न ही उसके परिणाम को। ऐसी स्थिति में शैतान को नाश करने से दूतगण परमेश्वर के न्याय और दया को नहीं समझ सकते थे। यदि शैतान को शीघ्र नाश कर दिया जाता तो वे परमेश्वर की आरधना प्रेम की अपेक्षा भय से करते। धोखा देने का प्रभाव भी पूर्ण रूप से नष्ट नहीं किया जा सकता था और न ही राजद्रोही की भावना जड़ से उखाड़ी जाती। बुराई को उसकी परिपक्वता तक पहुंचने देना चाहिए। अनंत युगों तक विश्व कल्याण हो इस विचार से ईश्वर शैतान के सिद्धान्तों का पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए अवसर देना चाहता था, तभी तो वह जो ईश्वरीय शासन पर दोष लगाता है उसे सशष्टि किए हुए प्राणी समझ सकेंगे कि ईश्वर को न्याय, दया और उसकी व्यवस्था पर किसी का किसी प्रकार संदेह न रहे। शैतान का विद्रोह जगत के लिए युग युग की एक शिक्षा बन गयी है। पाप क्या है और उसका क्या भयंकर परिणाम है उसका विद्रोह सदा काल के लिए साक्षी बन गया है। शैतान के शासन का पूर्ण रूप से विकसित होना, उसके दूतों और आदमियों पर जा प्रभाव पड़ता है यह दिखलायगा कि ईश्वर की अधिनता को अस्वीकार करने का

कया परिणाम होता है। अतं में यह प्रमाणित हो आएगा कि परमेश्वर का शासन और उसकी व्यवस्था से ही सशष्टि किए हुए लोगों का कल्याण है। इस प्रकार विद्रोह के भयंकर प्रयोग का इतिहास पवित्र

(14) किस विनाशकारी घटना ने शैतान के विद्रोह का नेतृत्व किया ?

फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर ओर उसके दूत उस से लड़े।परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उन के लिये फिर जगह न रही।और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। (प्रकाशित 12:7-9)

स्वर्ग में जब तक संघर्ष चलता रहा तब तक दूसरों की संपत्ति का अनाधिकर रूप से ग्रहण करने वाला शैतान अपने को निर्दोष प्रमाणित करने की कोशिश करता रहा जब यह
घोषणा हो चुकी कि वह और उसकी सहानुभुति रखने वाले परम आनन्द के निवासस्थान से जाएंगे तो राजद्रोही ने सशष्टिकर्त्ता की व्यवस्था का और भी स्पष्ट रूप से अपमान करने लगा। पह बड़े, अधिकार के साथ कहने कि स्वर्ग दूतों पर किसी प्रकार नियंत्रण करने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें अपनी इच्छा पर चलने को छोड़ देना चाहिए। उनकी अपनी इच्छा ही उन्हें उचित पथ पर ले चलेगी। वह उत्तेजित होकर ईश्वरीय विधान के विरोध बातें करने लगा। वह यह कहने लगा कि ईश्वर का विधान हम लोगों के स्वतंत्रता को संकुचित कर देता है इसलिए मैं चाहता हूं कि व्यवस्था को उठा देना ही अच्छा है। मेरा तो

यही प्रयत्न है कि व्यवस्था को किसी प्रकार हटा दिया जाए तो स्वर्ग के निवासी प्रतिबंधों से मुक्त होकर जीवन के ऊँच महिमायुक्त स्थिति को प्राप्त कर सकेंगे।

(15) स्वर्ग से निकाले जाने के बादए शैतान ने अपना राज्य स्थापित करने की तलाश कहाँ की ?

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।
(प्रकाशित वाक्य 12:9)

जिस भावना ने स्वर्ग में विद्रोह उत्पन्न किया था वही आज भी पश्थ्वी पर विद्रोह करने को उभाड़ती है। शैतान मनुष्यों के साथ भी उसी नीति को प्रयोग करता है जिसे उसने दूतों के साथ किया था। अभी उसकी आत्मा आज्ञा नहीं मानने वाली संतानों पर शासन करती है। इसीलिए वे भी शैतान की भान्ति परमेश्वर की व्यवस्था के बंधन में वंधा रहना नहीं चाहते, और दूसरे लोगों को भी यह सिखाते है कि वे आज्ञाओं को नहीं मानने के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। पाप के कारण जो झिड़की दी जाती है वह अभी भी घश्णा और विरोध की भावना को जागश्त करती है। जब परमेश्वर की चेतावनी का समाचार अंतकरण में पहुचता है तब शैतान उनको अपने समान अपने आपको निर्दोष बनाने की कोशिश करवाता है और अपने पाप के काम में दुसरों की सहानुभुति चाहता है। इसीलिए अपनी भूलों को सुधारना छोड़ कर वे झिड़की देने वाले के विरोध में क्रोध प्रकट करते हैं। ऐसा मानों वही सब तकलीफों का कारण है। धर्मी हाबिल के समय हमारे समय तक भी वही आत्मा जो पाप को अपराणी ठहराने का साहस करती है उन पर भी शासन करती है। जैसा

शैतान ने स्वर्ग में परमेश्वर के चरित्र के विषय में झूठ बताया था कि वह कठोर अत्याचारी है उसी प्रकार आज झूठ बोलकर लोगों को उसने पाप करवाया है। इतनी दूर तक सफलता प्राप्त करने के वाद उसने कहा कि परमेश्वर के अनुचित दबाव के कारण ही मनुष्य ने उसी प्रकार पाप किया जैसा अनुचित दबाब के कारएा शैतान ने उपद्रव आरंभ किया था।

(16) परमेश्वर के चरित्र का वास्तविक स्वरूप क्या है ?

और यहोवा उसके साम्हने हो कर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करूणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन पोतों और परपोतों को भी देने वाला है। (निर्गमन 34:6-7)

(17) परमेश्वर ने अपने महान प्रेम और दया का प्रदर्शन कैसे किया ?

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन

पाए। (यूहन्ना 3:16)

स्वर्ग से शैतान को निकाल कर परमेश्वर ने अपने न्याय की घोषणा की और अपने सिंहासन की प्रतिष्ठा को बनाए रखा परन्तु जब मनुष्य ने पतित आत्मा के धोखे के जाल में फंस कर पाप किया तब उसने (परमेश्वर ने) अपने असीम प्रेम की गवाही दी। उसने अपने एकलौटे पुत्र को पतित मनुष्यों के उद्धार के लिए दे दिया। इस प्रायश्चित के काम से परमेश्वर के चरित्र का गुण प्रकट होता है। क्रूस एक बड़ा तर्क है। वह सारे जगत को यह प्रमाणित कर दिखाता है कि शैतान ने स्वयं ही पाप का मार्ग अपनाया। परमेश्वर की शासन-प्रणाली में दोष होने के कारण उसने पाप किया ऐसी बात नहीं है।

(18) दुष्ट मनुष्यों ने अपने धरती पे सेवाकाई के दौरान यीशु को नष्ट करने के लिए शैतान के दुर्भावनापूर्ण इरादे को कैसे मौखिक रूप से बताया ?

परन्तु वे और भी चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे। (मरकुस 15:13)

इस संसार में जब त्राणकर्त्ता मनुष्य के उद्धार के लिए सेवा का काम कर रहा था तब खीस्ट और शैतान के बीच में संघर्ष चल रहा था। इस समय उस महाछली के चरित्र के गुण-अवगुण प्रकट हो गए। स्वर्ग के दूतगण और सारे जगत के भक्त आज्ञाकारी प्राणियों को शैतान के प्रति इतना अगाध प्रेम था कि कोई ऐसी शक्ति नहीं थी जो उनके बीच में प्रेम के बंधन को तोड़ सकता था, पर उसने जगत के त्राणकर्त्ता पर जो कठोर आक्रमण किया उसी के फलस्वरूप इस प्रेम का बंधनपूर्ण रूप से टूट गया। उसकी साहसपूर्ण निन्दनीय मांग कि खीस्ट उसकी प्रतिष्ठा करें। उसकी ढिठाई का साहस कि यीशु को मंदिर के केंगूरे (चोटी) पर ले जाने, ईर्षा से उसे घात करने के उद्धेश्य से उसे सिर में चक्कर आने वाले ऊँची चोटी से अपने आपको गिरा देने के

लिए विवश करने, अपने मन की जलती हुई ईर्षा को शांत करने के उद्वेश्य से उसे (यीशु को) जगह जगह पर पीछा करते रहने और याजक और लोगों के हृदय को उससे प्रेम नहीं करने के उद्वेश्य से उभाड़ने और अंत में ''क्रूस पर चढ़ाओं,'' ''क्रूस पर चढ़ाओं'' कह कर पुकारने वाली बातों को सुनकर सारे जगत के लोगों के मन में आश्चर्य और क्रोध की भावना जाग्रित हो गई। वह तो शैतान था जिसने जगत को उसकाया कि वे खीष्ट को स्वीकार न करें। दुष्टता के राजकुमार ने यीशु को नाश करने के लिए अपनी सारी शक्ति और चुतराई से काम किया क्योंकि उसने देखा कि त्राणकर्त्ता का अनुग्रह और प्रेम, उसकी करूणा और दया भरी कोमलता आदि गुण जो ईश्वर के स्वभाव के गुण है जगत को प्रकट कर रहे थे। शैतान ने परमेश्वर के पुत्र के प्रत्येक अधिकार को छीन लेने के लिए कोशिश की थी। इसी उद्वेश्य से उसने त्राणकर्त्ता के जीवन को कष्ट और दुःखमय बनाने के लिए मनुष्यों को अपना प्रतिनिधि बनाया। कुतर्क और झूठ के द्वारा यीशु के काम में बाधा देना, आज्ञा नहीं मानने वालों के द्वारा घश्णा प्रकट करना और यीशु के जीवन की अनुभव भलाई के कामों के कारण उसे अपराधी ठहराना आदि शैतान के काम हैं जो बदला लेने की भावना से उत्पन्न हुए थे। ईर्षा और डाह, घश्णा बदला लेने की दबी हुई भावनाएं परमेश्वर के पुत्र में उस कलवरी क्रूस पर दिखाई दी। कलवरी के क्रूस पर जब यीशु लटका हुआ था उस समय स्वर्ग के सब निवासी उस दश्श्य को भय से शांत होकर देख रहे थे।

(19) परमेश्वर ने अपने पुत्र के बलिदान से क्या हासिल किया जिसने उसके चरित्र को समस्त मानव जाती में प्रकट किया गया ?

और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्‍वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और मेल-

मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। (2 कुरिन्थियों 5:18)

विद्रोह के सिद्धान्त के प्रति अपनी जो घश्णा की भावना थी उसे परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया था। सारे स्वर्ग में परमेश्वर के न्याय को प्रकट होते हुए अपनी आंखों से देखा। शैतान को अपराधी ठहराने और मनुष्यों को उद्धार करने में परमेश्वर का न्याय दिखाई दिया। लूसिफर ने कहा था कि यदि परमेश्वर की व्यवस्था नहीं बदलती है और उसके नहीं मानने वालों को क्षमा नहीं किया जा सकता तो अवश्य ही आज्ञा नहीं मानने वाले को परमेश्वर की कश्पा दशष्टि के पास नहीं पहुंचने देना चाहिए। शैतान ने दश्ढ़तापूर्वक कहा था कि पापी मनुष्य जाति किसी भन्ति उद्धार नहीं पा सकती इसीलिए वे मेरे है। पर मनुष्य को बचाने के लिए खीस्ट मरा। वही एकमात्र उपाय है। इसे कोई किसी प्रकार नष्ट नहीं कर सकता। खीस्ट परमेश्वर के बारबर था फिर भी उसे व्यवस्था नहीं मानने का दंड मिला। इसी कारण मनुष्य खीस्ट की धार्मिकता को स्व. तंत्र रूप से ग्रहण कर सकता है और पश्चातापी तथा। नम्रता का जीवन व्यतीत कर के वह परमेश्वर के पुत्र के समान शैतान की शक्ति पर विजय प्राप्त कर सकता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर न्यायी है और उन्हें जो उस पर विश्वास रखते हैं वह धर्मी बना सकता है।

(20) मसीह का विशिष्ट/खास मिशन क्या था ?

यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। (मत्ती 5:17)

खीस्ट इस पश्थ्वी पर कष्ट सहने के बाद मर कर मनुष्य के लिए केवल उद्धार का काम पूरा करने ही नहीं आया था। पर वह व्यवस्था को समझाने और पालन करने और आदरणीय बनाने

के लिए आया था। व्यवस्था को इस संसार के निर्वासियों को न केवल जैसा पालन करना चाहिए वैसा पालन करना था पर सारे जगत को यह दिखा देता था कि परमेश्वर की व्यवस्था अपरिवर्तनीय है। यदि व्यवस्था को हटा दिया जा सकता तो परमेश्वर के पुत्र को आज्ञा नहीं मानने के पाप के कारण मरने की आवश्यकता ही नहीं होती। ख्रीस्ट की मश्त्यु यह प्रमाणित करती है कि व्यवस्था अटल है। यह बलिदान पिता और पुत्र दोनों के असीम प्रेम का फल था। इसके द्वारा मनुष्य उद्धार पा सकता है। वह बलिदान सारे जगत को यह दिखाता है कि इससे बढ़कर प्रायश्चित का कोई उपाय पर्याप्त नहीं हो सकता – न्याय और दया ही परमेश्वर की व्यवस्था और शासन की नींव है।

(21) महान विवाद के करीब सभी रचे गयें प्राणीयों की स्वीकारोक्ति क्या होगी ?

कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥

(फिलिप्पियों *2:10-11)*

न्याय का जब अंतिम फैसला सुनाया जाएगा तब यह पता लग जाएगा कि पाप होने का कोई कारण नहीं है। जब सारी पश्थ्वी का न्यायी शैतान से पूछेगा, ‘‘तू ने क्यों मेरे विरूद्ध उपद्रव किया और मेरे राज्य के प्रजा को मुझ से छीन लिया ?’’ तब बुराई का उत्पन्न करनेवाला इसका उत्तर नहीं दे सकेगा क्योंकि उसके पास कोई बहाना नहीं है। सभी का मुंह बंद हो जाएगा औरउपद्रवी दल कुछ बोल नहीं सकेगा।

(22) कौन सी चिल्लाहट ने शैतान के आगामी सर्वनाश की घोषणा की ?

जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा पूरा हुआ और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए॥ (यूहन्ना 19:30)

क्लवरी का क्रूस, व्यवस्था को अटल बता कर सारी दुनियाँ को यह घोषणा करता है कि पाप की मजदूरी मश्त्यु है। त्राणकर्त्ता के मरने के समय की पूकार, ''पूरा हुआ'', शैतान की मश्त्यु की घंटी की ध्वनि है। उतने दिन से चल रहे बड़े विवाद का इस समय निर्णय होता है और बुराई का उन्मूलन निश्चित हो जाता है अर्थात् पाप का जड़-मूल से विनाश हो जाता है। परमेश्वर का पुत्र कब्र के दरवाजे से होकर निकल गया कि वह, ''मश्त्यु के द्वारा उसे जिसे मश्त्यु पर शक्ति मिली थी अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।'' (इब्रि २:१४)

(23) सब जो अभिमान और दुष्टता से चिपके हुए हैं और शैतान का अंतिम भविष्य क्या हैं ?

क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे; और उस आने वाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उनका पता तक न रहेगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (मलाकी 4:1)

लूसीफर के बड़े होने की स्वयं की उत्कट अभिलाषा ही ने उसे कहने के लिए विवश किया था कि, ''मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूंगा ...... ''मैं परम प्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।'' परमेश्वर कहता है, ''मैंने तुझे भूमि पर भस्म कर डाला . ... और तू फिर कभी पाया न जाएगा।'' (याशायाह १४:१३, १४, अहजकेल २८:१८, १६)

(24) महाविवाद के करीबए कौन सा वायदा निभाया जायेगा एवं दिखनेवाले ब्रहमांड का दावा किया जायेगा ?

तुम यहोवा के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो? वह तुम्हारा अन्त कर देगा; विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी। (नहूम 1:9)

पाप क्या है और उसका क्या परिणाम मिलता है उसकी यह पश्थ्वी गवाही देगी। आरम्भ में इसका पूर्ण सत्यनाश करने से स्वर्गदूतों के मन में भय छा जाता और ईश्वर का आपमान होता। इस समय यह सारे जगत के प्राणियों के सामने जो उसकी इच्छा पूर्ण करने से प्रसन्न रहते हैं और जिनके हृदय में व्यवस्था के प्रति प्रेम है, परमेश्वर अपने प्रेम को प्रमाणित करेगा और अपने मन को स्थिर रखेगा। बुराई फिर से दिखाई नहीं देगी। नबी कहता है, ‘‘बिपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी।’’ (नहुम १ः६) शैतान ने जिस व्यवस्था को दासत्व का बंधन कह कर अपमानित किया था उसे छुटकारे की व्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित की जायगी। यह पश्थ्वी जाँच की कसौटी में कसी गई। उस ईश्वर जिसके चरित्र के अगाध प्रेम और असीम ज्ञान के गुण, स्वर्गदूतों और जगत के प्राणियों के सामने दिखाए गए इसीलिए वे फिर कभी ईश्वर की आज्ञा नहीं मानने की बात नहीं सोचेंगे।

मैं समझता हूं कि कैसे स्वयं के अभिमान से पहली बार लूसीफर के दिल में पाप की कल्पना की गई थी। मुझे पता है कि उस समय परमेश्वर उसे नष्ट कर सकते थे, लेकिन ऐसा करने के लिए उनके सभी बनाए गए प्राणी डर से बाहर निकल गए।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

मैंने उस दुख का अनुभव किया है जो परमेश्वर के प्रेम-आधारित सिद्धांतों का उल्लंघन करता है। मैं प्यार निष्पक्षता और उनकी आज्ञाकारिता से प्रदर्शित हुई दया को देखता हूं ।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

अब मैं समझता हूं कि ज्ञान में परमेश्वर पाप को उसके घातक पाठ्यक्रम को चलाने की अनुमति देता है ताकि पूरा ब्रह्मांड इसके भयानक प्रभावों को देख सके और शैतान के वास्तविक चरित्र को देख सके।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं उस महान दया के लिए परमेश्वर पर दावा करना चाहता हूं जो अपने पुत्र के बलिदान द्वारा प्रदान किया गया है। मुझे खुशी है कि इसके माध्यम से उपहार कानून की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं। उनकी बुद्धि में वह सिर्फ और सिर्फ विश्वास करने वाले सभी लोगों के लिए बने हुए हैं।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

____

____

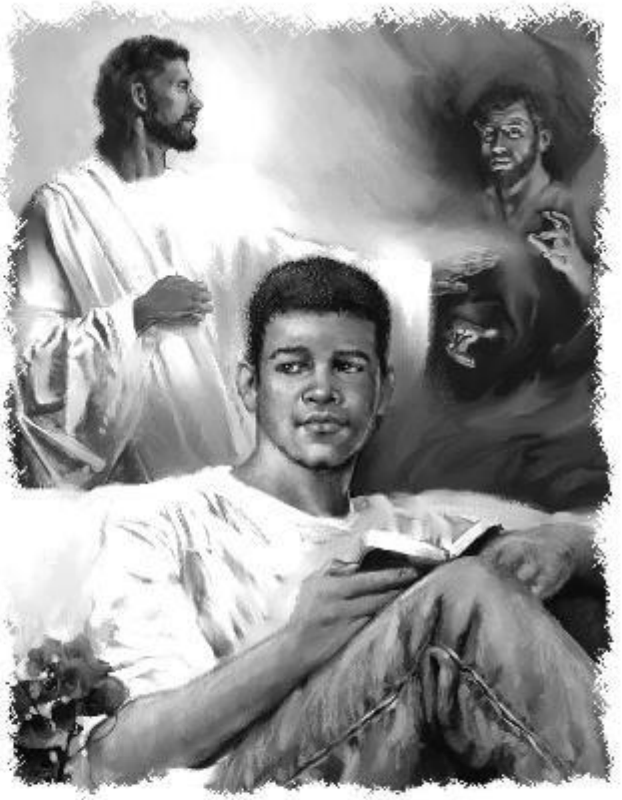

पाठ 2
शैतान एवं मनुष्य के बिच मे शत्रूता

(1) पतित मनुष्य की आशा के लिए परमेश्वर ने क्या महान वायदा किया था ?

और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करुंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा। (उत्पत्ति 3:15)

मनुष्य के पतन के बाद स्वर्गीय वाक्य शैतान के विरूद्ध सुनाया गया। साथ में एक भविष्यवाणी भी हुई जो जगत में रहने वाले सब मनुष्य जातियों पर लागू होगा। यह शैतान का महानसंघर्ष को दिखलाता है जो सब युग के लोगों पर पड़ेगा। ईश्वर ने घोषणा की ‘‘मैं बैर

उत्पन्न करूँगा'' यह शत्रुता स्वभाविक रूप से लागू नहीं होती है। जब उसने स्वर्गीय व्यवस्था का उल्लंघन किया तो उसका स्वभाव भी बुरा हो गया। वह शैतान से भिन्न नहीं हुआ पर बुराई को अपना लिया। स्वभाविक रूप से पापी मनुष्य की शत्रुता पाप का कर्त्ता शैतान से उत्पन्न नहीं हुआ। धर्म पतन से दोनों दुष्ट बन गये। पाप में गिरना यहीं अन्त नहीं हुआ, पर उसे सहानुभूति दिखाने वाले और उसके पीछे चलने वालों की संख्या बढ़ती गई। इसी कारण गिरे हुए दूतों और मनुष्यों का संगठन बढ़ता गया। यदि ईश्वर इन्हें नहीं रोकता तो शैतान और उसका गंठबन्धन वाले स्वर्ग के विरूद्ध उठ कर वहाँ पहुचँ जाते। शैतान के विरूद्ध शत्रुता न हो कर, सारी मानव जाती ईश्वर के विरूद्ध उपद्रव करने के लिये तैयार हो जाती।

(2) परमेश्वर की विशिष्ट आज्ञा और चेतावनी आदम और हव्वा के लिये क्या था ?

पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा॥

(उत्पत्ति 2:17)

(3) किस तरह की अनाज्ञाकारिता ने पृथ्वी को नष्ट कर दिया और सभी मानव जाति के लिए प्रकृति का पतन हो गया ?

सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर

खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। (उत्पत्ति 3:6)

(4) प्रलोभन क्या है ?

हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जान कर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। (याकूब 1:2-3)

(5) सभी प्रलोभन के लेखक कौन है ?

जब शैतान सब परीक्षा कर चुका, तब कुछ समय के लिये उसके पास से चला गया॥ (लूका 4:13)

शैतान ने मनुष्य को पाप करने की परीक्षा में डालकर पाप करवाया और दूतों को विद्रोह करवाया जिससे स्वर्ग के विरूद्ध लड़ाई करने में उसे मदद मिल सके। खीस्ट को घश्णा करने सम्बन्धी पतित दूतों और उसके बीच में कोई दो राय नहीं थी जब कि और दूसरी बातों में मतभेद थे। वे भूमंडल के शासक का विरोध करने में एक मत थे। जब शैतान ने यह घोषणा सुनी कि शत्रुता तो उसके और स्त्री के बीच में है, उसके और स्त्री के वंशें के बीच में है तब जान गया कि मनुष्य के स्वभाव को बिगाड़ने में उसके प्रयास में बाधा होगी और मनुष्य किसी तरह उसकी (शैतान) शक्ति को सामना करने के लिये सक्षम होगा।

(6) किसके स्वरूप में मानव की रचना हूई और मानव जाति को नष्ट करने के लिए शैतान की प्रेरणा है ?

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:27)

मनुष्यों के साथ शैतान की दुश्मनों इसलिये भड़की कि यीशु के द्वारा वे परमेश्वर के प्रेम और दया के पात्र बनता हैं। स्वर्ग की योजना अनुसार मनुष्यों के उद्धार का उपाय को हटाने की इच्छा करता है। वह ईश्वर की निन्दा कर मनुष्य को बनाने का दोष लगाता है। वह स्वर्ग में शोक लाकर पश्थ्वी पर दुःख और बर्बादी भर देता है। इन सारी बुराइयों को दिखला कर कहता है कि ईश्वर ने मनुष्य को बनाया इसी का परिणाम भुगतना पड़ता है।

(7) कितना कीमती वायदा का दावा कर सकते हैं एवं हम मसीह की सामथ्र्य से प्राप्त कर सकते हैं ?

जिन के द्‌वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्‌वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। (2 पतरस 1:4)

खीस्ट की आत्मा और शैतान की आत्मा के बीच, जो परस्पर विरोधी है यह उनके बीच पाया जाता है जो यीशु को ग्रहण कर चुके हैं। यीशु के पास दुनियाँ का धन, गौरव और सम्मान नहीं था, इसलिये यहुदियों ने उसे नहीं त्याग था पर उन्होंने उसमें एक ऐसे अधिकार को देखा था जो दुनियाँ की बाहरी दिखावटी और धन से अधिक था। उसके पवित्र जीवन और शुद्ध चरित्र के कारण ही विधर्मी लोगां ने उसका विरोध किया

था। उसका स्वार्थ हीन जीवन और निर्दोष भक्ति सदा हट्ठी और घमंडी लोगों को ठोकर मारता रहा। यही कारण था जिससे वे खीस्ट के विरोधी बन गये। शैतान और बुरे दूत सब बूरे लोगों के साथ मिल गए। सत्य के निपुर्ण खेलाड़ी (यीशु) के विरूद्ध पाप करने की सारी शक्तियाँ एक जुट होर बड़यन्त्र करने लगी।

(8) मसीह के जीवन की कौन सी ईश्वरीय विशेषता ने अधर्मी के दिल में शत्रूता को जन्म दिया और इस बात के लिए कि उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया ?

और तुम जानते हो, कि वह इसलिये प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं। (1 यूहन्ना 3:5)

खीस्ट की आत्मा और शैतान की आत्मा के बीच, जो परस्पर विरोधी है यह उनके बीच पाया जाता है जो यीशु को ग्रहण कर चुके हैं। यीशु के पास दुनियाँ का धन, गौरव और सम्मान नहीं था, इसलिये यहुदियों ने उसे नहीं त्याग था पर उन्होंने उसमें एक ऐसे अधिकार को देखा था जो दुनियाँ की बाहरी दिखावटी और धन से अधिक था। उसके पवित्र जीवन और शुद्ध चरित्र के कारण ही विधर्मी लोगां ने उसका विरोध किया था। उसका स्वार्थ हीन जीवन और निर्दोष भक्ति सदा हट्ठी और घमंडी लोगों को ठोकर मारता रहा। यही कारण था जिससे वे खीस्ट के विरोधी बन गये। शैतान और बुरे दूत सब बूरे लोगों के साथ मिल गए। सत्य के निपुर्ण खेलाड़ी (यीशु) के विरूद्ध पाप करने की सारी शक्तियाँ एक जुट होर बड़यन्त्र करने लगी।

(9) हम दुनिया से मसीह के अनुयायियों के रूप में क्या उपचार की उम्मीद कर सकते हैं ?

पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे। (2 तीमुथियुस 3:12)

जैसे खीस्ट के साथ शैतान की दुश्मनी प्रगट होती है वैसे ही मनुष्यों के प्रति भी। जो भी पाप करने से झिझकता है और स्वर्ग से शक्ति पाकर परीक्षा का डटकर सामना करता है उसे शैतान और उसके साथियों के क्रोध का सामना करना पड़ेगा। जब तक पाप और पापी इस जगत में रहेंगे तब तक सत्य के शुद्ध सिद्धान्तों का घश्णा करना, उसकी निन्दा और सताहट की घोषणा करना भी जारी रहेगा। खीस्ट के अनुगामी और शैतान के नौकर कभी भी एक साथ मिल कर नहीं रहेंगे। क्रूस की निन्दा करना बन्द नहीं हुआ है।

(10) हमे शैतान की शक्तियों पे विजय पाने के लिए कौन सी दो कदम का अनुसरण करना चाहियें ?

इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। (याकूब 4:7)

शैतान अपने सब सैनिकों को आज्ञा देकर अपनी सारी शक्ति को इस लड़ाई में लगा देता है। वह क्यों कर इसको बिना रूकावट के कर सकता है ? क्यों कि खीस्ट के सैनिक बहुत लापरवाह होते है ? क्योंकि वे खीस्ट से बहुत कम सम्पर्क रखते हैं, और उसकी आत्मा से रहित हैं। पाप उनके लिये घश्णित और दूर रहने की बस्तु नहीं बनी है। जैसा खीस्ट ने शैतान का दश्ढ़तापूर्वक सामना किया वैसा वे नहीं करते हैं। वे बुराई और पाप को घश्णा की दश्ष्टि से नहीं देखते हैं। इस कारण वं अंधकार के राजकुमार के द्वारा अपनी शक्ति और चरित्र को भ्रष्ट कर देते है। शैतान और उसके काम के विरूद्ध थोड़ा ही बैर रखते हैं क्योंकि उसके डाह और शक्ति के विषय बहुत

कम जानकारी रखते हैं, जब कि खीस्ट और उसकी मंडली के विरूद्ध शैतान की भारी लड़ाई है। अधिकांश लोग यहाँ पर भ्रम खा जाता हैं। वे नहीं जानते हैं कि उनका विरोधी शैतान एक बड़ा कप्तान है बुरे दुतों के मन को नियन्त्रित कर एक निपुण योजना को रोकता है। यहाँ तक कि जो अपने को खिश्चियन कहते हैं और सुसमा. चार के प्रचारक भी शैतान के विषय शायद ही चर्चा करते है, हाँ कभी-कभी उपदेश के मंच से बोल लिया काफी है। वे उसके काम की लगातार सफलता पर भी ध्यान नहीं देते हैं। उसके बहुत सी चालाकी से भरे चितौनियों को भी ध्यान नहीं देते हैं, ऐसा मालूम होता है कि उसके अस्तित्व को भूल ही जाते हें।

(11) शैतान का निरंतर उद्देश्य क्या है ?

और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। (2 कुरिन्थियों 4:4)

जब मनुष्य उस की योजनाओं के विषय अपने को अनजान रखते हैं तब यह जगा हुआ दुश्मन हर क्षण उनके कदमों के पीछे चलता है। वह उनके घर परिवार के सब कामों या समस्याओं में अपनी उपस्थिति के द्वारा गड़बड़ी पैदा करता है जैसे हमारे शहरों के सब गलियों में, मंडलियों में, राष्ट्रीय सभाओं में, न्यायालयों में गड़बड़ी, करवाता है, ठगता है, विद्रोह कराता है। सब तरफ पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों की आत्माओं और शरीरों को नष्ट करता है। घरों को उजाड़ता है, इर्ष्या स्वर्थ के बीजों को बोता है। इतना ही नहीं परन्तु उपद्रव, राजद्रोह और हत्याएँ करवाता है। मसीही जगत इन्हें ऐसा सोचता है मानों ईश्वर की ओर से ही ये घटनाएँ हो रही हैं, जिन्हें होनी थी। शैतान लगातार कोशिश करता

रहता है कि किस तरह से परमेश्वर के लोगों और जगत के बीच में जो दीवार है, उसे तोड़ें। प्राचीन काल में इस्राएली लोग उस वक्त पाप में गिरे जब उन्होंने मूर्तिपूजक लोगों के साथ मिलना जुलना शुरू किया। इसी तरह से आधुनिक इस्राएल भी पाप की ओर अगुवाई किया जायेगा। ‘‘इस जगत के देवों ने उनके मन को अंधा बना दिया था जो विश्वास नहीं करते थे अन्यथा खीस्ट के सुसमाचार की ज्योंति जो ईश्वर का रूप है उनके मनों में चमकती।’’ (२ कुरिन्थी ४:४) जो खीस्ट के पीछे चलने के लिये प्रतिज्ञा नहीं करते हैं वे शैतान के चेले बनते हैं। परिवर्तन हीन मन में पाप के प्रति प्रेम होता है और उसका मजा लेने की इच्छा होती है तथा पाप करने का एक बहाना होता है। बदले हुए मन में पाप के प्रति घश्णा होती हैं और उसका विरोध करने के लिये दश्ढ़ प्रतिझा है। जब खिश्चियन लोग अन्य जातियों और अविश्वासियों से मिलते झुलते हैं तो वे अपने को परीक्षा में डालते हैं। शैतान उनको छिपा कर रखता है और चुपके चुपके अपने धोखेबाजी का फंदा उनकी आँखों में डाल देता है वे समझ नहीं पाते हैं कि ऐसी संगति उनके लिए हानिकारक होगी। जब वे सांसारिक चरित्र वालों से अत्यधिक मिलते हैं तो उनके काम और बोली वचन उनके ही जैसा हो जाता है और वे बिगड़ जाते हैं।

(12) संसार की अनुरूपता से हम कैसे सुरक्षित रह पायेगें ?

दुष्टों की बाट में पांव न धरना, और न बुरे लोगों के मार्ग पर चलना।
(नीतिवचन 4:14)

दुनियाँदारी रीति रिवाजों को अपनाने का मतलब मंडली को भी सांसारिक बनाना है। यह जगत को कभी भी खीस्ट की ओर नहीं लायेगा। पाप से जान-परिचय रखना निश्चय ही इस से लड़ने की क्षमता को घटाना है। जो शैतान के नौकरों या एजेंन्टों से सम्बन्ध जोड़ता है वह अपने प्रभु का भय रखना छोड़ देता है। जब हम अपने

कर्त्तव्यों को करते समय न्याय के लिये लाये जाते हैं जैसा दानियेल को राजा के दरबार में लाया गया, तो हम निश्चित हो जाते हैं कि ईश्वर हमारी रक्षा करेगा। पर जब हम स्वयं अपने को परीक्षा में डालते हैं तो देर या सबेर परीक्षा में गिरेंगे ही।

(13) हमारे प्रशंसा का ध्यान केंद्रित करने या बनाने के लिए कौन हैं हम जिसे चेतावनी नही मिली है ?

बुरे लोगों के विषय में डाह न करना, और न उसकी संगति की चाह रखना; (नीतिवचन 24:1)

शैतान सफलता पूर्वक उन लोगों के द्वारा काम करता हैं जिन्हें हम सोचते हैं कि वे तो शैतान के शिष्य नहीं है। जिनके पास बुद्धि और प्रतिभा है उनको ऐसा आदर दिया जाता है कि वे ईश्वर का भय नहीं मान कर भी उद्धार पाने के योग्य हैं तथा उनपर भरोसा करने के लिये कहा जाता है। बुद्धि और प्रतिभा तो ईश्वर की ओर से दिया हुआ वरदान है। पर इन्हें ही धार्मिकता का रूप माना जाए और आत्माओं (मनुष्यों) को ईश्वर के पास लाने के बजाय दूर भगाने का काम करें तो यह अभिशाप का जाल बन जाता है। बहुत से लोग यह सोचने लग जाते हैं कि जो नम्रता या चरित्र उनमें झलकता है वह खीस्ट की समानता में होगी। ऐसा सोच कर वे बड़ी भूल करते हैं। इस प्रकार के गुण तो सब मसीहियों में होना चाहिये क्योंकि ये सच्चे धर्म के लिये शक्तिमान प्रभाव डाल सकते हैं पर उन्हें ईश्वर के द्वारा पवित्र (आशिषित) किया जाना चाहिये। नही ंतो ये भी शैतान के लिये हथियार बनेंगे। बहुत से लोग अच्छी संस्कशति या सभ्यता में पाये जाते हैं और उनका चरित्र भी पसन्दयोग्य होता है परन्तु यदि नैतिक काम को नहीं जीतते हैं तो वे शैतान के हाथों के चोखे औजार के समान है। शैतान की चालाकी, धोखेबाजी प्रभाव और नमूना खीस्ट के काम की बढ़ती में बहुत ही खतरनाक होता है बनिस्पत

उन भोले भाले अशिक्षित और असभ्य कहे जाने वाले लोगों से।

(14) बुद्धि एवं आत्मिक सामर्थ्य का एकमात्र स्रोत कौन है ?

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक। (भजन 46:1)

सच्चे दिल की प्रार्थना और ईश्वर पर निर्भर रह कर सुलैमान ने उस ज्ञान को प्राप्त किया था जो जगत के लोगों के लिये एक एक नमूना है। परन्तु जब वह शक्ति के स्रोत से अपने को अलग कर अपने पर भरोसा रख कर आगे बढ़ा तो परीक्षा में बुरी तरह गिर गया। उसे राजाओं में सबसे बुद्धिमान होने का वरदान मिला था परन्तु वह आगे चल कर मनुष्यों के दुश्मन का एक प्रभावशाली एजेंट बन गया।

(15) महान विवाद को जीतने के लिए शैतान ने किस रणनीति के तहत काम किया है ?

सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। (1 पतरस 5:8)

आदम के जमाने से आज तक हम लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन सताने और राज करने के लिये अपनी शक्ति का प्रयोग कर रहा है। अभी वह अपनी आखरी लड़ाई मंडलियों के विरूद्ध कर रहा है। जो यीशु को मानते हैं उन्हें इस महां दुष्ट से लड़ाई करना होगा। एक ख्रिश्चियन जितना अधिक अपने को स्वर्गीय सिद्धान्तों के मुताबिक कहेगा उतना ही अधिक उसे शैतान का आक्रमण को सहना पड़ेगा। जो ईश्वर के काम में व्यस्त रहकर शैतान की धोखेबाजी के चाल को

लोगों के सामने प्रगट करेंगे वे पौलुस की गवाही में शामिल होंगे जिसमें वह कहता है कि मन की सारी नम्रता से प्रभु की सेवा, संकट में आँसू बहाते हुए करते हैं।

(16) शैतान की बेड़ियों से हमारी रक्षा क्या होगी?

परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। (इफिसियों 6:11)

शैतान ने खीस्ट पर बड़ी धूर्तता और चालाकी से आक्रमण किया लोकिन हर बार पीछे हट गया। ये लड़ाई हमारे पक्ष में लड़ी गई। ये जीत हमारे लिये भी जीतने का जरिया बने। जो खोजेंगे उन्हें खीस्ट बल देगा। कोई व्यक्ति अपनी रजामन्दी के बिना शैतान से पराजित नहीं होगा। शैतान में यह शक्ति नहीं है कि वह किसी को वश में करे या पाप करने के लिए जोर जबरदस्ती करे। वह नीरास कर सकता है। पर जबरदस्ती नहीं। वह दुःख दे सकता है पर आज्ञा तोड़वा नहीं सकता। सच्ची बात तो यह है कि खीस्ट ने उसे हराया है।

(17) हमारे जीवन को कैसे दोषमुक्त किया जा सकता है ?

जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से। (भजन 119:9)

(18) हम परमेश्वर से कौन सी वायदा का दावा कर सकते हैं ?

तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और

परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको॥ (1 कुरिन्थियों 10:13)

मैं आभारी हूं कि परमेश्वर ने शैतान के प्रति अपने बच्चों के दिलों में दुश्मनी डालने का वायदा किया।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं आत्मिक ज्ञान और परमेश्वर के वचन के लिए अधिक से अधिक इच्छा की प्रार्थना करता हूं और उनकी कृपा से मैं शैतान के अग्रिमों का विरोध करने के लिए दृढ़ हूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं दावा करता हूं कि परमेश्वर के वादे ने मुझे ऊपयूक्त परिक्षा मे पड़ने नही दिया है जो मैं सहन करने में सक्षम नही हूं और बुद्धि के लिए प्रार्थना करता हूं कि बचने का रास्ता चुनू।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मुझे एहसास है कि मसीह के लिए जीने वाले सभी लोगों को सतावट का सामना करना पड़ सकता है और मैं इसे प्रेम से सहने के लिए तैयार हूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

पाठ 3
दुष्टात्मा के कार्य

(1) महान विवाद में पवित्र शास्त्र दुष्ट की शक्तियों की पहचान कैसे करता है?

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। (इफिसियों 6:12)

दश्श्य और अदश्श्य जगत का सम्बन्ध, ईश्वर के दूतों की सेवकाई और दुष्टात्माओं का वर्णन पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से दिया हुआ है। यह मनुष्य के इतिहास से बुना हुआ है। दुष्टात्माओं का अस्तित्व पर लोगों का विश्वास कम होते जा रहे है जब कि बहुत से लोग पवित्र स्वर्गदूतों की ही मश्तकों की आत्मा कह कर विश्वास करते हैं, ''क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएँ नहीं, जो उद्धार पानेवाले के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं ?'' (इब्रानीयों १:१४) पवित्र शास्त्र

में दोनों भले और बुरे दूतों का वर्णन पाते हैं। पर वर्तमान समय का विश्वास निरर्थक है कि ये दूत मश्तकों के शरीर रहित व्यक्ति हैं।

(2) महान विवाद की शुरुआत से पहले सभी स्वर्गदूतों ने कहाँ निवास करते थे?

और जब मै ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी। (प्रकाशित 5:11)

(3) किस नाम का इस्तेमाल शास्त्र में गिराये गये संदर्भ के रूप में किया जाता है?

तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है: तू अच्छा करता है: दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं। (याकूब 2:19)

(4) ये गिराये गये स्वर्गदूत अब कहाँ रहते हैं ?

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। (प्रकाशित 12:9)

(5) मनुष्य स्वर्गदूतों के सापेक्ष किस स्तर पर बनाया गया था ?

क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। (भजन 8:5)

मनुष्य की सश्ष्टि के पहले से ही स्वर्गदूत हैं क्योंकि जिस वक्त पश्थ्वी की नींव डाली गई उस वक्त स्वर्गदूतों ने गीत गाया, ‘‘भोर के तारे और परमेश्वर के संतानों ने भी आनन्द के गीत गाए।’’ (अय्युब ३८ः७) मनुष्य जब पाप में गिर गया तो स्वर्गदूतों को जीवन के वश्क्ष की रक्षा करने के लिये भेजा गया। यह घटना मनुष्य के मरने के पहले की है। स्वर्गदूतगण स्वभाव से ही मनुष्य से ऊपर हैं। ‘‘मनुष्य को स्वर्गदूतों से थोड़ा ही नीचे बनाया है’’

(6) पवित्रशास्त्र परमेश्वर द्‌वारा बनाये गये स्वर्गदूतों की संख्या का वर्णन कैसे करता है ?

और जब मै ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी। (प्रकाशित 5:11)

पवित्र शास्त्र बाइबल में स्वर्गदूतों की संख्या, उनकी शक्ति, और महिमा, परमेश्वर के राज्य के साथ उनका सम्बन्ध और उद्धार के सम्बन्ध में उनके कामों का वर्णन हमे बताया गया हैं। ‘‘प्रभु परमेश्वर ने अपना सिंहासन स्वर्ग में तैयार किया है और वह सब राज्य पर प्रभुता करता है।’’ नबी कहता है कि मैंने स्वर्ग के चारों और बहुत

स्वर्गदूतों की आवाज सुनी। राजाओं का राजा के सिंहासन के सामने स्वर्गदूत प्रतीक्षा में खड़े रहते हैं। वे स्वर्ग दूत, जो शक्ति में मनुष्यों से बढ़ कर हैं, प्रभु की इच्छा को पूरी करने वाले हैं, उसकी मदद करते हैं जब उन्हें प्रभु की ओर से आदेश आता है, उसके वचन के मानने वाले है।'' (भजन संहिता १०३:१६-२१ प्रकाशितवाक्य ५:११) में स्वर्गदूतों की संख्या का इस प्रकार वर्णन है - ''दस हजार गुणा दस हजार हजारों गुणे हजारों की संख्या में स्वर्ग के संवाददताओं को यूहन्ना प्रेरित ने अपने दर्शन में देखे। प्रेरित पौलुस उन्हें असंख्य जन-समूह कहता है (इब्रानी १२:२३; दानियेल ७:१०) में भी स्वर्गदूतों या सेवा करने वालों की संख्या का वर्णन पाते हैं।

(7) कितने स्वर्गदूतों ने बुराई का रास्ता चुना ?

और उस की पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींच कर पृथ्वी पर डाल दिया, और वह अजगर उस स्त्री से साम्हने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए। (प्रकाशित 12:4)

(8) स्वर्गदूतों की शारीरिक बनावट क्या है ?

और जीवधारियों के रूप अंगारों और जलते हुए पलीतों के समान दिखाई देते थे, और वह आग जीवधारियों के बीच इधर उधर चलती फिरती हुई बड़ा प्रकाश देती रही; और उस आग से बिजली निकलती थी। और जीवधारियों का

चलना-फिरना बिजली का सा था।
(यहेजकेल 1:13-14)

ईश्वर के संवाददाता इधर से उधर बिजली की गति से भ्रमण करते है। (यहेजकेल १:१४) उनकी महिमा की चमक और गति भी बहुत तेज है।
खीस्ट के कब्र पर जो दूत
गाया था उसके चेहरे पर बिजली के समान चमक थी और उसके वस्त्र हिम के समान सफेद थे। ''इसे देखकर वहाँ पहरा देने वाले सिपाही गिर कर मुर्च्छित हो कर, बेहोस पड़ गए।''
(मती २८:३-४)

(9) इस परीक्षण में कौन सी घटना से पता चलता है कि परमेश्वर के एक दूत के पास शक्ति है ?

उसी रात में क्या हुआ, कि यहोवा के दूत ने निकल कर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मारा, और भोर को जब लोग सबेरे उठे, तब देखा, कि लोथ ही लोथ पड़ी है। (2 राजा 19:35)

जब अश्शूर का राजा सेन्नाचेरिब ने ईश्वर की निन्दा कर अपमान किया और इस्राएलियों को मार डालने की धमकी दी तो एक हो दूत उसकी छावनी में जाकर उसके एक लाख पच्चासी हजार सैनिकों को मार डाला। सेन्नाचेरिब के सैनिकों के बीच भगदड़ मच गई। सब बीर कप्तान और सेना के लोग आपस में मार-काट करने लगे। वह लज्जित होकर स्वदेश लौट गया। (२ राजा १९:३५, २ इतिहास ३२:२)

(10) मनुष्य के पतन के बाद परमेश्वर ने किस भूमिका को बिना गिराये गये स्वर्गदूतों को सौंपा ?

क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएं नहीं; जो उद्धार पाने वालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं? (इब्रानियों 1:14)

इस प्रकार स्वर्गदूतों को परमेश्वर की सन्तानों को बचाने के लिए दया के काम में भेजा जाता है। इसके कई उदाहरण है जैसे-इब्राहिम को आशीष देने के लिये भेजा गया, लूत को सदोम के फाटक पर बचाने के लिये, एलिया नबी जब भागते भागते थक कर भूख प्यास से शिथिल हो गया था ; उसे शान्ति देने एक दूत आया। एलीशा जब दुश्मनों से घिर गया था तो उसे बचाने के लिये अग्निमय रथ और घोड़ो का दल पहुँचा था। जब दानियेल मूर्ति पूजक राजाओं के दरबार में गवाही देने के लिये स्वर्गीय ज्ञान की खोज कर रहा था और दूसरी बार उसे सिंह के मंद में डालने वाले थे उस समय ; वह ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था। तब दूत ने आकर उसे बुद्धि दी और सिंह के मुंह से भी छुड़ाया। पतरस जब हेरोद के जेल में मर जाने के लिए बन्द था और फिलीप्पी के जेल में बरनाबस के साथ था। और जब पौलुस और उनके साथीओं आंधी तुफान रात के समय समुद्र में पड़ा था। करनेलियुस को सुसमाचार सुनाने के लिये पतरस को वहाँ भेजने का काम किसने किया ? पवित्र स्वर्ग दूत सदा ईश्वर की सन्तानों की सेवकाई करने के लिए तौयार रहते हैं।

(11) स्वर्गदूत हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से क्या करते हैं ?

यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उन को बचाता है। (भजन 34:7)

हरेक मसीही के लिये एक एक स्वर्गदूत रक्षक ठहराया हुआ है। ये देखभाल करने वाले दूत शैतान की शक्ति से धार्मियों की रक्षा करते है। इसे यह शैतान स्वांय पहचाना जब उसने यह बात कही, ''क्या अय्यूब ईश्वर से बिना फायदा का डरता है ? क्या आपने उसकी और उसके घर की और जो कुछ उसका है, उसके चारों ओर बेड़ा नहीं बान्धा है ?'' (अय्यूब १:६, १०) जिस काम से ईश्वर अपने लोगों को बचाता है उसका वर्णन हम भजन संहिता ३४:७ में पाते है।'' ''यहोवा के डरवैयों के चारों और उसका दूत छावनी किये हुए उनको बचाता है।'' जो उस पर विश्वास करते हैं उन्हें प्रभु ने कहा – ''सावधान रहो कि इन छोटों में से किसी को तुच्छ मत जानों, मैं तुम से कहता हूँ कि ''स्वर्ग में उनके दूत सदा मेरे पिता का मुंह देखते रहते हैं'' कि उनसे क्या आदेश निकले। (मती १८:१०) जो स्वर्गीय दूत ईश्वर की सन्तानों की सेवा करने के लिये नियुक्त किये गये हैं वे सदा ईश्वर के सामने हाजिर रहते हैं। इस प्रकार ईश्वर के लोग, अंधकार के राजकुमार से हमेशा डाह करने वाले क्षेत्र में रह कर बुरे दूतों के साथ लड़ाई में लगे रहते हैं। उन्हें नहीं थकने वाले स्वर्गीय दूत मदद करते रहते हैं। जब ईश्वर ने अपने बच्चों को अनुग्रह और सुरक्षा देने की प्रतिज्ञा की है, तो उन्हें महान दुष्ट के धोखे बाजी के कामों का भी सामना करना है ,बहुत सारे एजेनसियाँ दश्ढ़ प्रतिज्ञा के साथ अनवरत काम करने वाले, और नहीं थकने वाले, जिसकी इर्ष्यालु शक्ति से किसी को भी अनजान और लापरवाह नहीं रहना चाहिए।

(12) पवित्र स्वर्गदूतों को शैतान बन जाने में क्या बदलाव हूआ ?

क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्हों ने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेज कर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें। (2 पतरस 2:4)

बुरे दूतगण, आरंभ में निर्दोष बनाये गये थे। वे स्वभाव, शक्ति और महिमा में ईश्वर के दूतों के ही बराबर थे। लेकिन जब वे पाप में गिर गये तो ईश्वर की निंदा करने और लोगों को नष्ट करने के लिये शैतान से मिल गये। शैतान के साथ मिलने से उन्हें स्वर्ग से धरती पर गिरा दिया गया। शैतान से मिलकर युगों से वे ईश्वरीय अधिकारी के विद्रोही होकर युद्ध कर रहे है। बाइबल में हमें उनकी षड्यंत्र सभा और उसके अधिकार, उनके विभिन्न वर्गो,उनके छल-कपट के तरीके, उनकी धूर्तबाजियाँ, और मनुष्यों की सुख शांति के मार्ग में डाह, घश्णा और बैरता उत्पन्न करने विषय बताया गया है।

(13) मानव जाति को धोखा देने और नियंत्रित करने के लिए शैतान किन तरीकों से काम करता है ?

ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्मा हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकल कर इसलिये जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें। (प्रकाशित 16:14)

पुराने नियम के इतिहास उनके सामुयिक अस्तित्व और काम के विषय बतलाते हैं। लेकिन जब खीस्ट इस धरती पर था उस समय दुष्टात्मा ने बड़ी शक्ति से अपने को प्रगट किया था। खीस्ट इस दुनियाँ में मनुष्यों के उद्धार करने की योजना के अनुसार आया था। शैतान भी उसी समय

जगत में अपना अधिकार जताने की प्रतिज्ञा की। उसने जगत के हर कोने में मूर्तिपूजा की प्रथा को चलाने में कामयाबी हासिल की केवल फिलीस्तीन देश में ऐसा नहीं कर सका। केवल यही देश है जो शैतान के द्वारा नहीं भरमाया जा सका था।

(14) जब पापी आदमी इजाजत देता हैए तो बुराई की ताकतें कहाँ रहेंगी ?

जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्माएं थीं और उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया। (मत्ती 8:16)

लोग भूत-ग्रस्त हो गय थे इसका प्रमाण हम नए नियम में स्पस्टता से प्रमाण पाते हैं। जो व्यक्ति इस प्रहार का शिकार बना वह सिर्फ स्वभाबिक कारणों की बीमारी से नहीं तड़पता था। ख्रीस्ट जब ऐसे लोगो को चंगा किये उसवक्त वह पह. चान लिया कि वहाँ शैतान का काम हो रहा है और दुस्टात्मा की उपस्थिति हैं। इनकी संख्या, शक्ति, ईर्ष्या, और गदारा के भूतग्रस्त व्यक्ति को चंगा करने के सम्बन्ध में यीशु की शक्ति और दया का भी पवित्र शास्त्र में उल्लेख किया गया हैं। ये बेचारे भूतग्रस्त व्यक्ति अपने शरीर को दुःख से ऐंठते, बचाव के काम को इन्कार करते, क्रोध के आवेश में मुंह से झाग निकालते तथा उनकी चिल्लाहट से आकाश गुंज उठता था और जो उनके पास आते थे उन्हें हानि पहुँचाने की भी कोशिश करते थे। उनके लोहूलूहान शरीर, कुरूप चेहरे और चंचल मन इन्हें देखकर शैतान आनन्दित होता है।

(15) कितने शैतान के दूतों ने कारसेवकों के देश में निवास किया ?

उस ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उस ने उस से कहा; मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं। (मरकुस 5:9)

रोमन सिपाहियों के बीच एक सेना में तीन से पाँच हजार तक सैनिक होते थे। शैतान के दूत भी इसी तरह सेना के रूप में काम करते हैं और एक जन–समूह में इससे कम शैतान नहीं होते हैं।

(16) किसके नाम से बुराई की ताकतों को भागना चाहिए?

वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं। (लूका 10:17)

यीशु की आज्ञा से दुष्टात्माएँ अपने शिकार को छोड़कर भाग खड़े होते थे, तब वह व्यक्ति यीशु के चरणों में शान्त और सरल मन से बैठ जाता था। ऐसा मालूम पड़ता था कि वह सज्जन और बुद्धिमान व्यक्ति है। लेकिन शैतान को सुआरों के दल में प्रवेश होने की अनुमति मिली, जो समुद्र में घुस कर डुब मरे और गदारा के लोगोंने अर्थिक हानि के कारण मसीह के आशीष को तुच्छ जाना, इस लिए ईश्वरीय चंगाई को करने वाला को वहाँ से जाने के लिए कहा गया था। गदारा के लोगों ने आर्थिक हानि उठानी पड़ी।

(17) ईलमास का चुना हुआ पेशा क्या था कि शैतान का कब्जा पसंद से हो सकता है ?

परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है उन का साम्हना

करके, सूबेदार को विश्वास करने से रोकना चाहा। (प्रेरितों के काम 13:8)

जो लोग भूत ग्रस्त होते थे, वे यह दिखाते है कि वे बहुत तकलीफ का जीवन जीना पड़ता है। इसमें कुछ अपवाद भी है कि सब इस दशा से नहीं गुजरे हैं। असाधरण शक्ति पाने के लिये कुछ लोगों ने शैतान के प्रभाव का स्वागत किया है। इनकी लड़ाई शैतान से नहीं थी। इस दल के लोगों में वे हैं, जो जादू करने की विद्या प्राप्त करते हैं। जैसे : शिमौन मगुस इलिमास जादूगर और वह लड़की जो पौलूस और सिलास को फिलीप्पी में पीछा करती थी।

(18) इस वचन में लूसिफर-जिसे अब शैतान कहा जाता हैए की शारीरिक उपस्थिति का वर्णन कैसे किया जाता है?

सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और वैभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी। मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं के साम्हने तुझे रखा कि वे तुझ को देखें। (यहेजकेल 28:17)

जब हम उसके ठगने की नीति को जानते हैं तो इससे बढ़कर कोई दूसरी चीज नहीं है जिससे शैतान डरता है। अपना वास्तविक चरित्र और मतलब को छिपाने के लिये वह अपने को लोगों के सामने हंसी उड़ाने और विरोध करने से बढ़कर दूसरे बड़ी भावना को उत्तेजित नहीं करता है। इसी में वह अपनी नीति को अच्छा समझता है। वह अपने को आलसी के रूप में दिखाने, कुरूप दिखाने और आधा मनुष्य का और आधा पशु का शरीर के रूप में दिखाना पसन्द करता है। खेल कूद की जगह या हंसी ठट्ठा के समय जो अपने को बुद्धिमान या सभ्य

कहते हैं उनके द्वारा उसका नाम लेने से वह बहुत खुश होता है।

(19) बाइबिल हमें कौन सा कार्य के बारे में सिखाती है जो हमे छल से बचने के बुद्धि प्रदान करता हैं ?

परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। (इफिसियों 6:11)
अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्ज़ित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमुथियुस 2:15)

जिस सवाल को लोग ज्यादातर पूछते हैं कि शैतान है या नहीं उसका कारण यह हो सकता है की वह अपने को बड़ी चतुराई से भेष-बदल कर छिपा रखा है। ‘‘क्या ऐसा व्यक्ति वास्तव में है?’’ धर्मिक जगत में बाइबल उसके अस्तित्व के विषय साफ-साफ बतलाती है। परन्तु शैतान के झूठे प्रचार की सफलता के कारण लोग विश्वास करने से चूक जाते हैं। शैतान बहुत जल्दी लाप. रवाह लोगों के मन को अपने वश में कर लेता है। इस कारण बाइबल में उसके बूरे कामों का स्पष्ट उदाहरण मिलते हुए भी उसका अस्तित्व पर संदेह करते हैं। शैतान अपने गुप्त सैनिकों को हमारे सामने हमेशा रखता है। इसके विषय बाइबल हमें बताती है। और उसके आक्रमण से हमारी रक्षा करता है।

(20) जब हम बुराई की ताकतों से घिर जाते हैं तो सुरक्षा के कौन से बड़े वादे का दावा कर सकते हैं ?

हे यहोवा के प्रेमियों, बुराई से घृणा करो; वह अपने भक्तों के प्राणो की रक्षा करता, और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता है। (भजन 97:10)

तब शैतान की शक्ति और ईर्ष्या के काम से हम घबड़ा जाते हैं। जब हम अपने उद्धारकर्त्ता की शरण में नहीं आते; जहाँ शैतान की शक्ति से अधिक उसके बचाव की शक्ति मिलती है। अपने घरों को सावधानी पूर्वक छिटकिनी और ताला डालकर दुष्टों से अपनी सम्पत्ति को बचाने के लिये बन्द करते है। पर बुरे दूतों के लगातार आक्रमण से बचने के लिए, जो हमारी शक्ति से बाहर है; हम कभी भी परवाह नहीं करते हैं। यदि उन्हें अनुमति मिल जाती है तो वे हमारे मन में गड़बड़ी उत्पन्न करते हैं, शरीर में आघात पहुँचाते हैं, और हमारी सम्पत्ति और जीवन को बर्बाद करते हैं। वे मनुष्यों की विपत्ति और बर्बादी को देख कर खुश होते हैं। उनका जीवन क्या ही बुरा है, जो स्वर्ग की शिक्षा को इन्कार कर के शैतान की परीक्षा में गिर जाते हें, और ईश्वर भी उन्हें बुरे दूतों के वश में छोड़ देता है। परन्तु जो खीस्त के पीछे चलते हें वे सदा उसकी देख-रेख में सुरक्षित रहते हैं। स्वर्गदूत, जो अति शक्तिशाली हैं उन्हें उनकी रक्षा करने के लिये स्वर्ग से भेजा जाता है। बुरे दूत ईश्वर द्वारा लगाए हुए घेरे को पार करके उसके लोगों की हानि कभी नहीं पहुँचा सकते।

मैं पवित्रशास्त्र से समझता हूं कि मैं अच्छे और बुरे के बीच एक लौकिक संघर्ष में फंस गया हूं। मुझे लगता है कि शैतानी शक्तियां मृत मनुष्यों की आत्माएं नहीं हैं बल्कि मेरे विनाश के लिए गिरे हुए स्वर्गदूत हैं क्योंकि मैं परमेश्वर की कृपा के उपहार का दावा करता हूं।

घेरा लगायें : हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं इस बात के लिए शुक्रगुजार हूं कि परमेश्वर ने मेरी जरूरतों को पूरा करने के लिए और इस महान विवाद के दौरान सुरक्षा प्रदान करने के लिए अपने बिना गिराये हूए स्वर्गीय दूतों को भेजा।

घेरा लगायें : हाँ   निर्णय नहीं लियें

मुझे एहसास है कि मैं शैतान और उसके दुष्ट एजेंटों की बुद्धि शक्ति या क्षमताओं का कोई मुकाबले मे नहीं हूं। मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं कि मैं इन बुराईयों से मुक्ति के लिए मसीह के नाम पर अलौकिक शक्ति का दावा कर सकता हूं।

घेरा लगायें : हाँ   निर्णय नहीं लियें

मुझे पता है कि अंतिम दिनों में अंधेरे की शक्तियां मुझे धोखा देने के लिए चमत्कारी चिन्ह और चमत्कारों का उपयोग करेंगी। मैं पवित्र आत्मा से प्रार्थना करता हूं कि मैं परमेश्वर के वचन के अपने अध्ययन का मार्गदर्शन पाउं ताकि मैं धोखा न खाउं।

घेरा लगायें : हाँ   निर्णय नहीं लियें

____

____

____

____

____

____

पाठ 4

शैतान का फंदा

(1) इस महान विवाद में शैतान का अंतिम लक्ष्य क्या है?

और उसे अथाह कुंड में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इस के बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए॥ (प्रकाशित20:3)

खीस्ट और शैतान के बीच में लगभग छह हजार वर्षो से संघर्ष चल रहा है। वह अब शीघ्र ही अंत होने वाला है। इसलिए यीशु मनुष्यों के लिए जो कार्य कर रहा है उसे असफल करने के लिए शैतान भी अपने फंदे में लोगों को फंसाने का अत्यधिक प्रयत्न कर रहा है। त्राणकर्त्ता का मध्यस्तता का कार्य पूरा होने के बाद पाप के लिये बलिदान करने का अवसर नहीं रहेगा,

इसलिए उस समय तक लोगों को अंधकार में रखकर पश्चाताप करने के समय को सदा के लिए नष्ट कर देने का ही शैतान का एक मात्र दद्वेश्य है। इसे पूरा करने के लिए वह अनवरत अथक प्रसत्न कर रहा है।

(2) हमें शैतान के धोखे से बचाने के लिए कौन से दो भाग में निर्देश दिए गए हैं ?

इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। (याकूब 4:7)

शैतान की शक्ति को रोकने के लिए जब कोई व्यक्ति विशेष परिश्रम नहीं करता और जब मंडली और दुनियाँ में विभिन्नताएँ होती है, तब शैतान उनपर दिलचस्पी नहीं रखती। क्योंकि उसमें उनका कोई विपत्त नहीं रहता। जब लोग अनंत कालीन बातों पर ध्यान देने लगते हैं और यह जानने के लिए इच्छुक रहते हैं कि ‘‘उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं ?’’ तब वह युद्ध क्षेत्र में उत्तर आता है और ख्रीस्ट की शक्ति का विरोध करने और पवित्र आत्मा को रोकने का प्रयत्न करता है।

(3) बाइबल की सलाह क्या हमें शरीर की लालसाओं पे जय पाने में मदद करेगी ?

पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। (गलातियों 5:16)

उस आत्मिक अंधकार जिससे दुनियाँ के लोगों को ढंके हुए हैं इससे परमेश्वर के सेबक दुखित

हैं। वे उस आत्मिक अंधकार के बोझ से दबे हैं। किस प्रकार उसे दूर करें वही इनके मन में चिन्ता हैं। इसी लिए वे ईश्वर के अनुग्रह और शक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं कि लोगों के बीच में जो उदासीनता, असावधानी और आलस्यपन की स्थिति उत्पन्न हुई है, यह दूर हो जाए। इन सब बातों पर शैतान विशेष ध्यान देता है। उनके तन-मन से प्रार्थना करने की बातों को वह सुनता है और उत्साह के साथ अपने कपटपूर्ण कार्य में जूट जाता है। वह मनुष्य को दुनिया के सुखविलास तथा दूसरे प्रकार के आंनन्द का उपभोग करने में फंसा देता है और इस प्रकार वह उनके ज्ञानशक्ति को शिथिल कर देता है, इसीलिए वे उन बातों को नहीं सुन सकते जो उनके लिए अति आवश्यक है।

(4) शाश्वत मुद्दों से आपके विचारों को विचलित करने के लिए कौन से तीन मुख्य विभाजन शैतान उपयोग कर रहा हैं ?

और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और और वस्तुओं का लोभ उन में समाकर वचन को दबा देता है। और वह निष्फल रह जाता है। (मरकुस 4:19)

शैतान इस बात को भली भांति जानता है कि यदि वह ऐसी स्थिति उत्पन्न कर सके कि लोग प्रार्थना करने और पवित्रशास्त्र पढ़ने में अवहेलना करें तो वे उसके आक्रमण का सामना नहीं कर सकेंगे।

(5) शैतान उन लोगों का उपयोग कैसे करता है जो मसीह होने का दावा करते हैं लेकिन नहीं हैं ?

अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत

जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। (रोमियो 16:17)

इसी उद्वेश्य से वह दुनियाँ से संबंधित ऐसी ऐसी चीजों तथा साधनों का अविष्कार करता रहता है, जिनमें लोगों का ध्यान कंन्द्रित रहे। कुछ ऐसे लोग भी पाए जाते है। जो भक्ति का भेष धारण करते हैं, परन्तु सच्चाई पर चलना छोड़कर वे उन लोगों के चरित्र के अवगुणों अथवा उनके विश्वास में किसी बात का त्रुटि पा कर उसकी चर्चा करना अपना धर्म समझते हैं। जो उनके आचार-विचार में सहमत नहीं होते, अथवा उनके समान नहीं चलते। ऐसे लोग ही शैतान के मुख्य सहायक हैं। भाइयों पर दोष लगाने वालों की संख्या कम नहीं होती। जब परमेश्वर के सेवक उसकी सच्चे मन से उपासना करते है, उस समय वे उन्हें बाधा देने में सक्रिय रहते हैं। जो सच्चाई से प्रेम रखते हैं और उनके अनुसार चलने का प्रयत्न करते हैं, उनके वचनों और कामों को झूठा प्रमाणित करने के लिए शैतान के शिष्य कोशिश करते रहते है। वे ख्रीस्ट के लिए बड़े उत्साह से आत्मा त्याग कर के बड़े तन-मन से प्रचार के काम में लगे रहने वालों के विषय में और उनके प्रत्येक सच्चे और उदारपूर्ण कार्य के विषय में शैतान उलट फेर की बातें बताना अपना कर्तव्य समझते हैं। इतना से संन्तुष्ट न होकर वे अनुभवहीन लोगों के मन में झूठी बातों को भर कर संदेह उत्पन्न कराते हैं। वह जो पवित्र और धर्मी है उसे वे हर उपाय से अपवित्र और कपटी प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं।

(6) पवित्रशास्त्र इन धोखेबाजों की पहचान कैसे करता है ?

उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोग क्या झाड़ियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से

अंजीर तोड़ते हैं? (मत्ती 7:16)

ऐसे लोगों से किसी को धोखा नहीं खाना चाहिए। इसे हम शीघ्र जान सकते है कि वे किस की संतान हैं, किस के आदर्श पर चलते हैं, और किस का कार्य करते है। ‘‘उनके फलों से उन्हें पहचानोगे’’ (मत्ती ७:१६)। उनका काम शैतान के जैसा है। वे ‘‘हमारे भाईयों पर दोष लगाने वाले,’’ (प्रकाशित वाक्य १२:१०) चित्त बिगड़ने तथा झूठा कलंक लगाने वाले हैं। लोगों को फंदा में फंसाने के लिए महाछली के सहायकों के पास बहुत से भ्रम में डालने वाली धारणाएं हैं। जिन्हें शैतान नाश करना चाहता है। उनकी रूचि और योग्यता के अनुकूल उसने पहले से ही उनके धर्म विरूद्ध मत प्रस्तुत कर रखा है। मंडली में कुटिलता और आचरण नहीं सुधारने वाले तत्वों को उत्पन्न करता है, जो संदेह और अविश्वास को बढ़ाते हैं। और वे जो परमेश्वर के कार्य की उन्नति चाहते हैं और उसके साथ साथ स्वयं बढ़ना चाहते हैं उनके कार्य में बाधा डालना ही उसकी योजना है। बहुत से ऐसे लोग हैं, जिनका ईश्वर पर नहीं और न ही उसके बचनों पर सच्चा विश्वास है। वे तो केवल सच्चाई के कुछ सिद्धान्तों को स्वीकार कर लेते हैं और अपने को मसीही कहते हैं ऐसे लोग अपने भूल विचारों को पवित्रशास्त्र का सिद्धान्त बनाते हैं।

(7) सत्य को स्वीकार करने का परिणाम क्या है ?

और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (यूहन्ना 8:32)

मनुष्य का विश्वास कुछ भी हो उससे कुछ हानि नहीं है। इस प्रकार का विचार ही शैतान का बड़ा धोखा है। वह यह जानता है कि सत्य जिसे प्रेम के साथ ग्रहण किया जाता है वह ग्रहण करने वाले के हृदय को पवित्र करता है। इसी लिए वह झूठे सिद्धान्तों, कहानियों और दूसरे सुसमाचार को सत्य के स्थान में रखने का प्रयत्न करता है। आरम्भ से ही परमेश्वर के दास झूठे

शिक्षकों का विरोध करते आ रहे हैं। ये झूठे शिक्षक न केवल दुष्ट पापी हैं, पर वे प्राण घातक झूठे सिद्धान्तों को लोगों के हृदय में बैठा देते हैं। परमेश्वर के वचन पर जो विश्वास रखते थे उनको भरमाने वाले लोगों से एलियाह, यिर्मयाह, पौलूस आदि बड़े धर्मगुरूओं ने बड़े साहस और दश्ढ़तापूर्वक विरोध किया था। वह छुटकारा जो सच्चे धार्मिक विश्वास को महत्व नहीं देता उसे अनुमोदन सच्चाई के पवित्र रक्षकों की दश्ष्टि में अच्छा नहीं जंचा। सच्चाई के पवित्र रक्षकों की दश्ष्टि में जो सच्चे धार्मिक विश्वास को महत्व नहीं देते उनके पक्ष में वे अनुमोदन नहीं करते।

(8) उन लोगों का क्या होगा जो अपनी मान्यताओं को फिट करने के लिए शास्त्र को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं ?

वैसे ही उस ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी है, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं खींच तान कर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। (2 पतरस 3:16)

मसीही की अनिश्चित तथा काल्पनिक पवित्रशस्त्र की व्यख्या जो धार्मिक विश्वास के संबध में परस्पर विरोधी सिद्धान्त हैं, उसे उन्हें शैतान ही ने मनुष्यों को भ्रम में डालने के लिए रचा है। जिनके द्वारा उनका मन घबड़ा जाए और वे सच्चाई को समझाने न सकें। मसीही जगत में मंडलियों के बीच में जो फूट और भिन्नता पाई जाती है, वे विशेषकर अपने अपने सिद्धान्त को सच बताने के लिए पवित्रशास्त्र को खींचतान करने की जो प्रचलित रीति है उसी का परिणाम है। परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए उसके वचन को नम्रता के साथ अध्ययन करना छोड़ कर बहुत से

लोग केवल कुछ अनोखी या नई बात को पता लगाने का प्रयत्न करते हैं।

(9) उन्हें क्या चेतावनी दी गई है जो लोग सोच सकते हैं परमेश्वर के शब्द का अर्थ बदलने के लिए?

मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखीं हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिस की चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा॥ (प्रकाशित 22:18-19)

भ्रमिक सिद्धान्तों या ईसाई मत के विरूद्ध रीति–विधियों को बनाए रखने के लिए कुछ लोग पवित्रशास्त्र के ऐसे पदस्थलों को अपने तर्क का समर्थन करने के लिए उद्धश्त करते हैं, जिनका उपर या नीचे कुछ संबंध नहीं रहता। कभी कभी पदस्थल के अंश को लेते हैं जब कि पद का शेष भाग बिल्कुल उल्टा अर्थ प्रकट करता हैं। धूर्त सांप के समान वे उन असंबद्ध बचनों के पीछे दुबके रहते हैं जो उनकी शारीरिक अभिलाषाओं को पुरा करते हैं। इस प्रकार बहुत से लोग जानबुझ कर परमेश्वर के वचन का उल्टा पलटा अर्थ लगाते हैं। दूसरे जिनकी कल्पना शक्ति अधिक तीव्र होती है, वे पवित्र लेख के अलंक. ारिक और सांकेतिक बातों का अपने विचारों के अनुकुल अर्थ लगाते हैं। वे पवित्रशास्त्र की गवाही का ध्यान नहीं देते और अपनी लहरी भावों को बाइबल की शिक्षा बताकर प्रचार करते हैं।

पवित्रशास्त्र के अध्ययन करने के पूर्व प्रार्थना नहीं करने, नम्र नहीं होने, सीखने का भाव नहीं अपनाने से सरल से, सरल स्पष्ट और कठिन से कठिन पदस्थल का वास्तविक अर्थ भी बदल जाता है।

(10) सबसे सरल मन के लिए प्रभु की गवाही क्या होगी ?

यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; (भजन 19:7)

पवित्रशास्त्र का भूल अर्थ लगाकर लोगों को सिखाने की अपेक्षा, बाइबल की शिक्षा लोगों को नहीं देनी अच्छी बात है। सश्जनहार की इच्छा को जानने की इच्छा रखने वालों के पथ प्रदर्शन के लिए ही बाइबल लिखी गई है। परमेश्वर ने मनुष्यों को भविष्यद्वाणी का दश्ढ़ वचन दिया है, स्वर्गदूतों और स्वयं ख्रीस्ट ने भी दानिएल और युहन्ना को उन बातों के विषय में बताया जो शीघ्र पूरी होनेवाली थी। उन महत्वपूर्ण और आवश्यक बातों को जिनका संबंध हमारे उद्धार से है उसे रहस्यपूर्ण रहने नहीं दिया गया है। उन्हें इस प्रकार प्रकट नहीं किया गया कि सच्चाई के खोजने वाले घबड़ा कर पथभ्रष्ट हो जाएं, अर्थात दूसरी और चले जाएं। यहोवा ने हबक्कूक नबी से कहा, ‘‘दर्शन की बातें लिख दे ..... साफ साफ लिख दे कि सहज से पढ़ी जाए।’’ (हबक्कूक २:२) जो प्रार्थना करके दीनता के साथ पढ़ते हैं उनके लिए परमेश्सवर का वचन स्पष्ट है। प्रत्येक सच्चा और खरा आदमी को सच्चाई का ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। ‘‘धर्म के लिए ज्योति बोई हुई है।’’ (भजन संहिता ९७:११) जब तक मंडली के प्रत्येक स्त्री या पुरूष सच्चाई के छिपे हुए खजाने के समान नहीं खोजता है, तब तक वह मंडली आगे नहीं बढ़ती।

(11) परमेश्वर इस दुनिया के ज्ञान को कैसे देखता है ?

क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है; कि वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में फंसा देता है। (1 कुरिन्थियों3:19)

आज बहुतों के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान अभिशाप हो गया है। परमेश्वर ने इस जगत की बहुत सी वैज्ञानिक और कला संबंधी बातों का पता लगाने के लिए लोगों को प्रकाश दिया है, पर प्रतिभा संपन्न व्यक्ति भी यदि उनकी खोज में परमेश्वर के वचन की सहायता न ले तो वह भी विज्ञान और प्रकाशित रहस्यों के बीच के संबंध का पता लगाते में घबड़ा जाएगा।

(12) पवित्र शास्त्र धर्मनिरपेक्ष विज्ञान को कैसे मानता है ?

हे तीमुथियुस इस थाती की रखवाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह। (1तीमु 6:20)

भौतिक और आत्मिक बातों के विषय में मानव जाति का ज्ञान अपूर्ण और अधूरा है। इसीलिए बहुत से लोग अपने विज्ञान संबधी ज्ञान का पवित्रशास्त्र की बातों से सामंजस्य (मेल) करने नहीं सकते। बहुत से लोग सिद्धान्त और कल्पना की बातों को वैज्ञानिक तथ्य समझ कर स्वीकार कर लेते हैं और वे यह समझते हैं कि परमेश्वर के वचन की ''जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है'' (१ तिमोथिसुय ६:२०) शिक्षा से जांचते हैं। सशष्टिकर्त्ता और उसके कार्य उनकी समझ से परे है। वे प्रकशतिक व्यवस्था द्वारा सशष्टिकर्त्ता

और उसके कार्य को नहीं समझा सकते इसलिए बाइबल के इतिहास को विश्वास करने योग्य नहीं समझते। जो पूराने और नये नियम के लेखों की सच्चई पर संदेह करते हें वे बहुधा एक कदम आगे बढ़ते हैं और परमेश्वर के अस्तित्व पर भी संदेह करते है और प्रकशति को ही असीमित शक्ति का श्रेय देते हैं। अपने विश्वास के एकमात्र सहारा को छोड़ कर वे अविश्वास के चट्टान पर सिर पटकते रहते हैं।

(13) मनुष्य पूरी तरह से परमेश्वर को क्यों नहीं समझ पाएगा ?

आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! (रोमियो 11:33)

इस प्रकार बहुत से लोग सच्चे विश्वास से भटक जाते हैं और शैतान उन्हें कुमार्ग पर ले जाता है। मनुष्य ने परमेश्वर से भी बढ़कर बुद्धिमान होने की कोशिश की है : मानव दर्शन ने ऐसे रहस्यों की खोज करने और अर्थ समझने का प्रयन्त किया है जिनका वे युगों तक कभी पता लगा नहीं सकेंगे, पर यदि मनुष्य केवल उसी की खोज करे और उसे समझने का प्रयत्न करे, जिसे परमेश्वर ने अपने स्वयं और अपने उद्धेश्य के विषय में प्रकट किया है, तो वे अवश्य परमेश्वर की महिमा, ऐश्वर्य और सामर्थ का ऐसा दश्श्य पावेंगे कि उन्हें अपने छोटेपन का अनुभव होगा। इस प्रकार वे अपने स्वयं तथा अपनी संतान के लिए जो बातें प्रकट की गई हैं उसे समझ कर संतुष्ट होंगे। जिस विषय में ईश्वर ने कुछ प्रकट नहीं किया है और न वह चाहता है कि हम उस, विषय को जाने, उन बातों को खोजने और उन पर अपना ध्यान लगाए रखने के लिए शैतान प्रोत्साहित करता है। यह शैतान के धोखे का सर्वोत्तम उपाय है। स्वर्ग में लूसीफर ने इस प्रकार के काम करने के कारण ही अपना प्रतिष्ठित पद खोया। परमेश्वर ने उसे अपने उद्धेश्य का भेद नहीं बताया था इसलिए वह

असंतुष्ट हो गया और उसे श्रेष्ठ पद पर प्रतिष्ठित करके जो दायित्व दिए गए थे उसकी उसने अवहेलना की। शैतान के अधीन जितने दूत थे उनके मन में असंतोष का बीज बोकर परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन नहीं करने के लिए उत्साहित करता थ।

(14) मनुष्य पूरी तरह से परमेश्वर को क्यों नहीं समझ पाएगा ?

और नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उन का उद्धार होता। और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं॥ (2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12)

वे व्यक्ति जो बाइबल की सरल तथा हृदय को स्पर्श करने वाली सच्चाई को स्वीकार करने के लिए इच्छुक नहीं हैं, वे काल्पनिक कथोप–कथन एवं कहानियों के पढ़ने में मन लगाकर समय व्यतीत करते हैं। इन कहाँनियों को पढ़ने से ही उनका अंतकरण शान्त होता है। उस सिद्धान्त में जिस में आत्मिक, आत्मत्याग और नम्रता की बातें कम होती हैं उन्हें वे सहर्ष ग्रहण करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी विषयी प्रवशतियों को संतुष्ट करने के लिए ज्ञान शक्तियों को भ्रष्ट करते हैं। पवित्रशस्त्र में ढूँढ़–ढाँढ़ करने के लिए ईश्वरीय अगुवाई के निमित्त पश्चातापी हृदय को तन–मन से प्रार्थना करना चाहिए, पर वे अपनी बुद्धि के घमंड में चूर हुए रहते हैं। शैतान हृदय की इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार रहता है और सच्चाई को न बता कर झूठी बात बताता है

और ठग देता है। इसी प्रकार पोप के सिद्धान्त ने लोगों के मनों पर प्रभुत्व कर लिया है। सच्चाई में क्रूस की बात है इसलिए उसे अस्व. ीकार करके प्रोटेस्टेंट लोग भी पोप के सिद्धान्त का पीछा कर रहे हैं। जो परमेश्वरर के वचन की अवहेलना करके न्याय-नीति तथा सुख-सुविधा की बातों को इसलिए अध्ययन करते हैं क्योंकि वे दुनियाँ से भिन्न होना नहीं चाहते। ऐसे लोग तो धार्मिक सच्चाई को छोड़ देंगे और नास्तिकतावाद को ग्रहण करेंगे। यह स्थिति उन पर स्नाप लाएगी। जो लोग सच्चाई को जान बुझ कर छोड़ देते हैं वे तरह-तरह के झूठ एवं असत्व बातों को अपनाते हैं।

(15) क्या चीजों से हमें बचने के निर्देश दिए गये हैं?

इस प्रकार तुम अपनी रीतियों से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो। (मरकुस 7:13)

जो धोखे को देखकर डरता है वह तो दूसरे धोखे को शीघ्र पकड़ लेगा। पौलुस प्रेरित ऐसे लोगों के विषय में कहता है, ‘‘सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिसे उनका उद्धार होता, इस कारण परमेश्वर उनमें एक भटकने वाली सामर्थ को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें, और कितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते बरन अधर्म से प्रसन्न होते हें वे सब दंड पाएं।’’ २ थिस्सलोनियों २:१०-१२। इस प्रकार की चेतावनी पाकर इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हम किस सिद्धान्त को अपनाते हैं। उस महां छली की सफल युक्तियों में भ्रमात्मक शिक्षाएं और प्रेतवाद का चमत्कारपूर्ण कार्य है। प्रकाश के एक दूत के भेष के रूप में वह अपने जाल को ऐसे स्थान पर फैलाता है जहां लोग आशंका नहीं करते। यदि मनुष्य केवल परमेश्वर के वचन को समझने के लिए अध्ययन करे तो वे झूठी शिक्षाओं को ग्रहण करने की परीक्षा में नहीं पड़ेंगे। सच्चाई को

अस्वीकार करने के फलस्वरूप ही वे धोखे के जाल में फंस जाते हैं।

(16) मनुष्य की परंपराओं को बहुत सम्मान रखने में क्या खतरा है ?

और उस ने उन से कहा; तुम अपनी रीतियों को मानने के लिये परमेश्वर आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो! (मरकुस 7:9)

इसी उद्धेश्य को शैतान पूरा करने का प्रयत्न करता है। उसकी एक मात्र इच्छा यह है कि ईश्वर तथा उसके वचन पर कोई विश्वास न करे। वह अविश्वासी दल का नेता है। वह अपनी सारी शक्ति से दूसरे लोगों को अपने दल में लाने के लिए फुसलाता है। संदेह करना तो आज कल लोकाचार होता जा रहा है। एक वर्ग है उसमें बहुत से लोग हैं, वे परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं करते और न यह विश्वास करते हैं कि वह उसका लेखक है क्योंकि वचन पाप की निन्दा करता है और उसे दोषी ठहराता है। जो वचन के अनुसार चलना नहीं चाहते, वे उसके लेखक को नाश करने के लिए तुले रहते हैं। वे बाइबल को इसलिए पढ़ते हैं और उसकी शिक्षाओं के धर्मोपदेश के द्वारा इसलिए सुनते हैं कि पवित्र शास्त्र में कोई दोष निकले। बहुत से लोग जो अपने कर्तव्य की अवहेलना करते हैं और उससे बचने के लिए बहाना ढुँढ़ने अथवा अपने पाप को ठीक बताने की कोशिश में नास्तिक बन जाते हैं। दूसरे वर्ग के लोग तो अपने घमंड और आलस्ययन के कारण नास्तिक सिद्धान्तों को अपना लेते हैं। वे कुछ आदरयोग्य कार्य करके प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं चाहते,

क्योंकि उसके लिए आत्म त्याग और परिश्रम करना पड़ता है। इसके विपरीत वे बाइबल के गुण–अवगुण बताने के द्वारा अपने आप को ज्ञानी होने का परिचय देकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। बहुत सी बातें हैं जिन्हें सीमित समझ रखने वाले व्यक्ति बिना ईश्वर के ज्ञान की

सहायता से समझ नहीं सकते है, उन्हें नहीं समझ सकने के कारण वे उसकी आलोचना करने का अवसर ढूंढ़ते हैं। बहुत से लोग कहते हैं कि अविश्वास, नास्तिकता या श्रद्धाहीनता के पक्ष में होना एक गुण हैं। ऐसे लोग सरलता के भेष में रहकर आत्म-विश्वास और घमंड से प्रभावित हो जाते हैं। बहुत से लोग दुसरों के मन को व्याकुल करने के लिए पवित्रशास्त्र में कुछ पाकर आनन्दित होते हैं। कुछ लोग केवल बाद-विवाद पसंद करते हैं इसलिए पहले वे गलत के पक्ष में होकर तर्क करते हैं। वे लोग यह नहीं समझते कि इस प्रकार वे स्वयं चिड़ीमार रूपी शैतान के जाल में अपने आप को फंसा रहे हैं। वे अपने आप पर अविश्वास प्रकट कर देने के वाद अपने पक्ष पर डटे रहना उचित समझते हैं। इस प्रकार वे अधर्मी लोगों से मिल जाते हैं और अपने ही हाथों से स्वर्ग के फाटक को बन्द करते है।

(17) मनुष्य की परंपराओं को बहुत सम्मान रखने में क्या खतरा है ?

सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के-बालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा॥ (लूका 11:13)

परमेश्वर ने अपने वचन में अपने ईश्वरीय चरित्र के बारे पर्याप्त प्रमाण दिया है। जो हमारी मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण है महान सत्य को स्पष्टता से दिया गया है। खरे मन से खोजने वाले प्रत्येक मनुष्य पवित्र आत्मा की सहायता से अपने आप ही सच्चाई को पा सकता है। परमेश्वर ने मनुष्यों को एक दश्ढ़ नीव दी है जिसमें वे अपने विश्वास की दीवार खड़ा कर सकते हैं।

(18) इस वचन में हम क्या महान वादा का दावा कर सकते हैं ?

यहोवा की शरण लेनी, मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है। (भजन 118:8)

फिर भी मनुष्य की सीमित बुद्धि असीम ज्ञानी की योजनाओं और उद्देश्यों को पूरी तरह से नहीं समझ सकता। हम अपनी शक्ति से खोजकर ईश्वर को नहीं पा सकते। जिस पर्दे से उसने अपने गौरव को ढंका है, उसे अपने ढीठ हाथ से उठा कर देखने की कोशीश नहीं करनी चाहिए। प्रेरित ने आश्चर्य से कहा, ''उसके विचार कैसे अथाह और उसके मार्ग कैसे अगम है।'' रोमी ११:३३। हमारे साथ ईश्वर के उस व्यवहार को और उसकी उस प्रेरणा को जिससे प्रेरित होता है, हम उतना ही तक समझ सकते हैं जितना तक उसके असीम प्रेम और दया उसकी अनंत शक्ति में मिल जाते हैं। हमारा स्वर्गीय पिता अपने ज्ञान और धाार्मिकता से सब कुछ की व्यवस्था करता है, इसलिए हमें उसके सिर सम्मुख झुकाना चाहिए। उसके उद्धेश्य में से जितनी बातों को जानने से लाभ होगा उतनी ही को वह हमारे लिए प्रकट करेगा। इससे अधिक जो बातें हैं उन्हें उसके उस सर्वशक्तिमान हाथ पर और उसके हृदय में निछावर कर देना चाहिए जो प्रेम से भरा है।

(19) पाप और अविश्वास का खतरनाक परिणाम के बारे में यह पवित्र शास्त्र क्या चेतावनी देता है ?

हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए। वरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए। (इब्रानियों 3:12-13)

वह हमारे विश्वास के बहाने को नहीं सुनेगा। क्योंकि उसने हमारे लिए उससे विश्वास करने के लिए बहुत से प्रमाण दिए हैं। जो कोई अपने संदेह को बनाए रखने के लिए साहारा ढुंढ़ते हैं वे अवश्य उसे पावेंगे, और वे जो परमेश्वर के वचन के अनुसार तब तक चलना नहीं चाहते जब तक कि सब रूकावटें दूर न हो जाए और आशंका को कोई अवसर न रहे तो ऐसों को कभी सच्चाई नहीं मिलेगी।

(20) एक संसारिक मन से स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्या होती है ?

यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उस से कहा, हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया? (मत्ती 14:31)

परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखना तो अपरिवर्तन ह्रदय का स्वाभाविक आचरण है, जो कि परमेश्वर शत्रुता हैं। पर विश्वास तो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा की गई है, और यह उन्ही पर बशद्धि होंगे, जो उससे अपनायेंगे। बिना निर्धारित प्रयत्न से कोई भी मनुष्य विश्वास में मजबुत नहीं हो सकता। अविश्वास तब बढ़ता हैं, जब उसे प्रोत्साहन करते हैं। और जब कोई मनुष्य अपने विश्वास को, परमेश्वर से दिये गए प्रमाणों पर स्थिर नहीं करके प्रश्न करने के लिए अनुमति दे देते है, तो उनके संदेह और भी अधिक दश्ढ़ होता जाता हैं।

(21) कौन से बाइबिल का सिद्धांत उन लोगों का अनुसरण करेगा जो परमेश्वर पर संदेह और अविश्वास करते हैं ?

धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ

बोता है, वही काटेगा। (गलातियों 6:7)

परन्तु जो लोग परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और उसके निश्चयता के अनुग्रह पर संदेह करते हें वे उसका अनादर करते हैं : और इस प्रकार उनका प्रभाव दूसरों को यीशु ख्रीस्त के पास लाने के बजाय उन्हें उस से दूर हटाते हैं। वे फल नहीं देने वाले पेड़ हें, जो अपने हरे-भरे पतों से भरे डालियों को दूर तक लम्बाई और चौड़ाई में फैलाए रहते हैं, और अपने नीचे रहने वाले छोटे पौधों को सूर्य की रोशनी मिलने नहीं देते हैं और इस प्रकार से उन छोटे पौधों को अपनी घनी पत्तीदार ठंढी छाया से दुर्बल कर देते हैं, और वह मुर्झा कर एक दिन मर जाते हैं। ऐसे लोगों की जीवन के काम उनके विरूद्ध में कभी न अन्त होने वाली गवाही के समान दिखाई देता है। वे संदेह और आडम्बर का बीज बों रहे हें जिसकी कटनी वे निश्चित रूप से करेंगे।

(22) सिद्धांत के संदेह से मुक्ति का पहला कदम क्या है ?

यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं। (यूहन्ना 7:17)

उन लोगों के लिए जो ईमानदारी के साथ संदेहों से स्वतंत्र होना चाहते है, सिर्फ एक ही रास्ता है। उन बातों को जिन्हें वे नहीं समझते हैं, इसके प्रति सवाल करने और निन्दा करने के बदले, उन सच्चाई की ज्योति पर ध्यान दें जिन्हें वे पहले से ही प्राप्त किए हुए हैं, तब उन्हें और भी बड़ी सत्य की ज्योंति प्राप्त होगी। उनको जो बातें समझ में आ गई हैं, उनके प्रति वे हर कर्त्तव्य को पूरा करें, और तब वे उन बातों को भी समझ सकेंगे और उसके समान समझ सकेंगे जिन पर उनका अभी संदेह है।

(23) मजबूत विश्वास प्राप्त करने के लिए हमारे पास कौन सी दो मुख्य सिद्धांत उपलब्ध हैं ?

सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है। (रोमियो 10:17)

बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा; हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं; मेरे अविश्वास का उपाय कर। (मरकुस 9:24)

(24) जो लोग ढूंढते हैं उनसे क्या वादा किया गया है ?

मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। (मत्ती 7:7)

शैतान झूठ को लोगों के सामने ऐसे रूप में रखता है कि वह सच्चाई के समान दिखाई देता है, और जो दुर्बल होता हैं वे तो झूठ के शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोग सत्य के लिए आत्मत्याग और बलिदाल की जो आवश्यकता है उन्हें नहीं करते, पर जो सच्चाई को खरे मन से जानना चाहते हें उन पर शैतान नियंत्रण नहीं कर सकता। ख्रीस्ट ही सच्ची ज्योति है, ‘‘जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है।’’ (यूहन्ना १:९) सच्चाई को पहचानने के लिए मनुष्यों को सत्य की आत्मा दी गई है।

(25) परमेश्वर हमें प्रलोभन से गुजरने की अनुमति क्यों देता है ?

परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूँ; और जब वह मुझे ता लेगा तब

मैं सोने के समान निकलूंगा। (अय्यूब 23:10)

संबंधित वचनः 1 पतरस 1:7
अगर मसीही, उन षड़यंत्रों को जिन्हें शैतान और उसकी सेना उनके विरूद्ध रच रही है नहीं जानते, पर वह जो स्वर्ग में बैठा है अपनी विशेष योजनाओं को पूरा करने के लिए उन षड़यंत्रों को व्यर्थ कर देगा। परमेश्वर अपने लोगों को परीक्षा में पड़ने देता है इसीलिए नहीं कि वह उनके दुःख से प्रसन्न होता है, परन्तु यह उनके अन्तिम विजय के लिए आवश्यक है। वह अपनी महिमा द्वारा सदा उन्हें परीक्षा से सुरक्षित नहीं करता, क्योंकि शैतान के सब प्रलोभनों को रोकने के लिए तैयार होना ही परीक्षा का विशेष उद्वेश्य है।

(26) प्रलोभन का विरोध करने की इच्छा शक्ति किससे आती ह?

तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, जरूब्बाबेल के लिये यहोवा का यह वचन है : न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (जकर्याह 4:6)

यदि ईश्वर के लोग नम्र पश्चातापी हृदय से पापों को मान कर उन्हें दूर कर दें और विश्वास से परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को मांगे तो न दुष्ट लोग और न ही शैतान परमेश्वर के कार्य में बाधा डाल सकता है और न ही उसके उपस्थिति को उसके लोगों से छिपा सकते हैं। प्रत्येक परीक्षा और प्रत्येक विरोध करने वाला प्रभाव, चाहे वह प्रकट हो या गुप्त रूप से हो उसे सफलता पूर्वक रोका जा सकता है,

(27) हमें दुष्ट के शक्तियों से डरने की जरूरत क्यों नहीं है ?

देखो, मैंने तुम्हे सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। (लूका 10:19)

शैतान भली भांति जानता है कि अति निर्बल जीवन भी जो ख्रीस्ट में बना रहता है, अंधेरे की सेनाओं की तुलना में बहुत अधिक है। यदि शैतान अपने आपको स्पष्ट रूप से प्रकट करे तो उसका सामना करना सहज है। इसीलिए वह क्रूस के सिपाहियों को उनके दश्ढ़ दुर्ग से बहकाने का प्रयत्न करता है। वह उन सबों को जो उसकी सीमा में प्रवेश करने का साहस करते हैं नाश करने के लिए अपनी सेना को साथ लेकर घात में लगा रहता है। हम उसपर भरोसा कर के नम्रता से उसकी आज्ञाओं को पालन करने से सुरक्षित रह सकते हैं।

(28) यीशु ने हमें प्रलोभन में फँसने से रोकने के लिए कौन से दो प्रावधान दिए?

जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है। (मत्ती 26:41)

संबंधित वचन : मरकुस 13:33
बिना प्रार्थना के कोई भी मनुष्य एक दिन या एक घंटे के लिए भी सुरक्षित नहीं है। इसलिए हम को विशेषकर उस ज्ञान के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, जिससे हम परमेश्वर पर भरोसा और नम्रता के साथ बाइबल का अध्ययन करना चाहिए। हमें सदा शैतान की युक्तियों से सावधान होना चाहिए और विश्वास से प्रार्थना ऐसी करनी चाहिए ‘‘हमें परीक्षा में न ला’’।

मुझे एहसास है कि शैतान का लक्ष्य दुनिया को धोखा देना है और वह मेरी बर्बादी को लाने के लिए अपनी शक्ति में हर तरीके का उपयोग करेगा। मैं इस वादे के लिए शुक्रगुजार हूं कि अगर मैंने ईमानदारी से ज्ञान और सच्चाई की तलाश की तो मैं इसे पा लूंगा और उसके धोखे में नहीं पड़ूंगा।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं समझता हूं कि शैतान मुझे भटकाने के लिए अपने समर्थक के रूप में एक जैसे विश्वास करने वाले और अविश्वासी दोनों का उपयोग करता है। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर मुझे इन शैतानी प्रभावों को समझने के लिए ज्ञान दें।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं लगातार मसीह की चेतावनी का पालन करने और पैसे के प्यार के प्रलोभन में न जाने के लिए दृढ़ संकल्प की प्रार्थना करता हूं जो मुझे उसके साथ अपने रिश्ते से दूर कर देगा।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं उन वायदों के लिए शुक्रगुजार हूं कि ईश्वर हमें बुराई पर अधिकार देंगे और मुझे कभी भी मेरे ऊपर हावी होने की अनुमति नहीं देंगे जो मैं सहन करने में

सक्षम हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि विश्वास और उनकी कृपा से मैं जय पा सकता हूं और उनके नाम को महिमा प्रदान कर सकता हूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

पाठ 5

प्रथम महाछल

मनुष्य के इतिहास के आरम्भ से ही शैतान हमारी मानव जाति को धोखा देना शुरू किया है। उसने स्वर्ग में विद्रोह किया और परमेश्वर के शासन के विरूद्ध लड़ाई में साथ देने के लिए पश्थ्वी के लोगों को अपने दल में मिला लेना चाहा। आदम और हवा परमेश्वर की व्यवस्था को पालन करने के कारण पूर्णतः सूखी थे। यह बात शैतान के विचार के विरूद्ध गवाही देती थी कि परमेश्वर की व्यवस्था कठोर है। कि उसके प्राणियों के लिए इससे लाभ नहीं है। इसके अतिरिक्त जब पाप रहित जोड़ के लिए एक सुन्दर घर तैयार किया गया तो शैतान के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई। उसने उनके पतन के लिए दश्ढ़ निश्चय किया। उसने उन्हें परमेश्वर से अलग किया और अपने वश में करके पश्थ्वी पर अपना अधिकार जमा लिया और महान परमेश्वर के विरूद्ध अपना राज्य स्थापित किया।

(1) परमेश्वर की इच्छा का तत्काल पालन करना क्यों अनिवार्य नहीं है ?

क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप

को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धामिर्कता है (रोमियो 6:16)

यदि शैतान अपने वास्तविक रूप को प्रकट किया होता तो आदम और हवा उसे शीघ्र भगा देते क्योंकि इस घातक वैरी के बारे में उन्हें चेतावनी दी गई थी, पर उसने अंधकार में अपने अभि-प्राय को छिपाते हुए काम किया कि वह अपना उद्धेश्य पूरा करके सफलता प्राप्त कर सके। उस समय सांप बहुत आकर्षक दिखाई देता था। इसीलिए उस रूप को धारण करके उसने हवा से कहा, ‘‘क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा कि तुम बाटिका के किसी वश्क्ष का फल न खाना ?’’ (उत्पत्ति ३:१) यदि हवा छलने वाले के साथ अधिक बात नहीं करती तो वह सुरक्षित रहती, परन्तु उसने उसके साथ वार्तालाप करने का साहस किया। इसीलिए वह उसके जाल में फंस गई। इसी प्रकार से लोग सत्य के मार्ग से भटक जाते हैं। परमेश्वर जिन बातों को उनसे अपेक्षा करता है उस पर वे केवल संदेह ही नहीं पर तर्क करते हैं। ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करने की अपेक्षा मनुष्यों के उन सिद्धान्तों को स्वीकार करते हैं जिस में शैतान की युक्तियाँ छिपी रहती हैं।

(2) क्या आदम और हव्वा ने कितना बड़ा धोखा पे विश्वास करना चुना ?

तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, (उत्पति 3:4)

‘‘स्त्री ने सर्प से कहा बाटिका के वश्क्षों के फल हम खा सकते हैं, पर जो बश्क्ष बाटिका के बीच में है उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा कि तुम उसको न खाना न उसको छुना भी, नही तो मर जाओगे। तब सर्प ने स्त्री से कहा तुम

निश्चय न मरोगे बरन परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओं उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।'' (उत्पत्ति ३ः२–५) उसने बताया कि वे परमेश्वर के तुल्य हो जाएगें। शैतान के प्रलोभन में पड़कर हवा ने पाप किया और आदम ने अपनी पत्नी के वंशीभूत होकर पाप किया। उसने सांप की बात पर विश्वास किया कि परमेश्वर ने जो कुछ कहा है वह सब असत्य है। वे सश्ष्टिकर्त्ता पर अविश्वास करके अपने मन में यह कल्पना करने लगे कि वह परमेश्वर उनकी स्वतंत्रता को प्रति. बंध लगाकर संकुचित कर रहा है। इसलिए वे यह सोचने लगे कि उसकी व्यवस्था को नहीं मानने से वे और अधिक ज्ञान और गौरव प्राप्त करेंगे।

(3) उनके अपराध का तात्कालिक परिणाम क्या था ?

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उस का मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। (यशायाह 59:2)

फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिये अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ा कर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे। तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था। (उत्पत्ति 3:22-23)

(4) पाप क्या है ?

जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; ओर पाप तो व्यवस्था का विरोध है। (1 यूहन्ना 3:4)

(5) पाप का अंतिम परिणाम क्या है ?

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥ (रोमियो 6:23)

''जिस दिन तुम उसका फल खाओगे तो तुम निश्चय मरोगे'' इस वाक्य को आदम ने पाप करने के बाद क्या अर्थ समझा ? क्या वह वही अर्थ समझा जिसे शैतान ने समझाया था कि वह जीवन की श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त करेगा ? अगर ऐसा ही अर्थ होता तो सचमुच आज भी आज्ञा नहीं मानने से बहुत लाभ होता और शैतान मनुष्य जाति का उपकारक होता परन्तु आदम को ईश्वर के वचन का अर्थ ऐसा नहीं मिला। ईश्वर ने कहा था कि मनुष्य अपने पाप के कारण उस मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।'' (उत्पति ३:१९) तुम्हारी आंखे खुल जाएगी'' शैतान के इस बचन का अर्थ ठीक था। आदम और हवा ने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी इसलिए उनकी आंखे खूल गई कि वे (हव्वा शैतान के जाल में फंस गई और इसका परिणाम यह हुआ कि आदम ने भी पाप किया और उन्हे पाप का परिणाम समस्त मानव जाति को भोगना पड़ रहा है।) मुर्खता को पहचान सके। उन्होंने दुष्ट को पहचाना और आज्ञा नहीं मानने का कड़वा फल चखा। अदन की बारी के बीच में जीचन का वश्क्ष था। उसके फल में अनंत जीवन की शक्ति थी। यदि आदम परमेश्वर की आज्ञाकारी बना रहता तो वह बराबर इस पेड़ के पास पहुंच सकता और सदा के लिए जीवित रहता। उसने पाप किया और वह जीवन के वश्क्ष के फल खाने से बंचित हो गया। इसलिए वह मश्त्यु के अधीन हो गया। ''तू मिट्टी में फिर मिल जाएगा,'' यह ईश्वरीय वाक्य अनंत नाश की और संकेत करता है।

(6) मनुष्य को अमरता प्राप्त करने की एकमात्र आशा क्या ह?

पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया। (2 तीमुथियुस 1:10)

मनुष्य आज्ञापालन करने से अमर हो सकता था, पर उसे उसने खो दिया। आदम अपनी सन्तान को वह वस्तु नहीं दे सकता था जो उसके पास नहीं थी, और यदि परमेश्वर अपने पुत्र के बलिदान द्वारा उस मनुष्य जाति के लिए अनंत जीवन न लाता तो उस पतित मनुष्य जाति की कुछ आशा नहीं रहती। जब ''मश्त्यु सब मनुष्यों में फैल गई इसलिए कि सब ने पाप किया,'' तब खीष्ट ने ''जीवन और अमरता को उस सुसमा. चार के द्वारा प्रकाश मानकर दिया।'' (रोमियों ५:१२, २ तीमोथियों १:१०) केवल खीष्ट के द्वारा ही अनन्त जीवन प्राप्त हो सकता है। यीशु ने कहा, ''जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है पर जो पुत्र की नहीं मानता वह जीवन नहीं देखेगा।'' (युहन्ना ३:३६) यदि प्रत्येक मनुष्य इसके अनुकूल करे तो वह अनंत जीवन पा सकता है। सब ''मनुष्य जो सुकर्म में स्थिर रह कर महिमा और आदर और अमरता की खोज में हैं अनन्त जीवन'' पावेंगे। (रोमियों २:७)

(7) पापी की आत्मा का क्या होता है ?

पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा॥ (उत्पत्ति 2:17)

केवल महां छली ही एक था जिसने आदम

को आज्ञा नहीं पालन करने पर जीवन की प्रतिज्ञा की थी। अदन की बारी में सांप ने हवा से कहा था, ''तुम निश्चय न मरोगे, ''अमरता का यह पहला उपदेश था। यह बात शैतान की थी फिर भी मसीही लोग इस बात का प्रचार करते हैं और जिस प्रकार इस बात को आदि माता-पिता सच मान लिये थे वैसा ही आज मानव जाति की बड़ी संख्या इस बात को सच मानती हैं ईश्वर कहता है, ''जो प्राणी पाप करे निश्चय मरेगा,'' (यहेजकेल १८:२०)। लोग इसका यह अर्थ लगाते है कि जो प्राणी पाप करेगा वह नहीं मरेगा, परन्तु अनन्त काल तक जीवित रहेगा। मनुष्य की इस मूर्खता पर कौन आश्चर्य नहीं करेगा कि वह शैतान की बात पर विश्वास करता है और ईश्वर के वचन पर नहीं करता।

(8) परमेश्वर ने पाप और पापियों के अमरकरण को कैसे रोका ?

इसलिये आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करुबों को, और चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया॥ (उत्पत्ति 3:24)

यदि पतन के बाद मनुष्य को जीवन के वक्ष्क्ष तक, पहुंचने दिया जाता तो वह सदा जीवित रहता और इस प्रकार पाप करते हुए वह अमर बन जाता। परन्तु ''जीवन के वक्ष्क्ष को पहरा देने के लिए'' (उत्पति ३:२५) करूब और चमकती हुई ज्वालामई तलवार से आदम के परिवार में से एक को भी उस सीमा को पार करके जीवन प्रदान करने वाले फल को चखने नहीं दिया गया। इसी कारण एक भी पापी अमर नहीं हैं।

(9) अंतिम न्याय के बाद दुष्ट के शरीर और आत्मा का क्या होता है ?

जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। (मत्ती 10:28)

(10) प्रभु उन लोगों के विनाश के बारे में कैसा महसूस करते हैं जो उद्धार को अस्वीकार करते हैं ?

सो तू ने उन से यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इस से कि दुष्ट अपने मार्ग से फिर कर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो? (यहेजकेल 33:11)

प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। (2 पतरस 3:9)

मनुष्य के पतन के वाद, शैतान ने अपने दूतों को आदेश दिया कि वे लोगों को यह समझावें कि मुनुष्य स्वाभाविक रूप से अमर है। लोगों को इस भ्रम धारणा को ग्रहण करने के लिए भरमाने के बाद उन्हें उसने बताने के लिए कहा कि किस प्रकार पापियों को सदा कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत

करना पड़ेगा। अब तो अंधकार का राजकुमार अपने प्रतिनिधियों द्वारा कार्य करता है और परमेश्वर को बदला लेनेहार अत्याचारी बताता है। वह बताता है कि परमेश्वर उन सबों को जो उसे प्रसन्न नहीं करते नरक में डालता है। वहाँ वह उनकों ऐसी स्थिति में रखता है कि वे उसके क्रोध को सदा अनुभव करें और जब वे असहनीय पीड़ा झेलते हैं और अनन्त ज्वाला में तड़पते हैं तब उनका सशष्टिकर्त्ता उन्हें देखकर संतुष्ट होता है। इस प्रकार वह धूर्त शैतान अपने स्वयं के अवगुणों को मनुष्य जाति की भलाई करनेवाला परमेश्वर के गुण कह कर झूठ बोलता है। क्रूरता तो शैतान का काम है। परमेश्वर प्रेम है जो कुछ उसने बनाया था वह सब कुछ उस समय तक निर्दोष पवित्र और सुन्दर था जब तक प्रथम महा विद्रोही दुबारा पाप में प्रवेश नहीं हुआ। शैतान स्वयं ही वैरी है जो मनुष्य को पाप करने के लिए लूभाता है और यदि संभव हो सके तो वह उसका नाश भी कर देता है। जब वह अपने शिकार को पूर्ण रूप से अपने अधिकार में कर लेता है तब वह उसके सर्वनाश से अति प्रसन्न होता है। यदि उसे अनुमति दी जाए तो समस्त मानव जाति को अपने जाल में फंसा लेगा। यदि ईश्वरीय शक्ति मध्यस्तता करके उसके काम को न रोके तो आदम का एक पुत्र या पुत्री भी नहीं बचेगी।

(11) कौन सी चार विशेषताएँ परमेश्वर के सच्चे चरित्र और शासन का वर्णन करती हैं ?

कि मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूंगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी पीढ़ी तक बनाए रखूंगा। (भजन 89:4)

हमारे प्रथम माता-पिता का अपने सशष्टिकर्त्ता पर जो विश्वास और भरोसा था उसे हटा कर उन्हें जिस प्रकार उसने अपने वश में कर लिया उसी प्रकार आज भी शैतान लोगों को अपनी ओर लाने की कोशिश में है। वह परमेश्वर के राजशासन प्रणाली और उसकी व्यवस्था की

धार्मिकता पर लोगों के मन में आशंका का बीच बो रहा है। शैतान और उसके दूत अपने राजद्रोही और अराजकता के दोष को उचित प्रमाणित करने के लिए ईश्वर को अपने से अधिक खराब बताते हैं। महा छली हमारे स्वर्गीय पिता पर अपने स्वभाव की क्रूरता का आरोप लगाता है। इस प्रकार वह यह प्रमाणित करना चाहता है कि उसे स्वर्ग से निकाल कर घोर अन्याय किया गया है। उसने तो उस अन्यायी शासक की अधीनता ही केवल स्वीकार नहीं की पर वह संसार के लोगों को यह विश्वास दिलाता है कि उन्हें वह ईश्वर के कठोर बंधन से मुक्त करके ऐसी स्वतंत्रता देगा जिसे पाकर वे आनंदित होंगे। इस प्रकार वह लोगों को परमेश्वर की ओर से भटका कर अपनी ओर खींच लेता है।

(12) जब दुष्टों को दंड दिया जाएगा तो क्या बचा रहेगा ?

तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जाएंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥ (मलाकी 4:3)

हर एक प्रेम और अनुग्रह के भावना के प्रतिकुल, और यहां तक कि हमारे न्याय की अनुभूति के प्रतिकुल यह सिद्धान्त कि, मरे हुए दुष्ट एवं पापी लोग नरक तक उन्हें उन पापों के लिए यातनाएं दी जाएगी जिन्हें वे इस जगत के थोड़े दिनों के जीवन काल में किया था। इस अनन्त काल की यातना के सिद्धान्त को आज प्रायः सभी जातियों और मसीही मंडलियों में भी विस्तश्त रूप से सिखलाया जाता है।

(13) शैतानी अपने अंत में कैसे आती है ?

तेरे अधर्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्र स्थान अपवित्र हो गए; सो मैं ने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से तू भस्म हुआ, और मैं ने तुझे सब देखने वालों के साम्हने भूमि पर भस्म कर डाला है। (यहेजकेल 28:18)

यदि हम थोड़ी देर के लिए यह मान भी लें कि पापियों के लिए सनातन काल तक दण्ड और यातनाओं और नरक के आग में पापियों के कराहना और रोना को देख कर प्रसन्न होता है तो इस से परमेश्वर को क्या लाभ मिलेगा ? क्या सनातन प्रेमी परमेश्वर के कानों में आग में जलते हुए लोगों की रोने और कराहने की आवाज एक संगीत की आवाज की तरह सुनाई पड़ेगी ? इस से यही प्रमाणित होता है कि परमेश्वर का दुष्टों पर पाप से घश्णा के चलते अनन्त काल तक क्लेश का होते रहना उसके एक ऐसे बुराई को दिखायगा जो समस्त आकाश–मण्डल के शान्ति और अनुशासन के लिए विनाशकारी होगा। आह, यह तो भयानक और निन्दा के योग्य होगा। यदि पाप के प्रति परमेश्वर का घश्णा सनातन काल तक बना रहता है, इन धर्म के शिक्षकों के अनुसार सनातन काल तक अनुग्रह के आशा के बिना यातनाओं का कायम रहना, यातना सहने वालों को पागल बना देगा और जैसे वे अपने भयंकर क्रोध को अपने शाप और निन्दा द्वारा उण्डेलते हैं, वे अपने पाप के बोझा को और भी अधिक बढ़ाएंगे। इस तरह से सनातन से सनातन काल तक पाप की वश्द्धि होती रहेगी, इस से परमेश्वर की महिमा नहीं हो पाएगी। सनातन काल तक आग में जलते रहने या यातना उठाते रहने की झूठी शिक्षा द्वारा जो बुराई और हानि लाई गई है उसका अनुमान लगाना मनुष्य के दिमागी शक्ति से बाहर की बात है। बाइबल का धर्म, जो प्रेम और भलाई की बातों से भरी हुई है और शन्ति की बातों से भरपूर है, अन्धविश्वास और झूठी शिक्षाओं के कारण अन्धकारमय हो गया है। जब हम यह

देखने का प्रयास करते हैं कि शैतान कैसे परमेश्वर के चरित्र के संबंध में झूठी बातें फैलाई है, क्या हम यह सोच सकते हैं कि लोग हमारे सश्ष्टि कर्त्ता से डरे हुए और घबड़ाये हुए हैं या उस से घश्णा करते है ? परमेश्वर के प्रति भय के दश्ष्टिकोण की शिक्षा जो उपदेश मंच (पुलपिट) से सारे जगत में दी गई है इस के ध्दारा आज हजारों, हाँ करोरों लोग नाश्तिक और धर्म निन्दक बन गए हैं।

(14) इस आयत में क्या वर्णन किया गया है, जो झूठे सिद्धांत का वर्णन करता है ?

फिर इस के बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिस ने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है॥ (प्रकाशित 14:8)

सनातन काल की यातना या दण्ड का सिद्धान्त, जो एक झूठी सिद्धान्त है। इसी सिद्धान्त ने बाबुल के कोपमय मदिरा का निर्माण किया, जिसे उसने सारी जातियों को पिलाई है। (प्रकाशित वाक्य १४:८; १७:२) क्या यीशु ख्रीस्त के सेवकों (पादरियों और प्रचारकों) को, इस पाखण्ड को, या नास्तिकता को, ग्रहण करना चाहिए था और पवित्र उपदेश के मंच (पुलपिट) से क्या इसे प्रचार करना चाहिये था ? यह सचमुच में एक रहस्य है।

(15) प्रभु धर्मी और पापी दोनों को क्या देंगे ?

देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। (प्रकाशित 22:12)

अधिकांश लोग जो अनन्त पीड़ा के सिद्धान्त के पक्ष में नहीं है दुसरी भूल की ओर चले जाते हैं। वे यह समझते हैं कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के प्रेम और करूणा के रूप को प्रकट करता है। ऐसी स्थिति में उन्हें यह विश्वास करना कठिन होता है कि परमेश्वर अपने सशष्टि किए हुए प्राणियों को कैसे युगयुग जलते हुए नरक के कुंड में डाल देगा। पर वे यह विश्वास करते हैं कि आत्मा प्राकशतिक रूप से अमर है इसलिए वे सोचते है कि मनुष्य जाति अंत में बच जाएगी। बहुत से लोगों का यह धारणा है कि बाइबल की इन भयसूचक बातें जैसी लिखी गई है वैसी ठीक-ठीक पूरी नहीं होगी पर वे मनुष्यों को भय दिखाकर आज्ञापालन कराने के उद्धेश्य से लिखी गई हैं। इसीलिए पापी लोग ईश्वर की आज्ञाओं की अवज्ञा करते हुए अपने भोग विलास में लगे रहते हैं। ऐसी स्थिति में होते हुए भी वे अंत में उसकी कशपा दशष्टि के पात्र हो सकते हैं। परमेश्वर दयालू है इस बात को वे स्वीकार करते हैं और उससे लाभ उठाते हैं, वरन उसकी धार्मिकता को स्वीकार नहीं करते। वे ऐसे सिद्धान्त पर विश्वास करने लगते हैं जो संसार की ओर झूके हुए हृदय को अच्छा लगता है इस प्रकार ऐसे सिद्धान्त दुष्ट लोगों को अपनी दुष्टता के कार्यों को करने के लिए साहस बढ़ाता है।

(16) मुक्ति का आश्वासन दिए जाने से पहले क्या जरूरतमंद आवश्यकताओं को पूरा किया जाना चाहिए?

फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा। जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर

होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।
(प्रकाशित 21:6-7)

सारी वस्तुओं का वारिस होने के लिए, हमें पाप को रोकना और उस पर जय प्राप्त करना आवश्यक है। प्रभु परमेश्वर यशायाह नबी के द्वारा यह कहता है : ''धार्मियों से कहो कि उनका भला होगा, क्योंकि ये अपने कामों का फल प्राप्त करेंगे। उसके कामों का फल उसको मिलेगा।'' (यशायाह ३:१०-११) बुद्धिमान व्यक्ति कहता है, ''चाहे पापी सौ बार पाप करे अपने दिन भी बढ़ाए, तौ भी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं और अपने तई उसको सम्मुख जान कर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा। परन्तु दुष्ट का भला होने का, और न उसकी जीवन रूपी छाया लम्बी होने पाएगी, क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता।'' (सभोपदेशक ८:१२-१३) और पौलुस प्रेरित नए नियम में यह कहता है कि पापी अपने खजाना जमा कर रहा है, ''पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिए, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट प्रथम महा छल होगा, अपने निमित क्रोध कमा रहा है। वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आयगा।'' (रोमियो २:५-६; ८)

(17) परमेश्वर बगावत और पाप से कैसे निपटेंगे ?

और यहोवा उसके साम्हने हो कर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करूणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला

है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन पोतों और परपोतों को भी देने वाला है। (निर्गमन 34:6-7)

यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता, परन्तु सब दुष्टों को सत्यानाश करता है॥ (भजन 145:20)

परमेश्वर यहोवा ने अपने चरित्र और पाप के साथ निपटने के लिए अपने ही तरीके का वर्णन किया है, ‘‘यहोवा ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त और अति करूणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरंतर करूणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला है ; परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहरायगा

(18) हर पापी के लिए परमेश्वर की क्या दलील है ?

यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वादविवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे। (यशायाह 1:18)

किसी को भी परमेश्वर यहोवा उसकी इच्छा के विरूद्ध दबाव नहीं डालता है या उसके न्याय में जोर जबरदस्ती नहीं करता है। दबाव डाल कर आज्ञा मनवाने में उसे किसी तरह की प्रसन्नता नहीं होती है। वह चाहता है कि उसके हाथों द्वारा सश्ष्टि किए हुए प्राणी उसे स्वेच्छा पूर्वक प्रेम करें क्योंकि वह प्रेम प्राप्त करने के योग्य है। वह इस लिए चाहता है कि वे उसके आज्ञाओं

का पालन करें क्योंकि उनमें गुणों के प्रति सच्ची धारणा होगी वे उसे प्रेम करेंगे, क्योंकि वे उसके अच्छे गुणें की प्रशंसा करते हुए उसकी ओर आकर्षित होंगे। हमारे उद्धारकर्त्ता द्वारा दया, अनुग्रह और प्रेम की सिद्धान्तों की शिक्षा दी गई और इनका नमूना दिखाया गया, ये सब परमेश्वर की इच्छा और चरित्र की नकल थी। उसने कहा था कि उसने सिर्फ उन्हीं बातों को सिखलाया जिनको उसने अपने स्वर्गीय पिता से प्राप्त किया था। परमेश्वर यहोवा के सिद्धान्तों का हमारे उद्धारकर्त्ता के शिक्षाओं के साथ ठीक ठीक मेल था, अर्थात् ''अपने शत्रुओं से प्रेम करो'' परमेश्वर दुष्टों पर दण्ड का न्याय भेजता है ताकि इस से सारी सशष्टि की भलाई हो और साथ ही उनका भी भलाई हो जिन पर न्याय का दण्ड दिया जा रहा है। वह उन्हें आनन्दित कर सकता है यदि वह अपनी व्यवस्था के अनुसार अपने शासन और न्याय को कार्यन्वित करता है। वह अपने प्रेम के स्मारक द्वारा उन्हें घेरे रहता है। वह उन्हें अपने व्यवस्था का ज्ञान प्रदान करता है और अपने अनुग्रह देने के द्वारा उनका पीछा करता है ; परन्तु वे उसके प्रेम का अपमान करते हैं। उसकी व्यवस्था को वे रसहीन या सूर्न्य बना डालते हैं, और उसके अनुग्रह को त्याग देते हैं। जौभी वे उसके आशिषों को सदा प्राप्त करते रहते हैं फिर भी वे आशीश देने वाले का अपमान करते हैं ; वे परमेश्वर से घश्णा करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि वह उनके पापों से घश्णा करता है। प्रभु यहोवा उनके हठों को बहुत दूर तक सहता जाता है; परन्तु अन्त में उनके लिए एक चुन लेने का समय आता है जब कि उनके भाग्य का फैसला होना आवश्यक है। क्या वह इन विरोधीयों को अपनी ओर खींच लेगा ? क्या वह उन पर दबाव डाले कि वे उसकी इच्छा पर चलें ?

(19) जब वे प्रभु की उपस्थिति का अनुभव करते हैं तो दुष्टों को किस प्रकार का रोना आएगा ?

और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। (प्रका6:16)

जिन्होंने शैतान को अपने नेता के रूप में चुन लिया है, और उसी की शक्ति से नियंत्रित हैं तो वे परमेश्वर की उपस्थिति में आने के लिए तैयार नहीं हैं। उनके चरित्रों में अभिमान, छल–कपट, दुराचारित्रता, क्रूरता भरा हुआ है। क्या वे स्वर्ग में उनके साथ सदा रहने के लिए प्रवेश कर सकते हें जिनको उन्होंने इस धरती में घश्णा कर के अपमानित किया है ? एक झूठ बोलने वाले के साथ सच्चाई का कभी भी समझौता नहीं हो सकता है। नम्रता अहंकारी को संतुष्ट नहीं कर सकता है। भ्रष्ट व्यक्तियों के लिए पवित्रता ग्रहण योग्य नहीं है। स्वार्थी लोगों के लिए निस्वार्थ प्रेम आकर्षण नहीं ला सकता है। उन लोगों के लिए स्वर्ग किस तरह का आनन्द का साधन प्रदान कर सकता है जो सम्पूर्ण रूप से संसारिक भोग–विलास में और स्वार्थ की भावनाओं में लिप्त होंगे ? जिनका जीवन परमेश्वर के विरूद्ध राजविद्रोह में व्यतीत हुआ है, यदि वे अचानक स्वर्ग में पहुँचा दिए जाएं और पूर्णता की उस श्रेष्ठ और अनन्त स्थिति को वे देख सकें जो वहाँ स्थायी रूप से पाई जाती है, अर्थात् प्रत्येक जीव प्रेम से परिपूर्ण है, प्रत्येंक मुख हर्ष से प्रफुल्लित है, ईश्वर और मेम्ने की स्तुति के लिए वहाँ मधुर स्वर में गुंजता हुआ गान होता है, और उसके मुख से जो सिंहासन पर विराजमान है उद्धार पाये हुओं पर निरंतर प्रकाश की किरणें चमकती है तो क्या वे जो परमेश्वर की सच्चाई और पवित्रता से घश्णा करते हैं उस स्वर्गीय झुंड में मिलकर उनके स्तुति गान में सम्मिलित हो सकते हैं ? क्या वे परमेश्वर और मेम्ने के ऐश्वर्य को सह सकते हैं ? नहीं । इन्हें परीक्षा में सफल होने के लिए कई वर्ष दिए गए थे कि वे स्वर्ग में निवास करने के योग्य चरित्र बनाए, पर उन्होने सच्चे मन से और पवित्रता से प्रेम करना नहीं सीखा। उन्होने स्वर्ग की भाषा सीखने की कभी कोशिश नहीं की। अब तो उनके लिए

अवसर चला गया। परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह का जीवन व्यतीत करने में उन्होंने अपने आपको स्वर्ग के योग्य पात्र होने से बंचित कर दिया। स्वर्ग की स्वच्छता, पवित्रता और शान्ति उनके लिए उनके मन की यंत्रणा (तकलीफ) होगी। परमेश्वर की महिमा उन्हें भस्म कर देगी। इसलिए वे उस पवित्रस्थान से भाग जाने की इच्छा करेंगे। वे सर्वनाश चाहेंगें। वे उसके सामने से जो उद्धार के लिए मरा हट जाना चाहेंगें। दुष्टों ने अपना भाग्य स्वयं चुनकर निश्चित कर लिया। उन्होंने स्वयं अपने को स्वर्ग से बहिष्कार किया है। इस में परमेश्वर की धार्मिकता और दया की बात ही केवल दिखाई हेती है।

(20) कौन सी उद्‌घोषणा परमेश्वर अनंत काल के लिए सारी मानवता के भाग्य पे मूहर लगायेगा ?

जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे। (प्रका 22:11)

जल प्रलय के बाढ़ के समान ही उस आने वाले आग के महान दिन परमेश्वर के फैसले की घोषणा करता है कि दुष्टों के लिए उस दिन कोई उपाय नहीं होगा। ईष्वर के पास प्रस्तुत करने के लिए उनके पास कोई अच्छा स्वभाव नहीं है। उनकी इच्छा परमेश्वर के प्रति विदोह करने में संलग्न रहा है ; और जब उनके जीवन का अन्त हुआ, अब बहुत देर हो चुका है कि वे अपने विचरों को दूसरी दिशा में मोड़ें। अब आज्ञा उल्लंघन करने से आज्ञा पालन की ओर घ्रशणा से प्रेम की ओर लौटने के लिए बहुत देर हो चुका है।

(21) हाबिल की हत्या के बाद ईश्वर के बख्शने का परिणाम निकला था ?

और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। (उत्पत्ति 6:5)

अपने भाई के हत्यारे कैन को जीवित रहने देने के द्वारा परमेश्वर ने जगत के लिये एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि यदि पापी को एक अनियंत्रित पाप पूर्ण जीवन जीने की लगातार अनुमति दिया जाए तो उसका परिणाम क्या होगा। कैन की शिक्षा के प्रभाव और उसके जीवन जीने के उदाहरण या शैली के द्वारा उसे वंश के लाखों लाख लोग पाप में अगुवाई किए गए उस समय तक जब तक कि सारे जगत में ''मनुष्यों की दुष्टता बढ़ नहीं गई।'' और ''उसके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है।'' ''उस समय पश्थ्वी परमेश्वर की दशष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी।'' (उत्पत्ति ६:५;११) दुनियाँ के लिए अपने अनुग्रह में परमेश्वर ने नूह के समय दुष्ट निवासियों को जल प्रलय द्वारा नाश कर दिया। अपनी अनुग्रह में उसने सदोम के भ्रष्ट निवासियों को भी नष्ट कर दिया। शैतान की मायावी (धोखा देने वाली) शक्ति के द्वारा पाप करने वाले लोग सहानुभूति और प्रशंसा प्राप्त करते हैं और इस तरह से वे दूसरों को सदा परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करने के लिए अगुवाई करते हैं। जिस तरह की बात हमारे दिनों में भी होगी। अन्त में परमेश्वर पुनः समस्त सशष्टि के अनुग्रह के चलते उन सारे लोगों को नष्ट कर डालेगा जो उसके अनुग्रह का इनकार करेंगे।

(22) मसीह का बलिदान सभी पश्चाताप करने वाले पापियों को कैसे छुड़ा सकता है ?

क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कराण मृत्यु ने उस एक ही के द्‌वारा

राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात यीशु मसीह के द्‌वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। और व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ। (रोमियो 5:17-20)

आदम के पाप के दण्ड स्वरूप मश्त्यु सारी मानव जाती पर फैल गई। सभी एक समान मश्त्यु के मुँह की कब्र में चले जाते हैं। और उद्धार की योजना के तहत, सभी को मश्त्यु से या कब्र से बाहर किया जायगा।

(23) दुष्टों को मिलने वाली सजा का माप क्या निर्धारित करता है ?

मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। (मत्ती 16:27)

‘‘जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जलाए जाएंगे। १ कुरिन्थ्यिों १५:२२ लेकिन जब धर्मी और पापी दोनों को जिलाया जाता है तो इन दोनों के बीच में एक अन्तर होता है। जिन्हों ने भलाई की वे जीवन के पुनरूत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरूत्थान के लिए जी उठेंगे।’’ (यूहन्ना ५:१८-२६) वे जो जीवन के पुनरूत्थान के योग्य ठहराए जाते हैं, ‘‘वे धन्य और पवित्र हैं’’, ‘‘ऐसों पर दूसरी मश्त्यु का कुछ भी अधिकार नहीं।’’ (प्रकाशित वाक्य २०:६) लेकिन जिन्हों ने, पश्चाताप और विश्वास द्वारा पाप क्षमा प्राप्त नहीं किया है, उन्हें पाप का दण्ड भोगना होगा - अर्थात् ‘‘पाप की मजदूरी’’। उन्हें कितना समय तक और कितने पैमाने पर दण्ड दिया जायगा इसमें अनतर होगा, ‘‘उनके कामों के अनुसार’’, परन्तु अन्त में दूसरी मश्त्यु में उनका अन्त हो जायगा। परमेश्वर के लिये यह संभव नहीं कि वह पापियों को पाप से बचाने हेतु सदा सर्वदा तक न्याय और अनुग्रह दिखाता रहे। वह पापी व्यक्ति को उस अधिकार
से वंचित करता है जिस से उसके पापों के कारण पाने का अधिकार खो डाला है और जिसके लिए उसने अपने आप को अयोग्य सावित कर लिया है।

(24) आत्मा की अंतिम स्थिति क्या है जो पाप करता है ?

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥ (रोमियो 6:23)

जिस प्रकार तू ने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, उसी प्रकार से सारी अन्यजातियां लगातार पीती रहेंगी, वरन वे सुड़क-सुड़ककर पीएंगी, और एसी हो जाएंगी जैसी कभी हुई ही नहीं। (ओबद्दाह 1:16)

इसी तरह से पाप का अन्त समस्त दुःखों के साथ कर दिया जायगा और पाप के परिणाम से जितनी चीजे जगत में हुई सब को सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया जायगा। भजन संहिता का लेखक यह कहता है : ''तू ने दुष्ट को नाश किया है ; तू ने उनका नाम अनन्त काल के लिए मिटा दिया है। शत्रु जो है वह मर गए, वे अनन्त काल के लिए उजड़ गए हैं'', (भजन संहिता ९:५-६) प्रकाशित वाक्य में यूहन्ना, अनन्त काल को देखते हुए, वहां पर सर्वव्यपी महिमा और बड़ाई की आवाज को सुनता है जो एक साथ बोला जा रहा था। वहां स्वर्ग और पश्थ्वी का हर प्राणी परमेश्वर की महिमा कर रहा था। (प्रकाशित वाक्य ५:१३) वहां पर कोई भी खोया हुआ प्राणी परमेश्वर की निन्दा करने के लिए और शारीरिक क्लेश के पीड़ा से अनन्त काल तक चिलाने के लिए नहीं होगा। और न ही वहां उद्धार पाए हुए लोगों के महिमा के गीतों के संग नरक में यातना प्राप्त करने वाले की चिल्लाहट कभी सुनाई देगी।

(25) मरने वालों की हालत क्या होती है ?

क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उन को कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। (सभोपदेशक 9:5)

स्वभाविक अमरता की मुख्य या मूल त्रुटि मरने के बाद भी आत्मा का जीवित रहने के सिद्धान्त पर आधारित है-एक ऐसा सिद्धान्त, जैसे पापी अनन्त काल तक आग में जलते रहेंगे यह धर्मशास्त्र बाइबल की शिक्षा के विपरीत है और हमारे मानवता की चेतना और विवेक के विरूध भी है। लोकप्रिय विश्वास के अनुसार यह माना जाता है कि उद्धार पाए हुए लोग जो स्वर्ग में रहते हैं वे जगत में जो कुछ होता है उन सारी बातों को जानते हैं, विशेष रूप से उन मित्रों और संबेधियों के बारे जिन्हें वे इस धरती पर

छोड़ कर गए है। प्रश्न उठता है कि यह कैसे संभव हो सकता है कि मरे हुए लोग अपने जीवित संबंधियों को परेशानी में अपने प्यारों को पाप करते हुए देखेंगे, और उन्हें हर तरह के दुःखों से गुजरते हुए देखेंगे और उनके जीवन की निराशाओं, और उनके शारीरिक और मानसिक वेदनाओं को देखेंगे तो वे कैसे स्वर्ग में आनन्द उठा सकेंगे ? वे लोग स्वर्ग का आनन्द उठा नहीं सकेंगे ? वे लोग स्वर्ग का आनन्द कितना उठा सकेंगे यदि वे हमेशा इस धरती ही पर अपने प्रिय जनों के उपर मंडराते रहेंगे ? और यह विश्वास रखना कितना अधिक विपरीत और भ्रमात्मक है कि जैसे ही स्वास शरीर से निकल जाती है पश्चाताप नहीं करने वाली आत्मा सीधे नरक के आग में डाल दिए जाते हैं। उन लोगों को कितना क्लेश होता होगा जो अपने प्रिय जनों और मित्रों को बिना पश्चाताप के कब्र में जाते हुए देखते हैं और यह सोचते हैं कि वे पाप और क्लेश में अनन्त काल के लिए प्रवेश करने जा रहे हैं। इस तरह की विचार धारा रखने के द्वारा कितने ही लोग पागल हो चुके हैं। इन विषयों के संबंध में धर्मशास्त्र, बाइबल का क्या कहना है ?दाऊद यह कहता है कि मनुष्य जब मर जाता है वह मरे हुए स्थिति में कुछ भी नहीं जानता है, उसकी चेतना शक्ति समाप्त हो जाती है। ''उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा ; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नाश हो जाएंगी।'' (भजन संहिता १४६ : ४)

(26) जीवित क्या कर सकता है जो कि मृत नहीं कर सकता है ?

क्योंकि अधोलोक तेरा धन्यवाद नहीं कर सकता, न मृत्यु तेरी स्तुति कर सकती है; जो कबर में पड़ें वे तेरी सच्चाई की आशा नहीं रख सकते, जीवित, हाँ जीवित ही तेरा धन्यवाद करता है, जैसा मैं आज कर रहा हूं; पिता तेरी सच्चाई का समाचार पुत्रों को देता है॥

(यशा 38:18-19)

जब हिजिकिय्याह राजा ने प्रार्थना किया और उसके प्रार्थना के उत्तर में उसकी आयु को पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दिया गया, तब राजा परमेश्वर के प्रति अति कश्तज्ञ हो कर उसके महान कश्पा के लिए महिमा का गीत गाया था। अपने इस गीत में वह बतलाता है कि वह क्यों प्रसन्न है : ''अधोलोक (कब्र) तेरा धन्यवाद नहीं कर सकता, न मश्त्यु तेरी स्तुति कर सकती है ; जो कब्र में पडे हैं वे तेरी सच्चाई की आशा नहीं रख सकते जीवित हाँ जीवित ही तेरा ध्न्यवाद करता है : जैसा मैं आज कर रहा हू।'' (यशयाह ३८:१८-१६) जगत के लोकप्रिय धर्म विश्वास या धर्म शिक्षा यही दिखलाते हें कि मरे हुए सब धर्मी लोग अभी स्वर्ग में हें और वे परम आनन्द में प्रवेश कर चुके हें और अभी वे अपने अविनाशी जीभ से परमेश्वर यहोवा की बड़ाई कर रहे है : परन्तु हिजिकिय्याह मरे हुए लोगों के लिए कोई ऐसी महिमा की बात नहीं देख सकता है। वह भी भजन संहिता के लेखक की बातों से या उसके शिक्षा से सहमत है, जिसमें यह लिखा हुआ है कि ''मश्त्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता ; अधोलोक (कब्र) में कौन तेरा ध्न्यवाद करेगा?'' मश्तक जितने चुपचाप पड़े हैं, वे तो यहोवा की स्तुति नहीं कर सकते।'' (भजन संहिता ६:५ ; ११५:१७)

(27) राजा दाउद आज कहाँ है ?

हे भाइयो, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूं कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उस की कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है। (प्रेरित 2:29)

सच बात तो यही है कि दाऊद उस समय तक कब्र में पड़ा रहेगा जब तक पुनरूत्थान यह प्रमाणिन न कर दे कि धर्मी लोग मरने के तुरन्त बाद स्वर्ग नहीं जाते हैं। वे लोग सिर्फ

पुनरूत्थान प्राप्त करने के बाद ही स्वर्ग जाएंगे ; और वह इस बात की सच्चाई पर निर्भर करता है कि यीशु खीस्त मश्तकों में से जी उठा है ; कि अन्त में दाऊद पदमेश्वर पिता के दाहिने हाथ बैठ सकता है।

(28) पुनरुत्थान के दिन मरे हुए लोग कहाँ से आएंगे ?

इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। (यूहन्ना 5:28-29)

(29) जो उसके आने से पहले स्वर्ग या नरक में जाने के लिए मर गया हैए जो उसके लिए तार्किक नहीं हैए तो आने वाले समय में मसीह उनका उद्धार कैसे करेगा ?

देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। (प्रका 22:12)

और पौलुस ने भी ऐसा कहा : ‘‘यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है ; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। बरन जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हुए।’’ (कुरिन्थियों १५ : १६–१८) यदि मरते–मरते ही धर्मी लोग चार हजार सालों से

सीधे स्वर्ग चले गए हैं, तो पौलुस प्रेरित कैसे यह कह सकता था कि यदि पुनरूत्थान या जी उठना नहीं है तो, ‘‘वे भी जो मसीह में सो गए हैं नाश हुए’’ तो फिर पुनरूत्थान की आवश्यकता ही नहीं होती।

(30) मसीह के स्वर्गारोहण के समयए उनके पास कौन सा अनमोल वचन था जो उनके लौटने के लिए ललायित हैं ?

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

(यूहन्ना 14:2-3)

लेकिन प्रभु यीशु जब अपने चेलों को छोड़ कर जा रहा था उस समय उसने उन्हें यह नहीं कहा कि तुम लोग शीघ्र ही मेरे पास स्वर्ग आओगे। उसने तो यही कहा था। ‘‘मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ।’’ ‘‘और यदि मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊँगा, कि जहां मैं रहूँ वहां तुम भी रहो।’’ (यूहन्ना १४ः२–३) इसके आगे प्रेरित पौलुस भी यह कहता है : ‘‘क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा ; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फुँकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिले और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।’’ इसके बाद वह इसमें और इस बात को भी जोड़ता है, ‘‘सो इन बातों से एक दूसरे को शांति दिया करो।’’ (१ थिस्सलुनीकियों ४ः१६–१८) इस शांति

के वचनों के बीच में और उन शान्ति के बचनों के बीच क्या फर्क है जिन्हें विश्वव्यापी या सर्वव्यापी पाद्री द्वारा कही गई है, जिसका उल्लेख पहले किया गया है। उस सर्वव्यापी पाद्री मरे हुए व्यक्ति के मित्रों को इन बातों द्वारा शान्ति की बात कहता है कि, मरा हुआ व्यक्ति कितना ही बड़ा पापी क्यों न हो, जव वह इस धरती पर अपना अन्तिम स्वंस लिया उसी समय स्वर्ग दूत आकर उसे अपने साथ कर लिये। लेकिन पौलुस प्रेरित इन भाइयों को प्रभु यीशु मसीह के भविष्य में आने की बात को दिखलाता है जिस समय कब्र के बन्धन को तोड़ा जायगा, और तब यीशु खीस्त के विश्वास में मरे हुए अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए जिलाए जाएंगे।

(31) धर्मी और दुष्टों को उनके प्रतिफल प्राप्त करने से पहले क्या महान और महत्वपूर्ण घटना अवश्य होगी ?

और उस ने बड़े शब्द से कहा; परमेश्वर से डरो; और उस की महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है, और उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए॥ (प्रकाशित 14:7)

किसी भी व्यक्ति के स्वर्ग में जाने से पहले उसका न्याय किया जाना जरूरी है। और स्वर्ग में प्रवेश के पहले हर व्यक्ति के चरित्र को और उसके हरेक काम को परमेश्वर के सामने से गुजरना है उनका जाँच पड़ताल किया जाना है। और अभी व्यक्तियों का न्याय उनके जीवन के कामों के अनुसार कियाजाना जरूरी है जैसा स्वर्ग में विवरण के किताब में लिखा हुआ है। उन्हें उनके कामों के अनुसार प्रतिफल दिया जाना है।। जब मनुष्य मरता है उसी समय न्याय का काम नहीं होता है। पौलुस प्रेरित के इन बातों पर ध्यान दें : ‘‘उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा,

जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिला कर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।'' (प्रेरितों के काम १७ : ३१) यहां पर प्रेरित ने साफ-साफ शब्दों में कहा है कि इस जगत के न्याय के लिए भविष्य में एक खास समय निर्धारित किया गया। इसी समय के बारे यहूदा की पत्री में भी लिखा हुआ है : ''जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी, उस भीषण दिन के न्याय के लिए अन्धकार में जो सदा काल के लिए हैं, बन्धनों में रखा है।'' और पुनः वह हनूक के विषय लिखता है : ''देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रो के साथ आया कि सब का न्याय करे।'' यूहन्ना भी इसी तरह की बात कहता है कि ''मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा ; और पुस्तकें खोली गई .... और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय हुआ।'' (प्रकाशित वाक्य २०:१२) लोकिन अब सवाल उठता है कि यदि मरे हुए धर्मी लोग स्वर्ग में चले गए हैं और परम आनन्द और सुख भोग रहें हैं या मरे हुए पापी लोग नरक की आग में जल रहे हैं और शारीरिक पीड़ा झेल रहे हें, तो भविष्य में एक न्याय की क्या आवश्यकता है ? इन विशेष बातों में परमेश्वर के वचन बाइबल में जो शिक्षा है इनमें किसी तरह का मतभेद नहीं है और न ही किसी तरह की संदेह ही है ; इन्हें एक सर्वसाधारण मनुष्य भी समझ सकता है। लेकिन कौन सा निस्कपट या खरा मन इस वर्त्तमान सिद्धान्त या शिक्षा में बुद्धिमानी और न्यायसंगत की बात को देख सकता है ? क्या धर्मी लोग अपने न्याय के जाँच-पड़ताल के बाद इस प्रशंसा को प्राप्त करते है, ''धन्य, हे अच्छे और विश्वास योग्य दास ... . अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो'' क्या परमेश्वर के साथ हजारों वर्ष रहने के बाद यह प्रशंसा की बात उन से कही जाएगी ? क्या पापियों को नरक के आग में हजारों साल जलने के बाद जगत के न्याय करने वाले न्यायी के पास दण्ड की यह आज्ञा को सुनने के लिए बुलाया कि ''हे स्रापित लोगों मेरे साम्हने से उस अनन्त आग में चले जाओ।'' (मत्ती २५:२१, ४१) हाय, परमेश्वर के ज्ञान और उसके बचन की सत्यता

पर ऐसा भारी मजाक और ऐसी शर्मनाक गलत विचार।

(32) पुनरुत्थान तक मरे हुए किस अवस्था में रहते हैं ?

और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये। (दानिय्येल 12:2)

पवित्रशास्त्र के किसी स्थान में यह कथन नहीं पाया जाता है कि मश्त्यु के समय ही धर्मी लोग अपनी धार्मिकता का प्रतिफल पाते हैं, और दुष्टता का दंड। प्राचीनों और नवियों ने इस तरह की बात बताई है और न मसीह और उसके शिष्यों ने इस विषय में कोई संकेत दिया है। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि मश्तक मरने पर स्वर्ग नहीं जाते। जी उठने की घटना तक उन्हें सोते हुए बताया गया है। १ थिस्सा. ेलोनिकियों ४:१४, अय्यूब १४:१०–१२। उस दिन जब चांदी का तारा ढीला हो जाता है और सोने का कटोरा टुटता है (सभोपदेशक १२:६) तब मनुष्य की विचार धारा नष्ट हो जाती है। वे जो कब्र में जाते हैं वे मौन रहते हैं। जो कुछ पश्थ्वी पर किया जाता है उस विषय में वे कुछ नहीं जानते। अय्यूब १४:२१। मश्त्यू तो थकति पवित्र जनों के लिए विश्राम है। समय चाहे लंबा अथवा छोटी हो उनके लिए वह एक पल जैसा है। वे सोते हैं, और परमेश्चर की तुरही की आवाज सुनकर वे अनंत जीवन के लिए जाग जाते है। ‘‘क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे। ... . और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और वह मरणहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा कि जय ने मश्त्यु को निगल लिया है।’’ १ कुरिन्थी १५:५२–५५।

(33) पुनर्जीवित धर्मी लोगों की जीत की आंसू किस प्रकार होगी?

वरन हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; क्योंकि हम ने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी कि उस ने मसीह को जिला दिया यद्‌यपि नहीं जिलाया, यदि मरे हुए नहीं जी उठते। (1कुरिन्थियों:55)

जैसे वे गहरी नींद से उठाए जाते हैं वैसे ही वे उसी समय की बात को सोचना आरम्भ करेंगे जब उनके प्राण निकल रहे थे। अन्तिम संवेदना मश्त्यु की पीड़ा थी, अन्तिम विचार यह था कि वे कब्र में जा रहे थे। जब वे कब्र से जी उठेंगे उस समय उनका, पहिला विचार विजय ध्वनि से गुंज उठेगा, ‘‘हे मश्त्यु तेरी जय कहाँ रही ? हे मश्त्यु तेरा डंक कहा रहा ?’’

मुझे एहसास है कि मानव जाति के लिए पहला धोखा था ‘‘ये निश्चित रूप से नहीं मरेंगे।" यह स्पष्ट है कि बाइबल सिखाती है कि अप्रायश्चित पाप का अंतिम परिणाम शरीर और आत्मा दोनों के लिए अंतिम मृत्यु लायेगा।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

मैंने परमेश्वर के वचन में पाया है कि अमरता के लिए हमारी एकमात्र आशा मसीह के बलिदान को स्वीकार करना है।

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं देखता हूं कि महान विवाद और शैतान का प्रयास दुनिया को यह समझाने के लिए है कि परमेश्वर की शासन कठोर और अनुचित है। लेकिनए यह पवित्रशास्त्र में स्पष्ट है कि सभी परमेश्वर के निर्णय धर्मी न्यायसंगत और दयालु हैं।

घेरा लगायें   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं इस तथ्य में परमेश्वर की दया देखता हूं कि उनका उचित प्रतिफल प्राप्त होने के बाद दुष्टों को न तो उनके शरीर या आत्मा को अंतहीन उम्र के लिए पीड़ित होने के लिए छोड़ दिया जाएगा बलकि नरक की आग में नष्ट कर दिया जाएगा।

घेरा लगायें   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैंने पवित्रशास्त्र में पाया है कि मरे हुए लोग परमेश्वर की स्तुति करने वाले स्वर्ग में नहीं हैं। उनके पास किसी भी प्रकार की कोई भावना विचार या जागरूकता नहीं है लेकिन पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में अपनी कब्र में सो रहे हैं।

घेरा लगायें   हाँ   निर्णय नहीं लियें

यह जानकर मुझे शांति मिलती है कि वे इस दुनिया के अन्याय से पीड़ित अपने प्रियजनों का अवलोकन नहीं कर

रहे हैं। वे मसीह के दूसरे आगमन पर पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में अपनी कब्र में सो रहे हैं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

यह मेरी प्रार्थना है कि मैं उन वफादार अनुयायियों में से रहूँगा जो रोते हुए कहते हैं | हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ है? हे कब्र वे कहां जीत रहे हैं?"

घेरा लगायें हाँ निर्णय नहीं लियें

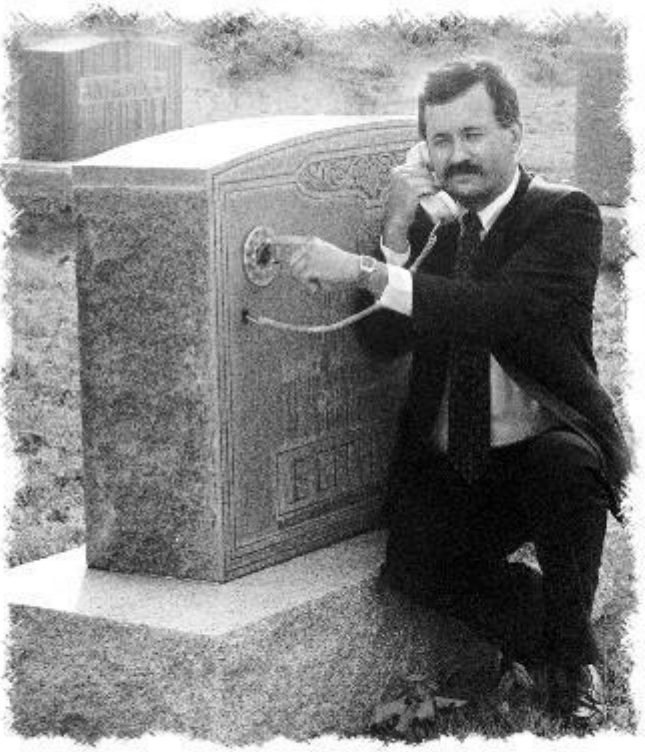

पाठ 6
क्या मृतक हमसे बात कर सकते हैं

पवित्र दूतों की सेवकाई के विषय पवित्र शस्त्र में जो बातें लिखी हुई हैं वह सत्य और विश्वसनीय हैं और खीस्ट के सभी अनुगामियों के लिये बहुमूल्य है। परन्तु साधारण बाइबल के पंडितों के द्वारा बाइबल की इस शिक्षा को अस्पष्ट कर बहुत सारी गलत शिक्षाएँ लायी गई हैं। अमरता का साधारण सिद्धान्त मुर्तिपूजक दर्शन शस्त्र से लिये गए हैं और महान धर्म पतन के अन्धकार युग में इसे मसीहियों के विश्वास के साथ जोड़ा गया है। धर्मशास्त्र में लिखा हुआ वचन ''मुर्दे कुछ नहीं जानते'' के बावजूद भी बड़ी चालकी से धर्मशास्त्र में आत्मा की अमरता को सत्य मान कर सिखा रहे हैं। अधिकांश लोग विश्वास करते हैं कि ये सेवा करने वाली आत्माएँ मुर्दों की हैं जो हमारे उद्धार पाने के लियें सेवा करने आती हैं। धर्मशास्त्र की इस गवाही से स्वर्गीय दूत मानव इतिहास से पूर्व उसके मरने के पहले से हैं और मनुष्यों की सेवा टहल करते आ रहे हें, इसके बावजूद भी मूर्दों की आत्मा पर विश्वास कर रहें हैं।

(1) कब्र में प्रवेश करने के बाद मृतक क्या नहीं करेगा?

जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है, वैसे ही अधोलोक में उतरने वाला फिर वहां से नहीं लौट सकता; (अय्यूब 7:9)

मनुष्य के मरने पर भी उसकी चेतनावस्था का सिद्धान्त पर विश्वास कर यह सोचना कि वे जीवित व्यक्तियों की सेवा करने आते हैं, यही प्रेतवाद का आरम्भ माना जाता है। यदि मूर्दे ईश्वर और पवित्र दूतों के सामने उपस्थित होते हैं और उन्हें भविष्य की बातों के बताने का ज्ञान है तो वे क्यों नहीं पूथ्वी पर उतर कर जीवित लोगों को आमने सामने उपदेश देते हैं ?जब साधारण धर्म पंडितों के द्वारा यह बताया जाता है कि मुर्दों की आत्माएँ इस पश्थ्वी पर उनके मित्रों के ऊपर हाथ फैलाये रहते हैं तो वे क्यों उनके साथ बातें नहीं करते और बुराई से बचने के लिये चितौनी नहीं देते और उनके दुःख की घड़ी में क्यों शान्ति नहीं देते ?जो लोग मुर्दावस्था में भी मनुष्य की चेतनावस्था पर विश्वास करते हैं वे कैसे इन्कार कर सकते हैं कि स्वर्ग से ज्योंति के रूप में आकर आत्माएँ उनसे बात करती हैं ? यहीं पर इस जरिया को जो पवित्र समझा जाता है जिसके द्वारा शैतान अपना मतलब सिद्ध करता है। गिरा हुआ दूत अपने को स्वर्ग लोक का संवाददाता बतलाता है। जब वह यह दावा करता है कि जीवतों के साथ मूर्दो से बात करता है तो बुराई का यह राज कुमार मनुष्यों के मन को भ्रम में डाल कर झूठी शिक्षा से भर देता है।

(2) दुष्टों की सेनाओं के पास क्या क्षमता है कि वह संसार को धोखा देने के प्रयास में उपयोग करें ?

ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्मा हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकल कर इसलिये जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें।

(प्रकाशित 16:14)

उसके पास वह शक्ति है जो मरे हुए मित्रों के रूप को हमारे सामने चेहरा, बात और उसकी आवाज में कोई अन्तर ही नहीं मिलता। बहुत से लोग शैतान की इस छल की बात से खुश हो जाते हैं और यह सोच कर शांति पाते हैं कि उनके प्रिय जन स्वर्ग में सुख से जीवन बिता रहे हैं तब वे शैतान के इस धोखेबाजी के सिद्धान्त पर विश्वास करने लगते है।जब उन्हें यह विश्वास दिलाया जाता है कि मुर्दे उनसे बात करने के लिये आते हैं तो शैतान उन्हीं लोगों को दिखलाता है जो बिना पश्चाताप किये मरे हैं। वे यह दावा करते हैं कि स्वर्ग में वे खुश हैं, और उन्हें सम्मानजनक पद मिला है। इस प्रकार की गलत धारणाएँ सारे जगत में फैलायी जाती हैं और कहते हैं कि पापी और धर्मी होने में कोई अन्तर नहीं हें। मुर्दो की दुनियाँ से जो मुलाकात करने आते है वे चितौनी की बात बोलते हैं जो कभी कभी तो सत्य निकल जाते हैं। इस प्रकार जब वे एक बार विश्वास कर लेते हैं, तब ऐसे सिद्धान्तों को लाते हैं जिस से पवित्र शास्त्र पर उनका विश्वास उठ जाता है इस पश्थ्वी पर अपने मित्रों की शुभकामना के लिये गहरी दिल. चस्पी दिखा कर वे बहुत ही खतरनाक गलती की ओर अगुवाई करते हैं वे कुछ सत्य की बातों को बात कर भविष्य की घटनाओं के विषय कभी बताने में साहस करते हैं। और उनकी बातें ऐसी लगती हैं मानों सच निकल रही हैं। इस कारण उनकी झूठी शिक्षाएँ अनेक लोगों द्वारा शीघ्र ग्रहण की जाती हैं। उन्हें मनकी सरलता से ऐसा विश्वास किया जाता है मानों बाइबल का पवित्र सच्चाई है। ईश्वर की व्यवस्था को किनारे कर दी जाती है, आत्मा के अनुग्रह को तुच्छ माना जाता है और लहू की वाचा को अपवित्र माना जाता है। ये आत्माएं खीस्त के ईश्वरत्व को अस्वीकार करती हैं यहाँ तक कि सश्ष्टिकर्त्ता ईश्वर को अपने समान मानने लगते हैं। इस तरह से महान विद्रोही शैतान नई भेष धारण कर के ईश्वर के विरूद्ध संघर्ष जारी किए हुए है जो स्वर्ग से शुरू होकर अभी छः हजार वर्ष तक चला आ रहा है।

(3) इस बाइबिल के उदाहरण मेंए यह कौन था कि दुष्ट की आत्माएं रूप धारण कर लिया थां ?

उसने उस से पूछा उस का कैसा रूप है? उसने कहा, एक बूढ़ा पुरूष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है। तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिर के दण्डवत किया।

(1 शमूएल 28:14)

अनेक लोग ऐसे आत्मिक प्रकाशन को बिल्कुल धोखेबाजी कह कर बताने की चेष्टा करते हैं और इसके बोलने के तरीके को भी छली कहते हैं जो सच नहीं है। परन्तु जब छल का परिणाम कभी भी सत्य हो जाता है तो इसे अलौकिक शक्ति की करामात बताते हैं। वर्तमान में रहस्यमय ढंग से प्रेतवाद का आचानक शुरू होना न मनुष्यों की चतुराई और न छल का काम है परन्तु यह बुरे दूतों का काम है, जिन्होंने मनुष्यों की आत्मा को नष्ट करने का एक सफल युक्ति निकाली है। प्रेतवाद पर विश्वास करने के द्वारा अनेक लोग शैतान के जालमें फंसेंगे और कहेंगे कि यह मनुष्य की ही युक्ति है और जब इस प्रकाशन को उनके सामने लाया जायेगा तो उसे वे अलौकिक शक्ति का काम बतायेंगे। इस प्रकार वे धोखा खा कर ईश्वर की महान शक्ति है, कह कर ग्रहण करेगें।

(4) किन तीन श्रेणियों में शैतानी शक्तियों के अभिव्यक्ति का वर्णन है?

उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह, और अद्‌भुत काम के साथ।और नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि

उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उन का उद्धार होता। (2 थिस्सलुनीकियों 2:9-10)

ये लोग धर्म शास्त्र में लिखित और उसके साथियों के आश्चर्य पूर्ण कार्यों का ध्यान करेंगे। शैतान की शक्ति से ही फिरोन राजा के जादूगरों ने ईश्वर की शक्ति का नकल किया था और आश्चर्य कर्म किया था। पौलूस साक्षी देता है कि यीशु के दूसरे आगमन से पहले ठीक ऐसे ही शैतान के आश्चर्य कर्म दिखाई देंगे। यीशु के आने के पहले शैतान अपनी पूरी शक्ति से आश्चर्य जनक काम और चिन्ह दिखा कर लोगों को धोखा दे कर अधर्म के लिये ठगेगा। (२ थिस्लुनी २:९-१०) प्रेरित युहन्ना भी बतलाता है कि अन्तिम दिनों में आश्चर्य कर्मों की शक्ति होगी। ''यह बड़े-बड़े चिन्ह दिखाता था, यहाँ तक कि मनुष्यों के सामने आसमान से पश्थ्वी पर आग बरसाता था और पश्थ्वी के निवासियों को अपने आश्चर्य कर्म की शक्ति से भरमाता था।'' (प्रकाशित वाक्य १३:१३-१४) यहाँ सिर्फ आश्चर्य कर्म का वर्णन नहीं है लोग शैतान के एजेन्ट के द्वारा जो आश्चर्य कर्म किये जाते थे उससे ठगे जाते थे पर मनुष्यों के आश्चर्य कर्म करने के बहाने से नहीं।

(5) धोखे की शैतान की कृति क्या होगी?

क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करने वाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरने वाले हैं। और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। (2 कुरिन्थियों 11:13-14)

अन्धकार का राजकुमार बहुत वर्षो से अप. नी बड़ी शक्ति को धोखा देने के काम में लगा रखी है। बड़ी चतुराई से सब वर्ग और परिस्थिति के लोगों पर इसका उपयोग कर रहा

है। जो सभ्य और शिक्षित हैं उनके बीच अधिक कुशलता और चालाकी से प्रेतवाद को पेश करता है जिससे वे उसके जाल में सुगमता से फँस जाते हैं। प्रेतवाद को याकूब ऐसा वर्णन करता है ''यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता हैं वरन सांसारिक, शारीरिक और शैतानी है।'' (याकूब ३:१५) इसको महान धोखेबाज लुप्त भी करता है, जब इसकी जरूरत पड़ती है। वह स्वर्गीय दूत का चमकदार वस्त्र पहन कर आता है, जैसा यीशु जब जंगल में था तो दूत उसके सामने उपस्थित हुआ था, ऐसा ही स्वर्गीय दूत होने से, मनुष्यों के सामने भी आयेगा। वह लोगों के सामने ऊँची उड़ान भरने की इच्छा ले आता है, वह आनन्द दायक दश्श्यों से लोगों को लूभाता है और अपने प्रेम और स्नेह का वर्णन चिकनी और लुभावनी बातों के शब्दों की कड़ियों से भर देता है। वह लोगों के मन की उड़ान को बहुत ऊँचा उठा कर उन्हें उनकी बुद्धि पर घमंड करवाता है, जहाँ पर वे अनन्त ईश्वर को भूल जाते हैं। अपने को बड़े बना कर दुनियाँ का उद्धारकर्त्ता (यीशु) को ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर दुनियाँ का गौरव दिखाता है और उसे देने का लाालच दिखा कर उसके सामने परीक्षा लाता है वह उन मनुष्यों के सामने भी परीक्षा लाता है और उन्हें भरोसा देता है जो स्वर्गीय वचन से अपने को सुरक्षित नहीं किये हुए हैं।

(6) वर्जित ज्ञान और आत्म उमंग का स्रोत क्या है जो बुरे लोग चाहते हैं ?

यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है वरन सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। (याकूब 3:15)

जैसे शैतान ने हवा को अदन की बारी में चापलूसी की बातों से, वर्जित फल को खाने की रूचि उत्पन्न कर के और उस पर आत्मा गौरव का भावना जगा कर ठगा था वैसा ही हमें भी ठगने की कोशिष करता हैं। इन्हीं अवगुणों के कारण ही शैतान का पतन हुआ और अभी इन्हीं के द्वारा मनुष्यों को घेर कर उनकी बर्बादी चाहता है। ''अच्छे और बुरे को जान कर तुम लोग ईश्वर के समान होगे।'' कह कर शैतान

ठगता है। प्रेतवाद सिखाता है कि मनुष्य का लगातार विकास ही उसका अन्तिम रूप है ''मनुष्य को जन्म से लेकर अनन्तकाल तक ईश्वर की ओर बढ़ाना है। ''फिर कहता है हरेक मन अपना ही न्याय करेगा दूसरा नहीं ''न्याय उचित होगा क्योंकि वह अपना न्याय होगा .... सिंहासन तुम्हारे नजदीक है'' यह प्रेतवाद की शिक्षा का कहना है जैसे चेतना की आत्मा ने उन्हें जगाया। ''मेरे प्रिय लोगों सब अपतित अर्धदेव हैं' फिर दूसरा बोलता है ''कोई धर्मी और सिद्ध व्यक्ति ही खीस्त है।''

(7) केवल मानव जाति को कैसे ऊँचा उठाया जा सकता ह?

वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है। (याकूब 4:6)

इस तरह असीम ईश्वर की धार्मिकता और सिद्धता उसके सच्चे मन से आराधना करने के बदले, उसके पूर्ण धार्मिक व्यवस्था के बदले और मनुष्यों के लिये स्तर पाने के बदले शैतान ने मनुष्यों के मन में पापमय, गलत विचार और अपनी बड़ाई करने को ही सच्ची आराधना का उद्धेश्य बताया, फिर उसने कहा न्याय और चरित्र निर्माण का सिर्फ यही रास्ता है, यह प्रगति ऊपर जाने का नहीं हैं पर नीचे उतरने का है। यह नियम बौद्धिकता और आध्यात्मिकता दोनों में लागू होता है - हम देखने से बदलते हैं। दिमाग धीरे - धीरे उसी विषय को ग्रहण करता है जिस पर वह मन लगाता है जिसको वह आदर करना और प्यार करना सीखता है वही उसका अंग बन जाता है। मनुष्य अपने स्तर की शुद्धता या सत्यता या अच्छाई से कभी ऊपर नहीं उठ सकता है। यदि उसका अपनापन ही उच्च स्तर है तो

वह कभी अपने से ऊपर की स्तर तक नहीं जा सकता है, बनिस्पत वह धीरे धीरे नीचे गिर जायेगा। ईश्वर का अनुग्रह ही मनुष्य को उच्च स्तर तक ले जायेगा। यदि उसे अकेला छोड़ा जायेगा तो वह निश्चय ही गिरता चला जायेगा।

(8) आत्म अतिभोग के खिलाफ परमेश्वर के सहयोग से मनुष्य का क्या हिस्सा ह?

क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहिन को ब्याह कर के लिए फिरें, जैसा और प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफा करते हैं? (1 कुरिन्थियों 9:5)

शैतान, स्वार्थी सुखचाहने वाले बुद्धिवाद और प्रेतवादियों को कम चतुराई से पेश करता है बनिस्पत सिद्ध और बुद्धिमानों के। इसके विस्तार रूप को वे अपनी रूचि से मिलता जुलता सिद्धान्त के रूप में पाते हैं। शैतान मनुष्य के हर कमजोर स्वभाव का अध्ययन करता है। या उस प्रकार के पापों को चिन्हित करता है जिसे हर मनुष्य करता है। इसके बाद उस अवसर की ताक में रहता है जिससे वह बुरी अभिलाषा में फँसा सके। वह उन मनुष्यों के अधिकार की परीक्षा करता है जो अपने आप में ठीक दिखाई देते हैं। वह उन्हें अंसयमी बनाता है। उनमें शारीरिक दुर्बलता लाता है और साथ ही साथ मानसिक और नैतिक शक्ति को भी कमजोर करता है।। उसने नष्ट किया है और हजारों को भी बुरी इच्छा में डाल कर नष्ट कर रहा है। इस प्रकार मनुष्य के सम्पूर्ण स्वभाव को घात कर रहा है। अपने काम को पुरा करने के लिये बुरी आत्मा के सहारे बोलता है कि ''सच्चा ज्ञान व्यवस्था से भी ऊपर है।'' ''जो कुछ है वह ठीक है इसमें ईश्वर दोष नहीं लगाता है।'' और जो भी पाप किये जाते हैं वे पाप नहीं बरन् निर्दोष हैं।'' जब मनुष्ये इन्हें विश्वास करने लगता है तो वही इच्छा उनके लिये उच्चे व्यवस्था बन जाती है उन्हें पाप करने की स्वतंत्रता तो मिल जाती है और वह व्यक्ति सिर्फ अपने ही प्रति जिम्मेवार होता है। कौन आश्चर्य कर सकता है कि उस बुराई और हानि को जो चारों ओर से हाथ फैलाये है ?तब अधिक संख्या में लोग इस शिक्षा को ग्रहण करते हैं जो उन्हें काला दिल बनाने के लिये प्रोत्यसाहित करता है, आत्मा-संयम की लगाम उनके वासना या बुरी इच्छा के गले से

लटकी रहती है दिल और दिमाग की शक्ति पाशविक इच्छा में सदा के लिये बदल जाती है और शैतान उन हजारों को जो अपने को यीशु के चेले कहते हैं अपने जाल में घुसा लेता है।

(9) आत्मिकता में भागीदारी के बारे में पवित्र शास्त्र क्या चेतावनी देता है ?

ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना, और ऐसों को खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।

(लैव्यवस्था 19:31)

परन्तु किसी को भी शैतान की झूठी बातों में आकर ठगा नहीं जाना है। ईश्वर ने हमें उसके जालों से बचने के लिये बाइबल में काफी प्रकाश दिया है। जैसे पहले ही प्रेतवाद की शुरूआत कैसे हुई उसे बाता दिया गया है। यह तो पवित्र शास्त्र की सरल सिद्धान्तों के विरूद्ध महान संघर्ष है। बाइबल साफ

कहती है कि मुर्दे कुछ भी नहीं जानते, उनके सोच विचार नष्ट हो चुके हैं। सूर्य के नीचे जो कुछ भी हो रहा है उसे वे नहीं जानते हैं। वे अपने प्रियजनों के सुख व दुःख जो इस पश्थ्वी पर हो रहा है उसे नहीं जानते हैं।

(10) आत्मिकता के मुद्दे की गंभीरता को प्रकट करने के लिएए परमेश्वर ने दंड के लिये उन लोगों के लिए क्या फरमान जारी किया जो शामिल हूए थे ?

यदि कोई पुरूष वा स्त्री ओझाई वा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार डाला जाए; ऐसों का पत्थरवाह किया जाए, उनका खून उन्हीं के सिर पर

पड़ेगा॥ (लैव्यवस्था 20:27)

इससे बढ़कर ईश्वर ने मूर्दों के साथ बात करने से साफ मना कर दिया है। इब्रानियों के दिनों में भी कुछ लोग थे जो आज के प्रेतवादियों की तरह मुर्दों से बातें करने की दावा करते थे। परन्तु ये जानी पहचानी आत्माएँ जो बातें करती थी उन्हें बाइबल शैतान की आत्मा कह कर पुकारती है।'' (तुलना करे गिनती २५:१–३, भजन संहिता १०६:२८, १ कुरिन्थी १०:२० प्रकाशित वाक्य १६:१४) इस प्रकार मूर्दों से सलाह लेना ईश्वर की दश्ष्टि में घश्णित होता है और जो इस में दोषी पाया जाता था उसे मश्त्यु की सजा दी जाती थी। (लैव्यवस्था १६:३१, २०:२७) जो पहले टोन्हा, जादुगर या ओझाई का नाम था वही आज उभर कर है, जिसे मामूली समझा जाता है। जो मनुष्य मूर्दों के साथ वार्तालाप करते हैं वे यह कह कर दावा करते हें कि वह तो अन्धकार युग की कहानी थी। परन्तु प्रेतावाद जो अपनी संख्या हजारों और लाखों की गिनती में ला रहा है, जिसने विज्ञान के घेरे में अपने को लाया है, जिसने मंडलियों पर आक्रमण किया है और उसने लोकसभाओं, राजाओं के दरवारों में भी स्थान पाया है – यह बड़ा धोखा उसी पूराने टोन्हा – जादू ओझा का ही विस्तश्त नया रूप है जिसे प्राचीन काल में घश्णित काम कह और उसे मना किया गया था। प्रेतवाद के सच्चे चरित्र का यदि और कोई दूसरा प्रमाण नहीं होता तो यह मसीहियों के जानने के लिये काफी था जैसा उनके कथानुसार आत्मा और दुष्टात्मा, धार्मिकता और पाप के बीच में अन्तर नहीं समझता है, खीस्ट के पवित्र और सन्त चेलों और शैतान के दुष्ट सेवकों के बीच भी अन्तर नहीं बताता है। नीच से नीच लोगों को स्वर्ग में रह कर उनका वहाँ अच्छे पद पर होने का दावा करता है। ''कोई परवाह नहीं तुम कितने भी दुष्ट क्यों ने हो, कोई बात नहीं चाहे तुम ईश्वर पर विश्वास करो या न करो, चाहे तुम बाइबल पढ़ो या न पढ़ो कोई हर्ज नहीं है। जैसा तुम चाहते हो वैसा ही जीवन व्यतीत करो अन्त में स्वर्ग में तुम्हें घर मिलेगा ही।'' प्रेत वादी शिक्षक दावे के साथ घोषणा करते हैं – ''हरेक व्यक्ति जो बुराई करता है वह ईश्वर की दश्ष्टि में भला ही है ईश्वर उनसे प्रसन्न रहता है, न्यायी ईश्वर कहाँ है ? (मलाकी २:१७) परमेश्वर

का वचन कहता है ''शापित है वह व्यक्ति जो बूरा को भला कहता है और भला को बुरा कहता है, वह प्रकाश को अन्धकार बनाता है और अन्धकार को प्रकाश बनाता है।'' (यशयाह ५:२०)

(11) बाइबल आत्मिकता के बारे में परामर्श का एकमात्र विश्वसनीय स्रोत क्यों है ?

सत्य के द्‌वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है। (यूहन्ना 17:17)

दुष्टात्मा के द्वारा जो प्रेरित गण पथभ्रष्ट हुए थे उन्होनें इस पश्थ्वी पर ख्रिश्चियन धर्म की विरोधी बातें लिख कर कहा कि पवित्रात्मा की अगुवाई से लिखे गए है। बाइबल ईश्वर की देन है इस बात पर इन्होंने विश्वास नहीं किया। इस प्रकार ख्रिश्चियन धर्म की आशा की नींव को ढा दिया और जो ज्योति स्वर्ग का रास्ता बताती थी उसे भी बुझा दिया। शैतान जगत के लोगों को यह विश्वास दिलाता है कि बाइबल एक झूठी कहानी है या बच्चों के लिए काल्पनिक कहानी है। पर अभी उसका थोड़ा ही सम्मान है इसे बिना काम की घोषणा को प्रमुखता दिया जाता है। यह जरिया बिल्कुल उसके नियंत्रण में है। इसके द्वारा वह जगत के लोगों को विश्वास दिलायेगा कि वह क्या करेगा। जिस किताब के द्वारा उसका और उसके चेलों का न्याय होगा उसे वह छिपा देता है, और जगतके उद्धार कर्त्ता यीशु को एक साधारण व्यक्ति मानता है। जैसे रोमन सिपाहियों के मुंह को उस समय के याजक और प्राचीनों ने बन्द कर यीशु के जी उठने के समाचार का झूठा प्रचार करवाया था। उसी प्रकार इन प्रेत वादी लोगों का कहना है कि यीशु के जीवन में कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं घटी है। इस तरह यीशु को पीछे रखकर ''दुष्टात्मा के प्रकाश'' में जो आश्चर्य कर्म होते हैं उन्हें आगे रखा जाता है और यीशु के जीवन से बढिया बताया जाता है।

(12) अध्यात्मवाद किस शक्ति का दावा करता है ?

इस से पहिले उस नगर में शमौन नाम एक मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरूष बनाता यां और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे, कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है। (प्रेरितों 8:9-10)

यह सत्य है कि प्रेतवाद अभी अपने रूप को बदल रहा है, और अधिक नाकारात्मक घटनाओं को बंद कर रहा है, जिससे वह बदले हुए भेष में मसीहियों का रूप धारण कर रहा है। परन्तु उसके अपदेशों और घोषणाएँ जो प्रेस और प्लेटफॉम से लोगों के बीच कई वर्षो से चली आयी हैं वे इसके सच्चे उद्धेश्य को स्थिर रखते हैं। इन शिक्षाओं को कभी इन्कार नहीं किया जा सकता और न छिपाया ही जा सकता है। इसका वर्तमान रूप भी पहले से कई गुना सहन करने योग्य नहीं है। धोखेबाज की अधिक चतुराई के कारण अभी यह और ज्यादा खतरनाक हो गया है। पहले वह ख्रीस्त और बाइबल दोनों को इन्कार करता था परन्तु अभी इन्हें मानने का ढोंग रचता है। और बाइबल का ऐसा अनुवाद कराया गया है कि जिनका दिल परिवत्रन नहीं हुआ है उनके लिये यह अच्छा लगता है। इसके गम्भीर और गुढ़ सत्य उनके मन में कुछ प्रभाव नहीं डालता है। प्रेम को ईश्वर का गुण तो बताया गया है परन्तु इस की महानता को घटा दिया गया है और बुराई और अच्छाई के बीच कोई अन्तर नहीं बताया गया है। ईश्वर का न्यायी होना, पाप से घ्रणा करना, और पवित्र नियम को पालन करने की आवश्यकता को निर्मूल ठहराना है। लोगों को यह सिखाया जाता है कि दस आज्ञा को मानना अब जरूरी नहीं है यह उठा दिया गया है। मन भावनी बातें, उपन्यास झूठी प्रेम, कहानियाँ लोगों के मन – मस्तिष्क को ऐसा भटका देती हैं कि बाइबल जो हमारा विश्वास का आधार है उसे वे भूल जाते हैं या नहीं मानते हें। ख्रीस्ट तो पहले भी भुलाया गया था परन्तु शैतान ने लोगों की

आँखों को ऐसा अंधा कर दिया है कि वे देखते हुए भी नहीं देखने के समान होते हैं। या इस धोखे को नहीं समझते हैं।

(13) हमें धोखे से बचाने के लिए शास्त्र क्या निर्देश देता है ?

अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्ज़ित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमुथियुस 2:15)

कुछ ही लोग हैं जिन्हों ने प्रेतवाद की शक्ति की धोखेबाजी का थोड़ा आभास कर पाए हैं और उन्हें इसके प्रभाव से खतरा होने वाला है उसका एहसास (ज्ञान) भी है। बहुत से लोग सिर्फ जिज्ञासा के आधार पर इससे खिलवाड़ करते हैं। उनका इस पर कोई विश्वास नहीं है, पर जब ये इसका प्रयोग करते हैं और इसके नियंत्रण में आते हैं तो वे घबड़ाने लगते हैं वे वर्जित क्षेत्र में अपना कदम बढ़ाते जाते हैं, और उनका बड़ा दुश्मन उनकी इच्छा के विरूद्ध अपनी शक्ति से इस ओझाई जादू, टोन्हा के लुभावनी जाल को तोड़ कर मुक्त होना कठीन हो जाता है। सिर्फ ईश्वर की शक्ति ही सच्चे दिल से प्रार्थना करने वाले व्यक्ति को इस जाल से छुड़ा सकता है।

(14) किसी ज्ञात पाप में भोग का क्या परिणाम है ?

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उस का मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। (यशायाह 59:2)

जो पापमय चरित्र को अपनाता है या जानबूझ कर पाप करना पसंन्द करता है वह शैतान की परीक्षा को बुलाता है। वे ईश्वर से तथा उसके दूतों से अपने को अलग करते हैं।

जब बूरे दूत धोखे का जाल फैलाते हैं तो उनको बचाने के लिए कोई नहीं आता है और वे आसानी से शैतान के शिकार हो जाते हैं। जो उसकी शक्ति के वश में आते हैं वे थोड़ा ही जान पाते हें कि वे कहाँ जा रहे है, और उनका अंत क्या होगा। जब शैतान उनको पूर्ण रूप से कैद कर लेगा तो वह उन्हें दूसरे को नष्ट करने के लिये अपना एजेन्ट बना लेगा।

(15) क्यों कई लोग ''मजबूत भ्रम' ' पे विश्वास करेंगे ?

और नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उन का उद्धार होता।

और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। (2 थिस्सलुनीकियों 2:10-11)

यशायाह नबी कहता है ''जब वे कहेंगे कि जाने पहचाने आत्मा को ढूँढ़ो और उस जादूगार को जो झांक कर देखता और बड़-बड़ाता है तो क्यों तुम्हें ऐसे समय में ईश्वर को नहीं ढूँढ़ना चाहिए ? जीवितों के लिये मश्तकों को ढुँढ़ना है क्या ? यदि वे व्यवस्था और चितौनी के वचन अनुसार नहीं बोलते हैं तो जान लो कि उनके पास कोई ज्योति नहीं हैं'' (यश ८:१६-२०) यदि मनुष्य अपनी इच्छा से बाइबल में जो सत्य कहा गया है उसे समझा या पढ़ा होता कि मुर्दों के विषय क्या कहा गया है तो भूतवाद के प्रकाशन और उसके दावे को समझ पाता कि यह शैतान को छोड़ किसी दूसरे का काम नहीं है।

परन्तु विवेक को स्वतन्त्र रखने के वजाय कलुषित हृदय की ईच्छा पूर्ति करना लोग अधिक पसंद करते हैं, जिस पाप से प्रेम रखते हैं उसे न छोड़ कर बहुत से लोग ज्योति के पथ चलने के लिये अपनी आखों को बंद कर लेते हैं। चितौनी पाने के वावजूद भी शैतान की बातें

सुनकर आगे बढ़ते जाते हैं, और शैतान उन्हें जैसे मक्खी को मकड़ा अपनें जाल में फंसा कर उसके ऊपर और मजबूत जाल बुन कर उसे निकलने नहीं देता है ठीक वैसा ही शैतान भी करता है। क्योंकि उन्होंने सच्चाई के प्रेम को नहीं पाया है इस कारण बचाये नहीं गये। ''इस कारण ईश्वर उनके पास एक भटका देने वाली सामर्थ भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें।''

(16) जब हम परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर खड़े होते हैंए तो कौन है जो हमारा विरोध करता रहेगा ?

क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥ (रोमियो 8:38-39)

जो प्रेतवाद की शिक्षा का विरोध करते हैं वे सिर्फ मनुष्यों को ही आघात नहीं पहुँचाते हैं वरन शैतान और उसके एजेन्टों को भी। उन्होंने ऊँचे स्थानों में रहने वाले अधिकारियों, बड़ी शक्तियों और दश्ष्टात्माओं के विरूद्ध लड़ाई छेड़ दी है। शैतान को एक इंच भी जगह नहीं मिलेगी क्योंकि वह तो स्वर्गीय दूतों के द्वारा स्वर्ग से खदेड़ दिया गया है। परमेश्वर के लोग शैतान का वैसा ही सामना करेंगे जैसा हमारा यीशु ने वचन से किया था – ''यह लिखा है'' शैतान, अभी भी इन वचनों का वैसा ही उल्लेख करता है जैसा वह यीशु के दिनों में करता था। वह उसे बदल कर भ्रम पैदा कर सकता है। जो लोग इस संकट के समय स्थिर रहना चाहते हैं, उन्हें पवित्र शास्त्र में जो बातें लिखे हुई हैं उन्हें पढ़ना और समझना चाहिऐ।

(17) यदि दुष्ट आत्माएं मृतकों का सामना करती हैंए तो क्या सच्चाई हमें धोखे से बचाएगी ?

क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उन को कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। (सभोपदेशक 9:5)

बहुत से लोग दुष्टात्मा के व्यक्तिकरण अर्थात् (मश्त मित्र और परिजनों को उपस्थित कर बातें करना) जो एक जोखिम भरा विश्वास है उससे परीक्षा में गिरेंगे। ये अतिथि आत्माएँ हम से बहुत कोमल और सहानुभूति पूर्वक बातें करेंगी और अपने को सिद्ध करने के लिये आश्चर्य कर्म करेंगी। हमें इसका सामना करने के लिये बाइबल के वचनों का साहारा लेना चाहिए, जिसमें कहा गया हैं कि मुर्दे कुछ भी नहीं जानते हैं। यदि इस तरह की घटना का हमें सामना करना हो तो जान लेना चाहिए कि यह शैतान की ओर से आता है।

(18) अगर हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हैंए तो हम अपने ‘‘प्रलोभन के समय" के दौरान कौन सी महान वायदा का दावा कर सकते हैं ?

तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिये सारे संसार पर आने वाला है। (प्रकाशित 3:10)

हमारे सामने ‘परीक्षा की घड़ी है। यह सारे जगत के लोगों के सामने जो अन्तिम दिनों में बास करता है, आनेवाला है।’’ (प्रकाशित वाक्य ३ः१०) जिन लोगों का विश्वास ईश्वर के वचन में स्थिर नहीं हुआ है वे ठगे जाकर धोखा खायेंगे।

शैतान सब अधार्मिकता के धोखों से काम करेगा और जगत के लोगों को अपने नियंत्रण में करेगा। उसका धोखा देने का काम जारी रहेगा। जब लोग स्वेच्छा से उसकी बातों को मानेंगे तभी वह अपना मतलब पूरा करेगा। जो लोग सच्चे दिल से सत्य के ज्ञान की खोज करेंगे और अप. नी आत्मा को आज्ञाकारी बना कर पवित्रता से सत्य के ज्ञान की खोज करेंगे, और अपनी आत्मा को आज्ञाकारी बना कर पवित्र करने की चेष्टा करेंगे, वे शैतान से लड़ने के लिये जो तैयारी करनी है; उसे करेंगे, वही लोग ईश्वर से सुरक्षा प्राप्त करेंगे। ''क्योंकि तूने मेरे धीरज के वचन को अपने मन में रखा हैं, मैं भी तुझे रखूँगा।'' यही प्रभु की प्रतिज्ञा की वाणी है। मैं तुरन्त स्वर्ग से उस व्यक्ति की रक्षा करने के लिये दूतों को भेजुंगा जो ईश्वर पर भरोसा करता है ताकि वह शैतान के जाल से बचाया जाए।

(19) अपने लिए सत्य की खोज और स्वीकार किए बिना आम मान्यताओं की अंधी स्वीकृति में क्या खतरा ह?

मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिये मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा। और इसलिये कि तू ने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है, मैं भी तेरे लड़के-बालों को छोड़ दूंगा। (होशे 4:6)

यशायाह नबी एक डरावने धोखे का चित्रण करता है जो दुष्टों को सामना करना पुड़ेगा। वे सोचेंगे कि हम ईश्वर के न्याय से बच जायेंगे। ''तुमने कहा है कि मश्त्यु से वाचा बान्धी और अधोलोक से प्रतिज्ञा कराई है, इस कारण विपत्ति तब बाढ़ की नाई बढ़ आए तब हमारे पास न आयेगी क्योंकि हमने झूठ की शरण ली और मिथ्या की आड़ में छिपे हुए हैं (यशायाह २८ः१५) इस दल में वे लोग आते हैं जो ढिठाई से अपश्चातापी बन कर अपने को यह सन्तवाना देते हैं कि पापियों को सजा नहीं मिलेगी। हर

व्यक्ति को चाहे क्यों न दुष्ट भी हो, सब को स्वर्ग राज्य में सम्मानित जगह मिलेगी। वे ईश्वर के दूत तुल्य होगे। इससे भी बढ़कर ठीक वे लोग होगे जो कहेंगे कि मश्त्यु से वाचा बान्ध लिया है और नरक से भी समझौता किया है। यही लोग हैं जिन्होने संकट की घड़ी में धार्मिकता की रक्षा के लिये स्वर्ग से उपाय दिया गया था। उसकी अवहेलना करके सत्य को त्यागा था और इसके एवज में शैतान की धोखेबाजी प्रेतवाद के भ्रमक शरण में आये थे।

(20) वाटिका में शैतान द्‌वारा बताए गए झूठ क्या सभी आध्यात्मिकता का आधार है ?

तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, (उत्पत्ति 3:4)

शैतान जगत को भरमाने के लिये अपना अन्तिम प्रयास युगों से करता आ रहा है। उसके काम की नींव तो उसी समय से पड़ी जब उसने हव्वा को भरमाया ‘‘तुम निश्चय नहीं मरोगे जिस दिन तुम उसका फल खाओगे तब तुम्हारी आँखे खुल जायेगी, तुम भलाई और बुराई को जानने लगोगे और ईश्वर के समान हो जाओगे।’’ (उत्पत्ति ३ः४–५) थोड़ा थोड़ा करके उसने भूतवाद की प्रगति के लिये धोखा देने का महान काम की तैयारी की है। वह अभी तक इस का सम्पूर्ण स्वरूप देने की स्थिति में नही पहुँचा है। परन्तु यह दुनियाँ के आखिरी समय तक पुहँच जायेगा। नबी कहता है ‘‘मैने मेंढ़को के समान तीन दुष्टात्माओं को देखा ...... ये चिन्ह दिखाने वाले दुष्टात्मा हैं जो सारे संसार के राजाओं के पास निकलकर इसलिये जाती हैं कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें’’ (प्रकाशित वाकय १६ः१३–१४) इससे सिर्फ वही लोग बचेंगे जो ईश्वर के वचन पर विश्वास करने की शक्ति पाये हैं। और बाकी संसार के सब लोग इस भ्रम या धोखे के जाल में सभा जायेंगे। लोग अति शीघ्र घातक सुरक्षा के जाल में घुसने के लिये लुभाये जा रहे हैं। जिसका परिणाम को डोरी और धर्म की साहुल ठहराऊँगा; और तुम्हारा झूठ का

शरण स्थान ओलों से बह जायेगा, और तुम्हारें छिपने का स्थान जल से बह जायेगा। तब जो वाचा तुमने मश्त्यु से बान्धी हैं वह टूट जायेगी और जो प्रतिज्ञा अधोलक से की है न ठहरेगी। जब विपत्ति बाढ़ की नाई बढ़ आये तब तुम उसमें डूब ही जाओगे।

(21) जब यह महान विवाद बंद हो जाएगा तो बना हुआ शैतान की "झूठ का शरण" क्या होगा ?

और मैं न्याय को डोरी और धर्म को साहुल ठहराऊंगा; और तुम्हारा झूठ का शरणस्थान ओलों से बह जाएगा, और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से डूब जाएगा। (यशायाह 28:17)

अपने अध्ययन से मुझे पता है कि अंतिम दिनों में बुराई के राजकुमार हमारे दिमाग पर अपने प्रभाव को डालने का प्रयास करेंगे यह मानते हुए कि जीवित और मृत लोगों के बीच संचार मौजूद है।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं शैतान की आत्मा की अमरताए और मृत्यु में कर्तव्यनिष्ठा के दो प्रमुख धोखे को उजागर करने के लिए परमेश्वर का आभारी हूं ताकि उसके वचन से मुझे धोखा न मिले।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मुझे परमेश्वर के वचन के अध्ययन का महत्व दिखाई देता है। मैं दावा करता हूं कि परमेश्वर ने मुझसे सत्य को प्रकट

करने का वादा किया है क्योंकि मैं इसे चाहता हूं ताकि मैं शैतान के धोखे का शिकार न होऊं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मुझे एहसास है कि बाइबल हमें उस खतरनाक समय की चेतावनी देती है जिसका सामना हम पृथ्वी के इतिहास के अंत में करेंगे और मैं इस वादे के लिए बहुत शुक्रगुजार हूं कि अगर मैं उसका वचन रखूंगा तो वह मुझे रखेगा। उसकी शक्ति से मुझे अनन्त जीवन का वचन प्राप्त होगा।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

पाठ 7

भावी संघर्ष

(1) परमेश्वर के नियमों में से एक को तोड़ने के भी निहितार्थ क्या है ?

क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। (याकूब 2:10)

स्वर्ग में महा विवाद (संघर्ष) के आरम्भ होने के समय से ही शैतान परमेश्वर की व्यवस्था को नष्ट करने की कोशिश कर रहा है। इसी उद्वेश्य को पूरा करने के लिए उसने सश्ष्टिकर्त्ता के विरूद्ध विद्रोह आरम्भ किया और स्वर्ग से बाहर निकाल देने पर भी उसने इस युद्ध को पश्थ्वी पर जारी रखा है। मनुष्यों को धोखा देना और परमेश्वर की व्यवस्था के आज्ञाउलंघन के लिए लोगों को उसकाना ही उसका लक्ष्य है। इस काम में वह दश्ढ़ता से लगा हुआ है। व्यवस्था को नष्ट करने का लक्ष्य, पूरी व्यवस्था को नष्ट करने अथवा व्यवस्था में से एक को निकाल देने से, पूरा होता है। वह जो व्यवस्था के मानने में ‘‘एक ही बात में’’ चुकता है वह पूरी व्यवस्था को नहीं मानता, उस मनुष्य का प्रभाव और आदर्श आज्ञाउलंघन करने वाले के जैसा होता है और वह ‘‘सब बातें में दोषी बन जाता है।’’

(2) परमेश्वर के नियमों के क्षरण में शैतान का उद्देश्य क्या है ?

तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! वरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता: व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता। (रोमियो 7:7)

पवित्र विधियों पर अपमान लादने की इच्छा से शैतान ने बाइबल के सिद्धान्तों को बदल दिया। इस प्रकार पवित्र शास्त्र में विश्वास रखने वाले हजारों लोगों के विश्वास में त्रूटियां आ गई हैं। परमेश्वर की व्यवस्था के संबंध में अधिक समय से चलते आ रहे विवाद की अंतिम लड़ाई सत्य और असत्य के बीच में होगी। इस युद्ध में हम प्रवेश कर रहे हैं। मनुष्यों के आदेशें और यहोवा के नियमों के बीच में तथा बाइबल के धर्म और कथा कहानियों तथा परमपरागत मतों के बीच में यह युद्ध होगा।

(3) परमेश्वर के वचन और उसमें शामिल व्यवस्था का उद्देश्य क्या है ?

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है। (भजन 119:105)

इस युद्ध में धार्मिकता और सत्य के विरूद्ध के पक्ष में जितने होंगे वे अभी तत्परता के साथ तैयार कर रहे हैं। परमेश्वर के पवित्र वचन का जिसे कष्ट सह कर और लोहू बहा कर बड़े मूल्य से दिया गया है कम बहुत ही कम मुल्य लगाते हैं। सभी बाइबल को खरीद सकते है, परन्तु ऐसे बहुत कम लोग हें जो वास्तव में, इसे जीवन के पथप्रदर्शक के रूप में ग्रहण करते हैं।

(4) व्यभिचार का मूल कारण क्या है ?

बुद्धिमान लज्जित हो गए, वे विस्मित हुए और पकड़े गए; देखो, उन्होंने यहोवा

के वचन को निकम्मा जाना है, उन में बुद्धि कहां रही? (यिर्मयाह 8:9)

न केवल संसार ही, परन्तु मंडली में भी नास्तिकों की संख्या अधिक है। बहुत से लोग उन सिद्धान्तों को जो मसीही विश्वास के विशेष स्तंभ (खंभे) है अस्वीकार करने लग गए हैं। सशष्टि की रचना के महत्वपूर्ण तथ्यों (मूख्य बात) को ईश्वर की प्रेरणा से पवित्र लेखकों ने लिखा है। जैसे मनुष्य का पतन, प्रायश्चित, परमेश्वर की व्यवस्था की नित्यता आदि को मसीही लोगों में से बहुत से पूरे या कुछ अंश में अस्वीकार करते हैं, हजारों लोग जो अपनी बुद्धि आत्मनिभ·रिता पर घमंड करते हैं वे बाइबल में पूरा भरोसा रखना दूर्बलता का एक चिन्ह समझते हैं, वे पवित्र में व्यर्थ दोष निकालना और इसके अति महत्वपूर्ण सत्यों को अपने रूप में न बता कर आत्मिक रूप से प्रकट करना और उनकी कुछ और ही व्यख्या करना सर्वश्रेष्ठ ज्ञान और बुद्धि का प्रमाण समझते हैं। बहुत से धर्मोदेशक और प्रोफेसर और शिक्षक अपने विद्यार्थियों को यह बता कर सिखा रहे है कि परमेश्वर की व्यवस्था बदल दी गई हैं अथवा नष्ट कर दी गई है और वे जो अभी भी उसकी विधियों और नियमों के अनुकूल चलने कह कर बताते हैं उनका वे उपहास करते हैं अथवा उन्हें घशणित दशष्टि से देखते हैं।

(5) सत्य की इनकार करने में क्या खतरा है ?

पीलातुस ने उस से कहा, तो क्या तू राजा है? यीशु ने उत्तर दिया, कि तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूं; मैं ने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूं कि सत्य पर गवाही दूं जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है। (यूहन्ना 18:37)

जो सत्य को स्वीकार नहीं करते वे सशष्टिकर्त्ता को स्वीकार नहीं करते। वे परमेश्वर की व्यवस्था को तुच्छ समझते हैं और व्यवस्था के

देनेहारे के अधिकार को नहीं मानते। झूठे सिद्धान्तों और नियमों की मूर्ति बनाना तो काठ और पत्थर की मूर्ति बनाने जैसा ही है। ईश्वर के गुणों को असत्य बता कर शैतान मनुष्यों को उसके असत्य स्वभाव की कल्पना की प्रेरणा देता है। बहुत से लोग यहोवा के स्थान में एक दार्शनिक मूर्ति को उच्च स्थान देते हैं। जीवित ईश्वर जो अपने वचन में खीस्ट में और सशष्टि रचना के कार्यो में प्रकट किया गया है उन्हीं को कुछ लोग उपासना करते हैं। हजारों लोग प्रकशति को ईश्वर करके मानते है और प्रकशति के परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं। एलियाह के दिनों में इस्राएल के बीच में जिस रूप में मूर्ति पूजा की जाती थी वैसा ही नहीं पर कुछ दूसरे रूप में आज भी मसीही जगत में मूर्ति की पूजा की जाती है। विद्वान दार्शनिक, कवि, राजनीतिज्ञ, समाचार पत्रों के संपादक तथा फैशन केन्द्र, कॉलेज व विश्वविद्यालय, यहां तक कि कुछ धार्मिक कार्यो के लिए स्थापित संस्थाएँ फोनेशिया देश के सूर्य देवता अर्थात् बाल देवता से कुछ ही कम हैं।

(6) परमेश्वर का व्यवस्था कब तक बना रहेगा ?

तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है॥ (भजन 119:160)

इसका घातक प्रभाव इतना भयंकर है कि जितना मसीही जगत के किसी अन्य भूल को ग्रहण कर के परमेश्वर के अधिकार को साहसपूर्ण विरोध करने से नहीं होता न ही अपने विवेक का प्रत्यक्ष रूप से विरोध करने से होता है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना नियम होता है जिसका सभी आदर करके पालन करते हैं। नियम के बिना कोई सरकार ठहर नहीं सकती। तो हम कैसे यह कह सकते हैं कि स्वर्ग और पशथ्वी का सशष्टिकर्त्ता सशष्टि किए हुए प्राणियों को शासन करने के लिए व्यवस्था न बनाए ? मान लीजिए मुख्य मन्त्री प्रजाओं को यह सिखाए कि देश को शासन करने तथा नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए जो नियम कानून बनाए गए हैं वे आवश्यक नहीं हैं, और कहे कि

नियम कानून लोगों को पूरी स्वतंत्रता नहीं देते इसलिए इन्हें नहीं मानना चाहिए। ऐसी शिक्षा देने से वे कब तक उच्च स्थानों में रह सकते है ? क्या ईश्वर के नियमों में जो सब शासन प्रणाली की नींव है राज्य और राष्ट्र के नियम बढ़ कर है ? कि क्या इनके नहीं मानने से अधिक कड़ी सजा मिल सकती है ?

(7) अधर्म क्या है ?

जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; ओर पाप तो व्यवस्था का विरोध है। (1 यूहन्ना 3:4)

विश्व के शासक अपनी व्यवस्था को उठा दें और अपराधी को दंड देने एवं आज्ञाकारी को निर्दोष ठहराने के लिए संसार में कोई नियम नहीं रखे इससे तो भला यह है कि विभिन्न राष्ट्र अपने नियम कानूनों को उठा दें और लोगों को मनमाना करने की छुट दें। ईश्वर की व्यवस्था को व्यर्थ (रद्ध) कर देने से जो परिणाम होता है क्या हम उसे जानते हैं ? इसका अनुभव पहले हो चूका है। जितने परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध करते हैं वे उसकी शान्ति से बंचित होते हैं। फ्रान्स देश में जब अनीश्वरवाद (नास्तिकता) प्रभुत्व करने लगा तथा तब वहां जो दश्श्य उपस्थित हुआ था वह देखने में भयंकर था। उस समय वहां की जैसी परिस्थिति थी उस ने दुनियाँ को प्रमाणित कर दिया कि ईश्वर के नियम को रद्धकर के निर्दयी अत्याचारी शासक की शासन प्रनाली को ग्रहण करने से क्या परिणाम होता है। धार्मिकता के नियम को हटा देने से दुष्ट राजकुमार इस पश्थ्वी पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का अवसर पा जाता है।जहाँ ईश्वर के नियम को रद्धकर दिया जाता है वहाँ के लोग पाप क्या है उसे नहीं जानने और उनके मन में धर्मी बनने की इच्छा नहीं होती है। जितने परमेश्वर के शासन के अधीन रहना नहीं चाहते वे अपने आप पर नियंत्रण नहीं कर सकते।

(8) जब परमेश्वर के नियम अलग-अलग सेट किए जाएँगे तो बाइबल का कौन सा सिद्धांत होगा ?

धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। (गलातियों 6:7)

जो दूसरों को परमेश्वर की आज्ञाओं का उचित और सम्मान करना नहीं सिखाते तो वे अवज्ञा का बीज बो रहे हैं जिसका फल अवश्य मिलेगा। ईश्वर प्रतिबंध को यदि पूर्ण रूप से हटा दिया जाए तो मनुष्य के नियमों की भी लोग अवज्ञा करने लगेंगे। परमेश्वर कपटपूर्ण आचरण, लोभ लालच, झूठ बोलने, धोखा-धड़ी आदि काम के कारण से मना करता है, पर लोग इन्हीं को करते हुए सांसारिक उन्नति के मार्ग में बाधा होते हुए देख कर उसके नियमों की अवज्ञा करने के लिए तैयार होते हैं, वास्तव में वे यह नहीं जानते कि इन आज्ञाओं को नहीं मानने से उनका क्या परिणाम होगा। यदि व्यवस्था को मानना आवश्यक नहीं होता तो उनके नहीं मानने के कारण जो परिणाम होता है उससे कोर्ट क्यों डरता है ? यदि व्यवस्था नहीं रहती तो हमारे सांसारिक वस्तुएं सुरक्षित नहीं रहती। लोग अपने पड़ोसी की संपति को लूट कर ले लेते और जिसकी लाठी उसकी भैस वाली बात होती अर्थात् जिसकी अधिक शारीरिक शक्ति होती उसी के पास अधिक धन होता। लोग जीवन का कोई मूल्य नहीं समझते। परिवार को सुरक्षित रखने के लिए विवाह के समय जो प्रतिज्ञा की जाती है उसे पवित्र नहीं समझते। जिसकी शक्ति होती वह जब चाहता अपने पड़ोसी की स्त्री को अपने बल से ले लेता। पांचवी आज्ञा लोप हो जाती और उसके साथ साथ चौथी आज्ञा भी विलीन हो जाती। इसके परिणाम स्वरूप मसीही भी अपने भ्रष्ट हृदय की कामना पूरी करने के विचार से अपने माता-पिता का प्राण लेने के लिए भी नहीं डरते। जिसे सभ्य जगत कहते हैं वह तो डाकुओं और घातकों का अड्डा बन जाता, और इस पश्थ्वी में सुख, शांति और आनंद का नाम ही नहीं रहता।

(9) परमेश्वर के आज्ञा को न पालन करने से हम कौन से आशिष को खो देते है ?

मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना; क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा।

(नीतिवचन 3:1-2)

लोगों को परमेश्वर की आज्ञाएं पालन करने की आवश्यकता नहीं है इस सिद्धान्त ने उनकी नैतिक शक्ति को दुर्बल कर दिया है और इस दुनियाँ में पाप करने के लिए मार्ग तैयार कर दिया है। अराजकता चरित्र भ्रष्टता तथा आचार हीनता ज्वार भटे की तरह हमें बहा दे रही हैं। परिवार में शैतान का काम हो रहा है। जो अपने आपको मसीही कहते हैं उनके परिवारों में शैतान का काम हो रहा है। जो अपने आपको मसीही कहते हैं उनके परिवारों में शैतान का झंडा लगा है। उनके परिवार में ईर्षा, डाह, शंका, छल–कपट, हिंसा, कलंक, झगड़ा विश्वासघात भोग–विलास आदि का राज्य है।

(10) जब लोगों पर शासन करने वालों पर अराजकता नियत्रंण करती है तो परिणाम क्या होता है ?

हम ने यहोवा का अपराध किया है, हम उस से मुकर गए और अपने परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ दिया, हम अन्धेर करने लगे और उलट फेर की बातें कहीं, हम ने झूठी बातें मन में गढ़ीं और कही भी हैं।

(यशायाह 59:13)

आज न्यायालय भी भ्रष्ट हो गए हैं। शासकों के मन में लाभ की इच्छा प्रभुत्व कर रही है और उनके मन में शारीरिक भोग विलास क प्रेम बढ़ गया है। बहुतों के ज्ञान को असंयमी जीवन ने अंधा कर दिया है। इस प्रकार शैतान ने उन पर पूर्ण रूप से नियंत्रण कर लिया है। पंचों ने उचित मार्ग का परित्याग कर दिया है। वे धोखे और घुस के शिकार हो गए है। मतवालापन, आमोद प्रमोद, शारीरिक अभिलाषा, ईर्षा डाह,

हर प्रकार की बेईमानी आदि अवगुण व्यवस्थापक और न्याय कानून के रक्षकों में पाए जाते हैं। ''न्याय तो पीछे हटाये गई और धर्म खड़ा रह गया, सच्चाई बाजार में गिर पड़ी और सिधाई प्रवेश करने नहीं पाती।''

(11) परमेश्वर के वचन में विश्वास खो जाने पर क्या परिणाम होता है ?

उनका मन मोटा हो गया है, परन्तु मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूं। (भजन 119:70)

रोमी शासन के समय जो अधर्म और आत्मिक अंधकार था वह निश्चित रूप से पवित्रशास्त्र को नहीं पढ़ने देने का परिणाम था। धार्मिक स्वतंत्रता के युग में सुसमाचार का प्रकाश चारों ओर फैला है। ऐसे समय में परमेश्वर की आज्ञा उलंघन से बुराई बढ़ जाने और ईश्वर पर विश्वास नहीं करने वालों की संख्या भी बढ़ जाने का कारण हम कहां पा सकते हैं ? अर्थात ये बातें नहीं पाई जाती हैं। शैतान अब दुनियाँ के लोगों को बाइबल पढ़ने देनें से रोकने के लिए कुछ उपाय नहीं पाता इसलिए अपने उद्धेश्य को पूरा करने के लिए दूसरा उपाय खोजता है अर्थात् लोग बाइबल पर विश्वास न करें और वह नष्ट कर दी जाए तो उसका उद्धेश्य पुरा हो जाएगा। इसलिए वह उनके मन में इस विचार की प्रेरणा देता है कि ईश्वर की आज्ञा पालन करना अनिवार्य (अति आवश्यक) नहीं है। इस तरह वह उन्हें आज्ञा उलंघन कराने की चेष्टा में सफल होता है। शैतान उन्हें ऐसी स्थिति में डाल देता है कि वे आज्ञा को पहचान नहीं सकते, ओर पिछले युग के जैसा वह मंडली के द्वारा अपने उद्धेश्य को पूरा करने में लगा है। इसलीए इस समय दुनियाँ में जितनी मंडलिया है वे पवित्रशास्त्र की सच्चाई को ग्रहण करना नहीं चाहते क्योंकि उसे बहुत थोड़े लोग विश्वास करते हैं।

(12) परमेश्वर का व्यवस्था की स्थिरता के बारे में क्या अटल वचन दिया गया है ?

यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। (मत्ती 5:17)

(13) उन लोगों की सबसे बड़ी विशेषता क्या होगी जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके अंतिम दिन उतरजिवी लोग हैं ?

पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥ (प्रकाशित 14:12)

(14) हालांकि बहुमत से उपेक्षितए किस दिन परमेश्वर ने हमें अपने सब्त के रूप में पालन करने के लिए कहा है ?

तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छ: दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना;परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छ: दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया॥ (निर्गमन 20:8-11)

जब लोगों को चौथी आज्ञा अर्थात् सातवें दिन को विश्राम करने की बात बताई जाती है और जब उन्हें उस कर्त्तव्य से जिसे वे करना नहीं चाहते छुटकारा पाने का उपाय बताया जाता है तब बहुत से लोकप्रिय धर्मगुरू यह कहते हैं कि अब परमेश्वर की आज्ञापालन करने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार वे व्यवस्था और सब्बत को दूर फेंक देते है। जैसे सब्बत सुधार का काम फैलता जाएगा वैसे ही इसका विरोध करने के लिए व्यवस्था को उठा देने की विचार सारी दुनियाँ में फैल जाएगी। धर्मगुरू की शिक्षाओं में नास्तिकता, जीवात्मावाद सिद्धान्तों को अपनाने और परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था का निरादर करने का मार्ग तैयार कर दिया है अर्थात उनकी शिक्षा ऐसी रही है कि लोगों को विपत्तगामी होने का प्रोत्साहन मिला है। इसलिए मसीही दुनियाँ में पाप की जो वर्तमान स्थिति है उसका दोष तो इन्हीं (धर्म गुरूओं) पर लगेगा।

(15) पवित्र शास्त्र क्या भविष्यवाणी करता है कि पशु सामथ्र्य को बदलने की कोशिश करेंगे ?

और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा, और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा, वरन साढ़े तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएंगे।

(दानिय्येल 7:25)

(16) सत्य की जगह लेने वाले कौन से जटिल झूठ हैंए जिन्हें हम चेतावनी देते हैं ?

चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न करे ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और

संसार की आदि शिक्षा के अनुसार हैं, पर मसीह के अनुसार नहीं। (कुलुस्सियों 2:8)

ये धर्मगुरू अपने बचाव के लिए यह करते हैं कि हमारे अपने बनाए हुए ''मसीही सब्बत' को अपवित्र करने के कारण इस दुनियाँ में भ्रष्टता बढ़ती जा रही है अतएव रविवार को विश्रामवार मानना अनिवार्य कर दिया जाए तो वर्तमान सामाजिक नैतिकता के मूल में कूछ परिवर्तन हो सकता है। इस प्रकार का तर्क विशेष कर अमेरिका में है क्योंकि यहाँ सच्चे सब्बत का प्रचार विशेष रूप से हो रहा है। यहाँ रविवार को विश्राम दिन करके पालन करने के प्रचार के साथ साथ नैतिक विषय जैसे मद्यपान, धुम्रपान, आदि अन्य संयम की बातों में सुधार करने का भी प्रचार हो रहा है। रविवार को पवित्र दिन मानने के लिए प्रचार करने वाले कहते हैं कि हम लोगों का यह प्रयास सामाजिक हित के लिए हैं। इसलिए जो लोग उनके संयम सुधार के इस प्रयास में सहयोग नहीं देते उन्हें वे अपना बैरी समझते हैं। किसी भ्रम सिद्धान्त को स्थापित करने के उद्धेश्य से उसे भले काम से संबंध लगाकर उसका करना यह नहीं दिखाता कि भ्रम सिद्धान्त के भला का समर्थन करता है या सच मानता है। हम खाने के वस्तुओं मे विष को मिला कर दे सकते हैं जिसे पहचानना कठिन हो सकता है पर उसका गुण अवगुण तो परिवत. र्न नहीं होता, पर यह और भी अधिक खतरनाक होता है क्योंकि खानेवाला यह नहीं जानता कि वह विष खा रहा है। यही तो शैतान का तरीका है। इसी प्रकार वह झूठ के साथ थोड़ी से सच्ची बात को मिला देता है जिसको ऊपर से देखने से सत्य प्रतीत होता है। रविवार को विश्राम दिन मानने के लिए प्रचार करने वाले प्रचारक लोगों की उन आवश्यकताओं और सिद्धान्तों का जो बाइबल के अनुसार ह क्यों न समर्थन करें फिर भी इनके साथ एक आवश्यकता की पूर्ति करनी अनिवार्य है जो ईश्वर की व्यवस्था के अनुकूल नहीं है। इसलिए ईश्वर के लोग उनके साथ नहीं मिल सकते। लोगों के बनाए नियम कानून परमेश्वर की आज्ञा से कभी अच्छे नहीं हो सकते।

(17) आंशिक आज्ञाकारिता का अंतिम परिणाम क्या है ?

वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। (2 तीमुथियुस 3:5)

और लौदीकिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो आमीन, और विश्वासयोग्य, और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है, वह यह कहता है। कि मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू न तो ठंडा है और न गर्म: भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। सो इसलिये कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं। (प्रका 3:14-16)

अभी जैसी स्थिति हो गई है कि जो लोग अपने को मसीही कहते हैं उनके और मूर्तिपूजक लोगों के बीच में अन्तर बताना कठिन है। दुनियाँ के लोग जिस चीज से प्रेम रखते हैं उसे मसीही लोग भी प्रेम करते हैं इसीलिए दोनों एक साथ मिल जाते हैं। यही तो शैतान का उद्वेश्य है कि सब एक हो जाएं। इस प्रकार जीवात्मावाद की संख्या को बढ़ा कर वह अपने पक्ष को संगठित करता है। पोप के दल वाले इस अभि. ामान से फूले नहीं समाते कि हम लोगों की मंडली सची है क्योंकि उस में चमत्कार करने की शक्ति है पर अंत में स्वयं वे इस अद्भूत कार्य करने वाली शक्ति के भ्रम में फंस जाएंगे, और प्रोटेस्टैंट मंडली के लोग भी सच्चाई के ढाल का त्याग करके उनके फुसलावे में फंस जाएंगे। तब पोप को मानने वाले प्रोटेस्टेंट और दुनियाँ के लोग सब एकमत होकर अधर्म के रूप को ग्रहण करेंगे जिसमें कुछ शक्ति नहीं है। इस बड़ी एकता को देखकर वे अश्वस्त हो जाएंगे कि हजारों वर्ष की शान्ति के राज्य की उनकी आकांक्षा पूरी हो गई।

(18) परमेश्वर के व्यवस्था की मानवजाति को इनकार करने का अंतिम परिणाम क्या होगा ?

पृथ्वी विलाप करेगी और मुर्झाएगी, जगत कुम्हलाएगा और मुर्झा जाएगा; पृथ्वी के महान लोग भी कुम्हला जाएंगे। पृथ्वी अपने रहने वालों के कारण अशुद्ध हो गई है, क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला, और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। (यशायाह 24:4-5)

जो लोग तैयार नहीं हैं उन्हें शैतान प्रकशति के तत्वों के सहारे अपने समूह में लाता है। उसने प्रकशति के प्रयोगशाला के रहस्यों को अच्छी तरह अध्ययन किया है इसीलिए जितनी दूर तक ईश्वर ने उसे छुट दी है उतना ही दूर तक वह प्रकशति के तत्वों (पश्थ्वी, तेज, वायु, आकाश) पर नियन्त्रण करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देता है। अय्यूब को तकलीफ देने के लिए जब उसे छोड़ दिया गया तब क्षण ही भर में उसके उपर एक के बाद दूसरी तकलीफ आती रही और उसके भेड़ बकरी, गाय-बैल, नौकर-चाकर, घर-द्वारा, वाल बच्चे सब के सब नष्ट हो गए। इससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर ही अपने जीवों की रक्षा करता है। वह उन्हें विनाशक के हाथ से बचा कर रखता है। पर मसीही जगत ने यहोवा की व्यवस्था का अपमान किया है। इसलिए प्रभु वही काम करेगा जो उसने स्पष्ट कहा है अर्थात् पश्थ्वी पर उसने जो आशीष दी है उसे वापस ले लेगा और जो उसकी व्यवस्था का विरोध करते हैं और दूसरों को भी वैसा करना सिखाते और विवश करते हैं उनसे सुरक्षा प्रदान करने वाले घेरे को हटा लेगा। शैतान उन्हीं पर अपना नियन्त्रण कर सकता है जिनकी परमेश्वर सुरक्षा नहीं करता। वह (शैतान) कुछ लोगों पर अपनी कश्पा दश्ष्टि रचाता और सुख समश्द्धि देता है जिससे उसका

काम आगे बढ़ता है। इसे विपरीत कुछ लोगों पर वह आपत्ति लाता है और लोगो के मन को ऐसा कर देता है कि वे समझने लगते हैं कि तकलीफ परमेश्वर की और से आती है। वह मनुष्यों के पुत्रों के सामने ऐसा अपने को दिखाता है मानों वह एक बड़ा वैद्य है जो सब रोगों को चंगा कर सकता है पर वास्तव में वही सब दुःख विपत्ति लाकर घने शहरों को तहस–नहस करके उजाड़ देता है। अभी भी वह विनाश के काम में लगा है। दुर्घटनाएं और विपत्तियां जो इस पश्थ्वी पर और समुद्र में हो रही हैं। शहरों में आग की दुर्घटना, भयंकर तुफान और शीलों की वर्षा, आंधी, बाढ़ ज्वार–भाटा, लहर तथा भूकम्पों का विभिन्न रूप में भिन्न भिन्न स्थानों पर होना यह दिखाता है कि शैतान इनके द्वारा अपनी शक्ति को दिखा रहा है। वही खेत के पके हुए अनाजों को नष्ट कर देता है जिसके फल स्वरूप अकाल और विपत्तियों आती हैं। वह वायु को नष्ट दुषित कर देता है जिससे महामारी फैलती है और हजारों की संख्या में लोग मरते हैं। इस प्रकार की विपत्तियां बढ़ जाएंगी और वे दुनियाँ को उजाड़ देगी। मनुष्य और पशुओं का विनाश होगा। ''पश्थ्वी विलाप करेगी और मुर्झाएगी.... महान लोग कुम्हला जाएंगे, क्योंकि पश्थ्वी अपने रहने हारे के कारण अशुद्ध हो गई है क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला और सनातन वाचा को तोड़ दिया है।'' (यशायाह २४ः४–५)

(19) जब धोखेबाज लोग शैतान की योजनाओं के अनुसार कार्य करते हैं तो क्या भयानक परिणाम होता है ?

वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं।

(यूहन्ना 16:2)

इसके बाद महां छली लोगों को बताएगा कि ये विपत्तियाँ तो उन्हीं लोगों के कारण हो रहे हैं जो ईश्वर की उपासना करते हैं। इस प्रकार वह ईश्वर के लोगों के विरूद्ध में दुनियाँ के लोगों को

उभाड़ेगा। उस वर्ग के लोग जिन्होंने परमेश्वर के क्रोध को भड़काया है, दुनियाँ में जितनी अपत्तियां आ रही हैं उनका दोष परमेश्वर की आज्ञा मानने वालों पर लगाएंगे क्योंकि आज्ञा मानने वाले आज्ञा नहीं मानने वालों के लिए ताड़ना देने वाले बनेंगे। रविवार को विश्राम दिन मानने वाले यह प्रचार करेंगे कि रविवार को विश्राम दिन नहीं मान कर लोग परमेश्वर का अपमान कर रहे हैं। यह एक पाप है और इसी पाप के कारण विपत्तियाँ आ रही हैं और जब तक रविवार को विश्राम करने का नियम नहीं बनाया जाएगा तब तक विपत्तियां आती ही रहेंगी। वे जो दस आज्ञा की चौथी आज्ञा अर्थात् शनिवार को विश्राम दिन मानते हैं वे रविवार की पवित्रता नष्ट कर रहे हैं। यही लोगों को तकलीफ दे रहे हैं, यही लोग ईश्वर की कश्पा को रोक रहे हैं और सांसारिक सुख प्राप्त करने के मार्ग में रोके हैं। इस प्रकार प्राचीन काल में जो दोष परमेश्वर के दासों पर लगाया गया था उसकी पुनरावशत्ति होकर अर्थात् वह दोहराया जाएगा। जिस कारण से उन पर दोष लगाया जाएगा उसका आच्छा समर्थन प्राप्त होगा जिससे वे (आज्ञा मानने वाले) निश्चित रूप से दोषी प्रमाणित किए जाएंगे। ''एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा, हे इस्राएल के सताने वाले क्या तू ही है ? उसने कहा, मैंने इस्राएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है, कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को टालकर बाल देवताओं की उपासना करने लगे।'' (१ राजा १८:१७, १८) झूठे दोष लगाने की भावना से उत्तेजित होकर वे लोग ईश्वर के समाचार वाहकों (समाचार ले जाने वालों) पर ठीक उसी प्रकार का दोष लगाएंगे जैसा विरीत चाल चलने वाले इस्राएल ने एलियाह के विरूद्ध लगाया था।

(20) अपने मकसद के लिए बहुतो को धोखा देने के लिए अंतिम दिनों में शैतान धोखे का कौन सा शक्तिशाली स्रोत इस्तेमाल करेगा ?

ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्मा हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकल

कर इसलिये जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें। (प्रकाशित 16:14)

क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। (मत्ती 24:24)

प्रेतवाद द्वारा चमत्कार करने वाली जो शक्ति काम करती है वह उन पर भी अपना काम करेगा जो मनुष्यों को छोड़ कर ईश्वर की आज्ञा मानना पसंन्द करते है। आत्माएं बात करेंगर। वे अपने को यह बताएंगी कि उन्हें समझाने के लिए भेजा गया है कि वे रविवार नहीं मानने के कारण भूल में पड़े हैं। वे यह कहेंगी कि देश की व्यवस्था को भी उसी तरह भक्ति के साथ पालन करना चाहिए जैसा ईश्वर की आज्ञा को पालन करते हैं। दुनियाँ में जो दुष्टताएं हो रही है उन के लिए वे अपना दुःख प्रकट करेंगे और धर्म संबधी बातों में शिक्षा देनेवालों की गवाही को उचित बताएंगे कि वास्तव में, रविवार को अपवित्र करने के कारण ही नैतिकता का पतन हो गया है। आत्माओं की इस गवाही को विश्वास नहीं करेंगे उनके प्रति उनका कोप भड़क उठेगा।

परमेश्वर के लोगों के साथ जो संघर्ष होगा उस समय शैतान अपनी उसी नीति को प्रयोग करेगा जिसे उसने स्वर्ग में महान संघर्ष के आरम्भ में प्रयोग किया था। उस समय उसने अपने को ऐसा दिखाया था मानो वह ईश्चरीय शासन को स्थायी बनाने में सहायक है पर भीतर से चुपके चुपके वह उसके राज्य को उलट देने में कोई कसर नहीं छोड़ा था।

(21) प्रलोभन और नियंत्रण के अपने तरीकों का उपयोग करते हुएए भावी

संघर्ष में शैतान का अंतर्निहित लक्ष्य क्या है ?

सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। (1 पतरस 5:8)

परमेश्वर किसी की इच्छा पर दबाव नहीं डालता न ही उसके विवेक (अंतःकरण) पर प्रभुत्व करता है, पर शैतान ही है जो उन्हें जितने उसके फुसलावे में नहीं आते उन पर नियंत्रण करने के उद्धेश्य से विवश करता है और बल भी प्रयोग करता है। डरा–धमका कर और बल दिखा कर वह उनके अंतःकरण पर शासन करने की कोशिश करता है और इस प्रकार अपना आदर प्राप्त करना चाहता है। इस उद्धेश्य की पूर्ति के लिए वह धार्मिक और सांसारिक अधिकारियों की सहायता लेता है। परमेश्वर की व्यवस्था को हटाकर मनुष्यों के बनाए हुए नियमों को रखने के लिए उन्हें उसकाता है।

(22) अंतिम दिन में परमेश्वर के लोगों की कौन सी विशेषता लोगों को शैतान और उसके अनुयायियों के प्रति घृणा को उत्तेजित करेगी ?

और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और वह समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ॥ (प्रकाशित 12:17)

वे जो बाइबल के विश्राम दिन को पालन करते हैं उन पर उसका यह आरोप है कि वे शान्ति और व्यवस्था के बैरी है, वे ही समाज को बनाए रखने वाले नैतिक नियमों को तोड़ कर अराजकता तथा तरह तरह की भ्रष्टता का बीज

बो रहे हैं इसीलिए इस पश्थ्वी पर ईश्वर का अभिशाप पड़ रहा है जब वे अपने सदविवेक के अनुकूल करने के लिए अड़े रहेंगे तो उन्हें अड़ियल, उद्वण्ड और हट्ठी और अधिकारियों के अपमान करने वाले कहेंगे। उन पर देशभक्ति नहीं होने का आरोप लगाऐंगे। ईश्वर की व्यवस्था के प्रति जो कर्त्तव्य है उन्हें नहीं करनेवाले पादरी धर्म उपदेश देने के ऊँचे स्थानों पर खड़े होकर राजनैतिक अधिकारियों को ईश्वर की ओर से नियुक्त किए गए हैं कह कर उनकी अधीनता मानने के लिए कहेंगे। विधान सभा में और न्यायालय में ईश्वर की आज्ञा मानने वालों पर झूठा आरोप लगा कर अपराधी ठहराएगें।

(23) धार्मीक बहूमत द्वारा उनके विवेक का उल्लंघन करने के लिए परमेश्वर की आज्ञा रखने वालों को मजबूर करने के प्रयास में नागरिक अधिकारियों द्वारा क्या कार्रवाई की जाएगी ?

कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और कोई लेन देन न कर सके। (प्रकाशित 13:17)

उन्हें प्रोटेस्टैंट मंडलियां ठूकरा देंगी और लोगों के बाइबल पर दश्ढ़ विश्वास को नष्ट नहीं कर सकने के कारण उन्हें अपने विश्वास के विषय में प्रचार नहीं करने देने की कोशिश करेंगे। वे सत्य को जानते हुए अपनी आँखों को बंद करके ऐसा मार्ग अपना रहे हैं जिसके परिणाम स्वरूप जो सत्य को अपने सच्चे शुद्ध विवेक की प्रेरणा से पालन करना चाहते हैं उन पर सताहट आएगी। यह सताहट उन पर इसीलिए आएँगे क्योंकि वे दुनियाँ के मसीही लोगों के संग मिलने के लिए सहमत नहीं होते और पोप द्वारा बनाए हुए विश्राम दिन को पालन करना नहीं चाहते। राज्य और मंडली के उच्च पदाधिकारी एकमत होंगे। वे घूस देकर प्रलोभन द्वारा अथवा विवश करके सभी वर्ग कें लोगों को रविवार को पालन करने के लिए कहेंगे। ईश्वरीय

अधिकार के अभाव की पूर्ति वे अत्याचारपूर्ण नियम से करेंगे अर्थात् विभिन्न मंडलियाँ सच्चाई का पालन करने वालों पर अत्याचार करेंगे। राजनैतिक नीति में भ्रष्टता आ गई है। वह लोगों का न्याय के प्रति जो प्रेम और सच्चाई के प्रति आदर मान करने का जो भावना है उन्हें नष्ट कर रही है। यह बात यहां तक व्यापक हो जाएगी कि स्वतंन्त्र राज्य अमेरिका में यह स्थिति पाई जाएगी कि वहाँ के शासक और व्यवस्था के बनने वाले लोकप्रिय राज्य स्थापित करने के उद्वेश्य से जनता की मांग को पूरी करेगें और रविवार को विश्रामवार मानने की व्यवस्था बनाएंगे। अंतःकरण की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए ही लोग अपनी धन-संपत्ति तथा जन्म भूमि छोड़ कर अमेरिका आए थे और उन्होंने भारी परित्याग किया था। इसका कोई मूल्य नहीं होगा। शीघ्र संघर्ष होगा और उस संघर्ष में नबी का यह वचन होगा, ‘‘अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उसकी शेष संन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं लड़ने को गया।’’ (प्रकाशित वाक्य १२:१७)

[बाइबिल सब्बाथ के इतिहास और इसे बदलने के लिए मनुष्य के प्रयास के विस्तृत विवरण के लिए परिशिष्ट बी, सी, डी देखें।]

मुझे अब पता चला है कि पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से एक भावी संघर्ष का वर्णन करता है ‘‘जैसे कि कभी नहीं’ ’ जो कि इस दुनिया के इतिहास के करीब पहुंचते ही शुरू हो जाएगा।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मुझे एहसास है कि पाप की अवधारणा के बाद से इस महान विवाद में शैतान के हमले का ध्यान परमेश्वर का शाश्वत

रूप से पवित्र कानून उनकी शासन का आधार रहा है।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

प्रकाशितवाक्य 12:17 से पता चलता है कि शैतान का अंतिम लक्ष्य इन पवित्र सिद्धांतों को अंतिम रूप से अस्वीकार करने के उद्देश्य से परमेश्वर के कानूनों की बदनाम करना है।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

अब मुझे पता है कि पवित्रशास्त्र से बतलाती है कि शैतान की आज्ञाओं के बावजूद परमेश्वर की आज्ञाएँ पवित्र और शाश्वत हैंए ''समय और कानूनों को बदलने के बारे में सोचने की तरिके में"। दानिय्येल 7:25

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें
अब मैं देखता हूं कि बाइबल परमेश्वर के सभी पवित्र आदेशों के पालन का महत्व सिखाती है और उन सभी को दंड के बारे मे जो लोग नियम को तोड़ते भी है। याकूब 2:10

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं परमेश्वर के वफादार अवशेषों में से हूँ जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु के प्रति वफादार रहता हूँ। प्रका 14:12

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

\

पाठ 8

पवित्रशास्त्र एक सुरक्षा

(1) शैतान के भ्रम से हमारा बचाव क्या होगा ?

यीशु ने उसे उत्तर दिया; कि लिखा है, मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा। (लूका 4:4)

व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इस वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी (यशायाह 8:20)

''व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो। यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें, तो निश्चय उनके लिए पौ न फटेगी।'' (यशायाह ८:२०) परमेश्वर के लोगों को झूठे शिक्षकों और अंधकार की आत्मा की छलने वाली शक्ति के प्रभाव से बचने के लिए पवित्रशास्त्र के वचनों में शैतान के कपटपूर्ण आचरण का स्पष्टीकरण है। परमेश्वर के काम को नए रूप से बढ़ते हुए देख कर दुष्टता का युवराज उत्तेजित होकर अधिक सक्रिय हो गया है। अभी वह खीस्ट और उस

पर विश्वास करने वालों के विरूद्ध अंतिम लड़ाई लड़ने के लिए तैयारी करने में लगा है। शैतान लोगों के पतन के लिए अंतिम धोखा का जाल बिछाएगा अर्थात् खीस्ट बिरोधी हम लोगों की आँख के सामने अद्भूत कार्य करेगा। उसका धोखा सच्चाई से इतना मिला रहेगा कि उन दोनों के बीच में उन्तर दिखाना कठिन होगा। केवल पवित्रशास्त्र के ज्ञान से ही हम उनके बीच के अन्तर को पहचान सकते हैं। पवित्रशास्त्र की चितौनी से शैतान का प्रत्येक वचन और आश्चर्य कर्मों को परखना चाहिए।

(2) किस संसाधन से हमारी ताकत मनुष्य पर परमेश्वर का आज्ञा पालन करने के लिए प्रबल होगी ?

अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा।

(1 पतरस 5:10)

जितने परमेश्वर की सब आज्ञाओं को पालन करने की कोशिश करते हैं लोग उनका विरोध करेंगे और उन्हें ठट्ठा में उड़ाऐंगे। ऐसी परिस्थिति में वे केवल परमेश्वर पर निर्भर कर के इनका सामना कर सकेंगे। इसीलिए कि परीक्षा उन पर आएगी और उन्हें कष्ट सहना पड़ेगा यह उचित है कि परमेश्वर के वचन में उनके लिए क्या इच्छा है उसे समझने की कोशिश करनी चाहिए। वे उसके गुण की मर्यादा तभी कर सकते हैं या उस पर भक्ति तभी दिखा सकते हैं जब उसके स्वभाव के गुणों, उसके राजशासन प्रणाली, उसके उद्देश्य का उचित ज्ञान रख कर उनके अनुकूल करने की कोशिश करते हैं। अन्तिम बड़े संघर्ष में वही विजयी होंगे जो पवित्रशास्त्र की सच्चाई को अच्छी तरह समझने की कोशिश करते हैं जिन्होंने उनके द्वारा अपना मन को सुरक्षित रखा है। कोई परीक्षा से नहीं बचेगा। सभी मनुष्य के सामने जाँच का यह प्रश्न आएगा, कि क्या मैं परमेश्वर से बढ़ कर मनुष्यों की आज्ञा का

पालन करूँ ? उस अन्तिम परीक्षा का समय बहुत निकट है। क्या हम अपने पैर परमेश्वर के अटल वचन रूपी चट्टान पर दशढ़ता के साथ रखे हुए हैं ? क्या हम लोग परमेश्वर की आज्ञा की सुरक्षा की और यीशु पर विश्वास रखने की गव. ाही देने के लिए अपने आपको तैयार कर रहे हैं ?

(3) परमेश्वर ने अपने वचन में भविष्यवाणी क्यों दी है ?

जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्‌वारा आशा रखें। (रोमियो 15:4)

गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी ही जाएं॥ (व्यवस्था 29:29)

क्रूस पर मर जाने से पूर्व त्राणकर्त्ता ने अपने शिष्यों को स्पष्ट रूप से बता दिया था कि मैं मारा जाऊँगा और मरने के बाद कब्र से जी उठूँगा। उसके इन वचनों को शिष्यों के मन में अंकित करने के लिए दूत वहाँ उपस्थित थे, पर शिष्यगण तो रोमी राज्य की अत्याचार से अस्थायी उद्धार की आशा देख रहे थे। इसी लिए वे उसकी इस घशणित रूप से मश्त्यु होने की बात सुन कर बहुत दुखित हो गए थे। उनकी आशा उस पर केन्द्रित थी इसलिए वे उसकी ऐसी बात को नहीं सह सकते थे। त्राणकर्ता की इन बातों को उन्हें मन में रखना चाहिए था, पर वे उनके मन से लोप हो गई थी। इसीलिए जब जाँच का समय आया तब वे तैयार नहीं पाए गए थे। यीशु की मश्त्यु हो जाने पर उनकी आशा ऐसी नष्ट हो गई कि मानों कभी उन्हें उसने कुछ कहा ही नहीं था। ठीक उसी प्रकार जैसा यीशु ने अपनी मश्त्यु से पूर्व अपने शिष्यों को भविष्य के विषय में बताया था भविष्यवाणी में हमारे लिए

भविष्य की घटनाएं बता दी गई है। दया का दरवाजा बंद होने अर्थात् पश्चाताप करने और संकट के समय के लिए तैयार होने से संबंधित घटनाओं का स्पष्ट विवरण दिया गया है। पर इस दुनियाँ के अधिक लोग तो इन महत्वपूर्ण सच्चाई को नहीं समझते न ही जानते हैं। वे ऐसा आज्ञान हैं मानों इनके विषय में कभी कुछ नहीं बताई गई है। शैतान इस ताक में लगा रहता है कि उन बातों को लोगों के मन में अंकित नहीं होने देता जो उन्हें अनंत जीवन का मार्ग बताती है। इसलिए जब संकट का समय आएगा तब लोग तैयार नहीं पाए जाएंगे।

(4) कौन तीन सी अंतिम दिन की चेतावनियाँ हमारा मोक्ष के रास्ते को जगाती हैं ?

फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा जिस के पास पृथ्वी पर के रहने वालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था। और उस ने बड़े शब्द से कहा; परमेश्वर से डरो; और उस की महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है, और उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए॥ फिर इस के बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिस ने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है॥ फिर इन के बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ

आया, कि <u>जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले। तो वह परमेश्वर का प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा।</u> (प्रकाशित 14:6-10)

जब परमेश्वर को लोगों के पास महत्वपूर्ण चेतावनी भेजना होता है तो उसे आकास के बीच में उड़ने वाले पवित्र दूत पहुंचाते है। परमेश्वर यह चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य जिसे विचार करने की शक्ति दी गई है इस समाचार को सुन कर ध्यान दें पशु और उसकी मूरत की पूजा करने वालों के विरूद्ध (प्रकाशित वाक्य १४:६–११) परमेश्वर की अप्रसन्नता सुचक आपत्ति की घोषणा सुन कर भविष्यवाणियों को अध्ययन करने वाले को उपाय ढूंढ़ना चाहिए। पर बहुत से लोग सच्चाई को सुनना नहीं चाहते, क्योंकि उनकी रूचि कपोल–कल्पित कथाओं की ओर होती है।

(5) कैसे पौलूस ने वासना की ओर प्रेरित भावना के रवैये का वर्णन किया ?

क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे। (2 तीमुथियुस 4:3-4)

बहुसंख्यक बाइबल की सच्चाई पर चलना नहीं चाहते क्योंकि वह उन्हें दुनियाँ से प्रेम करने और पापमय जीवन व्यतीत करने की इच्छा को

रोकनी है : वे तो शैतान के धोखे में ही पड़े रहना पसन्द करते हैं।

(6) कैसे मसीह के सच्चे अनुयायी सैद्धांतिक सत्य का निर्धारण करते हैं?

व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इस वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी (यशायाह 8:20)

इस पश्थ्वी पर परमेश्वर के लोग हैं। वे बाइबल ही को सब शिक्षाओं और सिद्धान्तों का स्रोत मानते हैं। वही एक मनदन्ड है, वही सब सुधारों का आधार है। विद्धानों के विचार, विज्ञान का निश्चित निष्कर्ष, धार्मिक सभाओं का निर्णय अथवा स्वीकश्त मत, मंडलियाँ जितनी हैं उतनी ही उनकी विभिन्नता, एवं बहुमत का स्वर – इन में से न किसी एक का और न ही सभी को किसी धार्मिक विश्वास के पक्ष में अथवा विपक्ष के समर्थक मान सकते हैं। किसी सिद्धान्त अथवा शिक्षा को ग्रहण करने से पूर्व यह देखना चाहिए कि उसमे ‘‘परमेश्वर यों कहता है’’ का समर्थन है अथवा नहीं।

(7) पुरुषों की शिक्षाओं के साथ हमारी क्या जिम्मेदारी है?

ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियोंसे भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं। (प्रेरित 17:11)

शैतान लोगों के ध्यान को परमेश्वर की और से हटाकर मनुष्यों की और केंद्रित करने में लगा रहता है। इस लक्ष्य की ओर उसका एकमात्र अथक प्रयास है। वह लोगों को बिशप, पादरियों और अध्यात्म विद्या के व्यख्याताओं को अगुवा मानने के लिए सुझाव देता है। अपना कर्तव्य क्या है इसे जानने के लिए पवित्रशास्त्र पढ़ना चाहिए पर शैतान ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देता है

कि वे बाइबल नहीं पढ़ते। इन अगुवों के मन को ऐसा अपने अधीन में कर लेता है कि जैसा वह चाहता है, लोगों को कर सकता है।

(8) पवित्र शास्त्र को समझने के लिए यहूदी राष्ट्र की अपने अगुवों पर निर्भरता का परिणाम क्या निकला था ?

वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना॥ (यशायाह 53:3)

यीशु जब इस पश्थ्वी पर लोगों को जीवन की बात बताने के लिए आया था तो साधारण से साधारण लोग आनन्द से सुनते थे। उसके वचन को सुनकर बहुत से लोग यहाँ तक कि याजक और शासक भी उस पर विश्वास करने लग गए थे। पर याजकों के प्रधान और राष्ट्र के नेता उस पर आरोप लगाने और उसकी शिक्षाओं को ग्रहण करने के लिए अपने मन में ठान लिए थे। यीशु पर आरोप लगाने का उनका प्रयास बिफल हो गया था, इतना होते हुए भी वे अपनी संकीर्णता को दूर करना नहीं चाहते थे। यीशु में मसीही होने के गुणों को जानते हुए भी उस पर विश्वास करना नहीं चाहते थे। इसलिए क्योंकि उन्हें विवश होकर उसका शिष्य बनना पड़ता। यीशु के विरोध करने वाले तो वही थे जिन्हें लोगों को बचपन से पूज्यनीय दश्ष्टि से देखने के लिए शिक्षा दी गई थी। वे उनके अधिकार को स्वीकार करके नम्रता के साथ सिर झूकना उचित नहीं समझते थे। इसीलिए वे प्रश्न पूछते थे, ‘‘यह कैसी बात है कि हमारे बड़े बड़े शासनकर्त्ता और अधिकारी यीशु पर विश्वास नहीं करते ? यदि वह ख्रीस्ट रहता तो वे धर्मी लोग क्यों ख्रीस्ट को ग्रहण नहीं करते ?’’ यहुदियों के गुरूओं का प्रभाव ऐसा ही था जिन्हें देखकर यहुदी जाति यीशु को अपना त्राणकर्त्ता ग्रहण करना नहीं चाहे। उस समय जो उत्साह

और उद्देश्य याजक और अधिकारियों में था वही आज भी दिखाई देता है जो धार्मिकता का भेष धारण करते है। वे तो इस समय के लिए जो विशेष सच्चाई है उसके संबंध (परमेश्वर में हम लोगों को अपना वचन इसलिए दिया है कि हम उसकी शिक्षा को समझ कर ग्रहण करें और यह जानें कि हम लोगों को क्या करना उचित है।) में पवित्रशास्त्र क्या कहती है उसे खोजना नहीं चाहते। वे केवल अपनी संख्या, धन, और लोगों के सामने लोकप्रिय होने का उदाहरण देकर अपने पक्ष का समर्थन करते हैं। उन लोगों को जिनकी संख्या थोड़ी है, जिन्हें अधिक लोग नहीं जानते, पर उनके पास सच्चाई है उन से घश्णा करते हैं। इन लोगों के पास ऐसा विश्वास है जो उन्हें दुनियाँ के लोगों से अलग करता है।

(9) धोखे के खिलाफ रोकथाम का एकमात्र स्रोत क्या है ?

अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्ज़ित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमुथियुस 2:15)

यीशु जब इस दुनियाँ में था तब उसने अपने पूर्व ज्ञान से देखा कि यहुदियों के तितर-वितर होने से सदुकी और फरीसी को जो अपने आप को अधिकारी कहते हैं अभिवशति का अंत नहीं होगा। उसने एक दर्शी की दश्ष्टि से देखा था कि मनुष्यों के विवेक (अंतःकरण) पर प्रभुत्व करने के लिए कुछ लोग मानव अधिकार को श्रेष्ठ मानेगे। यह अवस्था सभी यूग में और सभी मंडली के लिए अभिशाप सिद्ध हुई है। इसीलिए यीशु ने इस सदुकी और फरीसियों की इस नीति के कारण उन्हें फटकारा था और लोगों को चेतावनी दी थी वे इन अंधे गुरूओं के पीछे न पड़े। इन चेतावनी की बातों का उल्लेख भविष्य की पीढ़ी के लिए सुरक्षित किया गया है।

(10) पवित्र शास्त्र के अनुसारए हम में से कौन झुठे सिद्धांत बोएगा ?

और जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करने वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे और उस स्वामी का जिस ने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे। (2 पतरस 2:1)

बाइबल में झूठे शिक्षकों के विरूद्ध चेतावनी भरी पड़ी है फिर भी बहुत से लोगों ने अपने प्राण की सुरक्षा और अपने आप को पादरियों को हाथ में सौंप दिया है। आज हजारों की संख्या में धर्म संबधी बातों के प्राध्यापक हैं। वे अपने विश्वास के विषय में उससे अधिक लोगों को नहीं बता सकते जितना उन्होंने अपने धर्म गुरूओं से सीखा है। वे त्राणकर्त्ता की शिक्षाओं को जानते हुए भी अपना ध्यान अन–मना सा करके पादरी प्रचारकों की बातों पर विश्वास करते हैं। तो क्या ये पादरी और प्रचारक चूकने वाले नहीं है ? जब तक हम परमेश्वर के वचन से परख कर यह नहीं जानते कि ये पादरी और प्रचारक वास्तव में ज्योंति के वाहक हैं अथवा नहीं कैसे हम अपने प्राण की रखवाली के लिऐ अपने आपको उनके हाथ में सौंप दिया है। दुनियाँ के लोग जिस पर चलते हैं उसे छोड़ कर दूसरा मार्ग अपनाने का साहस नहीं करते। यह मार्ग तो बहुतों को विद्वानों के कदमों पर ले चलता है। और ये लोग जो सच्चे मार्ग को जानने के लिए कष्ट नहीं उठाते वे तो दिनों दिन भूल के जंजीर से ऐसे बंधे जा रहे हैं। जिन से उन्हें छूटना कठिन है। बाइबल में जो वर्तमान सत्य स्पष्ट रूप से बताया गया है उन्हें वे समझते है, वे यह भी अनुभव करते हैं कि इस सच्चाई के प्रचार करने के काम में पवित्र आत्मा की शक्ति सहायता कर रही है फिर भी पादरी प्रचारक जिन लोगों को प्रकाश पाने से रोक रहे

हैं, उनका विरोध करने का वे साहस नहीं करते। अपने सहज ज्ञान और अंतःकरण से यह समझते हैं कि वे सच्चाई के मार्ग में नहीं है फिर भी वे इन पादरियों के विचार के अनुकूल करना ही पसंद करते हैं, ये कैसे भयानक भ्रम में फंसे हैं कि वे अपने व्यक्तिगत विचार और निज के अनंत लाभ को दूसरे के अविश्वास तथा घमंड और अविचारपूर्वक निर्णय की वेदी पर बलिदान कर दे रहे हैं।

(11) उद्धार का सच्चाई की खोज करने की जिम्मेदारी किस पर है ?

सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ (फिलिप्पियों 2:12)

सत्य और परमेश्वर की महिमा को अलग नहीं कर सकते हैं। जब बाइबल को हम खरीद सकते हैं और उसे पढ़ सकते है तो कैसे अपनी भ्रम के विचारों द्वारा ईश्वर की महिमा कर सकते हैं। यह असंभाव है। बहुतों की ऐसी धारणा है कि यदि हमारा चरित्र अच्छा है तो हमारा कुछ भी विश्वास होने से हानि नहीं है। पर असली बात तो यह है कि विश्वास के द्वारा ही हमारा जीवन है। यदि हम सच्चाई और ज्योति को पा सकने की सामर्थ रखते हैं फिर सुनने और देखने का अवसर मिलने पर भी उससे लाभ उठाने के लिए कुछ नहीं करते तो वास्तव में हम उसको अस्वीकार करते हैं। इसका अर्थ तो यह है हम ज्योंति के स्थान में अंधकार को चुनते हैं।

(12) शास्त्रों की अधूरा ज्ञान खतरनाक क्यों है ?

ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है। (नीतिवचन 16:25)

जब कि हमें परमेश्वर की इच्छा को जानने का अवसर है ऐसा कहने से कि हम अज्ञान थे, पाप से नही वच सकते। एक आदमी यात्रा कर रहा है। वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचता है जहाँ रास्ता की कई शाखाएँ है और इस स्थान पर यात्रिओं के मार्ग दर्शन के लिए स्थापित चौकी है। वह यह दिखाती है कि कौन रास्ता किस दिशा को जाता है। यदि यात्री मार्गदर्शक पट पर लिखे निर्देशन पर ध्यान न देकर जिधर चाहे उसी रास्ते पर चलने लगे तो वह अच्छा आदमी होने पर भी विपत्तगामी हो सकता है अर्थात भूल के रास्ते पर जा सकता है।परमेश्वर का बचन पवित्रशास्त्र में लिखा गया है। उसका अध्ययन करके उसकी शिक्षाओं को जानना हमें आवश्यक है। हम लोगों में से प्रत्येंक को यह जानना आवश्यक है कि वह हम से क्या चाहता है। व्यवस्थापक ने यीशु के पास आकर जब पूछा, ‘‘अनंत जीवन का वारिस होने के लिए मैं क्या करूँ ?’’ तो त्राणकर्त्ता ने उसका ध्यान पवित्रशास्त्र की और आकर्षित करके कहा, ‘‘व्यवस्था में क्या लिखा है ? तू कैसा पढ़ता है ?’’ अज्ञान रहने की बहाना करके कोई बश्द्ध-बश्द्धा और न तो नौजवान बच सकता है। परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने की सजा उन्हें अपश्य मिलेगी। इसलिए कि उनके पास व्यवस्था है तथा उसके सिद्धान्तों का और उनके प्रति हमारे कर्तव्य का विशद वर्णन है। मन में भला विचार रखने से ही काम नहीं चलता, न ही किसी मनुष्य का विचार उचित होना ही पर्याप्त है अथवा यह मानना कि पादरी जो कुछ कहता है वह ठीक है। मनुष्य के लिए उद्धार की बात अर्थात अनंत जीवन महत्वपूर्ण है। उसकी अवहेलना नहीं करनी चाहिए। अनन्त जीवन की बात को पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ना चाहिए। यह व्यक्तिगत कार्य है। चाहे अपना विश्वास कितना भी दश्ढ़ क्यों न हो, पादरी सच्चाई को अच्छी तरह जानता है ऐसा विचार करके उसका पूरा भरोसा रखना और स्वयं अपने लिए कुछ नहीं करना यह दिखाता है कि उसकी सच्चाई में दश्ढ़ नीव नहीं है। उसके पास एक चार्ट है। उसमें

स्वर्ग की और यात्रा करने के लिए मार्ग के निर्देशन दिए हैं अतएव उसे उस मार्ग पर टटोल कर चलना नहीं है।

(13) शास्त्र अपने पृष्ठों के अध्ययन का तरीका कैसे बताता है ?

नियम पर नियम, नियम पर नियम थोड़ा यहां, थोड़ा वहां॥ (यशायाह 28:10)

जिन प्राणियों को अच्छे और बूरे को पह. चानने का ज्ञान दिया गया है उनका सब से पहला और महत्वपूर्ण कर्त्तव्य यह है कि वह पवित्रशास्त्र से सत्य का ज्ञान प्राप्त करके ज्योति में चलने का प्रयत्न करें और दूसरों को भी अपने जैसे आदर्श का अनुशरण करने के लिए प्रेत्साहन दे। प्रत्येक दिन हम लोगों को कुछ समय लेकर परिश्रम के साथ बाइबल का अध्ययन करना चाहिए। उसके बचनों में जो विचार है उन पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और पवित्रशास्त्र से मिला मिला कर पढ़ना चाहिए। इस प्रकार अध्ययन करने के बाद, हम लोगों को अपने लाभ के लिए ईश्वर की सहायता से अपना विचार स्थिर कर लेना चाहिए क्योंकि हम सबों को परमेश्वर के सामने खड़ा होना है।

(14) अगर हम ईश्वर की इच्छा के लिए बाइबिल की खोज करते हैं तो हम क्या दावा कर सकते हैं ?

यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं। (यूहन्ना 7:17)

बाइबल में जो सच्चाई है उन्हें स्पष्ट रूप से प्रकाश्ति की गई है पर विद्वान अपनी विद्वता दिखाने के विचार से उन सत्यों का उलटा-पूलटा अर्थ लगाते हैं और लोगों को सिखाते हैं कि पवित्रशास्त्र के वचनों का रहस्यपूर्ण आत्मिक अर्थ होता है। जिस भाषा में यह लिखी गई है वह

स्पष्ट नहीं हैं। इस प्रकार की शिक्षा देने वाले शिक्षक झूठे हैं। ऐसों के विषय में यीशु ने कहा है, ''तुम न तो पवित्रशास्त्र ही को जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ को।'' (मार्क १२:१४) बाइबल की भाषा को उसी प्रकार समझना चाहिए जैसा उसे लिखी गई है संकेत और उपमा के रूप में दी गई बातों को ही केवल समझने में कठिनाई होती है। खीस्त ने प्रतिज्ञा की है, ''यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा।'' (यूहन्ना ७:१७) बाइबल जैसी लिखीगई है वैसी ही लोग यदि उसे ग्रहण करते और भरमाने एवं राह भटकाने के लिए झूठे शिक्षक नहीं उठते तो ऐसा काम पूरा होता कि उसे देख कर दूतगण आनन्दित होते। बहुत से लोग जो अभी भूल में पड़कर इधर-उधर भटकते फिर रहे उनमें से हजारों हजार लोग खीस्त के अनुगामी हो जाते।

(15) मसीह के दिए गए परिणामों से क्या कदम उठेंग?

तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा। तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।

(यिर्मयाह 29:12-13)

हम लोगों को अपने मन की सारी शक्ति से पवित्रशास्त्र के वचनों का अध्ययन करना चाहिए। परमेश्वर की गुढ़ बातों को जहाँ तक मनुष्य समझ सकता है समझने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। फिर भी यह नहीं समझना चाहिए कि बच्चे के समान बन कर सीखने के लिए नम्र होना आवश्यक है। दार्शनिक समस्याओं को समझने के लिए जो तरीके अपनाए जाते हैं उन तरीकों से पवित्रशास्त्र के वचनों को पूर्ण रूप से समझना संभव नहीं है। आत्मनिर्भरता के साथ बहुत से लोगों के जैसे विज्ञान की बातों को समझने की नीति अपना कर बाइबल का अध्ययन न करें, पर परमेश्वर से प्रार्थना करके समझने के लिए उसी पर निर्भर रहें और सच्चे

मन से उसकी इच्छा को जानने की कोशिश करें। उस बड़े ''मैं हू'' के पास प्राप्त करने के लिए नम्रता और सीखने के विचार से जाना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो शैतान के दूत हमारे मन को ऐसा कुंठित हृदय को ऐसा कठोर कर देंगे कि हमारे मन में सत्य का कुछ प्रभाव नहीं पड़ेगा।

(16) बाइबिल ज्ञान का वादा किससे किया जाता ह?

तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (यूहन्ना 8:31-32)

यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; (भजन 19:7)

पवित्रशास्त्र के कुछ पुस्तकों को विद्वान लोग रहस्यपूर्ण कह कर समझना कठिन अथवा अनावश्यक बताते हैं। उन्हीं पुस्तकों में उनकें लिए जिन्होंने मसीही स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है शिक्षा और शान्ति की बातें मिलती है। ईश्वर के विषय में शिक्षा देने वाले बहुत से धर्म गुरू परमेश्वर के वचन को स्पष्ट रूप से नहीं समझ सकते। इसका एक विशेष कारण यह है कि वे सच्चाई को जानकर भी अनजान होते हैं क्योंकि वे उनके अनुसार चलना नहीं चहते। बाइबल की सच्चाई को समझना किसी की तीव्र बुद्धि पर निर्भर करना नहीं है जितना कि एकमात्र धार्मिकता की खोजी होने से सच्चाई को समझ सकते हैं।

(17) आध्यात्मिक सत्य कैसे समझे जाते हैं ?

परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है। (1 कुरिन्थियों 2:14)

बाइबल को बिना प्रार्थना किए कभी अध्यायन नहीं करना चाहिए। पवित्र आत्मा ही हम लोगों को जिन बातों को हम सहज से समझ सकते है उनके महत्व को अनुभव करने की भावना मन में उत्पन्न कर सकता है। वही हम लोगों को सच्चाई की उन बातों को जिन्हें समझना कठिन है खींच तान करने से हमें रोक सकता है। इसीलिए स्वर्ग के पवित्र दूतों का यह काम है कि वे परमेश्वर के वचन को समझने के लिऐ लोगों के हृदय को तैयार करें। तब हम ऐसी स्थिति में परमेश्वर के वचन में जो प्रतिज्ञाए हैं उनसे शक्ति और उत्साह पाकर उसकी चेतावनी को सहर्ष ग्रहण करेंगे और अनमें जो मधुरता है उसका रसास्वादन करेंगे। हमें भजन संहिता की प्रार्थना को अपना कर कहना चाहिए, ''मेरी आंखे खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भूत बातें देख सकूं।'' (भजन संहिता ११९:१८) प्रार्थना और बाइबल अध्ययन करने की अवहेलना करने के कारण ही परीक्षा को रोकना असंभव सा जान पड़ता है। वह जो परीक्षाओं में पड़ता है परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को शीघ्र स्मरण नहीं कर सकता इसलिए पवित्रशास्त्र के वचन रूपी हथियार से शैतान का सामना करने में असमर्थ होता है। पर स्वर्गदूतों का समूह उनके चारों और रहता है जो परमेश्वर के वचनों को सीखने की अभिलाषा रखते हैं। जब परमेश्वर के लोगों को उसके वचन की आवश्यकता होगी उस समय वे (दूतगण) उस समय के लिए जिस सच्चाई की आवश्यकता होगी उसे स्मरण कराएंगे। इस प्रकार ''जब शत्रू महानद की नाई पढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा उसके विरूद्ध झंडा खड़ा करेगा।'' (यशायाह ५९:१९)

(18) खतरनाक समय में हम आध्यात्मिक सच्चाइयों को कैसे याद करेंगे ?

परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। (यूहन्ना 14:26)

यीशु ने अपने शिष्यों को प्रतिज्ञा की है, ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।'' (यूहन्ना १४:२६) ख्रीष्ट की बातों को पहले से अपने मन से संचित करके रखना चाहिए। तब परमेश्वर की आत्मा उन बातों को विपत्ति के दिनों में स्मरण कराएगा। ''मैने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, ''दाऊद ने कहा, ''कि तेरे विरूद्ध पाप न करूं।'' (भजन संहिता ११६:११)

(19) परमेश्वर के वचन पर संदेह करने का दुखद परिणाम क्या है?

और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। (रोमियो 1:28)

हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए। (इब्रानियों 3:12)

जितने अपने अनन्त जीवन का मूल्यॉंकन करते हैं उन्हें नास्तिकतावाद के आक्रमण से अपने को सुरक्षित रखना चाहिए क्योंकि सत्य के स्तम्भ पर बैरी धावा करेंगे। तिरस्कारपूर्ण व्यंग (ताना), वाक्छल, कपटपूर्ण तथा घातक शिक्षा तथा आधुनिक नास्तिकतावाद से बचना कठिन है। शैतान तो सभी वर्ग के लोगों को परीक्षा करने के लिए विभिन्न रूप अपनाया है। अशिक्षित वर्ग को हँसी मजाक करके आक्रमण करता है। शिक्षितों को वैज्ञानिक प्रश्नों और दार्शनिक तर्क द्वारा आक्रमण करता है। इन सब तरीकों से शैतान लोगों के मन में पवित्रशास्त्र के प्रति अविश्वास तथा घश्णा उत्पन्न करता है। अनुभव शून्य युवक युवतियाँ भी मसीही धर्म के मूल सिद्धान्तों पर संदेह करने लगते हैं। युवक युवतियों के बीच में जो नास्तिकतावाद फैला है यद्यपि अधिक महत्व का नहीं है तो भी उसका कुछ प्रभाव तो अवश्य है। उनके प्रभाव से प्रभा. वित होकर बहुत से लोग अपने पूर्वजों के विश्वास का उपहास करते हैं और अनुग्रह की आत्मा का अपमान करते है। (इब्री १०:२९) बहुत से लोग जो परमेश्वर की महिमा कर सकते थे और दूनियाँ के लिए अशीर्वाद बन सकते थे वे नास्तिकतावाद के प्रभाव से प्रभावित हो कर नष्ट हो गए। जितने मनुष्यों को ज्ञानी समझ कर उनके अहंकारपूर्ण निर्णयों पर भरोसा करते हैं और यह कल्पना करते हैं कि वे ईश्वर के ज्ञान की सहायता बिना उसके रहस्यों को समझा सकते हैं और सच्चाई को पा सकते है वे शैतान के जाल में फंस गए हैं।

(20) यदि हमने परमेश्वर के वचन को अपना गढ़ बना लिया है तो हमारे परीक्षणों का क्या परिणाम होगा ?

उस तिहाई को मैं आग में डाल कर ऐसा निर्मल करूंगा, जैसा रूपा निर्मल किया जाता है, और ऐसा जाचूंगा जैसा सोना जांचा जाता है। वे मुझ से प्रार्थना किया करेंगे, और मैं उनकी सुनूंगा। मैं उनके

विषय में कहूंगा, ये मेरी प्रजा हैं, और वे मेरे विषय में कहेंगे, यहोवा हमारा परमेश्वर है॥ (जकर्याह 13:9)

धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा। (यिर्मयाह 17:7-8)

जब जांच का समय आएगा तब जिन्होंने परमेश्वर के वचन से अपने जीवन को अनुशासित किया है उनपर जीवन प्रकट किया जाएगा। वर्षों के समय सदा हरा रहनेवाले पौधे को दूसरे पौधों से अलग नहीं कर सकते पर जब शरद निकलने लगती है तब सदा हरा रहने वाले वश्क्ष के पते हरे रह जाते हैं पर दूसरे पेड़ों के पत्ते गिर जाते हैं और ठूंठ जैसे बन जाते हैं। झूठे शिक्षकों को सच्चे मसीहियों से अभी अलग करना सहज नहीं है पर समय आ गया है जब कि सच्चे और झूठे का पता लग जाएगा। विरोध होने लग जाए हठधर्मी और क्रूरता का साम्राज्य फैल जाए, सताहट आरम्भ हो जाए तब कच्चे हृदय वाले और पाखंडियों का साहस चला जाएगा, वे डमाडोल होकर अपना विश्वास छोड़ देंगे, पर सच्चे मसीही चट्टान के समान अपने विश्वास में दश्ढ़ रहेंगे और सुख के दिनों में जैसा उनका विश्वास नहीं चमकता था वैसा चमकना और वे सदा अटल बने रहेंगे।

मुझे एहसास है कि पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में शैतान मानव जाति को

परमेश्वर के पवित्र वचन का ज्ञान प्राप्त करने से रोकने के लिए हर संभव उपकरण का उपयोग कर रहा है।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं समझता हूं कि जो लोग परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करते हैं उनका विरोध और उपहास किया जाएगा और वे केवल परमेश्वर के वचन से प्रेरित होकर खड़े हो सकते हैं।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मुझे एहसास हुआ कि वह दिन यहां है जहां वासना से प्रेरित बहुत सारे लोग बाइबल सच्चाई नहीं चाहते है क्योंकि यह उनके पापी संसार-प्रेमी दिलों की इच्छाओं के साथ हस्तक्षेप करता है। वे खुशी से शैतान के धोखे को स्वीकार कर रहे हैं जिसे वे प्यार करते हैं।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं परमेश्वर के वचन में देखता हूं कि अंतिम दिनों में झूठे सिद्धांतों की घोषणा करने वाले कई झूठे शिक्षक होंगे। मैं प्रभु को धन्यवाद देता हूं कि हमें भविष्यवाणियां प्रदान करने के लिए हमें

उद्धार के लिए ताकि बुद्धिमान हो जाये।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

यह मेरा दृढ़ संकल्प है कि परमेश्वर की सहायता से मेरे पास परमेश्वर के वचन का अपना दैनिक अध्ययन होगा और इसकी व्याख्या के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं परीक्षण के इन समय में उनके वचन का गढ़ प्रदान करने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं और उनकी कृपा से मैं उन लोगों में शामिल होऊंगा जो उनके वचन के आज्ञाकारी हैं और आने वाले दिन में लंबे समय तक खड़े रहेंगे।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

____
____
____
____
____
____
____
____
____
____
____
____

पाठ 9
अंतिम चेतावनी

(1) प्रकाशितवाक्या 14:8 में ‘‘स्वर्गदूत" द्वारा चेतावनी के अंतिम दिन को क्या संदेश दिया गया है ?

फिर इस के बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिस ने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है॥ (प्रकाशित 14:8)

इस के बाद मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिस का बड़ा अधिकार था; और पृथ्वी उसके तेज से प्रज्वलित हो गई। उस ने ऊंचे शबद से पुकार कर कहा, कि गिर गया बड़ा बाबुल गिर गया है: और दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया। (प्रकाशित 18:1-2)

(2) जब इस चेतावनी को यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 18 में बहाल किया हैए तो परमेश्वर के वफादार अनुयायियों को क्या दलील दी गई है ?

फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगों, उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उस की विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े। (प्रकाशित 18:4)

पवित्रशास्त्र का यह वचन बाबुल के गिरने पर दूसरे दूत ने (प्रका० वाक्य १४:८) के समा. चार को पुनः दुहराया था जब कि सब संस्थाओं में भ्रष्टाचार फैल रहा था और यह बाबुल की सी दशा बन गई थी। उस समय के बाद से पुनः १८४४ ई० का शरत काल में सुनाया गया। धार्मिक जगत की सब से बुरी दशा का वर्णन यहाँ किया गया है। हरेक सत्य को त्याग कर लोगों का मन अंधकार से भर कर ढीठ बनेगा और वे अविश्वस्तता में कठोर हो जायेंगे। ईश्वर की चेतावनी के विपरीत वे दस आज्ञाओं में से एक को ऐसा रौंदते हुए चलेंगे यहाँ तक कि जो इस को पवित्र मानते हैं उन्हें सताने लगेंगे। खीस्त ने ऐसे विरोधाभास स्थान में अपने वचन और लोगों पर एक गाँठ (रोक) लगा दी है। जैसे मंडलियों के द्वारा भूतवादी शिक्षा को अपनायी जा रही है तो बुरे दिल से इस की रोक को हटायी जा रही है। धर्म मानना एक ढोंग सा हो जायेगा। सब बुराइयाँ इस में शामिल हो जायेंगी। ऐसी विश्वास जिसमें भक्ति का रूप तो दिखाई देगा पर धोखा देनेवाला शैतान के सिद्धान्त होंगे जो अन्त में इन्ही से मंडलियों में भर जायेंगे।

(3) बाबुल का 'पाप' किस स्तर तक बढ़ा है ?

क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुंच गए हैं, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं। (प्रकाशित 18:5)

उसने अपने क्रोध के कटोरे को भर दिया है और विनाश उस पर आने वाला है। पर परमेश्वर के लोग अभी तक बाबुल में हैं। ईश्वर के न्याय होने के पहले उन्हें निकाल लिया जाना चाहिये ताकि उन्हें उसके पापों का भागीदारी न होना पड़े और उस पर आने वाली विपत्ति भी न पड़े। इस का आन्दोलन एक स्वर्गदूत के द्वारा कराया जाता है जो स्वर्ग से उतरता है तो उसकी महिमा से पश्थ्वी भर जाती है और बड़े जोर से चिल्ला कर बाबुल के पापों की घोषणा करता है। इस संवाद के सम्बन्ध में बुलाहट की पुकार सुनाई देती है ''हे मेरे लोगों वहाँ से निकल आओ''। यह घोषणा तीसरे दूत के संवाद से मिल कर जगत के लोगों के लिए आखिरी चेतावनी का संवाद बनाता है।

(4) परमेश्वर के अवशेष पर पशु शक्ति की छवि को कौन सा दंड देगा जो उसके झूठे सिद्धांतों में भाग लेने से इनकार करता है ?

कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और कोई लेन देन न कर सके। (प्रकाशित 13:17)

और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे; और जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। (प्रकाशित 13:15)

यह एक गम्भीर एवं डरावना विषय है जो

पश्थ्वी पर के लोगों को सामना करना पड़ता है। जगत की शक्ति ईश्वर की आज्ञाओं के विरूद्ध उठ रही है। वह एक दिन क्या गरीब, क्या धनी, क्या दास, क्या स्वतन्त्र, क्या छोटे और क्या बड़े सब को मंडली में नियम बना कर झूठे सब्बत पालन करने के लिये आज्ञा देगी। (प्रकाशित वाक्य १३:१६) जो लोग इस को मानने से इनकार करेंगे उन्हें अन्त में राज्य की और से दोषी ठहराया जायेगा और उन पर मश्त्यु दण्ड की आज्ञा दी जायेगी दूसरी ओर ईश्वर की व्यवस्था (आज्ञा) सश्ष्टि कर्त्ता के विश्राम दिन को मानने की मांग करती है और जो इसे नहीं मानते हैं वे ईश्वर के क्रोध का शिकार बनते हैं।

(5) परमेश्वर ने तीसरे दूत के माध्यम से उन लोगों को क्या चेतावनी दी है जो जानवर की पूजा करते हैं ?

फिर इन के बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, कि जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले। तो वह परमेश्वर का प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। (प्रकाशित 14:9-10)

इस समस्या को ले कर मनुष्य के सामने स्पष्ट कर दिया जाता है कि जो कोई ईश्वर की आज्ञा को रौंदेगा या नहीं मानेगा और मनुष्यों की आज्ञा का पालन करेगा वह अपने माथे पर पशु का छाप लगवायेगा। क्योंकि जिसकी आज्ञा को मानने के लिये तौयार होगा उसी का मुहर लेगा, चाहे पशु का या ईश्वर का। स्वर्ग की चेतावनी यह है कि यदि कोई मनुष्य उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे तो वह अपने माथे और

दाहिने हाथ पर पशु की छाप लेगा। तब वह परमेश्वर के क्रोध का कटोरा का मदिरा पियेगा जिसमें कोई दूसरी मिलावट नहीं है, सिर्फ क्रोध ही है। (प्रकाश वाक्य १४:९-१०) पर किसी को भी ईश्वर के इस क्रोध का सामना नहीं करना पड़ेगा जब तक कि उसके पास सच्चाई नहीं लायी जायगी और वह अपने विवेक का त्याग न कर ले। अब भी बहुत से लोग होंगे जिन के पास सच्चाई का संवाद नहीं पहुँचा है। चौथी आज्ञा को मानने की सच्ची ज्योति अभी तक उनके पास नहीं पहुँची है। वह जो सब के मन को जानने वाला और सब की इच्छा को परखने वाला है वह किसी को इस मामले में धोखा खाने नहीं देगा। लोगों पर अंधाधुंध बिना जाने आज्ञा मानने का भार नहीं लादा जायेगा। हरेक व्यक्ति को चुनाव करने के लिये काफी प्रकाश दिया जायेगा ताकि बुद्धिमानी पूर्वक चुन सके।

(6) शास्त्र के अनुसारए चैथी आज्ञा का सब्त क्या दर्शाता है ?

और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें, और जिस से तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। (यहेजकेल 20:20)

फिर मैं ने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें; कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करने वाला हूँ। (यहेजकेल 20:12)

सो इस्त्राएली विश्रामदिन को माना करें, वरन पीढ़ी पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें। वह मेरे और इस्त्राएलियों के बीच सदा एक चिन्ह रहेगा, क्योंकि छः दिन में यहोवा

ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया॥ (निर्गमन 31:16-17)

सब्बत पालन करना विश्वास होने के लिये एक बड़ी परीक्षा होगी क्योंकि यह वाद-विवाद का सच्चा निष्कर्ष होगा। जब आखिरी जाँच मनुष्य के ऊपर चलेगी तब कौन ईश्वर के लोग हैं और कौन नहीं हैं इसके विभाजन की बड़ी लकीर खींची जायेगी। चौथी आज्ञा के विरूद्ध जब राज्य की स्वीकशति दे दी जायेगी तब जो ईश्वर की आज्ञा अनुसार सच्चा सब्बत को मानेगा वह ईश्वर का आज्ञाकारी माना जायेगा और जो राज्य के द्वारा स्वीकशति दी गई आज्ञा को मानेगा वह उसका विश्वास पात्र बनेगा। जब एक वर्ग के लोग राज्याधीन हो कर उसकी आज्ञा मानेंगे तो वे पशु का छाप लेंगे और जो उसे न मान कर स्वर्ग के अधीन हो कर ईश्वर की आज्ञा मानेंगे वे ईश्वर की छाप ग्रहण करेंगे। अब तक जो लोग, तीसरे दूत की सच्चाई का संवाद देते थे उन्हें भड़काने वाले के रूप में समझते थे। उनकी भविष्यवाणी थी कि अमेरिका में धार्मिक असहिष्णुता की बढ़ती होगी और जो परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे उन्हें सताने के लिए राज्य और मंडली मिल जाएंगे और उन्हें मूर्ख और व्यर्थ समझेंगे। विश्वास से यह घोषणा की गई है कि यह देश जो पहले था उससे अलग नहीं होगा धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा के संबंध में, लेकिन जब रविवार पालन के मामले में सब जगह जोर शोर से जुल्म किया जायेगा इस के विषय तो सन्देह बन कर रह गए, उसे पूरा होते देखा जायेगा और तीसरे दूत के संवाद का प्रभाव मजबूत होता जायेगा जो पहले नहीं हुआ था।

(7) परमेश्वर किसको ‘‘इसराएल का संतान" मानता है ?

परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिये कि जो इस्त्राएल के वंश हैं, वे सब इस्त्राएली नहीं। और न इब्राहीम के वंश होने के कारण सब उस

की सन्तान ठहरे, परन्तु लिखा है कि इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा। अर्थात शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं। (रोमियो 9:6-8)

जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है, कि जो मेरी प्रजा न थी, उन्हें मैं अपनी प्रजा कहूंगा, और जो प्रिया न थी, उसे प्रिया कहूंगा। और ऐसा होगा कि जिस जगह में उन से यह कहा गया था, कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो, उसी जगह वे जीवते परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे। और यशायाह इस्त्राएल के विषय में पुकारकर कहता है, कि चाहे इस्त्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बारबर हो, तौभी उन में से थोड़े ही बचेंगे। (रोमियो 9:25-27)

(8) अंतिम दिनों में आध्यात्मिक नेतृत्व के लिए बहुमत पाने की लालसा कौन करेगा ?

क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे।

(2 तीमुथियुस 4:3-4)

(9) परमेश्वर के अंतिम संदेश को कैसे पहुंचाया जाना चाहिए?

कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा। (2 तीमुथियुस 4:2)

हरेक युग में ईश्वर ने मंडली के लोगों को अपने दासों के द्वारा चेतावनी का संवाद भेजा है जिस में पापों से अलग होने को कहा गया है। परन्तु लोगों ने इसे हल्का समझ कर निर्दोष या पवित्र सत्य को मानने से इनकार किया है। बहुत से धर्मसुधारक जब सुधार करने का बीड़ा उठाया या काम शुरू किया तो मंडली और लोगों को उन पापों के प्रति कड़ी भर्त्सना या चेतावनी देने का कठोर प्रयत्न किया था। उन्होंने आशा की थी कि उनके सरल जीवन बहुत से लोगों को बाइबल के प्राचीन सिद्धान्तों को पालन करने की दिशा में लाया जा सकेगा। ईश्वर की आत्मा उन पर ऐसी डाली गई जैसे एलियाह नबी पर, जिसने दुष्ट राजा और लोगों को उनके पापों के लिये कड़ी चेतावनी दी थी – बाइबल के सरल और सीधी बातों को प्रचार करने से नहीं रूके ऐसी बातों को भी प्रचार करना नहीं छोड़ा जिसको वे नहीं चाहते थे। उन्हें सच्चाई को प्रगट करने के लिये वाध्य किया गया यद्यपि कि उनके लिये जान का खतरा था। जो वचन प्रभु ने उन्हें दिया था उसके नतीजे का परवाह किये बिना वे निडर हो कर चेतावनी देते रहे। जिस से लोगों को सुनने का मौका मिला।

(10) दुनिया को प्रकाशितवाक्य 14 के तीन स्वर्गदूतों के संदेश देने के लिए परमेश्वर किसका उपयोग कौन करेगा ?

जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है: परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं। तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे। (यूहन्ना 15:14-16)

जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा, और यदि तू उसको न चिताए, और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिस से कि वह सचेत हो और अपना दुष्ट मार्ग छोड़ कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। पर यदि तू दुष्ट को चिताए, और वह अपनी दुष्टता ओर दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फंसा हुआ मर जाएगा; परन्तु तू अपने प्राणों को बचाएगा। (यहेजकेल 3:18-19)
क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें। (प्रेरितों 4:20)

इसी तरह से तीसरे दूत के संवाद का भी

प्रचार किया जाना चाहिये। जब इस से बड़ी शक्ति के साथ प्रचार करने का समय आयेगा तो ईश्वर अपने काम को एक छोटे जरिये से भी पूरा करेगा। ये वे लोग होंगे जो ईश्वर के काम के लिये अपने मन को शुद्ध और पवित्र करते हैं। प्रचारक पवित्रात्मा के द्वारा अभिषिक्त होगें न कि उनकी शिक्षा की योग्यता या ट्रेनिंग के आधार पर। प्रार्थना करने वाले तथा विश्वासी लोग बहुत जोश के साथ ईश्वर जो वचन उसे सुनाने के लिये निकल पड़ेंगे।

(11) जब बाबुल के झूठे सिद्धांतों का पता चलता है, तो जो लोग ईमानदारी से मसीह के दावे के सच्चे सिद्धांतों का पालन करना चाहते हैंए वे क्या वादा कर सकते हैं ?

तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा (यूहन्ना 8:31-32)

बाबुल के पाप को खोला जायेगा। राजकीय आदेश जो डरावना होगा, मंडली में भूतवाद का प्रचार की जमती हुई जड़ को समाप्त करने का और पोप की शक्ति की चलाकी से शीघ्रता पूर्व आगमन इन सारी बातों का खुलासा कर दिया जायेगा। इस गम्भीर चेतावनी से सुसमाचार के प्रति जागरण आयेगा। तब हजरों हजार लोग सुनने के लिये लालायित होंगे जिन्हों ने पहले कभी नहीं सुना था। अश्चर्य चकित हो कर सुनेगे कि बाबुल की मंडली अपने पाप और गलती के कारण गिर गया है। उसने स्वर्ग से भेजी हुई सच्चाई को नहीं पालन किया है। जब वे अपने पुराने प्रचारक और पादरियों के पास पूछ ताछ करने के लिये जोश के साथ आयेंगे और कहेंगे – ‘‘क्यों ये सच हैं जो हम सुनते हैं ? तब प्रचारक लोग झूठी कहानी कह कर भविष्यवाणी की इस बात को दबा कर उन के

डर भय को शान्त करते तथा उठते जोश को भी ठंढा करते है। परन्तु जब बहुत से लोग मानव अधिकार से सन्तुष्ट नहीं होंगे तो वे स्पष्ट करने को कहेंगे।'' प्रभु कहता है ''जैसे प्रांचीन काल के फारीसियों के समान लोकप्रिय सेवा में, जब उन्हें प्रश्न किया जाता था तो वे क्रोधित होते थे। इसे शैतान का संवाद कह कर छोड़ते थे। पाप के पथ पर चलने वालों को सच्चाई के साथ चलने वालों के विरूद्ध भड़का कर सताते थे।

(12) बाबुल के झूठे सिद्धांतों पर भगवान की आज्ञा का पालन करने वालों के खिलाफ इस आयत में कौन सी भविष्यवाणी पूरी होगी ?

और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और वह समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ॥ (प्रकाशित 12:17)

परन्तु तुम अपने विषय में चौकस रहो; क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे; और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उन के लिये गवाही हो। पर अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहिले से चिन्ता न करना, कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए, वही कहना; क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा

है। (मरकुस 13:9-11)

जैसे जैसे वाद–विवाद बढ़ता जाता है नया क्षेत्र खुल कर ईश्वर के वचन को जो रौंदा गया था उसे मानने के लिये ललकार आती थी तो शैतान उत्तेजित हो जाता था। वचन पर ध्यान देने वालों के विरूद्ध, नहीं ध्यान देने वाले भड़क उठते थे। पादरी लोग इसं संवाद को दबाने के लिये मनुष्य की शक्ति से बढ़ कर और कोई दूसरी शक्ति का प्रयोग करते थे जिस से उनके सदस्यगणों पर सच्चाई का असर न पड़ने पावे। सब तरह से उनकी आज्ञानुसार इस विषय सम्बन्धी तर्क–वितर्क को दबाने का प्रयत्न किया जाता था। मंडली सरकार की शक्ति से अर्जी करती थी। इस में पोप और प्रोटेस्टैंट लोग भी शामिल होते थे। रविवार पालन का आन्दोलन जैसे जैसे जोर पकड़ता जाता है आज्ञा पालन करने वालों के विरूद्ध नियम भी लागू किया जायेगा, उन पर जुरमाना और जेल जाने की दण्ड की आज्ञा सुनाई जायगी। किसी को उनके विश्वास से हटाने के लिये ऊँचा पद दिया जायेगा तो किसी को पुरस्कार भी मिलेंगे। ऐसे समय में उनका यह उत्तर होगा – हमें धर्मशास्त्र सिखाओं कि हम कहाँ गलती कर रहे हैं। – ‘‘ठीक ऐसी ही अर्जी लूथर ने उस संकट की घड़ी में की थी। जिन लोगों को इस संबंधित कचहरी में हजिर होना पड़ा था उन्हों ने बड़े साहस से गव. ाही दी थी तब वहाँ सुनने वालों ने भी ईश्वर की सब आज्ञाओं को पालन करने की प्रतिज्ञा की थी। इस प्रकार से सच्चाई की ज्योंति हजारों के पास पहुँचायी जायेगी। जो शायद और किसी दूसरी जरिया से नहीं पहुँच पाती।

(13) परिवार के सदस्यों के बीच भी क्या होगा क्योंकि कुछ लोग सच्चाई के पिछे चलते हैं ?

और भाई को भाई, और पिता को पुत्र घात के लिये सौंपेंगे, और लड़केबाले माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। (मरकुस 13:12)

ईश्वर के वचन को विवेक पूर्वक मानना ही

उपद्रवी होने का कारण दिया जायेगा। शैतान द्वारा भरमाए जा कर माता-पिता, अपने बच्चों पर जो सच्चाई पर विश्वास करेंगे, क्रूरता से व्यवहार करने लगेंगे। स्वामी और स्वामिनी आज्ञा-पालन करने वाले दास-दासियों पर सताहट लायेंगे। घर में प्यार और स्नेह नहीं पाया जायेगा, बच्चों को लावारिस कर उन्हें घरों से निकाल दिया जायेगा। पौलुस का वचन उस समय अक्षर सः पूरा होगा। ''जो यीशु मसीह का भक्त बनेंगे उनको सताहट का दुःख उठाना पड़ेगा'' (२ तीमूथी ३ः१२) सच्चाई की रक्षा करने वाले रविवार पालन करने के लिये इनकार करेंगे तो किसी को जेल भेजा जायेगा तो किसी को निर्वासित किया-जायेगा और किसी को दास-दासी की तरह व्यवहार किया जायेगा। मानव बुद्धि (समझ) से अभी असम्भव और अनहोना सा लग रहा है। पर जैसे ही ईश्वर की आत्मा का रोक (दबाव) उन लोगों से उठ जायेगा जो शैतान के वश में हैं जो स्वर्ग के उपदेशों को घृणा करते हैं उनके मन में विचित्र परिवर्त्तन होगा। उनके दिल में जब ईश्वर का डर और भय खत्म हो जायेगा तब कठोरता और क्रूरता का भयंकर राज्य उदय होगा।

(14) सच्चाई के हमारे ज्ञान के साथ हमें इसका सबसे बड़ा विरोधी बनने से रोकने के लिए क्या करना चाहिए ?

जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उस की आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उस में सत्य नहीं। पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है: हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उस में हैं। (1 यूहन्ना 2:4-5)

जैसे सताहट की आँधी पहुँचेगी, बहुत से लोग जिन्होंने तीसरे दूत के संवाद को ग्रहण कर मसीही बने हैं परन्तु सत्य को नहीं माने हैं वे अपने पद छोड़ कर विरोधी पार्टी में मिल

जायेंगे। जगत के लोगों और उनके स्वभाव के साथ मिल कर सच्चाई की ज्योति को हल्की नजर से देखेंगे। जब उन पर ,परीक्षा आयेगी वे आसान रास्ता को चुन कर सत्य का त्याग करेंग. े। प्रतिभाशाली और प्रतिष्ठित लोग जिन्होंने सच्चाई पा कर किसी समय आनन्द किया था वही लोग अब अपनी शक्ति या प्रभाव से लोगों को गुमराह करेंगे। वे अपने पूर्वकाल के भाईयों का जानी दुश्मन बनेंगे। जब सब्बत मानने वालों को कचहरी में अपने विश्वास की गवाही देने के लिये बुलाया जायेगा उस समय ये ही लोग होंगे जो शैतान के वश में होकर उन पर झूठा दोष लगा कर शासकों के सामने गवाही देंगे।

(15) पतरस और यूहन्ना की तरहए सत्य की घोषणा करते समय उन दुःखद सतावट का निर्णय क्या होगा ?

परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें। क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें। (प्रेरित 4:19-20)

इन सताहट के दिनों में प्रभु के दासों के विश्वास की परख होगी। उन लोगों ने ईश्वर के वचन के अनुसार विश्वस्तता पूर्वक गवाही दी है। ईश्वर की आत्मा से प्रेरणा पा कर उन्हों ने सच्ची गवाही दी है। पवित्रात्मा से प्रेरणा पा कर तथा स्वर्गीय जोश से परिपूर्ण हो कर उन लोगों ने अपना कर्त्तव्य ईमानदारी से निभाया। लोगों का डर और भय छोड़ कर प्रभु ने जो सन्देश उन्हें दिया था उसे खुल कर प्रचार किए। उन्हों ने अपने क्षणिक सुख तथा मान–सम्मान और जीवन के खतरे की परवाह न कर अपना काम किया। जब क्रोध रूपी विरोध की भावना की आँधी उन पर आ पड़ेगी तब कुछ लोग अपने गलत ख्याल के दोष रूपी बोझ से दबाये जायेंगे।

वे घोषणा करने के लिये तैयार होंगे, – ‘‘यदि हमने अपनी बातों का परिणाम को भविष्य में क्यों होगा उसे देख पाते तो शान्त रहते। वे विपत्ति के घेरे में पड़ेंगे। शैतान उन्हें भयंकर परीक्षा की ओर ले जायगा। जिस काम को पूरा करने के लिये उन्होंने लिया था अब वह पूर्ण से बहुत दूर दिखाई देगा। उन्हें मार डालने का भय दिखाया जायेगा। जो जोश उनके मन में पैदा हुआ था वह जाता हुआ दिखाई देगा पर वे पीछे नहीं मुड़ेंगे। अपनी असमर्थता को देख कर वे पराक्रमी ईश्वर की मदद की खोज करेंगे। परन्तु जो बातें उन्हों ने कही थी वे अपनी नहीं वरन ईश्वर की दी हुई थी। ईश्वर ने सत्य के वचन को उन्हें बोलने के लिए कहा था और उन्हों ने उसे विना बताये नहीं छोड़ा।

(16) संकट के इन क्षणों में हम किससे शक्ति प्राप्त कर सकते हैं ?

क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सिरजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है। वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है। तरूण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं; परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे॥

(यशायाह 40:28-31)

यद्यपि परीक्षा चलती रहती है उन्हें उसे सामना करने की शक्ति मिलती जाती है। लड़ाई अधिक तेज और नजदीक होती जाती है। परन्तु

उनके विश्वास और साहस भी इस जरूरत के समय गवाही देने के लिये मजबूत होता जाता है। उनकी साक्षी यह होती है – ‘‘हम लोग ईश्वर के पवित्र वचन को विभाजित कर के खेलवाड़ करने का साहस नहीं करते हैं। एक भाग को आवश्यक और दूसरे भाग को अनावश्यक कहना नहीं चाहते जो जगत की दश्ष्टि में अच्छा समझा जाता है। हम जिस प्रभु की सेवा करते हैं वह हमें छुड़ाने का सामर्थ रखता है खीस्त ने जब मश्त्यु की शक्ति पर काबू पा लिया है तो क्या हम इस जगत की धमकी (मश्त्यु) से डरेंगे, जिस को जीता गया है।

(17) जब हम आरक्षण के बिना मसीह की सेवा करते हैं, तो क्या उपचार की उम्मीद की जा सकती है ?

तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। (मत्ती 24:9)

सताहट का विभिन्न रूप में सिद्धान्त का विकास तब तक होता रहेगा जब तक शैतान रहेगा और क्रिश्चियन धर्म का भी बोल बाला बना रहेगा। कोई व्यक्ति विरोधी का सामना किए बिना ईश्वर की सेवा नही कर सकता है। बुरे दूत उन्हें अगुवा कर लेंगे, डरायेंगे और कहेंगे कि उनका शिकार को छुड़ा कर ले रहा है। बुरे लोग उसके अच्छे चरित्र के द्वारा डॉट खायेंगे या शार्मिन्दा होंगे और उन लोगों से मिलेंगे जो उसका बिरोध करते है और अपने समाज से अलग करेंगे। फिर ईश्वर से अलग करने के लिये उस पर परीक्षा लायेंगे। जब उनकी ये हरकतें सफल नहीं होगी तब वे अन्त में एक मजबूर करने वाली शक्तिका प्रयोग कर उसके विवेक पर आक्रमण करेंगे।

(18) यहां तक कि इन खतरनाक समय में जो अंततः सांसारिक शासकों को कौन नियंत्रित करता है?

राजा का मन नालियों के जल की नाईं यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उस को फेर देता है। (नीतिवचन 21:1)

हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। (रोमियो 13:1)

परन्तु जब तक प्रभु स्वर्ग में रह कर मनुष्यों की विचवाई करता है तब तक लोगों और शासकों में पवित्रात्मा के हस्तक्षेप (रोक) का प्रमाण महसूस किया जाता है। यह अब तक जगत के कानूनों पर विपरीत प्रभाव डालता है। यदि ऐसा नहीं होता तो जगत की स्थिति अभी जो है उससे और भी अधिक खराब होती। जब हमारे शासक शैतान के क्रियाशील एजेन्ट के रूप में काम करते हैं तब ईश्वर भी राष्ट्र के प्रमुख नेताओं से अपना काम करवाता है। जब दुश्मन अपने दासों के पस्तावित कार्य को रौंद डालने के लिये जोर लागाने के लिए कहता है तब देश के ही कुछ नेतागण जो ईश्वर से डरते हैं वे प्रभु के दूतों से प्रभावित हो कर ऐसा वादविवाद खड़ा करते हैं जिस का जबाव देना विरोधी पार्टी को कठिन हो जाता है। इस प्रकार बुराई की शक्तिशाली धारा को थोड़े ही लोग रोक सकते है। सत्य के विराधी दुश्मन रोक लिये जाते हैं और तीसरे दूत के संवाद को काम करने दिया जाता है। जब चेतावनी का आखिरी संवाद दिया जायेगा तब इन नेताओं का ध्यान सच्चाई की और खींचा जायेगा जिस के द्वारा अभी काम हो रहा है। इन में से कुछ लोग परमेश्वर के लोगों के साथ हो कर सत्य को ग्रहण करेगें और दुख में इनका साथ देंगे।

(19) परमेश्वर अपने अंतिम दिन के संदेश को स्वीकार करने के लिए पुरुषों

के दिलों को स्थानांतरित करने के लिए किसको भेजेगा ?

उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। (योएल 2:28)

यह काम पेन्तीकोस्ट के दिन के समान ही होगा। जैसे पहली वर्षा के रूप में पवित्रात्मा मिली थी जो सुसमाचार रूपी बीज को उगाने का काम किया। उसी प्रकार फसलों के लिये भी पिछली वर्षा होती है पवित्रत्मा की अखिरी वर्षा भी होगी। तब हम लोग जानेंगे कि हम प्रभु को जान ने के लिये आगे बढ़ रहे हैं। उसके आने का दिन सबेरा सा है। वह हमारे पास वर्षा के रूप में आयेगा जैसे पहले वर्षा और पिझली वर्षा जगत में आती है। (होशे ६:३) ''हे सिम्योन के लोगों, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो और आनन्द करो क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा अर्थात बरसात् की पहली वर्षा बहुतायत से देगा और पहले के समान अगली और विछली वर्षा को भी बरसायेगा। (योएल २:२३) ईश्वर का कहना है कि अन्तिम दिनों में मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूँगा। और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा उसी का उद्धार होगा (प्रे० क्रि २:१७, २१) सुसमाचार सुनाने का काम परमेश्वर की कमजोर शक्ति से नहीं पूरा किया जायेगा पर बड़ी शक्ति के साथ जैसा आरम्भ में किया गया था। भविष्यवाणी में सुसमाचार को शुरू करने के लिये पवित्रात्मा की बहुतायात से वर्षा हुई उसी तरह इसे अन्त करने के लिये भी बहुतायत से वर्षा होगी। यहाँ जाग उठने का समय के विषय प्रेरित पतरस ने कहा है – ''इस लिये मन फिराओ और लौट आओ जिससे तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ। वह यीशु मसीह को भेजेगा और उस के सन्मुख से जागशति का समय तुम पर भी होगा। (प्रे० क्रिया ३:१९–२०)

(20) जैसा कि चिन्ह और चमत्कार उनके चेतावनी संदेश को प्रभावित करने के लिए परमेश्वर से बाहर जाते हैं, शैतान भी परमेश्वर की आत्मा की शक्ति का खंडन करने और बहुरूपियों के रूप में को धोखा देने के प्रयास में अपने एजेंटों के माध्यम से क्या करेगा?

और वह बड़े बड़े चिन्ह दिखाता था, यहां तक कि मनुष्यों के साम्हने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था।

(प्रकाशित 13:13)

ईश्वर के लोग अपने चमकते चेहरों के साथ जो पवित्रत्मा से भरपूर होने का चिन्ह होगा, एक जगह से दूसरी जगह प्रचार करने के लिये दौड़ा–दौड़ी करेंगे। हजारों की आवाजों (भाषाओं) में सारे जगत के लोगों को चेतावनी दी जायेगी। अश्चर्य के काम किये जायेंगे, रोगी चंगे किए जायेंगे और विश्वास करने वाले आश्चर्य कर्म करते जायेंगे। शैतान भी झूठे आश्चर्य कर्म करने में सामर्थवान होगा यहाँ तक कि यह आकाश से आग की वर्षा भी करेंगा। (प्र० वाक्य १३:१३) इस प्रकार जगत के निवासियों को अपने पैरों पर खड़े होने का समय होगा यानी विश्वास में स्थिर होना होगा।

(21) अंतिम चेतावनी संदेश के दिलों को दोषी ठहराते हुए परमेश्वर की आत्मा से परिणाम क्या होगा ?

कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी

और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। वरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम, और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात लोहू, और आग और धूएं का बादल दिखाऊंगा।
प्रभु के महान और प्रसिद्ध दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धेरा और चान्द लोहू हो जाएगा। और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा। (प्रेरितों 2:17-21)

इन सताहट के दिनों में प्रभु के दासों के विश्वास की परख होगी। उन लोगों ने ईश्वर के वचन के अनुसार विश्वस्तता पूर्वक गवाही दी है। ईश्वर की आत्मा से प्रेरणा पा कर उन्हों ने सच्ची गवाही दी है। पवित्रात्मा से प्रेरणा पा कर तथा स्वर्गीय जोश से परिपूर्ण हो कर उन लोगों ने अपना कर्त्तव्य ईमानदारी से निभाया। लोगों का डर और भय छोड़ कर प्रभु ने जो सन्देश उन्हें दिया था उसे खुल कर प्रचार किए। उन्हों ने अपने क्षणिक सुख तथा मान-सम्मान और जीवन के खतरे की परवाह न कर अपना काम किया। जब क्रोध रूपी विरोध की भावना की आँधी उन पर आ पड़ेगी तब कुछ लोग अपने गलत ख्याल के दोष रूपी बोझ से दबाये जायेंगे। वे घोषणा करने के लिये तैयार होंगे, - ''यदि हमने अपनी बातों का परिणाम को भविष्य में क्यों होगा उसे देख पाते तो शान्त रहते। वे विपत्ति के घेरे में पड़ेंगे। शैतान उन्हें भयंकर परीक्षा की ओर ले जायगा। जिस काम को पूरा करने के लिये उन्होंने लिया था अब वह पूर्ण से बहुत दूर दिखाई देगा। उन्हें मार डालने का भय दिखाया जायेगा। जो जोश उनके मन में पैदा हुआ था वह जाता हुआ दिखाई देगा पर वे पीछे नहीं मुड़ेंगे। अपनी असमर्थता को देख कर वे

पराक्रमी ईश्वर की मदद की खोज करेंगे। परन्तु जो बातें उन्होंने कही थी वे अपनी नहीं वरन ईश्वर की दी हुई थी। ईश्वर ने सत्य के वचन को उन्हें बोलने के लिए कहा था और उन्होंने उसे विना बताये नहीं छोड़ा।

मुझे धोखे के खिलाफ तैयार करने के लिए प्रकाशितवाक्य 14 के चेतावनी संदेश देने के लिए मैं परमेश्वर का शुक्रगुजार हूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करता हूं कि वे मेरा मार्गदर्शन करें और किसी भी पूर्वधारणा वाले विचार को हटा दें जो मेरे सत्य को स्वीकार करने में बाधा बन सकता है।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

इन चेतावनी संदेशों से पता चलता है कि यह महान विवाद परमेश्वर के प्रति वफादारी को लेकर है। मैं उनकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए शक्ति और साहस की प्रार्थना करता हूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

अब जब मैं इन सच्चाइयों को सीख रहा हूँ तो मुझे एहसास हुआ कि यह जिम्मेदारी दूसरों के साथ देना है।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

पाठ 10

संकट का समय

(1) स्वर्गीय निवास स्थान से मसीह द्वारा क्या उद्घोषणा मानव जाति के लिए परिवीक्षा के अंत को चिह्नित करेगी ?

जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे। (प्रकाशित 22:11)

जब तीसरे दूत के समाचार (देखिए प्रकाशित वाक्य १४:६–११) का प्रचार करना पूरा हो जाएगा तब पश्थ्वी के अपराधियों के लिए दया का दरवाजा बंद हो जाएगा। परमेश्वर के लोग प्रचार का काम कर चुकेंगे। उन्होंने ‘‘पिछली वर्षा’’ पाया ‘‘जो प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आए।’’ उसे पा कर वे भविष्य के कठिन समय के लिए तैयार हैं। दूतगणों का स्वर्ग में इधर उधर आना और जाना हो रहा है। पश्थ्वी से एक दूत लौट कर यह घोषणा करता है कि मेरा काम पूरा हो गया, दुनियाँ में परीक्षा आ

गई। जिन्होंने ईश्वर की आज्ञा को पालन किया उन पर, ''जीवते परमेश्वर की मुहर लग गई।'' इसके बाद स्वर्ग के मंदिर में यीशु मसीह का विचवाई का काम पूरा हो जाता है। तब वह अपने हाथों को ऊपर उठाकर बड़े ऊंचे शब्द से कहता है, ''पूरा हुआ, और जैसे ही इस गंभीर घोषणा को स्वर्ग के दूतगण सुनते हैं वे अपने सिर के मुकुटों को उतार देते हैं: ''जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे, और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे, और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे, और जो पवित्र है वह पवित्र बना रहे।'' (प्रकाशित वाक्य २२:११) जीवन अथवा मरण, इन दोनों में से किसी एक बात का निर्णय हो गया। ख्रीष्ट ने अपने लोगों के लिए अपना प्राण दिया और उनके पाप को मिटा दिया। अपनी प्रजा कि संख्या पूरी हो गई।'' राज्य और प्रभूता और पश्थ्वी के राज्य की महिमा'' उद्धार पाए हुए लोगों को शीघ्र मिलेगा और यीशु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होकर राज करेगा।

(2) परिवीक्षा के करीब और पुनरुत्थान के पहले के बीच क्या विनाशकारी घटना घटित होगी ?

उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति-भाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से ले कर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। (दानिय्येल 12:1)

जब वह स्वर्ग के महां पवित्र स्थान से निकलेगा उस समय सारी पश्थ्वी पर के सब लोगों पर अंधकार छा जायेगा। उस भयंकर समय में परमेश्वर के सामने अपनी धार्मिकता से

जीवित रहना पड़ेगा। इस समय शैतान पर जो नियंत्रण है उसे हटा दिया जाएगा और तब शैतान अपश्चातापी लोगों पर पूरा नियंत्रण करेगा। इस समय परमेश्वर के धीरज का अंत हो जाएगा क्योंकि इस पश्थ्वी के लोगों ने उसकी दया को अस्वीकार किया, उसके प्रेम से घश्णा की और उसकी व्यवस्था को तुच्छ जाना। दूष्टों की जाँच का समय बीत गया, परमेश्वर की जिस आत्मा का उन्होंने विरोध किया था वह अंत में वापस ले लिया गया। ईश्वर के अनुग्रह के बिना वे असुरक्षित हो गए हैं। इसलिए शैतान पश्थ्वी के सब लोगों पर सब से बड़ी तकलीफ लाएगा। जब परमेश्वर मनुष्य के क्रोध पर नियंत्रण करना छोड़ देगा तब सब लोग युद्ध के लिए तनजाएंगे। सारी दुनियाँ ऐसे भयंकर विनाश के लिए तैयार हो जाएगा जो पूराने यरूशलेम के विनाश से भी बढ़ कर होगा।

(3) वर्तमान में ईश्वरीय एजेंसी ने परमेश्वर के लोगों की मूहर तक संघर्ष की तेज हवाओं को कैसे रोक रखा है ?

इसके बाद मैं ने पृथ्वी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़ पर, हवा न चले। (प्रकाशित 7:1)

जितने परमेश्वर की व्यवस्था को पालन करते हैं उन्हीं पर दुनियाँ में विपित्तियों के आने का आरोप लगाया जाएगा। प्रकशति में भंयकर परिवर्तन तथा मनुष्यों के बीच में लड़ाई झगड़ा और रक्तपात के कारण पश्थ्वी जो दुःख से सन्. तप्त है उसके वे अपराधी ठहराए जाएंगे। जो शक्ति अन्तिम चेतावनी देगी उसके कारण दुष्टों का कोप भड़क उठेगा। इस कोप का भाजन वे ही होंगे जिन्होंने ईश्वर के सत्य के समाचार को ग्रहण किया। शैतान उन से और अधिक घश्णा करने लगेगा और वे बड़ी क्रूरता के साथ सताए जाएंगे।

जब यहूदी जाति के बीच में ईष्वर की उपस्थिति नहीं रही तब उन्हें इस बात का पता नहीं चला, न याजक ही उसे जान सके। वे उसकी उपस्थिति से बंचित हो गए थे। वे अभी शैतान के नियंत्रण में थे।

(4) परमेश्वर के लोगों की कौन सी दो विशेषताएँ दुष्टों के दिलों में क्रोध और उत्पीड़न को दूर कर देंगी ?

पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥ (प्रकाशित 14:12)

जितने परमेश्वर की व्यवस्था को पालन करते हैं उन्हीं पर दुनियाँ में विपित्तियों के आने का आरोप लगाया जाएगा। प्रकशति में भंयकर परिवर्तन तथा मनुष्यों के बीच में लड़ाई झगड़ा और रक्तपात के कारण पश्थ्वी जो दुःख से सन्. तप्त है उसके वे अपराधी ठहराए जाएंगे। जो शक्ति अन्तिम चेतावनी देगी उसके कारण दुष्टों का कोप भड़क उठेगा। इस कोप का भाजन वे ही होंगे जिन्होंने ईश्वर के सत्य के समाचार को ग्रहण किया। शैतान उन से और अधिक घश्णा करने लगेगा और वे बड़ी क्रूरता के साथ सताए जाएंगे।

(5) कैसा आध्यात्मिक अवस्था जो अंतिम दिन में आत्मिक रूप से घोषित आध्यात्मिक बहुमत के समान होगीए जैसा कि मसीह के दिन होता है ?

कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। “

(मत्ती 15:8-9)

जब यहूदी जाति के बीच में ईष्वर की उपस्थिति नहीं रही तब उन्हें इस बात का पता नहीं चला, न याजक ही उसे जान सके। वे उसकी उपस्थिति से बंचित हो गए थे। वे अभी शैतान के नियंत्रण में थे। वह उन्हें अति भयंकर घातक क्रोध से प्रभूत्व करता है। फिर भी वे अपने को ईश्वर के चुने हुए लोग समझते थे परमेश्वर की उपस्थिति के नहीं होने पर भी वे मंन्दिर में सेवकाई का काम करते रहे, मंन्दिर के कलुषित वेदियों पर बलिदान चढ़ाते रहे और उन लोगों के लिए प्रत्सेक दिन ईश्वर से प्रार्थना करते थे जिन्होने परमेश्वर के पुत्र यीशु को घात करने का अपराधी ठहरा कर और उसके सेवकों एवं प्रेरितों को घात करने के ताक में रहते थे इसी प्रकार जब स्वर्ग के मंन्दिर से अटल निर्णय की घोषणा की जाएगी और दुनियाँ का भाग्य स्थिर हो जाएगा इस बात का पता दुनियाँ के लोगों को नहीं लगेगा। जिन लोगों के बीच से ईश्वर की आत्मा हटा ली जाएगी वे धर्म के विभिन्न रूप को मानेंगे और जिस पैशाचिक आत्मा की प्रेरणा देकर दुष्ट का राजकुमार अपने घातक उद्धश्य को पूरा करने की कोशिश करेगा यह परमेश्वर की प्रेरणा से उत्साह पाकर काम करने की बात से मित्र नहीं होगी।

(6) दुष्ट क्या करने की कोशिश करेगाए यह सोचकर कि यह परमेश्वर की सेवा है ?

वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। (यूहन्ना 16:2)

और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे; और जितने लोग

उस पशु की मूरत की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। (प्रकाशित 13:15)

आज सब्बत का प्रश्न समस्त मसीही जगत में एक विशेष विवाद का विषय हो गया है। धर्म गुरू और राज्य के अधिकारी मिलकर रविवार को विश्राम दिन मानने के लिए नियम बनाएंगे, और अल्प संख्यक जो बहुत सख्यक के अनुकूल नहीं करेगे वे ही दुनियाँ के अभिशाप का पात्र बनाए जाएंगे। अल्पसंख्यक जो मंडली की विधि और राज्य की व्यवस्था का विरोध करने के लिए खड़े होंगे उन्हें ऐसा नहीं करने दिया जाएगा। सारे राष्ट्र में व्यवस्था तथा अराजकता की स्थिति नहीं होने देने के लिए इन्हीं अल्पसंख्यक लोग को कष्ट सहने के लिऐ विवश करेंगे। लोगों के शासकों ने जिस प्रकार अठारह सौ वर्ष पहले ख्रीष्ट का विरोध करते हुए कहा था वैसा ही आज भी अधिकारी कहेंगे। उस समय धूर्त काइफस ने कहा था, ''तुम्हारे लिए यह भला है, कि हमारे लोगों के लिए एक मनुष्य मरे और न यह सारी जाति नाश हों।'' (यूहन्ना ११:५०) इस निर्णय को सभी उचित समझेंगे और अंत में जितने लोग चौथी आज्ञा के अनुकुल सब्बत को पवित्र मानते हैं उनको कड़ी सजा के योग्य समझ कर दंडाज्ञा निकालेंगे और कुछ समय के बाद इन्हें मार डालने के लिए दुनियाँ के लोगों को आज्ञा दे दी जाएगी। पुरानी दुनियाँ में रोमी मंडली ने जिस प्रकार मसीही लोगों को सताया उसी प्रकार आज की नई दुनियाँ में पतित प्रोटेस्टैंट मंडली उनकी जैसी नीति अपना कर ईश्वर की आज्ञाओं को मानने वालों को सताएंगे।

(7) किस दिन परमेश्वर के लोगों की तुलना में यह भयानक अंतिम प्रलय है?

हाय, हाय, वह दिन क्या ही भारी होगा! उसके समान और कोई दिन नहीं; वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उस से भी छुड़ाया जाएगा। (यिर्मयाह 30:7)

कष्ट और यातानाओं के उस दश्श्य में

जिसे नबी ने याकूब के संकट (तकलीफ) का समय कहा है परमेश्वर के लोग होंगे। ''यहोवा यों कहता है : थरथरा देने वाला शब्द सुनाई दे रहा है, शान्ति नहीं, भय ही है ... सब के मुख फीके रंग के हो गए है, हाय ! हाय ! वह दिन क्या ही भारी होगा। उसके समान और कोई दिन नहीं यह याकूब के संकट का समय होगा, परन्तु वह उससे भी छुड़ाया जाएगा।'' (यिर्मयाह ३०:५-७) याकूब की मानसिक वेदना भय और चिंता वाली रात में जब वह एसाव के हाथ से बचाव के लिए प्रार्थना में कुश्ती लड़ता रहा, यह परमेश्वर के उन लोगों के अनुभवों को प्रस्तुत करता है जो संकट के समय से गुजरेंगे। (उत्पति ३२:२४-३०)

(8) अजगर कौन है ?

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।

(प्रकाशित 12:9)

(9) जो परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति निष्ठावान हैं उनके प्रति अजगर की क्या प्रतिक्रिया है ?

और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और वह समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ॥

(प्रकाशित 12:17)

जिस तरह से शैतान एसाव को याकूब के विरूद्ध प्रभावित करके चढ़ाई करने के लिए लाया था, उसी तरह संकट के समय परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध शैतान दुष्ट लोगों को भड़का कर उन्हें नाश करने के लिए ले आयेगा। और जिस प्रकार

से उसने याकुब के विरूद्ध दोष लगाया था उसी प्रकार वह परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध में भी दोष लगायेगा। शैतान इस जगत के लोगों को अपने प्रजा के रूप में मानता है ; परन्तु एक छोटा दल है जो परमेश्वर यहोवा का आज्ञाओं के अनुसार चलते हैं वे उसके प्रभुत्व को नहीं मानते हैं। यदि वह इन लोगों को इस धरती से मिटा डाले तो उसकी जीत पूरी हो जायगी। शैतान देखता है कि पवित्र स्वर्गदूत उनकी रक्षा करते हैं, और वह अनुमान करता है उनके पाप क्षमा किए गए हैं ; लेकिन वह यह नहीं जानता कि उनके मामले का फैशला स्वर्गीय पवित्र स्थान में हो चुका है। जिन पापों को उसने लोगों से करवाया है उनका पूरा ज्ञान उसके पास है, और वह इन पापों को परमेश्वर के पास अत्यधिक बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करता है, और परमेश्वर से कहता है कि इन्हें भी उसी के समान परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित किया जाए। वह कहता है कि प्रभु परमेश्वर सिर्फ उनके ही पापों को क्षमा करके और शैतान उसके दूतों को नाश कर के धर्मी नहीं ठहर सकता है। वह उन्हें अपनी प्रजा या शिकार के रूप में दावा करता है और परमेश्वर से मांग करता है कि वह उन्हें उसके हाथों में दे दे ताकि वह उनका नाश कर डाले।

(10) इस खतरनाक समय में मसीह के चरित्र के किस महत्वपूर्ण पहलू को परखा जाएगा ?

और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे।

(1 पतरस1:7)

तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जान कर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।

(याकूब 1:3)

जिस तरह से शैतान परमेश्वर के लोगों को उनके पापों के कारण उन पर दोष लगाता है, प्रभु परमेश्वर उसे अपने लोगों पर परीक्षा करने की अनुमति देता है। उनके लोगों का परमेश्वर पर भरोसा, विश्वास और स्थिरता पर भयानक रूप से परीक्षा लिया जायेगा। जैसे वे अपने विगत जीवन के बारे पुनरावलोकन करेंगे, उनकी आशा समाप्त हो जायेगी, क्योंकि अपने सम्पूर्ण जीवन में सिर्फ थोड़ी सी ही अच्छी बातों को देख सकेंगे। वे अपने दुर्बलताओं और अयोग्यताओं को पूर्ण रूप से अनुभव करेंगे। शैतान उन्हें अपने विचारों में भयभित करने का पूरा प्रयास करेगा। वे अपने मन में यह विचार करेंगे कि उनका मामला अति निराशा जनक है, और यह कि उनके पाप कभी धोए नहीं जाएंगे। वह परमेश्वर के लोगों के विश्वास को नष्ट कर देने की आशा करता है, ताकि वे उसकी परीक्षाओं में गिर कर परमेश्वर की भक्ति करने से हट जाएं।

(11) परमेश्वर ने अपने बच्चों को क्या वादा दिया है जो विश्वास के माध्यम सेए दृढ़ रहते हैं ?

तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिये सारे संसार पर आने वाला है। (प्रकाशित 3:10)

मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा। (मत्ती 10:22)

हर तरफ वे विश्वासघात, और विद्रोह के षड़यंत्र की आवाज को सुनते हैं और साथ ही साथ विद्रोह के साक्षात् कार्यों को देखते हैं। उनके मन में एक बड़ी आकांक्षा उत्पन्न होती है और आत्मा में सच्ची उत्कंठा में सच्ची उत्कंठा की जागशति होती है, कि शायद यह महान धर्मपतन

का अन्त हो और दुष्टों की दुष्टता की भी समाप्ति हो। परन्तु जब वे इस विद्रोह में स्थिर रहने के लिए परमेश्पर से प्रार्थना करते रहते हैं तब उन्हें इस आत्मग्लानि का अनुभव होता है कि उनमें ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उस शक्तिशाली बुराई की लहर को रोक सके या पीछे ढकेल सके। वे ऐसा अनुभव करने लगते हें कि यदि वे अपनी सारी योग्यता को खीस्त यीशु के लिए लगाए होते और सामर्थ के साथ आगे बढ़े होते तो, उन पर विजय प्राप्त करने के लिए शैतान की शक्ति कम हो जाती। अपने विगत जीवन के अनेक पापों की प्रायश्चित की ओर इशारा करते हुए और साथ ही उद्धार कर्त्ता की प्रतिज्ञाओं की मांग करते हुए वे परमेश्वर के समक्ष अपने प्राणों को दुःख देते हैं, और कहते हैं : ''उसे मेरी सामर्थ को थामने दो, वा मेरे साथ मेल करने को वे मेरी शरण ले, वे मेरे साथ मेल कर लें।'' (यशायाह २७:५) उनका विश्वास इसलिए खत्म नहीं हो जाता है, कि उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर तुरंत नहीं मिला। जौभी वे भयंकर चिन्ता, भय और क्लेश की स्थिति में होते हैं, तौ भी वे परमेश्वर से प्रार्थना करना बन्द नहीं करते। वे परमेश्वर के सामर्थ को पकड़ लेते हैं जैसे याकूब ने स्वर्गदूत को पकड़ लिया था ; और उनकी आत्मा की पुकार इस तरह होती है : ''जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।''

(12) परमेश्वर उन लोगों की प्रार्थनाओं को कैसे सुनेगा जो उसके व्यवस्था की उपेक्षा करते हैं और बिना अंगिकार पापों के साथ जीते हैं ?

जो अपना कान व्यवस्था सुनने से फेर लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है। (नीतिवचन 28:9)

इस कारण जो तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा

तुम्हें देता है॥ (1 थिस्सलुनीकियों 4:8)

अपने भाई के पहिलोठे के अधिकार को छल से प्राप्त करने के प्रति यदि याकूब पहले ही पश्चाताप नहीं किया होता, तो परमेश्वर उसकी प्रार्थना को नहीं सुना होना और कश्पा दिखा कर के उसके जीवन की रक्षा नहीं करता। इसी तरह से संकट के समय में भी, यदि परमेश्वर के लोग अपने उपर सताहट, भय और क्लेश आने के पूर्व ही अपने पापों को मान नहीं लिए होंगे, तो वे घबड़ा जाएंगे ; निराशा उनके विश्वास को खत्म कर देगा और परमेश्वर से छुटकारा प्राप्त करने के लिए उनमें भरोसा नहीं रह जायेगा। परन्तु जब उनके मनों में अपनी योग्यता के प्रति गहरा अनुभव होगा, तब उनके पास किसी तरह के गुप्त पाप को प्रगट करने की आवश्यकता ही नहीं होगी। क्योंकि उनके पाप पहले ही न्याय के सम्मुख चला गया है, और उनके पापों को मिटा डाला गया है जिन्हें वे इस समय अपने स्मरण में नहीं ला सकते हैं।

(13) परमेश्वर उन लोगों को कैसे पुरस्कृत करता है जो छोटी-छोटी बातों में वफादार रहते हैं ?

उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। (मत्ती 25:21)

शैतान बहुतों को यह विश्वास करने के लिए अगुवाई करेगा कि परमेश्वर उनके जीवन के छोटे छोटे बातों में उनके अविश्वतता को अनदेखा करेगा ; परन्तु प्रभु याकूब के साथ व्यवहार से यह दिखलाता है कि वह किसी प्रकार से भी बुराई और दुष्टता की अनुमति नहीं देता है और उन्हें बरदास्त भी नहीं करता है। जितने भी लोग अपने पापों के लिए बहाना बनाते हैं या उन्हें छिपाते हैं, और अपने पापों को स्वर्ग के किताबों में बिना पश्चाताप और बिना क्षमा के रहने देते हैं, उन पर शैतान जय प्राप्त करेगा।

कोई व्यक्ति जितना अपने व्यवसाय या काम को उपर उठाता है और जितना उँचा और सम्मान जनक पद की प्राप्ति करता है, परमेश्वर की दशष्टि में उसका चाल या आचरण उतना ही अधिक सोंचनीय या घशणित होता है और यह और अधिक निश्चित हो जाता कि उनका महान दुश्मन शैतान उन पर विजय प्राप्त करेगा। जो व्यक्ति परमेश्वर के उस दिन की तैयारी करने में देर करते हैं वे इसे संकट के समय में प्राप्त नहीं कर सकते या और किसी दूसरे समय में। इस तरह का सभी का मामला निराशाजनक ही होगा।

(14) सच्चे पश्चाताप का फल क्या है ?

इसलिये कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूंगा, और अपने पाप के कारण खेदित रहूंगा। (भजन 38:18)

परन्तु मैं ने अपने पवित्र नाम की सुधि ली, जिसे इस्राएल के घराने ने उन जातियों के बीच अपवित्र ठहराया था, जहां वे गए थे। (यहेजकेल 36:31)

जो अपने को मसीही बतलाते हुए उस अन्तिम भयानक संघर्ष के समय बिना तैयारी का या अपने पापों का पश्चाताप किए बिना ही पहुँचते हैं और निराशा में हो कर अपने पापों को जलते हुए मानसिक वेदना के साथ मान लेते है, जब कि दुष्ट लोग उनके दुर्गति पर अनन्द मानते हैं। उनका पश्चाताप उसी तरह का होता है जैसा एसाव और यहूदा का था। वे पाप के प्रतिफल या परिणाम के लिए अपने आप को शैकित करते हैं, पापों के लिए दुःखित नहीं होते है। वे बुराई या पाप के प्रति सच्चे मन से पश्चाताप नहीं करते और न ही उस से घशणा ही करते हैं। वे अपने पापों को सजा पाने के डर से मान लेते हैं ; लेकिन पुराने जमाने के फिरौन राजा के समान ही वे स्वर्गीय परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए फिर लौट पड़ेंगे यदि उनके उपर से न्याय के दण्ड को हटा दिया जाए।

(15) यदि हम सच्चे पश्चाताप में प्रभु के पास लौट आए, तो विपत्ति की आग का क्या परिणाम होगा ?

और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे। (1 पतरस 1:7)

याकूब का इतिहास भी एक निश्चयता है कि परमेश्वर उन लोगों को अपने से दूर नहीं हटायगा जो ठगे गए हैं, परीक्षा में डाले गए और पाप में गिराए गए है परन्तु सच्चे मन से पश्चाताप करते हुए परमेश्वर की ओर लौटे हैं। शैतान इस वर्ग के लोगों को नाश कर देना चाहता है, परन्तु इनके पास परमेश्वर अपने स्वर्गीय दूतों को भेजेगा ताकि वे उन्हें शान्ति प्रदान करें और संकट के समय में बचा लें। शैतान का आक्रमण भयंकर और निश्चित होता है। उसका माया जाल या छल-कपट भी भयानक होता है ; परन्तु प्रभु की आँखें अपने लोगों पर लगी रहती है, और उसके कान उनके चिल्लाहट को सुनते हैं। उनका क्लेश बहुत अधिक है और ऐसा लगता है आग के भट्ठे की लौ उन्हें भष्म कर डालेगा ; परन्तु शुद्ध करने वाला, आग में ताया हुआ सोने के समान उन्हें शुद्ध करेगा। परमेश्वर का प्रेम अपने संतानों के लिए उनके सबसे अधिक क्लेश के समय भी दश्ढ़ और कोमल होता है जैसे उनके समश्द्धि और सफलता के दिनों में होता था ; परन्तु उनके लिए यह आवश्यक होता है उन्हें आग के भट्ठे में डाला जाए ; ताकि उनका संसारिकता जल कर राख हो जाए, और ख्रीस्त यीशु का रूप सिद्धता के साथ प्रतिबिम्बित हो।

(16) किस प्रकार की प्रार्थनाओं से बहुत लाभ होता है ?

इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। (याकूब 5:16)

हमारे समक्ष जो पीड़ा और मानसिक बेदना की स्थिति होगी उसके लिए विश्वास की आवश्यकता होगी जो थकावट, रूकावट और भूख का सहन कर सके – एक ऐसा विश्वास जो भयंकर संकट के समय भी दुर्बल न हो। दया का दरवाजा बन्द होने का समय सब को इस लिए दिया गया है कि सब कोई उस समय के लिए अपने आप को तैयार करें। याकूब ने इस लिए विजय प्राप्त किया क्योंकि वह ढश्ढ़ और स्थिर रहा। याकूब जीत का प्रमाण है, उसका अधिक प्रार्थना करना। जैसे उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पकड़े रहा वेसे ही यदि वे लोग भी जो उसकी प्रतिज्ञाओं को पकड़ेंगे और उसी के समान सच्चे मन से और परिश्रम के साथ करेंगे तो वे भी सफलता प्राप्त करेंगे जैसे उसने प्राप्त किये थे। जो लोग अपने आप को त्याग करना नहीं चाहते या परमेश्वर के सामने कष्ट सहना नहीं चाहते या सच्चे मन से उसके आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिए देर तक प्रार्थना करना नहीं चाहते, उन्हें यह नहीं मिलेगा। परमेश्वर के साथ मलयुद्ध करना कितने थोड़े है जो यह जानते है कि यह क्या है। कितने थोड़े हैं जो कभी परमेश्वर के पीछे अपनी आत्मा को किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा में गहराई के साथ सारी शक्ति को लगाया हो। जब निराशा की लहरें प्रचंड वेग से प्रार्थना करने वाले के उपर उठती हैं जिसे कोई भाषा वर्णन नहीं कर सकती है, तब कितने थोड़े हैं अपने ढश्ढ़ विश्वास के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर लटके रहते हैं।

(17) सच्चे मसीही की जीवन रेखा अब और आने वाले खतरनाक समय में क्या है ?

क्योंकि उस में परमेश्वर की धामिर्कता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा॥ (रोमियो 1:17)

पर यह बात प्रगट है, कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। (गलातियों 3:11)

जो अभी थोड़ी विश्वास दिखलाते हैं, उनके लिए सबसे बड़ा खतरा है कि वे शैतान के माया जाल (भ्रम) की शक्ति में उस घोषणा की शक्ति में जो विवेक को अपने वश में कर लेगी फंस जाएंगे। और यदि वे परीक्षा का सामना भी कर लेंगे फिर भी वे संकट के समय में और अधिक पीड़ा और मानसिक वेदना में पड़ेंगे, क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर पर विश्वास करने का आदत कभी नहीं बनाया था। जिस विश्वास के पाठ को सीखने में उन्होंने लापरवाही किया था उसे सीखने के लिए निराशा के भयानक परिस्थिति में उन पर दबाव होगा।

(18) विश्वास की हमारी जीवन रेखा को बनाए रखने के लिए क्या सिद्धांत है ?

निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो।

(1 थिस्सलुनीकियों 5:17)

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को जाँच करके हमें अब उसके साथ अपना परिचय करना है। सभी हार्दिक और सच्ची प्रार्थनाओं को स्वर्गदूत लिखते हैं। हमें स्वार्थी भावना की प्रार्थना के अलावे परमेश्वर के साथ संबंध बनाना चाहिए। उसकी स्वीकशति में अत्यधिक निर्धन हो जाना, अत्याधिक आत्म त्याग करना बड़े धन दौलत, मान-सम्मान, ऐश-आराम और मित्रता से भी बढ़कर है। हमें प्रार्थना करने के लिए समय निकालना चाहिए। यदि हम अपने मन को संसारिक वस्तुओं पर ही केन्द्रित करते हैं तो सायद प्रभु हमें हमारे रूपए-पैसे, घर-बार और उपजाऊ जमीन जगह

रूपी मूर्ति को हटा कर प्रार्थना के लिए समय प्रदान करेगा।

(19) हम अपनी आध्यात्मिक जीवन-रेखा को बनाए रखने के लिए परिवारए दोस्तों या अपने धर्मगुरुओं पर भरोसा क्यों नहीं कर सकते ?

सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।

(फिलिप्पियों 2:12)

एक ऐसा ''संकट का समय होगा, जैसा पहले कभी नहीं हुआ था'' शीघ्र ही हम पर आने वाला है ; और इसका सामना करने के लिए हम में अनुभव की आवश्यकता होगी जो अभी हमारे पास नहीं है ; और इसे प्राप्त करने के लिए अभी बहुत सारे लोग योग्य नहीं हुए हैं। प्रायः हमेशा ऐसा होता है कि संकट या दुःख वास्तविकता से योग्य नहीं हुए हैं। प्रायः हमेसा ऐशा होता है कि संकट या दुःख वास्तविकता से ज्यादा पूर्व अनुमान करने में होता है ; परन्तु हमारे सामने जो संकट आने वाला है उसके साथ यह सत्य नहीं है। इस कठिन परीक्षा की मात्रा को अत्यधिक प्रदर्शन भी साफ-साफ बतला नहीं सकता है। उस संकट के समय, हर एक प्राणी को अकेले ही परमेश्वर के समक्ष खड़ा होना होगा। ''चाहे नूह, दानिएल और अय्यूब भी उस में हों, तौ भी, प्रभु यहोवा की वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध वे न पुत्रों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे, अपने धर्म के द्वारा वे केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे।'' (यहेजकेल १४:२०)

(20) अगर हम अपनी कमजोरी को परमेश्वर की ताकत के साथ जोड़ते हैंए

तो हमारे लिए किस प्रकार का स्वभाव संभव है?

जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। (2 पतरस 1:4)

इसी जगतीय जीवन में विश्वास के द्वारा यीशु के लोहू में हमें अपने पापों को अपने आप से अलग करना है। हमारा प्रिय उद्धरकर्त्ता अपने साथ मिलने के लिए, हमारी कमजोरियों को उसके सामर्थ के साथ जोड़ने के लिए, हमारी अज्ञानताओं को उसके ज्ञान के साथ जोड़ने के लिए, हमारी अयोग्यताओं को अपनी योग्यताओं के साथ जोड़ने के लिए वह हमें आमंत्रित करता है। परमेश्वर की दूरदर्शिता या प्रबन्ध ही हमारे लिए वह स्कूल है यहाँ पर हम यीशु की नम्रता और दर्पहीनता को सीख सकते हैं। प्रभु हमारे समक्ष उस रास्ते को नहीं रखता जिससे हमें चुनाव करना है और जो हमें सरल और आनन्ददायक प्रतीत होता है, परन्तु जीवन के सच्चे उद्धेश्यों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। हमें उन स्वर्गीय साधनों पर सहयोग करना है जिन्हे हमारे चरित्रों को ईश्वर चरित्र के नमूने के अनुरूप में लाने के लिए नियुक्त किया गया है। इस काम को कोई त्याग नहीं सकता है या अलग नहीं हो सकता, परंतु जो इसे त्यागते हैं और उस से अलग होते हैं वे अपने आत्मा को भयानक संकट में डालते हैं।

(21) कौन सी तीनों रणनीतियों को शैतान और उसके दुष्ट एजेंट बहूत सारे लोगों को धोखा देने के उपयोग करेंगे ?

उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और

चिन्ह, और अद्भुत काम के साथ। (2 थिस्सलुनीकियों 2:9)

शैतान के चमत्कार करने की शक्ति को प्रकट करने के लिए आकाश में अप्राकशतिक या अद्भूत दश्श्य दिखाई देंगे। शैतान की आत्मा पश्थ्वी के राजाओं और समस्त दुनियाँ में समा जाएगी और उन्हें धोखा दे कर फंसा लेगी और स्वर्ग के राज्य के विरूद्ध लड़ने के लिए शैतान के दल में मिल जाने के लिए विवश करेगी। इन अभिकर्त्ताओं द्वारा शासक और शासित दोनों धोखे के जाल में फंस जाएंगे। लोग अपने को खीष्ट कहेंगे और त्राणकर्त्ता के अधिकार को अपना कर अपने आपको उपासना करने के लिए कहेंगे। वे रोगियों को चंगा करने के लिए अद्भूत चमत्कार करेंगे और यह बताऐंगे कि उन्हें स्वर्ग से प्रकाश मिला है जो पवित्रशास्त्र के अनुकूल नहीं होगा।

(22) धोखे का मुकुट पाने वालों का क्या होगा ?

क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। (मत्ती 24:24)

मनुष्य को धोखा देने के सब से बड़े नाटकीय काम के लिए शैतान स्वंय खीष्ट का रूप धारण करेगा मसीही मंडली बहुत दिनों से त्राणकर्त्ता के आगमन की बाट जोह रही है, उसकी आशा पूरी होगी। इसलिए शैतान उसके आगमन की बातों को ऐसे लोगों के सामने रखेगा मानों वह आ गया हो। दुनियाँ के विभिन्न स्थानों पर मनुष्यों के बीच में शैतान अपना प्रतापपूर्ण रूप दिखाएगा जो परमेश्वर के पुत्र के समान दिखाएगा जिसको यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य १:१३–१५ में विवरण दिया है। उसकी अपूर्व महिमा की किसी से तुलना नहीं की जा सकती है। ऐसी महिमा आंखों ने अभी तक नहीं देखा है। जय की ध्वनि आकाश में गुंज उठती है,

''यीशु आया है। यीशु आया है !'' लोग उसके सामने दंडवत करके उसका आदर करेंगे। उस समय वह अपना हाथ ऊपर उठा कर उन्हें उसी तरह आशीष देगा जिस तरह यीशु अपने शिष्यों को उस समय आशीष देता था जब वह इस पश्थ्वी पर था। उसकी आवाज धीमी और दवी हुई है फिर भी उसमें मधुरता है। अनुग्रह और सहानुभुतिपूर्ण स्वर से वह कुछ उन्हीं स्वर्गीय सच्चाईयों को बताता है जिसे त्राणकर्त्ता ने बताया था। वह रोगियों की बीमारियों को अच्छा करता है और यीशु के चरित्र का ढोंग रच कर यह बताता है कि सब्बत में परिवर्तन हो गया है इसीलिए रविवार को विश्राम दिन मानना चाहिए। वह सभी को रविवार की पवित्र रखने के लिए कहता है क्योंकि उस दिन को उसने आशीष दी है। वह यह घोषणा करता है। कि जितने सातवें दिन को पवित्र रखने के लिए अड़ें रहते हैं वे उसके नाम का अपमान करते हैं। उसने उसके पास सच्चाई और प्रकाश दोनों को अपने दूतों के द्वारा भेजा था, उन्हें वे ग्रहण नहीं करते इसलिए वह उन पर हठधर्मी बनने का आरोप लगाता है। यह शैतान का सब से बड़ा धोखा है। यह ठीक उस तरह का है जिस में सामरियों को शिमोन मेगस ने फंसाया था। भीड़ के भीड़ छोटे से लेकर बड़े तक उसके इंद्रजाल पर ध्यान देकर कहने लगे थे, यह तो, ''परमेश्वर की वह शक्ति है जो महान कहलाती है।'' (प्रेरित क्रिया ८:१०)

(23) परमेश्वर के लोगों को धोखा देने से क्या चिज रोकेंगे ?

व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इस वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी (यशायाह 8:20)

परमेश्वर के लोग जो चुने हुए हैं वे किसी प्रकार भ्रमाए नहीं जा सकते, क्योंकि शैतान की इस प्रकार की झूठी शिक्षा पवित्रशास्त्र के अनुसार नहीं है। वह अपना आशीष उनको देना चाहता है जो पशु और उसकी छाप की उपासना करते हैं। ये लोग वही हैं जिनके विषय में बाइबल

कहती है कि परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा उन पर डाली जाएगी।

(24) सच्चे मसीह की वापसी किस तरीके से होगी ?

तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे। (मत्ती 24:30-31)

शैतान लोगों को अपने जाल में फंसाने के लिए सब कुछ करेगा पर उसे यीशु के दूसरी आगमन के विषय में वह धोखा नहीं दे सकता। यीशु ने अपने लोगों को शैतान के धोखा देने की बात भी बता दिया है। यीशु ने अपने आगमन के पूर्व क्या क्या घटनाएँ होंगी उनका स्पष्ट विवरण दे दिया है कि उसका आगमन किस प्रकार होगा। ''क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अदभूत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दे .... इसलिए यदि वे तुम से कहें, देखो वह जंगल में है, तो बाहर न निकल जाना, देखो वह कोठरियों में है, तो प्रतीति न करना, क्योंकि जैसे विजली पूर्व से निकल कर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।'' (मत्ती २४:२४-२७, ३१:२५:३१, प्रकाशित वाक्य १:७, १ थिस्सों० ४:१६, १७) यीशु के इस प्रकार आने को शैतान किसी प्रकार से अनुकरण नहीं कर सकता। दुनियाँ के सभी लोग उसके आगमन को देखेंगे।

(25) बहुत सारे लोगों को धोखा क्यों दिया जाएगा ?

और नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उन का उद्धार होता। (2 थिस्सलुनीकियों 2:10)

पवित्रशास्त्र को जितने लोग ध्यान से पढ़ते हैं और जिन्होंने सच्चाई के प्रेम को ग्रहण किया है वही उसके उस शक्तिशाली धाखे से बचेंगे जो सारी दुनियाँ के लोगों को फंसा लेगा। सत्य से प्रेम रखने वाले बाइबल की गवाही की बात से धोखे के भेष को पहचान लेंगे।

(26) कौन तीन फंदे हम से बचने के लिए चेतावनी दी है ?

क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। (1 यूहन्ना 2:16)

सभी के लिए जांच का समय आएगा। परीक्षा द्वारा सच्चे मसीही परखे जाएंगे। क्या परमेश्वर के लोग उसके वचन पर इतना विश्वास करते है कि वे कानों से जो सुनेंगे और आंखो से जो देखेंगे उस पर विश्वास नहीं करेंगे ? क्या वे ऐसे संकट के समय केवल बाइबल के वचन पर विश्वास करेंगे ? यदि संभव हो सके तो उस दिन में परमेश्वर के सामने खड़े हो सकने की तैयारी करने में भी वह वाधा देगा। वह उनके मार्गों को रोक देगा, वह सांसारिक धन में उनके मन को बझा देगा, उनके
जीवन में ऐसा बोझ डाल देगा कि वे जीवन की चिनता से इतना चिन्तित होंगे कि उनका हृदय चिन्ता से भरा रहेगा। ऐसी स्थिति में उनके लिए जांच का दिन चोर की नाई आएगा।

(27) मुसीबत के इस महान समय में परमेश्वर के कई वफादार शरणार्थी कहां मिलेंगे ?

वह चट्टानों के गढ़ों में शरण लिए हुए रहेगा; उसको रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी॥ (यशायाह 33:16)

विभिन्न मसीही धर्मगुरूओं द्वारा जब व्यवस्था के पालन करने वालों के विरूद्ध प्रस्ताव पारित होगा तब वे सुरक्षित नहीं रहेंगे। उन्हें जो मार डालना चाहेगा मार सकेगा। ऐसे समय में परमेश्वर के लोग नगरों और देहातों से दल के दल भाग कर निर्जन स्थान पर रहेंगे। बहुत से लोग पहाड़ों के गुफाओं में छिपेंगे। पिडमोन्ट तारई में रहने वाले मसीही लोगों के सामने वे पश्थ्वी के ऊचे स्थानों को अपना पवित्र स्थान बनाए और ‘‘चट्टानों के गढ़ों’’ (यशायाह ३३ः१६) के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देंगे।

(28) अपने विश्वास के लिए कई कैद भुगतनी पड़ती हैंए वे किस वादे का दावा कर सकते हैं ?

क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता। देख, मैं ने तेरा चित्र हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के साम्हने बनी रहती है। (यशायाह 49:15-16)

इसलिये इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, कि मैं ने कहा तो था, कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरूष का

घराना मेरे साम्हने सदैव चला करेगा; परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है, कि यह बात मुझ से दूर हो; क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जानें वे छोटे समझे जाएंगे। (1 शमूएल 2:30)

सभी राष्ट्रो में से बहुत से वर्ग के उच्च और नीच, धनी और गरीब, काला और सफेद अति अन्यायी और क्रूर दासत्व की स्थिति में डाले जायेंगे। ईश्वर के प्रिय लोगों का दिन बहुत कष्टमय होगा। उन्हें जंजीर से बांध कर बंदीगश्ह में डाल देंगे। वे वहाँ मश्त्यु की सजा के लिए रखे जाएगें इनमें से कुछ अंधकारपूर्ण घशणित कमरे में भूखे मरने के लिए छोड़ दिए जाएंगे। उनके दुःखपूर्ण चिल्लाहट पर कोई ध्यान नहीं देगा। उन्हें कोई मनुष्य मदद करने के लिए हाथ नहीं बढ़ायेगा। ऐसे कष्ट के समय में क्या परमेश्वर अपने लोगों को भूल जाएगा ? जल प्रलय के पूर्व की दुनियाँ में जब विपत्ति आई थी तो क्या वहाँ ईश्वर ने कम विश्वासी नूह को भूल गया ?जब तराई के नगरों को भस्मीभूत करने के लिए स्वर्ग से आग की वर्षा हुई भी तो कया ईश्वर सब को भूल गया था ? क्या मूर्तिपूजकों के बीच युसुफ को ईश्वर भूल गया था ? जेजेबेल ने बाल के नबियों को घात करने के कारण एलिया को मारने की शपथ खाई थी क्या ईश्वर उसे भूल गया था ? यिर्मयाह को जब अंधकार के गढ़े रूपी बंदीगश्ह में डाला गया था तो क्या ईश्वर ने उसे भूल गया था ? क्या धधकते आग में डालें गए तीन युवकों को ईश्वर भूल गया था ? क्या सिंह के मांद में डाले गए दानिएल को ईश्वर भूल गया था ? ‘‘परन्तु सिय्योन ने कहा है, कि यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभू मुझे भूल गया है। कया कभी ऐसा हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पिते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे ? हाँ वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे भूल नहीं सकता। देख मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोद कर बनाया है।’’ (यशायाह ४९:१४-१६) सेनाओं के प्रभू ने कहा है, ‘‘क्योंकि जो तुमको छूता है, वह मेरी

आंख की पुतली ही को छूता है''। (यकर्याह २ः८) यद्यपि शत्रु उनको जेलखानों में ठूंस दें तौभी इन अंधेरी कोठरियों की दीवाल, उनका खीस्ट से जो सम्पर्क होगा अर्थात, खीष्ट और उनके बीच जो संबंध रहेगा उससे बिच्छेद (अलग) नहीं कर सकती। वह जो उनकी दुर्वलताओं को समझता है उनकी तकलीफों को संसार की किसी भी शक्ति से अधिक जानता है। दूत उनके पास निर्जन बंदीगश्ह के कमरे में आवेंगे और उनके लिए स्वर्ग से ज्योंति और शान्ति लाएंगे। ईश्वर के लोगों के लिए बंदीगश्ह राजा के भवन जैसा लगेगा, क्योंकि विश्वास में जो धनी हैं वे वहाँ निवास करेंगे, अंधकार के दीवालों पर स्वर्गीय ज्योति प्रकाशित होगी। उनको पौलूस और सिलास की जैसी स्थिति होगी। वे दोनो फिलिपी के बंदीगश्ह में आधी रात के समय प्रार्थना करते और गीत गाते थे। कैसी सुखद अनुभूति थी।

(29) इस आयत में दुष्टों पर न्याय देने के कार्य का वर्णन कैसे किया गया है ?

क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम नाम पर्वत पर खड़ा हुआ और जैसा गिबोन की तराई में उसने क्रोध दिखाया था; वह अब फिर क्रोध दिखाएगा, जिस से वह अपना काम करे, जो अचम्भित काम है, और वह कार्य करे जो अनोखा है। (यशायाह 28:21)

ये जो परमेश्वर के लोगों को सताने और सत्यानाश करने की योजना बना रहे हैं। अवश्य उन पर परमेश्वर की ओर से विपत्तियाँ आवेंगी। परमेश्वर के धीरज का लाभ उठाकर दुष्ट लोग आज्ञा नहीं मानने और पाप करने का साहस पा गए हैं। उन्हें सजा देने में देर की जा रही है। इसका अर्थ यह है कि उन्हें निश्चित रूप से भयंकर सजा मिलेगी। ''क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा, जैसा वह पराजीम नाम पर्वत पर खड़ा हुआ था, और जैसा गिबोन की तराई में उसने क्रोध दिखाया था, वैसा ही वह अब क्रोध

दिखाएगा, जिससे वह अपना ऐसा काम करे जो अचम्भित काम है, और वह कार्य करें जो अनोखा है'' (यशायाह २८:२१) हमारे दयालू परमेश्वर के लिए सजा देना एक अचम्भित काम हैं, ''मेरे जीवन की सौगन्ध में दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता परन्तु इससे कि दुष्ट अपने मार्ग से फिर कर जीवित रहे।'' (यहेजकेल ३३:११) परमेश्वर ''दयालू और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त और अति करूणामय और सत्य है, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला है। फिर भी ''दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।'' ''यहोवा विलंम्ब से क्रोध करनेवाला और बड़ा शक्तिमान है और वह दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।'' (निर्गमन ३४:६, ७, नहूम १:३) अपनी धार्मिकता से भयंकर काम द्वारा अपनी रौंदी हुई व्यवस्था का बनाने वाला कौन है इस बात को वह प्रमाणित करेगा। आज्ञा को उलंधन करने वालों पर बड़ी तीब्रता के साथ वह बदला लेगा। अभी परमेश्वर न्याय चुकाने में देर कर रहा है इसी से यह पता लगता है कि उन्हें कठोर दंड मिलेगा। जिस जाति के प्रति उसका धीरज बहुत रहा है उसे तब तक नाश नहीं करेगा जब तक परमेश्वर की दशष्टि में उसके पाप का प्याला नहीं भरेगा। जब उसके पाप का प्याला भर जाएगा तब वह जाति क्रोध के कटोरे में डाली गई निरी मदिरा को पीएगी...।

(30) फैसले के कौन सी सात खूंखार विपत्तियां जो अनाज्ञाकारिता का अनुभव के चिन्ह के साथ होंगी ?

सो पहिले ने जा कर अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया। और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी, और जो उस की मूरत की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुखदाई फोड़ा निकला॥ (प्रकाशित 16:2)

और दूसरे ने अपना कटोरा समुद्र पर उंडेल दिया और वह मरे हुए का सा लोहू

बन गया, और समुद्र में का हर एक जीवधारी मर गया॥ (प्रकाशित 16:3)

और तीसरे ने अपना कटोरा नदियों, और पानी के सोतों पर उंडेल दिया, और वे लोहू बन गए। (प्रकाशित 16:4)

और चौथे ने अपना कटोरा सूर्य पर उंडेल दिया, और उसे मनुष्यों को आग से झुलसा देने का अधिकार दिया गया। (प्रकाशित 16:8)

और पांचवें ने अपना कटोरा उस पशु के सिंहासन पर उंडेल दिया और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया; और लोग पीड़ा के मारे अपनी अपनी जीभ चबाने लगे। (प्रकाशित 16:10)

और छठवें ने अपना कटोरा बड़ी नदी फ़ुरात पर उंडेल दिया और उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाए। (प्रकाशित 16:12)

फिर बिजलियां, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भुइंडोल हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भुइंडोल कभी न हुआ था। (प्रकाशित 16:18)

जब खीस्त यीशु स्वर्गीय पवित्र स्थान में मध्यस्ता के अपने काम को समाप्त करता है, तब परमेश्वर का क्रोध उन लोगों को भयभित करेगा जो उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करेंगे और उसकी छाप लेंगे, उन पर वह अपने क्रोध के कटोरे को डालता है। (प्रकाशित वाक्य १४:९-१०) जब परमेश्वर इस्राएल को मिश्र देश

से छुटकारा देने वाला था उस समय वहां दस विपत्तियों को भेजा था, इसी तरह परमेश्वर के लोगों के अन्तिम छुटकारे के समय से पहले इस जगत में उस से भी अधिक भयानक और विस्तश्त रूप में विपत्तियाँ डाली जाएंगी। प्रकाशित वाक्य का लेखक उन भयानक और दर्दनाक क्लेश के बारे वर्णन करता है : ''उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी, और जो उसकी मूरत की पूजा करते थे एक प्रकार का बुरा और दुःखदायी फोड़ा निकला'' और समुद्र ''वह मरे हुए मनुष्य का लोहू सा बन गया ; और समुद्र में का हर एक जीव धारी मर गया।'' और ''नदियों और पानी के सोते लोहू बन गए।'' ये विपत्तियाँ जैसे भयंकर थी और जिस तरह से परमेश्वर का दण्ड भयानक दिखाई दिया। परमेश्वर के स्वर्गदूत का ऐसा कहना है ''हे परमेश्वर ...... तू ने यह न्याय किया है। क्योंकि इन्होंने पवित्र लोगों, और भविष्यवक्ताओं का लोहू बहाया था, और तू ने उन्हें लोहू पि. लाया ; क्योंकि वे इसी योग्य हैं।'' (प्रकाशित वाक्य १६:२-६) परमेश्वर के लोगों को मश्त्यु दण्ड के अपराधी होने की घोषणा करने के बाद , वे वास्तव में उनके लोहू बहाने के दोषीदार ठहरते हें जैसे कि उन्हों ने खुद अपने हाथों से उनका खून किया हो। इसी तरह यीशु ख्रीस्त ने भी अपने समय के यहूदियों को इसी तरह की बात कही थी कि वे सभी पवित्र लोगों के खून बहाने हाबिल से लेकर उस समय तक के अपराधी ठहराए गए ।

(31) जब दुष्ट भूख से पीड़ित हैं तो क्या वफादारी कायम रहेगा ?

जो धर्म से चलता और सीधी बातें बोलता; जो अन्धेर के लाभ से घृणा करता, जो घूस नहीं लेता; जो खून की बात सुनने से कान बन्द करता, और बुराई देखने से आंख मूंद लेता है। वही ऊंचे स्थानों में निवास करेगा। वह चट्टानों के गढ़ों में शरण लिए हुए रहेगा; उसको रोटी मिलेगी और पानी की

घटी कभी न होगी॥ (यशायाह 33:15-16)

परमेश्वर के लोग इन क्लेशों से अलग नहीं होंगे ; परन्तु जब उन्हें सताया जायेगा और जब वे पीड़ा में पड़ेंगे, और जब वे एकान्त स्थानों में चले जाएंगे और भोजन वस्तुओं के अभाव के कारण दुःख उठाऐंगे ; उन्हें उस समय भूख से मरने के लिए छोड़ नहीं दिया जाएगा। जिस परमेश्वर ने एलियाह की देख भाल की वह इन में से एक भी आत्म बलिदान करने वाले अपने संतान का अनदेखी नहीं करेगा। वह जो उनके सिरों के बालों को गिनता है उनकी देख भाल करेगा, और आकाल के समय उन्हें खाने को रोटी और जल प्राप्त होगा।

(32) जब सारी आशा खो जाती हैए जैसे याकूब अपनी मुसीबत के समय मेंए धर्मीयों की दलील क्या होगी ?

तब उसने कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है; याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा (उत्पत्ति 32:26)

फिर भी मनुष्यों की दशष्टि में ऐसा दिखाई पड़ेगा कि परमेश्वर के लोगों को शीघ्र ही अपनी गवाही प्रचार के काम को अपने लोहू बहाने के द्वारा बन्द कर देना पड़ेगा जैसे उनके पहले अपने विश्वास के लिए शहीदों को बहाना पड़ा था। वे अपने आप में यह कल्पना कर के भयभित हो उठेंगे कि प्रभु उन्हें दुश्मनों के हाथों में पड़ने के लिए छोड़ दिया है। यह एक अत्यन्त भयंकर मानसिक वेदना का समय होगा। वे बचाव और छुटकारे के लिए रात और दिन लगातार परमेश्वर की दुहाई देंगे। इस समय दुष्ट लोग अत्यन्त खुशी मनाएंगे और उनकी ताने मारने की चिल्लाहट सुनाई पड़ती है : ‘‘अब तुम्हारा विश्वास कहां रहा ? यदि तुम लोग सचमुच में परमेश्वर के लोग हो वह तुम्हें हमारे हाथों से क्यों नहीं छुड़ाता है ?’’ परन्तु यीशु मसीह पर आशा करने वाले स्मरण करते हैं कि जब यीशु मसीह कलवरी के क्रूस पर मर रहा था तब महांयाजक शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा करते हुए चिल्ला कर कहते थे : ‘‘इस ने

औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता है। यदि यह ''इस्राएल का राजा है'' तो अब क्रूस पर से नीचे उतर आए ; तो हम उस पर विश्वास करेंगे।'' (मत्ती २७:४१-४२) इस समय याकूब के समान ही परमेश्वर के सभी लोग परमेश्वर से संघर्ष करेंगे। उनके चेहरों पर उनकी अन्तरिक वेदना झलकती है। हर एक चेहरा मुर्झाया हुआ और पीला दिखाई देता है। फिर भी वे अपने मनों को परमेश्वर की दोहाई देने में लगाए रखते हैं।

(33) परमेश्वर ने अपने वफादार की सुरक्षा के लिए किसे आदेश दिया है ?

क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें। (भजन 91:11)

यदि मनुष्य स्वर्गीय आँखों द्वारा देख सकें, तो वे देख पाएंगे कि शक्तिशाली स्वर्गदूतों का दल उन लोगों को चारों ओर से घेरे हुए हैं जिन्हों ने बड़े धीरज के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया है। सहानुभुति पूर्वक, इन स्वर्ग दूतों ने उनके क्लेशों को अपनी आँखों से देखा है और उनकी प्रार्थनाओं को भी सुना है। ये स्वर्गदूत अपने सेनापति की आज्ञा का इन्तजार कर रहे हैं कि कब उन्हें आज्ञा मिले और वे उन्हें, उनके संकट से निकाल लें। लेकिन उन्हें थोड़ा और इन्तजार करना है। परमेश्वर के लोगों को उस दुःख रूपी कटोरे से पीना है और उन्हें दुःख रूपी बपतिस्मा को प्राप्त करना है। यह देर होना, जो उनके लिए अत्यन्त कष्टदायक है, यहि उनके प्रार्थनाओं का सब से अच्छा उत्तर है। प्रभु को काम करने देने के लिए जैसे वे धीरज के साथ इन्तजार करते है, इस समय वे विश्वास, आशा और धीरज को काम में लाने के लिए अगुवाई किए जाते हैं, जिन्हें वे अपने धार्मिक अनुभवों में बहुत ही थोड़ा व्यवहार किए हैं। फिर भी चुने हुओं के खातिर संकट कें समय को कम किया जायगा, ''क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकायगा, जो रात - दिन उसकी दोहाई देते रहते हैं ; और क्या वह उनके विषय में देर करेगा ? मैं तुम से कहता हूँ, वह

तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा।'' (लूका १८:७-८) मनुष्य जैसा अन्त के बारे सोचता है उस से कहीं अधिक शीघ्रता से अन्त आ जायगा। गेहूँ एकत्रित किया जायगा और उन्हें पूलों में बांधा जाएगा ताकि परमेश्वर के खेत्त में जमा किया जाए ; और जंगली पौधों को भी विनाश के आग में जलाने के लिए बांधा जायगा।

(34) पिता की आज्ञा पर वचन की कौन-सी अद्भुत भविष्यवाणी पूरी होगी ?

तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे पास न आएगा। (भजन 91:7)

परमेश्वर की आँखें पीढ़ी से पीढ़ी तक देखती आ रही हैं, वे आँखें उन संकटों पर टिकी हुई हैं जो उसके लोगों पर आने वाले हैं जिन्हें संसारिक शक्तियाँ उन पर डालेंगी। बन्धुवाई में जाने के समान वे लोग भूखे मर जाने या अपना मश्त्यु के भय से भयभित होंगे। परन्तु वह पवित्र परमेश्वर जिसने लाल समुद्र को इस्राएलियों के सामने दो भागों में विभाजित किया था, वह पुनः अपने महान सामर्थ का प्रदर्शन करेगा और उन्हें उनकी बन्धुवाई से छुड़ाएगा। ''सेनाओं का यहोवा यह कहता कि जो दिन मैंने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे वरन मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मैं, उनसे ऐसी कोमलता करूँगा जैसी कोई अपने सेवा करने वाले पुत्र से करे।'' (मलाकी ३:१७) यदि इस समय ख्रीस्त के विश्वासियों का लोहू बहाया जाता है, तो यह उन शहीदों के लोहू के समान नहीं होगा जैसे एक बीज बोया जाता है परमेश्वर के कटनी के लिए। उनकी भक्ति या सच्चाई के प्रति निष्ठा दूसरों को सच्चाई में लाने के लिए गवाही का कारण नहीं होगा ; क्योंकि हृदय की कठोरता ने अनुग्रह के लहरों को मार कर इतना पीछे कर दिया है कि अब वे फिर कभी भी वापस नहीं हो सकते। यदि धार्मियों को इस घड़ी उनके बैरियों के हाथों में मरने के लिए छोड़ दिया जाता तो यह अन्धकार के सरदार (शैतान) के लिए एक जीत होती। भजन संहिता का लेखक ऐसा लिखता है : ''वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मंडप में

छिपा रखेगा ; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा और चट्टान पर चढ़ायगा। (भजन संहिता १७:५) खीस्त ने कहा है : ‘‘हे मेरे लोगों, आओ, अपनी कोठरी में प्रवेश करके किवाड़ों को बन्द करो ; थोड़ी देर तक जब तक क्रोध शान्त न हो, तब तक अपने को छिपा रखो। क्योंकि देखों, यहोवा पश्थ्वी के निवासियों को अधर्म का दण्ड देने के लिए अपने स्थान से चला आता है, और पश्थ्वी अपना खून प्रगट करेगी और घात किए हुओं को और अधिक न छिपा रखेगी।’’ (यशायाह २६:२०-२१) उन लोगों का छुटकारा महिमा पूर्ण होगा जो उसके आगमन की बाट बड़े धीरज से जोहते आए हैं और जिनका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ है।

मुझे पूरे ह्रदय से परमेश्वर से प्रेम है। मैं प्रार्थना करता हूं कि जब वह घोषणा करे, तो मैं उसके पक्ष में गिना जाउं, ‘‘वह धर्मी है और वह हमेसा धर्मी बना रहे।"

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मुझे अब एहसास हुआ कि शैतान एक गर्जन शेर की तरह हैए जिसे वह खा सकता है। मैं समझदारी से प्रार्थना करता हूं कि शैतान दुनिया के इतिहास के अंतिम क्षणों में प्रकट होने वाले धोखे से बचने के लिए परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना और स्वीकार करना जारी रखूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं परमेश्वर के प्रति आभारी हूं कि हमें ‘‘मुसीबत के समय" के बारे में चेतावनी

देने के लिए जो उनके दिव्य उपदेशों का सम्मान करता हूँ

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर मेरे चरित्र को निखारेंगे और मेरे विश्वास को मजबूत करेंगे इसलिए उनकी कृपा से मैं उनकी महिमा के लिए जय पा सकता हूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

प्यार और विश्वास में मैं भरोसे के साथ परमेश्वर के हाथों में देता हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि जीवन के चमत्कारी संरक्षण या किसी शहीद की मृत्यु परए वह मेरे नाम का अपनी महिमा के लिये इस्तेमाल करेगा।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

पाठ 11

परमेश्वर के लोगों का उद्धार

परमेश्वर की व्यवस्था को पालन करने वालों के बीच से जब मानव जाति की सुरक्षा करने वाले नियम उठा लिए जाएंगे तब इस पश्थ्वी के विभिन्न स्थानों पर एक ही समय में उन्हें नाश करने का आन्दोलन आरम्भ होगा। नाश करने का निर्धारित समय जब निकट पहुँचने लगेगा तब दुनियाँ के लोग उस दल को (समुदाय) जिसे घश्णा करते हैं उन्मूलन करने के लिए तरह तरह के षड़यन्त्र रचेंगे। वे एक ही रात्रि में उस समुदाय के सबों को इस प्रकार प्रहार करने का विचार करेंगे कि मतभेद होने और उलाहना देने की आवाज एक हो जाएगी।

(1) जो लोग विश्वासयोग्यीता का दावा करते हैं, वे क्या वादा कर सकते हैं ?

तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिये सारे संसार पर आने वाला है। (प्रकाशित 3:10)

परमेश्वर के लोग कुछ तो बंदीगश्ह के कमरे में रहेंगे, कुछ पहाड़ों और जंगलों के निर्जन स्थ. ानों पर। इन स्थानों पर रहकर वे सुरक्षा के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे। इसी समय हर एक कोने में दुष्ट दूतों के द्वारा प्रेरित होकर सेना उन्हें मार डालने की तैयारी कर रहे होंगे। संकट की चरम सीमा पहुँचने पर इस्राएल का परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों के लिए उठ खड़ा होगा। परमेश्वर कहता है "तब तुम पवित्र पर्व की रात का सा गीत गाओगे, और जैसा लोग यहावा के पर्वत की ओर उससे मिलने को जो इस्राएल की चट्टान ठहरा है, वांसूली बजाते हुए जाते हैं, वैसे ही तुम्हारे मन में भी आनन्द होगा परन्तु यहोवा अपनी प्रतापी वाणी सुनाएगा, और अपना क्रोध भड़काता और आग की लौ से भष्म करता हुआ और प्रचंड आंधी और अति वर्षा और ओलों के साथ अपना भूजबल दिखाएगा।" (यशायाह ३०:२६, ३०) हंसी ठट्ठा करके अभिशाप देते हुए विजय ध्वनि का उच्चारण करते हुए दुष्ट लोगों का दल जैसे ही परमेश्वर के लोगों पर टूट पड़ने वाले थे कि इतने में एक घना काला बादल रात से भी अधिक अंधियारा पश्थ्वी पर छा गया। उसके बाद एक मेघ धनुष परमेश्वर के सिंहासन से आकाश में फैलते-फैलते प्रार्थना करने वाले लोगों को घेरने ऐसा दिखाई देने लगा। इसको देखकर क्रोधित दल अचानक भयभित हो कर रूक जाते हैं। उनके ठट्ठे करने की आवाज धीरे धीरे रूक जाती है। वे जो मारने के लिए क्रोधित हो गए थे पर अब अपने उद्वेश्य को भूल जाते हैं। भय से भविष्य में कुछ अहितकर घटना घटने का आभास पाकर वे परमेश्वर की बाचा के चिन्ह को देखने लगे और उसके अत्यधिक प्रकाश से सुरक्षा पाने के लिए उपाय ढूँढ़ने लगे।

(2) विश्वासियों के होठों से खुशी के कौन से शब्द निकलेंगे ?

और उस समय यह कहा जाएगा, देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है; हम उसकी

बाट जोहते आए हैं। हम उस से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे।

(यशायाह 25:9)

इस समय परमेश्वर के लोगों को एक स्पष्ट तथा मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है, ‘‘ऊपर देखो’’। तब सब ऊपर आकाश की और अपनी आँख उठाकर प्रतिज्ञा के मेघ धनुष को देखते हैं। तब काला गड़गड़ाता हुआ बादल जिसने आकाश को ढंक दिया था धीरे धीरे हट जाता है। परमेश्वर के लोग इस्तिफन के समान टकटकी लगा कर आकाश की और देखने लगते है और परमेश्वर की महिमा को देखते हैं कि परमेश्वर का पुत्र अपने सिंहासन पर बैठा है। उसके ईश्वरीय स्वरूप में वे उसके अपमानित किए जाने का चिन्ह देखते हैं। फिर अपने पिता और पवित्र दूतों के सामने वे उसके (यीशु) बोलने का शब्द सुनते है, ‘‘मैं चहाता हूँ कि जिन्हें तू ने दिया है, जहाँ में हूँ, वहाँ वे भी मेरे साथ हों।’’ (यूहन्ना १७:२४) फिर विजय के बाजे बजने जैसी ध्वनि सुनकर वे आते है, वे पवित्र, निर्दोष और कलंक रहित हैं। ‘‘उन्होंने मेरे धीरज के वचन को रखा है इसलिए वे दूतों के बीच में चलेंगे।’’ इस शब्द को सुनकर परमेश्वर के लोग जो अपने विश्वास में अंत तक धीरज धर रहे हैं विजय का नारा लगाते हैं।

(3) परमेश्वर के मुंह से क्या शब्द निकलते हैं ?

और सातवें ने अपना कटोरा हवा पर उंडेल दिया, और मंदिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ, कि हो चुका।

(प्रकाशित 16:17)

मध्यरात्रि के समय परमेश्वर अपने लोगों को उद्धार करने के लिए अपनी शक्ति को प्रकट करता है। सूर्य निकलता है और बहुत तेज चमकता है। इस के बाद बहुत चिन्ह और अद्भूत घटनाएँ शीघ्र अपने क्रम से घटती हैं। इस दृश्य को दुष्ट लोग आश्चर्य चकित होकर देखते हैं। धर्मी लोग बड़ी गम्भीरता और आनन्द

के साथ अपने उद्धार के दिन को देखते हैं। प्रकशति की सभी वस्तुए अस्त–व्यस्त दिखाई देती हैं। (जितने ख्रीष्ट पर जो युगों का पत्थर है अपना विश्वास बनाए रखे हैं, वे ही अन्तिम संघर्ष के समय उद्धार किए जाएगें।) नदियों में जल नहीं है। काले घने बादल आ कर आपस में टकाराते हैं। इस क्रोधित आकार के बीच में एक आदरनीय महिमायुक्त स्थान दिखाई देता है। यहीं से बहुत से जल के सोतों के बहने के समान आवाज सुनाई देती है। वह कहती है ''हो चुका।''

(4) परमेश्वर की आवाज किस महान घटना का कारण बनेगी ?

फिर बिजलियां, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भुइंडोल हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भुइंडोल कभी न हुआ था। (प्रकाशित 16:18)

वह आवाज आकाश और पश्थ्वी को हिला देती है। एक भयंकर भूंईडोल होता है, ''कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पश्थ्वी पर हुई तब से इतना बड़ा भूंईडोल कभी न हुआ था।'' (प्रकाशित वाक्य १६:१८) आकाश खुलता और बंद होता दिखाई देता है। पहाड़ हबा से हिलते हुए नरकट के समान हिलता हुआ दिखाई देता है और पहाड़ के टूटे हुए पत्थर इधर उधर तितर–वितर हो जाते हैं। प्रचन्ड आंधी की ऐसी आवाज सुनाई देती है मानों दुष्ट (शौतान) अपने विनाश के काम के लिए चीत्कार कर रहा हो। सारी पश्थ्वी लंबी साँस लेती है और समुद्र की तरंग ऊपर उठती है और फिर गिरती है। उसकी (पश्थ्वी) ऊपर के भाग तो टूकड़े–टूकड़े हो रहा हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि उसका धड़ अलग हो जाएगा। पहाड़ अपने स्थान में धँस रहे हैं। द्वीपों का समूह जँहा लोग बसे हैं लोप हो रहा है। बन्दरगाह जो दुष्टता के कारण सदोम के समान हो गए हैं समुद्र के जल के नीचे चले जा रहे हैं। ईश्वर ने बाबेल को स्मरण किया है, ''कि वह अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए।'' (प्रकाशित वाक्य १६:१६, २१) सब से

बड़े ओले जो प्रत्येक ‘‘मन मन भर’’ के हैं अपने विनाश के काम कर रहे हैं। पश्थ्वी के बड़े बड़े नगर जो अपने धमंड के नशे में चूर थे वे मिट्टी में मिल गए। राजा महाराजाओं के भव्य भवन तथा बड़े-बड़े गगनस्पर्शी घर जिन पर लोगों ने अपनी प्रतिष्ठा के लिए करोड़ों रूपये खर्च कर डाले थे वे आँखों के सामने टुकड़े-टुकड़े होकर गिर रहे हैं। कैदखानों की दीवाल टूट कर अलग हो रही है और परमेश्वर के लोग जिन्हें अपने विश्वास में अड़े रहने के कारण बंदीगश्ह में डाले गए थे वे वहाँ से निकल रहे हैं।

(5) कौन मसीह के दूसरे आगमन का गवाह होगा ?

देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है; और हर एक आंख उसे देखेगी, वरन जिन्हों ने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हां। आमीन॥ (प्रकाशित 1:7)

कब्रें फट रही हैं, जो ‘‘भूमि के नीचे सोए हुए रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए, और कितने . .. सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए।’’ (दानिएल १२:२) जितने तीसरे दूत के समाचार पर विश्वास करके मर गए वे कब्र से महिमा के साथ निकल रहें हैं इसीलिए कि जिन्हींने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया है उनके लिए परमेश्वर की व्यवस्था की ओर से शान्ति की वाचा सुनाई जाएगी। ‘‘जिन्होने उसे बेधा था’’ (प्रकाशित वाक्य १:७)। जिन्होंने पीड़ा से मरते हुए यीशु को ठट्ठा में उड़ाया था और उसको सच्चाई ही का केवल नहीं पर उसके लोगों का बहुत विरोध किया था उसकी अपनी महिमा को और उसके भक्त तथा आज्ञाकारी लोगों की प्रतिष्ठित दशा को देखने के लिए उठाए गए।

(6) दुष्टों की प्रतिक्रिया क्या होगी क्योंकि उन्हें एहसास होता है कि वे मसीह के दूसरे आगमन के साक्षी हैं ?

और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। (प्रकाशित 6:16)

घने काले बादल की घटा आकाश में छाई हुई है। इसके बीच से कभी कभी सूर्य परमेश्वर की बदला लेने वाली आँख के समान झाँकी मारने के जैसा निकलता है। बिजली आकाश से तुरन्त निकल कर आग के अंगारे के समान सारी पश्थ्वी पर फैल जाती है। भयंकर गड़गड़ाहट के आवाज के बीच से रहस्यमय तथा विचित्र आवाज दुष्टों की दुष्टता की दंड सुनाती है। दंड के वचनों को सब नहीं समझ सकते पर झूठे शिक्षक तो समझ जाते है। जो थोड़ी देर पूर्व दुःसाहस के साथ अपने घमंड में चूर्ण होकर परमेश्वर के लोगों को जो आज्ञा पालन करते हैं क्रूरता का वचन सुनाते थे और बड़े आनन्द के साथ डींग मारते थे वे अब भय से कांपते हुए संकुचित हो गए हैं। स्थिति बदल गई है। उनके दुःख का रोना इतना तीब्र हो गया है कि अन्य आवाज दब गई है। दुष्टों का दल खीष्त को अब ईश्वर समझने लगे हैं और उसकी शक्ति के तेज से वे कांप रहे हैं।

(7) विजयी होने पर धर्मीयों द्वारा कौन सा विजय का गीत गूंजेगा ?

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक। इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं; चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठें॥ (भजन 46:1-3)

बादल के दरार से एक तारा चमकता है। अंधकार की तुलना में उसका तेज चार गुना बढ़ जाता है। यह तारा विश्वासियों को आशा और आनन्द का वचन बोलता है पर परमेश्वर की व्यवस्था को उल्लंघन करने वालों पर तीब्रता के साथ वह अपना क्रोध प्रकट करता है। जिन्होंने खीस्ट के लिए सर्वस्व निछावर कर दिया वे अभी सुरक्षित हैं, ऐसा सुरक्षित हैं मानो वे परमेश्वर के तंबू में छिप गए हैं। उनकी जाँच हो गई। उन्होंने दुनियाँ और सच्चाई से घश्णा करने वालों के सामने उस पर अपना विश्वास दिखाया जिसने उनके लिए मरा था। जिन्होने मरने तक विश्वास में बना रहा उन पर एक अद्भूत परिवर्तन आया है। शैतान का रूप धारण करने वालों के अंधकारमय और भयंकर सताहट से उनका उद्धार हुआ है। उनका चेहरा फीका दिखाई देता था और
चिन्ता के कारण कुरूप हो गया था वह अभी आश्चर्य, विश्वास और प्रेम के कारण चमकता है। विजय के गीत की ध्वनि गूंज उठती है ।

(8) स्वर्ग में क्या घोषित किया जाएगा?

और स्वर्ग उसके धर्मी होने का प्रचार करेगा क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी है॥ (भजन 50:6)

इस प्रकार के जब पवित्र भरोसे के बचन परमेश्वर के पास से पहुंच रहे हैं बादल हट जाता है, आकाश दिखाई देता है। उसमें तारे दिखाई देते हैं। दूसरी और आकाश में जो काले और क्रोधित बादल दिखाई देता है उससे महिमा में तारों से भरी आकाश की तुलना नहीं की जा सकती। उस स्वर्गीय शहर की महिमा उसके खुले हुए दरवाजे से निकलती है। इसके वाद आकाश में एक हाथ दिखाई देता है वह तह किए ... पत्थरों को पकड़ा है जिसमें कुछ लिखे हैं। नबी कहता है ... उसके धर्मी होने का प्रचार करेगा क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी है।” (भजन संहिता ५०:६) पवित्र व्यवस्था, जो परमेश्वर की धार्मिकता है हमारे जीवन के पथ प्रदर्शन के लिए सिनौ पर्वत से बादल की गड़गड़ाहट की आवाज और आग की ज्वाला से घोषणा की गई थी आज उसे न्याय की व्यवस्था कह कर प्रकट की जा रही है। वह हाथ उस पत्थर को खोलता है

और तब उसमें दस आज्ञा लिखी हुई दिखाई देती है। वे ऐसी दिखाई देती है। मानों वे आग की कलम से लिखी गई हों। उसके वचन पत्थर में इतने स्पष्ट लिखे हुए दिखाई देते हैं कि उसे सभी पढ़ सकते हैं। इस दश्श्य को देखकर स्मरण शक्ति जागश्त हो जाती है, मिथ्या विश्वास और धर्मांध की प्रवश्त्ति अथवा पाखंड धर्म मन से लोप हो जाता है और परमेश्वर के दस बातें जो संक्षेप में व्यापक और प्रभुत्व सूचक हैं पश्थ्वी के सभी लोगों की दश्ष्टि के सामने रखी जाती है।

(9) परमेश्वर की आज्ञाओं के बारे में कौन सी सच्चाई दुष्टों के दिलों में आतंक मचाएगी ?

तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है॥ (भजन 119:160)

जिन लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा को अपने पैरों तले रौंदा था उनके मन में जो हाय और दुःख समा गया है उसका वर्णन करना कठिन है। परमेश्वर ने स्वंय उन्हें आज्ञा दी। उस आज्ञा को उन्हें देने का विशेष उद्वेश्य यह था कि उससे अपने चरित्र की तुलना करके अपनी दूर्बलताअरों को देखता, और जब तक उन्हें पश्चाताप करके सुधारने का अवसर था उसे लाभ उठाना उचित था, पर उन्होंने दुनियाँ में लोकप्रिय होने के लिए आज्ञाओं को हटा दिया था और दूसरों को भी वैसा करना सिखाया था। उन्होनें परमेश्वर के लोगों को उसके सब्बत का निरादर करने के लिए विवश किया था। अभी वे उसी व्यवस्था के उन्होंने तुच्छ जानकर अस्वीकार किया था अपराधी ठहराए जाते हैं। वे स्पष्ट रूप से यह समझते हैं कि आज्ञा को अस्वीकार करने का उनका कोई बहाना नहीं है। उन्होंने उसी को चुना था जिसको वे उपासना कर सकते थे। ‘‘तब तुम फिर कर धर्मी और दुष्ट का भेद अर्थात जो परमेश्वर की सेवा करता है और जो उसकी सेवा नहीं करता उन दोनों का भेद पह. चान सकोगे।’’ (मलाकी ३ः१८)

(10) सत्य को जानने और इस ज्ञान को खोए हुए के साथ साझा न करने का क्या परिणाम है ?

जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा, और यदि तू उसको न चिताए, और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिस से कि वह सचेत हो और अपना दुष्ट मार्ग छोड़ कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। पर यदि तू दुष्ट को चिताए, और वह अपनी दुष्टता ओर दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फंसा हुआ मर जाएगा; परन्तु तू अपने प्राणों को बचाएगा। (यहेजकेल 3:18-19)

पादरी से लेकर निम्नवर्ग के साधारण लोग जो परमेश्वर की व्यवस्था के बैरी हैं उनकी सच्चाई और उसके प्रति जो कर्तव्य है अपनी एक नई विचारधारा है। समय बीत जाने के बाद वे इस बात को समझ जाते हैं कि चौथी आज्ञा का सब्बत जीवते ईश्वर की छाप है। अब अच्छे मार्ग में आने का अवसर चला जाता है तब उन्हें झूठे सब्बत का ज्ञान होता है और तब वे समझते हैं कि उनके विश्वास की नीव कच्ची थी। अब वे समझते हैं कि वे यहोवा परमेश्वर के विरूद्ध में लड़ रहे थे। धर्मगरु स्वयं यह समझते थे किवे लोगों को परादीश (स्वर्ग) के फाटक की और ले जा रहे थे पर वास्तव में देखते हैं कि उन्हें अब वे बहुत दूर विनाश की ओर ले गए हैं। जब तक लेखा लेने का दिन नहीं पहुँचेगा इस बात का पता नहीं लगेगा कि पादरी प्रचारकों का पवित्र काम कितना दायित्वपूर्ण है और अपने दायित्व को विश्वास से नहीं निभाने से उसका कितना भयंकर परिणाम मिलता है। एक मनुष्य

का दंड तो भयानक होगा जब परमेश्वर उसे यह कहेगा, तू दुष्ट दास मेरे सामने से दूर हो।

(11) अपने आगमन पर मसीह कहाँ दिखाई देगा ?

यीशु ने उस से कहा; तू ने आप ही कह दिया: वरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे। (मत्ती 26:64)

मनुष्य के हाथ का आधा है। यह तो वह बादल है जो त्राणकर्त्ता को घेर लेता है। यह बादल दूर से काला दिखाई देता है। परमेश्वर के लोग समझ जाते हैं कि यह मनुष्य के पुत्र का चिन्ह हैं। परमेश्वर के लोग उसे बड़े गम्भीर होकर टकटकी लगा कर देखते हैं। वह नीचे पश्थ्वी की ओर उतरता है। जैसे-जैसे वह पश्थ्वी के निकट आता है उससे ज्योति निकलती है और वह महिमायुक्त दिखाई देता है। अंत में वह एक सफेद बादल सा दिखाता है। इसका निचला भाग भस्म करने वाली आग जैसी है। उसके ऊपर वाचा का मेघ धनुष है। यीशु महान विजयी की भान्ति सवार होकर आता है। अभी वह ‘‘दुःखी पूरूष’’ नहीं है जो कि लज्जा और विपत्ति के कड़वे प्याले को पी ले, पर वह स्वर्ग और पश्थ्वी का विजयी होकर जीवतों और मश्तकों का न्याय करने को आता है। यह ‘‘विश्वासयोग्य और सत्य कहाता है,’’ वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है। स्वर्गीय गीत गाते हुए पवित्र दूतों का समूह जिनकी संख्या बहुत है। ‘‘स्वर्ग की सेना’’ (प्रकाशित वाक्य १६:११, १४) उसकी पीछा करते हैं उसके साथ साथ जाते हैं।

(12) भविष्यवक्ता हबक्कुक मसीह के दूसरे आगमन का वर्णन कैसे करता है ?

ईश्वर तेमान से आया, पवित्र ईश्वर परान पर्वत से आ रहा है। उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है, और पृथ्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है॥ उसकी ज्योति सूर्य के तुल्य थी, उसके हाथ से किरणें निकल रही थीं; और इन में उसका सामर्थ छिपा हुआ था। (हबक्कूक 3:3-4)

कोई लेखनी इस दश्श्य का चित्रण करने की सामर्थ नहीं रखती, कोई मरणहार व्यक्ति में इतनी योग्यता नहीं है कि वह इस महिमा का वर्णन कर सके, ''उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है और पश्थ्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है ..... उसकी ज्योंति सूर्य के तुल्य थी।'' (हबक्कूक ३ः३, ४) जीवता बादल जैसे जैसे पश्थ्वी के निकट आता है सभी आँख जीवन के राजकुमार को देखती है। उसके पवित्र सिर को कोई अपवित्र काँटे का मुकट क्षतिग्रस्त नहीं करता। उसके चेहरे से दिन के दोपहर के सूर्य के चौधियों देने वाले प्रकाश से भी अधिक प्रकाश निकलता है। ''और उसके वस्त्र और जांध पर यह नाम लिखा है राजाओं का राजा और प्रभूओं का प्रभू।'' (प्रकाशित वाक्य १९ः१६)

(13) इस महान घटना के लिए यीर्मयाह नबी मानवता की प्रतिक्रिया का वर्णन कैसे करता है ?

पूछो तो भला, और देखो, क्या पुरुष को भी कहीं जनने की पीड़ा उठती है? फिर क्या कारण है कि सब पुरुष ज़च्चा की नाईं अपनी अपनी कमर अपने हाथों से दबाए हुए देख पड़ते हैं? क्यों सब के मुख फीके रंग के हो गए हैं? हाय, हाय, वह दिन क्या ही भारी होगा! उसके

समान और कोई दिन नहीं; वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उस से भी छुड़ाया जाएगा। (यिर्मयाह 30:6-7)

उसके सामने, ''सब के मूख फीकें रंग के हो गए है : ''परमेश्वर की दया को तुच्छ करने वाले अनंन्त विवाद से ग्रसित होते हैं। मन कच्चा हो गया, और पाँव काँपते हैं ..... और सभों के मूख का रंग उड़ गया है। (यर्मियाह ३०:६, नहूम २:१०) धर्मी लोग भी कांपते हुए कहते हैं उसके सामने कौन खड़ा रह सकेगा ?'' दूतों का गीत अचानक रूक जाता है। कुछ समय के लिए सब शान्त हैं। यह भयंकर लगता है। कुछ देर के बाद यीशु के बोलने की आवाज सुनाई देती है, ''मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है।'' इस वचन को सुनकर ईश्वर के लोगों का उद्धार परमेश्वर के लोगों का चेहरा चमकता है और प्रत्येक का हृदय आनन्द से भर जाता है। पश्थ्वी के निकट पहुँचने पर दूत ऊँचे स्वर से गीत गाना आरम्भ कर देते हैं।

(14) मसीह द्वारा दी गई भविष्यवाणी को उसके क्रूस पर चढ़ाने के लिए कौन सी भविष्यवाणी पूरी होगी ?

यीशु ने उस से कहा; तू ने आप ही कह दिया: वरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे। (मत्ती 26:64)

इस समय उनके मन में स्पष्ट रूप से किसानों का दश्ष्टान्त स्मरण होता है। जो किसान अपने दाख की वारी के मालिक को दाख का फल देना नहीं चाहते थे इन्होंने उसके दासों को मार डाला, यहाँ तक कि उन्होंने उसके पुत्र को भी नहीं छोड़ा। दाख की वारी का स्वामी ''उन बुरे लोगो के बुरी रीति से नाश करेगा।'' अविश्वासियों के पाप और पाप के दंड को

याजक और पुरनिए समझ जाते हैं कि वह तो उनका अपना मार्ग अपनाने का उचित फल है। उनके मन में इतना दुःख हैं कि वे सह नहीं सकते इसलिए वे रोते हैं। उनका चीखना इतना तीब्र है कि उस समय के यरूशलेम के सड़क पर, ''उसे क्रूस पर चढ़ाओं, क्रूस पर चढ़ओ'' की जो ध्वनि गुंज उठी थी उससे भी अधिक तेज है। उस समय तो क्रोध की ध्वनि गुंज उठी थी पर इस समय विषाद भरी आवाज है, यह विलाप है। अभी उनकी आंखे खुल गई हैं। वे इस समय स्वीकार करते हैं, ''वह परमेश्वर का पुत्र है। वह सच्चा मसीह है।'' ऐसी गवाही देकर वे राजाओं के राजा के सामने से भागने के लिए मार्ग ढूंढ़ते हैं। वे पश्थ्वी के केन्द्रों में और प्रकशति की प्रचंडता से छिन्न-भिन्न समूहों तथा खड्डों और गहरी गुफाओं में व्यर्थ छिपने की कोशिश करते हैं।जो सच्चाई को ठुकराते हैं उनके जीवन में एक समय आता है जब उनका विवेक सचेत हो जाता है। इस समय उनकी स्मशति जागश्त होती है और तब उन्हें अपने पिछले पाखंडी जीवन की सब बातें स्मरण होती हैं। इससे उनके मन को गहरी यंत्रणा (दुःख) सताती है। यह उनका व्यर्थ दुःख है। इससे उन्हें कुछ लाभ नहीं होता। यह मनोव्यथा (मन का भारी दूःख) उस कंदन के दुःख से कम ही है जब ''आंधी की नई .... भय आ पड़ेगा और विपत्ति बवंडर के समान आ पड़ेंगी।'' (नीति वचन १:२७) जो यीशु और उसके विश्वासी लोगों को सत्यनाश करना चाहते थे वे अपनी आंखों के सामने उनकी महिमा को देखते हैं। उनके मन में अब भय समा गया है उस समय वे संतो को हर्ष से गीत गाते हुए सुनते हैं, ''देखो, हमारा परमेश्वर यही है, हम इसी की बाट जोहते आए हैं कि यह हमारा उद्धार करेगा।'' (यशायाह २५:९)

(15) कौन सा चिल्लाना स्वर्ग को भर देगा क्योंकि मसीह धर्मी को जीवन के लिए मृत कहता है ?

हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?

(1 कुरिन्थियों 15:55)

पश्थ्वी के डोलने, बिजली के चमकने और

बादल के गड़गड़ाने के बीच से परमेश्वर के पुत्र की आवाज सोते हुए (मरे) संतों को पुकारती है। यीशु धार्मियों को कब्रों पर अपनी दर्शष्टि डालता है। उसके बाद अपने हाथो को स्वर्ग की और उठा कर पुकारता है। ''जाग उठो, उठो, हे मिट्टी में मिले हुओं जागो !'' पश्थ्वी के एक छोर से दूसरे छोर के मश्तक उसके आवाज को सुनेंगे, और जो उसके आवाज सुनेंगे वे जीवित होंगे। सारी पश्थ्वी हर एक जाति, कुल, भाषा और लोगों की बड़ी सेना के चलने की आवाज से गुंज उठेगी। वे मश्त्यु के वंदीगश्ह से निकल कर अमरता का महिमायुक्त वस्त्र पहन कर पुकारेंगे, ''हे मश्त्यु तेरी जय कहाँ रही ? (१ कुरिन्थी १०:५५) जीवते धर्मी और कब्र से उठे संतों का स्वर एक साथ मिलकर विजय की हर्ष ध्वनि से गुंज उठती है।

(16) धर्मी में क्या परिवर्तन होगा ?

और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। (1 कुरिन्थियों 15:52-53)

सभी उसी डीलडोल में कब्र से निकल आते हैं जैसे वे गाए थे। कब्र में से निकले हुओं के दल में जितने खड़े हैं अदम सब से ऊँचा और उसका रूप प्रभावशाली (ऐश्चर्यपूर्ण) दिखाई देता है। ऊँचाई में परमेश्वर के पुत्र से थोड़ा ही छोटा दिखाई देता हैं। पिछली पीढ़ी के लोगों को अपराधी (पतित) अवस्था में दिखाया गया। पर जब वे कब्र से निकल आते हैं तब वे अनंत जवानी की स्फूर्ति से पूर्ण दिखाई देते हैं। अरंभ में मनुष्य परमेश्वर के रूप में बनाया गया था परमेश्वर का रूप कहने का अर्थ होता है उसका चरित्र और रूप रंग। पाप ने उसके रूप को करूप कर दिया और ईश्वर के रूप को बिल्कुल भ्रष्ट कर दिया। खीस्त उसी को जिसे उन्होंने

नष्ट कर दिया फिर से देने के लिए आया था। मरणहार विनाशी, सुन्दरता रहित और पाप जो कलंकित हो गया था वह फिर सिद्ध, सुन्दर और अमरणहार बन जाता है। सब दोष और कुरूपपन कब्र में रह गए। बहुत दिनों के खोए हुए अदन बाटिका के जीवन के पेड़ के पास वे जा सकते हैं और वे अपने पहले की सुन्दरता में बढ़ेंगे। पाप के साप का जो चिन्ह बहुत दिनों से था वह हटा दिया जाएगा और यीशु ख्रीस्ट के विश्वासी प्रभु हमारे परमेश्वर की मनोहरता में मन, प्राण और शरीर में अपने परमेश्वर के पूर्ण रूप को प्रतिबिंबित करेंगे। यह कितना अद्भूत उद्धार था जिसको बहूत वर्षों से चर्चा करते और आशा करते थे और उत्कंठित होकर ध्यानमग्न रहते थे पर कभी पूर्ण रूप से समझ नहीं पाए थे।

(17) इस परिवर्तन के तुरंत बाद चयन कहां किया जाएगा ?

तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)

जीवते धर्मी लोग ''क्षण भर में, पलक मारते ही'' बदल जाएंगे। परमेश्वर की आवाज सुन कर वे महिमायुक्त हो गए, अभी वे अमर बन गए, और जी उठाए हुए संतो के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिले। दूत आकाश के इस छोर से उस तक चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे। छोटे बच्चों को पवित्र दूत अपनी माताओं की गोद में पहुंचा कर रख देंगे। मित्रगण जो बहुत दिनों से मश्त्यु के कारण बिछुड़ गए थे मिलेंगे और कभी अलग नहीं होंगे। वे आनन्द का गाते हुए एक साथ परमेश्वर के नगर की ओर जाएंगे।

(18) हमारे धर्मी न्यायी मसीह को अपने हर छुड़ाये के लिये क्या अच्छा लगेगा ?

और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं। (1 पतरस 5:4)

परमेश्वर के नगर में प्रवेश करने से पहले त्राणकर्त्ता अपने अनुगामियों को विजय का चिन्ह और उन्हें राजकीय घराने की प्रजा होने का तगमा देता है। उद्धार किए गए लोगों को चमकती हुई बड़ी भीड़ अपने राजा के चारों ओर चतुर्भुज आकार में खड़े हो जाते हैं। उसका (यीशु) रूप अपनी महिमा में दूतों और संतों से अधिक देदीप्यमान है। उसके चेहरे में दयामय प्रेम की झलक दिखाई देता है। उद्धार किए गए लोगों की भीड़ बिना पलक झपकाए (एकटक) उसकी और दशष्टि की है। प्रत्येक आँख उसकी महिमा को देखकर चकित है, ''क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी। ''जो जय पाए हैं उनके सिर पर यीशु स्वयं अपने दहिने हाथ से महिमा का मुकुट रखता है। प्रत्येक के लिए एक मुकुट है। उसमें उसका अपना ''नया नाम'' (प्रकाशित वाक्य २:१७) लिखा हुआ है और उसमें खोदा (अंकित किया) हुआ है, ''यहोवा के लिए पवित्र।'' प्रत्येंक के हाथ में विजय का चिन्ह दिया गया है - खजूर की डाली और चमकती हुई वीणा। तब जैसे अगुवाई करने वाला दूत राग देता है सभी अपनी - अपनी वीणा लेकर बजाने वाले के समान बजाने लगे। उनके बाजों से ऐसी मधुर ध्वनि निकलती थी कि जिसकी तुलना नहीं है। सभी आनन्द से मधुर ध्वनि को सुनकर कश्तज्ञता का गीत गाने लगे, ''जो हमसे प्रेम रखता है, और जिसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे।'' (प्रकाशित वाक्य १:५, ६)

(19) कौन सी आनंद अपने छुड़ाये हूए लोगों को बढायेगा ?

तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। (मत्ती 25:34)

उद्धार किए गए लोगों के सामने पवित्र नगर है। यीशु उस नगर के फाटक को खोलता है और जिन जातियों ने सच्चाई को अपनाया है वे उस फाटक से होकर नगर में प्रवेश करते हैं। प्रवेश करने पर वे परमेश्वर के परादीश को देखते हैं। पाप करने के पूर्व आदम का वहाँ घर था। तब किसी संगीत से भी अति मधुर आवाज जो मरण्हार के कान में प्रवेश की है सुनाई देती है, तुम्हारी तकलीफें अंत हुई ''हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओं, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है।'' यीशु की अपने शिष्यों की यह प्रार्थना पूरी हुई, ''मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तुने मुझे दिया है जहाँ मैं हूँ, वहाँ वे भी मेरे साथ हों कि, ख्रीस्त अपने मोल लिए हुए लोगों को पिता के सामने ''अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके'' (यहूदा २४) यह कहते हुए ''खड़ा कर सकता है,'' ''जिन बालकों को तू ने दिया है वे और मैं हूँ'', ''जो तूने मुझे दिया है उनकी रक्षा की है।'' उद्धार के प्रेम का कैसा चमत्कार ! उस समय कितना आनन्द होगा जब पिता उद्धार किए हुए लोगों को देखेगा। उनमें वह अपने रूप को देखेगा। उनके रूप में पापका लक्षण नहीं है, उनके कलंक हटा दिए गए हैं और मानव जाति फिर ईश्वर के रूप में हो गई है। अपने अवर्णनिय प्रेम से अपने विश्वासियों को यीशु प्रभू के आनन्द में सम्मिलित होने के लिए स्वागत करता है। दुःख और अपमान सहकर उद्धार किए हुए लोगों को महिमा के राज्य में देख कर त्राणकर्त्ता को बहुत आनन्द है। उद्धार किए हुए लोग उन लोगों को जिनके लिए उन्होंने प्रार्थना की थी, परिश्रम और प्रेमप. ूर्वक आत्मत्याग किया था धन्य लोगों के बीच में देखकर बहुत आनन्दित होंगे। ये सब मिलकर यीशु के साथ आनन्द करेंगे। जब वे उज्जल सिंहासन के चारों और एकत्रित होंगे तब यीशु के

लिए एक ने दूसरे के उद्धार के कार्य में किस प्रकार सहायता की है इस बात का अनुभव होगा और वे आनन्द विहल हो जाएँगे। सभी अनन्त विश्राम करेंगे और यीशु के चरण तले अपने मुकुटों को रखते हुए युगानों युग उसकी प्रशंसा का गीत गाऐंगे।

(20) उनके उद्धारकर्ता की प्रशंसा के लिए एक अनूठा गीत गाने के लिए किस समूह को विशेषाधिकार दिया जाएगा ?

और वे सिंहासन के साम्हने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के साम्हने मानो, यह नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौवालीस हजार जनो को छोड़ जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था। (प्रकाशित 14:3)

यहोवा परमेश्वर के सिंहासन के सामने कांच का सा एक समुद्र था, वह कांच का सा समुद्र आग से मिला हुआ था, – परमेश्वर की महिमा ऐसी तेज चमकने वाली थी, – वहां पर एक दल के लोग जमा थे जिन्हों ने ''उस पशु, और उसकी मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे'', वे मेम्ने के साथ सिय्योन पहाड़ पर खड़े थे, ''वे परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े थे,'' वहां पर एक लाख चौंआलीस हजार लोग भी हैं जिन्हें पश्थ्वी पर से मोल लिया गया था ; और वहां पर एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, ''मानों वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों।'' और वे सिंहासन के सामने ''एक नया गीत'' गाते थे जिसे एक लाख चौंआलीस हजार को छोड़ कोई दूसरा मनुष्य नहीं सीख सकता था। यह मूसा और मेम्ने का गीत था – एक छुटकारे का गीत था। इसे और कोई नहीं पर सिर्फ एक लाख चौंआलीस हजार ही सीख सकते थे ; क्योंकि यह उनके आप बीती अनुभवों का गीत था – एक ऐसा अनुभव था जैसा किसी दूसरे दल वालों को कभी गुजरना नहीं पड़ा था।

‘‘ये वे ही है, कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं।’’ ये जगत के जीवतों के बीच से परिवर्तित कर के लाए हुए लोग हैं, जिन्हें ‘‘परमेश्वर और मेम्ना के निमित पहला फल होने के लिए मनुष्यों में मोल लिया गया है।’’ (प्रकाशित वाक्य १५:२–३; १४ : १–५)

(21) उनके उद्धारकर्ता की प्रशंसा के लिए एक अनूठा गीत गाने के लिए किस समूह को विशेषाधिकार दिया जाएगा ?

इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा; ये श्वेत वस्त्र पहिने हुए कौन हैं? और कहां से आए हैं? मैं ने उस से कहा; हे स्वामी, तू ही जानता है: उस ने मुझ से कहा; ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकल कर आए हैं; इन्होंने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लोहू में धो कर श्वेत किए हैं। (प्रकाशित 7:13-14)

ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैं: ये वे ही हैं, कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं: ये तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिये मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं। (प्रकाशित 14:4)

‘‘ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकल कर आए हैं।’’ वे ऐसे महां संकट और क्लेश के समय से पार हो कर आए हैं जैसा कि पश्थ्वी की उत्पति के समय से अब तक नहीं हुआ था, उन्होंने याकूब के संकट के समान ही शारीरिक और मानसिक वेदना का सामना किया था ; और वे परमेश्वर के अन्तिम सात विपतियों के उण्डेले जाने के समय विना मध्यस्ता के ही खड़े रहे। परन्तु उनका उद्धार किया गया क्योंकि ‘‘उन्हों ने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लोहू में धो कर स्वेत

किए हैं।'' ''उनके मुह से कभी झूठ न निकला, वे निर्दोष थे।'' ''इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के साम्हने हैं और उसके मन्दिर में (पवित्र स्थान में) दिन रात उसकी सेवा करते हैं ; और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उनके बीच में निवास करेगा।'' इन्हों ने जगत को भूखमरी और महामारियों से नाश होते हुए और सूर्य की भयंकर गर्मी से लोगों को झुलसते हुए देखा है, और वे खुद ही बड़े क्लेश, भूख और प्यास से गुजरे हैं। परन्तु ''वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे ; और न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी। क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखवाली करेगा ; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उन की आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा।'' (प्रकाशित वाक्य ७ : १४–१७)

(22) उनके उद्धारकर्ता की प्रशंसा के लिए एक अनूठा गीत गाने के लिए किस समूह को विशेषाधिकार दिया जाएगा ?

जब कि उन के पास पटाने को कुछ न रहा, तो उस ने दोनो को क्षमा कर दिया: सो उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रखेगा। शमौन ने उत्तर दिया, मेरी समझ में वह, जिस का उस ने अधिक छोड़ दिया: उस ने उस से कहा, तू ने ठीक विचार किया है। (लूका 7:42-43)

सभी युगों में मुक्तिदाता के चुने हुए लोग परीक्षा रूपी पाठशालाओं में प्रशिक्षित किए गए हैं और अनुशासित भी किए गए हैं। जगत में सकरे रास्ते से हो कर गुजरे हैं ; वे क्लेश के भट्ठे में शुद्ध किए गए हैं। यीशु मसीह के नाम के कारण इन्होंने विरोद्ध, घश्णा और निन्दा का सामना किया है। इन्होंने उसका पीछा अत्यन्त कष्ट के साथ किया था ; इन्हों ने आत्म त्याग किया और बड़े कड़वे निराशा में भी पड़े। अपने ही कड़वे अनुभव से इन्हों ने पाप से उत्पन्न बुराई को इसकी शक्ति, इसके अपराध के काम और इसके

पाप को अत्यधिक घश्णा के भाव से देखा। अनन्त बलिदान, जो इसके इलाज के लिए स्नाप को अत्यधिक घश्णा के भाव से देखा। अनन्त बलिदान, जो इसके इलाज के लिए दिया गया था इसके अनुभव ने इन्हें अपने दश्ष्टि में नम्र बनाया और उनके हृदय को कश्तज्ञता और बड़ाई से भर दिया। वे प्रभु से अत्यधिक प्यार करते हैं क्योंकि उन्हें अत्यधिक क्षमा प्रदान किया गया था। खीस्त के दुःखों में शामिल होने के कारण वे अब इसके साथ उसकी महिमा में शामिल होने के योग्य हो गए हैं।

(23) धर्मी को कौन सी फटकार नही लगायी जाएगी ?

वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है॥

(यशायाह 25:8)

परमश्ेवर के उत्तराधिकारी अट्टालिकाओं (बहु मंजीले मकानों) से, घास-फूस के घरों से, काल-कोठरियों से, फांसी देने के मचानों से, पहाड़ों से, मरूभूमियों से, धरती के गुफाओं से, समुद्र के कन्दराओं से निकल कर आए हैं। इस धरती पर वे निराश्रय, निर्धन, पीड़ित, और सताए हुए लोग थे। लाखों लोग अपने अपने कब्रों में चले गए कलंक का बोझ ढोते हुए, क्योंकि वे सीधे तौर से शैतान के छल-कपट से भरे दावो को मानने से इनकार किए थे। मानव न्यायलयों और धर्म सभाओं द्वारा इन्हें बड़े खतरनाक अपराधी घोषित किया गया था। परन्तु अब ''परमेश्वर आप ही न्यायी है।'' (भजन सं. हता ५०:६) अब जगत के न्याय को पलट दिया गया है, ''अपनी प्रजा की नाम धराई सारी पश्थ्वी पर से दूर करेगा।'' (यशायाह २५:८) ''लोग उनको पवित्र प्रजा और यहोवा के छुड़ाए हुए कहेंगे।'' ''और सिय्योन के विलाप करने वालों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बांध दूँ, कि उनका विलाप दूर करके हर्ष

का तेल लगाऊँ और उनकी उदासी हटा कर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊँ।'' (यशायाह ६२:१२, ६१:३) अब वे किसी तरह से दुर्बल नहीं होगे, उन्हें दुःख नहीं होगा, वे अब विखेरे नहीं जाएंगे, और न ही सताए जाएंगे। अब से वे सदा काल तक प्रभु के साथ ही रहेंगे। वे सिंहासन के सामने उन वस्त्रों को पहिन कर खड़े होते जो इस जगत के सब से कीमती वस्त्रों से भी अधिक कीमती और सम्मान जनक होगा ऐसा वस्त्र कभी जगत में पहना ही नहीं गया है। उन्हें राज मुकुट पहनाया जायोगा जैसा कि कभी भी कोई भी जगतीय राजा ने नहीं पहना है। दुःख और दर्द और रोने और विलाप करने के दिन सदा काल के लिए समाप्त हो गए। महिमा का राजा अपने सारे लोगों के आँसुओं को उनके चेहरे से पोंछ डाला है और दुःख प्राप्त होने के सारे कारणों को हटा दिया गया है। खजूर की डालियों को हवा में लहराते हुए वे बड़ाई और महिमा के गीत गाने लगते हें जो साफ मधुर और हर एक के आवाज से मेल खाता है और सब एक स्वर से गा उठते हैं जब तक कि गीत की ध्वनि स्वर्ग के सारे स्थानों में गूँज नहीं उठता है : ''बड़े शब्द से पुकार कर कहती हैं, कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने का जय जय कार हो।'' और स्वर्ग के सारे प्राणीगण इसके कोरस को दुहराते हैं :
''आमीन हमारे परमेश्वर की स्तुति,
और महिमा और ज्ञान और धन्यवाद और आदर और सामर्थ और शक्ति युगानुयुग बनी रहें।''
(प्रकाशित वाक्य ७ : १०, १२)

(24) बाइबल उद्‌धार की योजना का वर्णन कैसे करती है ?

और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर

उठाया गया॥ (1 तीमुथियुस 3:16)

इस पार्थिव जीवन में हम अद्‌भूत उद्धार के विषय में समझना आराम्भ करते हैं। अपनी सीमित बुद्धि से हम उसकी लज्जा और महिमा, जीवन और मरण, न्याय और दया के विषय में समझ सकते हैं। इन बातो को हम क्रूस में देखते हैं। फिर अधिक माथा - पच्ची करने पर भी हम क्रूस के अर्थ को पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते। उसके उद्धार के प्रेम की चौड़ाई, और लम्बाई , और ऊँचाई, और गहराई को बहुत थोड़ा समझते हैं। उद्धार के उपाय की बहुत-सी बातों को हम उस समय भी पूरी तरह नहीं समझेंगे जब हम उद्धार किए हुए लेगों को वैसा देखते हैं जैसा वे हैं और जानते हैं जैसा वे हैं। युग युग तक नई नई और दर्द और परीक्षाएँ जो पश्थ्वी में होती थी नहीं रहेगी और न फिर उनके उत्पन्न होने की कोई सम्भवना रहेगी फिर भी ईश्वर के लोगों को उद्धार का स्पष्ट ज्ञान होगा।

(25) अतीतए वर्तमानए और भविष्य के विज्ञान और छुड़ाये जाने का गीत क्या है?

सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ॥ (इफिसियों 3:18-19)

यीशू का क्रूस द्वारा उद्धार किए हुए लोगों का युग युग के लिए विज्ञान का विषय और गीत होगा। महिमायुक्त खीस्त में वे क्रूस पर ठोके हुए खीस्ट को देखेंगे। उस यीशु को उद्धार किए हुए लोग कभी नहीं भूलेंगे क्योंकि वह परमेश्वर का प्यारा और स्वर्ग का गौरव है। उसने अपनी शक्ति से सब दुनियाँ को बना कर अंतरिक्ष को भर दिया और उसी शक्ति से वह उनको सम्भलता है। करूब और साराफ उसकी शोभा

बढ़ने में आनन्द प्राप्त करते हैं। वही यीशु मनुष्यों को उठाने के लिए दीन बना और पाप का दंड सहा। उसके पिता ने उसकी इस स्थिति में उससे अपने चेहरे को ढक दिया, इससे और खोई दुनियाँ के दुःख से उसका हृदय टुट गया था। उसी दुःख के कारण क्रूस काठ पर उसका प्राण निकल गया। दुनियाँ का सशष्टिकर्त्ता सबों के भाग्य के निर्माता ने अपनी महिमा को छोड़ कर मनुष्यों के प्रेम के लिए अपने को दीन किया। इसी प्रेम के त्याग ने समस्त विश्व को आश्चर्य में डाल दिया। इसी प्रेम के कारण सभी उसकी भक्ति करते हैं। उद्धार किए गए लोग अपने उद्धारकर्त्ता को देखते हैं। उसके चेहरे में पिता की अनन्त महिमा को चमकते हुए देखते हैं। फिर उसके सिंहासन को देखते हैं। वह अनादिकाल से अनन्त काल तक है और इस बात को जान कर कि उसके राज्य का अंत नहीं होगा वे आनन्द से गीत गाने लगते हैं,'' बध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ के योग्य है उसने अपने बहुमूल्य लोहू से परमेश्वर के लिए हमें उद्धार किया है।''क्रूस का रहस्य ही सभी रहस्यों का भेद बताता है। कलवरी के क्रूस से जो प्रकाश निकालता है उसमें परमेश्वर के गुण हैं। वे गुण हमारे मन में भय और आदर को भर देते हैं। वे गुण बहुत सुन्दर और आकर्षित दिखाई देते हैं। दया, कोमलता और वास्तल्य प्रेम, पवित्रता न्याय और शक्ति से मिल जाते हैं। उसके सिंहासन के गौरव को हम देखते हैं। वह ऊँचा और उठा हुआ है। इस दश्श्य में हम उसके चरित्र की उदारता को देखते हैं। हमने पहले इस बात को जैसा स्वष्ट रूप से नहीं समझा था वैसा समझते हैं कि ''हमारे पिता'' की उपाधि कितनी प्रीतिकर है। ईश्वर के असीम ज्ञान का हमें पता लग जाएगा कि वास्तव में, वह हमारे उद्धार के लिए अपने पुत्र को वलिदान करने की अपेक्षा और कोई दूसरा उपाय नहीं रच सकता था। इस बलिदान का प्रतिफल वह यही चाहता है कि उद्धार किए हुए पवित्र आनन्दित और अमरहार लोगों से पश्थ्वी भर जाए। इससे बढ़ कर वह किसी दूसरी वस्तु से आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता। अंधकार की शक्ति से त्राणकर्त्ता के संघर्ष का परिणाम तो उद्धार किए हुए लोगों के लिए आनन्द है। यह परमेश्वर की महिमा है जो युगयुग बनी रहेगी।

उद्धार किए गए लोगों से ही उसकी महिमा होती है। यह महिमा उद्धार किए गए लोगों का मूल्य है। इसलिए उनका मूल्य चुका कर परमेश्वर प्रसन्न है। ख्रीस्त स्वयं अपने बलिदान के फल को देखकर प्रसन्न (संतुष्ट) है।

मैं उस महान दिन का इंतजार कर रहा हूंए जब मसीह स्वर्ग के बादलों में अपने लोगों को इस धरती की दुष्टता और हमारे सामने आने वाली मुसीबत का भयानक समय देने के लिए आता है।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं मसीह की खुशी के निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए बहुत उम्मीद के साथ देखता हूंए ''आओए मेरे पिता का आशीर्वाद पाओए जो दुनिया की नींव से तुम्हारे लिए तैयार किए गए राज्य को विरासत में मिला है।"

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

____

पाठ 12
पृथवी का उजड़ जाना

(1) दया का क्या संदेश है जो उन लोगों के लिए स्वर्ग की घोषणा कर रहे हैं जो अनजाने में बेबीलोन के झूठे सिद्धांतों का अनुसरण कर रहे हैं ?

फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगों, उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उस की विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े। (प्रका 18:4)

(2) बाबुल और उसके उपदेशों से चिपके रहने वालों पर क्या निर्णय आएगा ?

इस कारण एक ही दिन में उस पर विपत्तियां आ पड़ेंगी, अर्थात मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में

भस्म कर दी जाएगी, क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है। (प्रका 18:8)

जब ईश्वर अपने कैद किये हुए लोगों की ओर से आवाज उठाता है तब बंधन हट जाती है और जिन लोगों ने इस जीवन के महा संघर्ष में खोया है उनके बीच में एक अदभूत जागशति उत्पन्न होती है। जब तक क्षमा पाने का समय कायम रहता है शैतान भी भरमाने का काम जारी रचाता है। इस वक्त लोग पाप में जीना ही अच्छा समझते हैं। धनी लोग अपने धन के गर्व से दूसरे को जो गरीब हैं उसने अपने को बड़ा मानते हैं। इन लोगों ने ईश्वर की व्यवस्था को तोड़ कर धन कामाया है। उन्हों ने भूखों को खिलाने, गरीबों को पहिनाने, न्याय करने और प्रेम करने में घटिया काम किया है।

(3) मूल सिद्धांत क्या हैए जो जानबूझकर उल्लंघन करते हैं ?

मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली। तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की? तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। (मत्ती 25:43-45)

उन्हों ने अपने को ऊँचा उठाने और अपने पड़ोसियों से आदर पाने का जरिया बना लिया है और जो चीज उन्हें बड़ा बनाता था उससे वे

वंचित रह गये हैं और अभी वे निःसहाय और त्यागे हुए हैं। अब वे टूटी हुई मूर्तियों को डर से देखते हैं जिन को वे एक समय ईश्वर से अधिक बढ़ कर सेवा करते थे। उन्हों ने दुनियाँ के घन और सुख से अपने आत्मा को विक्री कर दिया था और जगत के लिए धनी बने थे। इस का परिणाम यह निकला कि उनका जीवन असफल रहा। उनका अब जेल बन गया और धन नष्ट हो गया। जीवन भर की कमाई क्षणभर में उड़ जाती है। धनी लोग अपने घर के उजड़ जाने से तथा चाँदी सोने के विखर जाने से विलाप करने लगते हैं। उनका विलाप इस डर से रूक जाता है कि अब वे भी अपनी मूर्त्तियों के साथ नष्ट हो जायेंगे।

(4) जब दुष्ट सचमुच पश्चाताप करता है तो जीवन में क्या परिवर्तन होता है ?

तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुन कर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा। ***(2 इति 7:14)***

दुष्ट लोग शोक करने लगेंगे, अपने लोगों के कारण या पापमय जीवन के कारण या ईश्वर को छोड़ने के कारण से नहीं परन्तु ईश्वर की विजय को देख कर। वे इस कारण शोक करते हैं कि परिणाम जो होना था वह हो गया परन्तु अपनी बुराई के लिये पश्चाताप नहीं करते हैं। वे जीतने के लिये सब प्रकार का प्रयास करते हैं।

(5) धर्मी के लिए कौन सा अद्‌भुत वादा पूरा हुआ ?

वह तो तुझे बहेलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा; वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके

पैरों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी। (भजन 91:3-4)

जगत ने एक वर्ग के लोगों को जिन पर हँसी–ठट्ठा और तिरस्कार किया था, और उन्हें समाज से निर्वासित भी किया गया था वे ही लोग महामारी, विपत्ति और भूकम्प से बच निकले थे। जो व्यवस्था के तोड़ने वाले थे उन्हीं पर विनाशकारी आग थी और जो व्यवस्था को नहीं तोड़े थे उन पर कुछ भी नहीं हुआ पर वे सुरक्षित रहे।

(6) सच्चाई की अनदेखी करने और अपने झुंड को भटकाने वाले आध्यात्मिक अगुओं पर क्या फैसला सुनाया जाएगा ?

उन चरवाहों पर हाय जो मेरी चराई की भेड़-बकरियों को तितर-बितर करते ओर नाश करते हैं, यहोवा यह कहता है। इसलिये इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के चरवाहों से यों कहता है, तुम ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, वरन उन को तितर-बितर किया और बरबस निकाल दिया है, इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों का दण्ड दूंगा। (यिर्म 23:1-2)

जो पाद्री लोग मनुष्यों की प्रशंसा पाने के लिये सच्चाई को नहीं मानते थे अब उन्हें अपनी शिक्षा का प्रभाव मालूम पड़ने लगा। यह स्पष्ट था कि सर्वज्ञानी ईश्वर की आखें उन पर थी। वह जहाँ भी खड़ा होता था, जिन गलियों से गुजरा लोगों से भेंट वार्त्ता किया था या जीवन के हर क्षेत्र में, प्राण के हरेक सोच विचार, हरेक बात जिसको उसने कहा या लिखा हो, हरेक काम के द्वारा मनुष्यों को झूठी बात पर विश्वास करने के

लिये आग्रह किया हो सब बीज बोने के समान था। अभी अपने चारों और शोकित तथा खोये हुए प्राणियों को पता है।

(7) किस प्रकार विश्वासघाती अगुओं को स्वीकार करने में विफल रहे हैं ?

तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है॥ (भजन 119:160)

तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी व्यवस्था सत्य है (भजन 119:142)

पाद्री और लोगों को यह मालूम हो जाता है कि उन्होंने ईश्वर के साथ अच्छा संबन्ध स्थापित नहीं किया है। उन्हें स्पष्ट दिखाई देता है कि धार्मिक व्यवस्था के देने वाले से उन्हों ने विरोध किया है।। स्वर्गीय व्यवस्था को छोड़ने के कारण हजारों बुराइयों की उत्पति होती है जैसे अनेकता, घश्णा, बुराई आदि तब तक जब तक कि जगत उपद्रियों का बड़ा राज्य बन कर इस में डूब जाता है। अभी यही दश्श्य उनको दिखाई देता है जो सत्य को छोड़ कर बुराई करना पसन्द करते हैं। अनाज्ञाकारी और अविश्वासी लोगों को अनन्त जीवन पाने की अभिलाषा को व्यक्त करने के लिये कोई भाषा या शब्द नहीं मिलते हैं जिसको उन्हों ने सदा के लिये खो दिया है। मनुष्यों ने अपनी बुद्धि और ज्ञान से जिस जगत की पूजा की थी अभी उसको सच्चाई की दश्ष्टि से देखने पर पता लगता है कि ये सब मिथ्या (झूठ) थे। आज्ञा उल्लंघन का प्रतिफल अभी उन्हें मिलता है और उन लोगों के पाँव पर गिरते हैं और विश्वास कर स्वीकार करते हैं कि ईश्वर ने उन्हें प्रेम किया है। एक समय था कि वे उन से घश्णा कर हँसी–मजाक करत थे।

(8) जिन लोगों ने उनके साथ विश्वासघात किया हैए उनके प्रति उनकी प्रतिक्रिया कैसी होगी ?

और उस समय यहोवा की ओर से उन में बड़ी घबराहट पैठेगी, और वे एक दूसरे के हाथ को पकड़ेंगे, और एक दूसरे पर अपने अपने हाथ उठाएंगे।

(जकर्याह 14:13)

लोग अपने को देखते हैं कि वे भ्रमित किये गये हैं। बुराई या विनाश की लोग अगुवाई किये जाने के कारण एक दूसरे को दोष देते हैं पर एक साथ मिल कर पाद्रियों के ऊपर आरोप का बोझ लादते हैं। अविश्वासी पाद्रियों ने शान्ति के समय के लिये भविष्यवाणी की थी, अपने श्रो. ताओं को ईश्वर की व्यवस्था का पालन करना व्यर्थ बताया था और जो उस को पालन कर पवित्र मानते थे उन्हें सताते थे। अब वे निराश हो कर जगत के सामने अपने गलती मान कर अपने कामों को झूठ बताते हैं। अधिकाँश लोग गुससे हो कर आग बबुला हो जाते हैं। वे यह कह कर चिल्लाते हैं – ‘‘हमलोग खो गये हैं और हमारे विनाश का

कारण तुम हो।’’ यह कह कर वे झूठे नवियों या चरवाहों पर झपट पड़ते हैं। एक समय था ये ही लोग इनकी खूब प्रशंसा करते थे। परन्तु अब भयंकर रूप से शाप देते हैं। इन्ही हाथों से उन्हें मुकुट पहिनाया जाता था पर अब उन्हें मारने के लिये हाथ उठाते हैं। जिन तलवारों को ईश्वर के लोगों को कत्ल करने के लिए व्यवहार करते थे उन्हीं को अब उन पर नाश करने के लिए चलाये जाते हैं। चारों और उपद्रव और खून–खराबी से धरती रंग जाती है।

(9) परिवीक्षा के समापन के बाद परमेश्वर और शैतान के बीच का विवाद किसमें शामिल है ?

पृथ्वी की छोर लों भी कोलाहल होगा, क्योंकि सब जातियों से यहोवा का मुक़द्दमा है; वह सब मनुष्यों से वादविवाद करेगा, और दुष्टों को तलवार के वश में कर देगा। (यिर्मयाह 25:31)

छः हजार वर्षो तक परमेश्वर के पुत्र और स्वर्ग के संवाद दाताओं और बुरी शक्ति के एजेन्टों के बीच महान संघर्ष चलता रहा है। इसमें मनुष्यों की सन्तानों को चेताने, जगाने और बचाने का काम किया जाता था। अब सब ने अपना अपना निर्णय कर लिया है, दुष्टों ने ईश्वर के विरूद्ध लड़ाई करने के लिये शैतान के साथ हो लिया है। अभी ईश्वर को उन लोगों के लिये जो उसकी व्यवस्था को नहीं मानते हैं उन पर अपना अधिकार प्रकट करने का समय आ पहुँचा है। अभी वाद विवाद या संघर्ष सिर्फ शैतान से ही नहीं है पर मनुष्यों से भी। ''ईश्वर का महान संघर्ष राष्ट्रों के साथ है।'' उन्हें तल. वारों का सामना करने के लिये लाया जायेगा''।

(10) दुष्टों का क्या होगा क्योंकि वे मसीह को बादलों में आते हुए देखेगें ?

तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। (2 थिस्सलुनीकियों 2:8)

और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है? (प्रकाशित 6:16-17)

यीशु के आने के समय सभी दुष्ट लोग सारी पश्थ्वी की सतह पर नष्ट कर दिए जायेंगे - उसके मुंह के वचन और महिमा की उज्ज्वलता के कारण नष्ट होंगे। यीशु अपने लोगों को ईश्वर के नगर में ले जायेगा और पश्थ्वी उजाड़ और निर्जन हो जायेगी।'' देखों प्रभु पश्थ्वी को उजाड़ कर निर्जन बना देगा और यहाँ के निवासियों को तितर बितर कर देगा।'' पश्थ्वी

बिल्कुल सत्यानाश कर निर्जन कर दिया जायेगा क्योंकि प्रभु यहोवा का यही वचन है। क्योंकि उन्हों ने व्यवस्था का उल्लंघन किया है और विधि को पलट डाला है और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। (यशा : २४:१, २, ५, ६)

(11) दुष्टों के विनाश का मूल कारण क्या है ?

पृथ्वी अपने रहने वालों के कारण अशुद्ध हो गई है, क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला, और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। इस कारण पृथ्वी को शाप ग्रसेगा और उस में रहने वाले दोषी ठहरेंगे; और इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे। (यशायाह 24:5-6)

इसी कारण पश्थ्वी पर शाप पड़ गई है और उसमें रहने वाले दोषी ठहरेंगे, और इसी कारण पश्थ्वी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रहेंगे'' (६ पद)

(12) प्रभु के आने का पृथ्वी पर क्या भौतिक प्रभाव होगा ?

परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाऐंगे। (2 पतरस 3:10)

सारी पश्थ्वी उजड़ी हुई निर्जन मरूभूमि के समान हो जायगी। गांवों और नगरों के घर और गलियाँ जो भूकम्प से बर्बाद होंगे। उखड़े हुए पेड़

और टूटी हुई चट्टाने यहाँ वहाँ बिखरी पड़ी रहेंगी सागर से भूकम्प के कारण ही बड़े-बड़े चट्टान बाहर धरती पर आ कर बिखरे पड़े रहेंगे। बड़ी-बड़ी खाईयाँ दरारें जो पहाड़ों के फट्ने पर हुई हैं दिखाई देंगी।

(13) मसीह के दूसरे आगमन के बाद शैतान की किस्मत का क्या होगा ?

और उस ने उस अजगर, अर्थात पुराने सांप को, जो इब्लीस और शैतान है; पकड़ के हजार वर्ष के लिये बान्ध दिया। और उसे अथाह कुंड में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इस के बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए॥ (प्रकाशित 20:2-3)

ये घटनाएँ अब घट रही हैं जो पूर्वकाल में कही गई थी जो प्रायश्चित के दिन की गंभीर सेवकाई के अन्त में होने वाली थी। जब मह.ापवित्र स्थान की सेवकाई का काम समाप्त होता था और इस्राएलियों के पाप खून के वलिदान से हटा लिया जाता था अजाजेल का बकरा प्रभु के सामने जीवित रूप में प्रस्तुत किया जाता था, इस्राएलियों के समुदाय के बीच महायाजक उसके सिर पर हाथ रख कर इस्राएल के संतान के सारे पापों के स्वीकार करता था। (लैव्यवस्था १६:२१) ठीक उसी तरह जब स्वर्गीय पवित्र स्थ.ान में विचवाई का काम पूरा हो जायेगा तब परमेश्वर के सामने, स्वर्गदूतों और सब उद्धार पाये हुए लोगों के सामने ईश्वर के लोगों के सारे पापों को शैतान के ऊपर थोप दिया जायेगा तब उस पर जगत में जितने सारे पाप किये गए हैं उसका दोष लगाया जायेगा। जैसे अजाजेल के बकरे को निर्जन पश्थ्वी पर अकेला छोड़ दिया

जाता था वैसा ही उसे भी अकेला छोड़ दिया जायेगा।

(14) उसके बंधन के 1000 वर्षों के दौरान शैतान की गतिविधियों पर परमेश्वर क्या प्रतिबंध लगायेगा ?

और उसे अथाह कुंड में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इस के बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए॥ (प्रकाशित 20:3)

यहाँ पश्थ्वी पर शैतान और उसके बुरे दूतों के लिये एक हजार वर्ष तक घर बन जाता है। पश्थ्वी पर उसे कैदी के समान रखा जायेगा। उसे दुसरी दुनियाँ में जा कर उन्हें भरमा कर पाप में गिराने की अनुमति नहीं दी गई है जो अब तक पाप नहीं किए हैं। इसी अर्थ में उसे बाँध कर रखा, कहा जाता है। यहाँ कोई नहीं होगा जिस को वह भरमाने का काम करेगा या उससे बातें करेगा। धोखा देने और बर्बादी के काम जो हजारों वर्षों से वह करता आ रहा था उससे अलग रखा जायेगा। यशायाह नबी शैतान के कामों को बन्द करने के विषय यह कहता है – ‘‘है भोर के चमकने वाला तारा, तुम क्यों कर आकाश से गिर पड़ा ? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कट कर कैसे भूमि पर गिराया गया है ? तू मन में सोचता था कि मैं स्वर्ग पर चढूंगा। मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊचाँ करूँगा और उत्तर दिशा की ओर परमेश्वर की सभा के पर्वत पर बिराजुँगा। मैं मेघों से भी ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर चढूंगा। मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा। परन्तु तू अधोलोक में उस गड्हे की तह तक उतारा जायेगा। जो तुझे देखेंगे तुझको देखते हुए तेरे विषय में सोच-सोच कर कहेंगे क्या यह वही पुरूष है जो पश्थ्वी को चैन से रहने न देता था और राज्य में घबराहट डाल देता था। जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरों को ढा देता

था और अपने बन्धुओं को घर जाने नहीं देता था ? (यश १४:१२-१७) ६००० वर्षों तक शैतान के उपद्रवी काम ने जगत को हिला दिया है ''उसने जगत को उजाड़ कर रेगिस्तान बना कर नगरों के लोगों को बर्वाद कर डाला है'' उसने अपने कैदियों के घर को भी नहीं खोला है ''क्योंकि ६००० वर्षों तक ईश्वर के लोगों को अपने कैद में रखा है और वह उन्हें सदा कैदी बनाये रखना चाहता है परन्तु ख्रीष्ट ने उनका बन्धन को तोड़ कर हमेशा के लिये आजाद कर दिया है। दुष्ट लोग भी अभी शैतान के कब्जे से बाहर हैं और शैतान अकेले अपने बुरे दूतों के साथ रह कर पश्थ्वी पर जिस पाप का अभिशाप डाला गया है उसे महसूस करने के लिए रह जाता है। पश्थ्वी के राजा-महाराजा जो अपनी अपार महिमा से विभूषित थे अभी अपनी - अपनी कब्रों में हैं परन्तु तू अपनी कब्र से एक तुच्छ (घश्णित) डाली की नाई काट कर फैंक दिया है - तू उनके साथ कब्र में नहीं गाड़ा जायेगा क्योंकि तूने अपनी भूमि को बर्बाद किया है और अपने लोगों को कत्ल किया है। (याश १४:१८-२०) शैतान हजार बर्षो तक, इस उजाड़ पड़ी पश्थ्वी पर, ईश्वर की व्यवस्था को नहीं मानने के परिणाम को देखने के लिये, इधर से उधर घूमता रहेगा। इस दौरान उसका दुःख ज्यादा बढ़ेगा। जब से वह गिरा है तब से उसका अनवरत (लगातार) काम की झलक पाना अब बन्द हो गया है। उसकी शक्ति को छीन लिया गया है ताकि वह इन घटनाओं को महसूस कर सके जिन्हें जगत के शुरू से पहले ही ईश्वर के राज्य के विरूद्ध उपद्रव किया है। अब उसे उस पर आनेवाली भयानक तथा डरावनी सजा को डरते और कापते हुए देखने का मौका मिला है जिन पापों को उसने किया और दूसरों को भी करवाया है।

(15) 1000 वर्षों के दौरान छुड़ाये जाने वाले की गतिविधि क्या होगी ?

फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उन को न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उन की

आत्माओं को भी देखा, जिन के सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; और जिन्हों ने न उस पशु की, और न उस की मूरत की पूजा की थी, और न उस की छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित हो कर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। (प्रकाशित 20:4)

हजार वर्ष की अवधि में पहले और दूसरे पुनरूत्थान के बीच दुष्टों का न्याय होता है। पौलुस प्रेरित इस घटना को दूसरे आगमन की घटना बतलाता है। समय के पहले न्याय मत करो जब तक कि प्रभु आकर छिपी हुई चीजों और अंधकार के रहस्य को नहीं खोल कर दिलों को सलाह नहीं देता है। जब तक वह अति प्राचीन न आया और परमप्रधान के लोग न्यायी न ठहरे और उन पवित्र लोगों को राज्याधिकारी होनेका समय न आया, न्याय नहीं हुआ। इस समय धर्मी लोग प्रभु के लिये राजा और याजक के समान न्याय करते हैं। यूहन्ना प्रकाशितवाक्य में कहता है – ‘‘फिर मैं ने सिंहासन देखे और उस पर लोग बैठ गए और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया, (और उनकी आत्माओं को भी देखा जिन के सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे।) वे ख्रीस्त और ईश्वर के याजक बन कर हजार वर्षों तक राज्य करेंगे।’’ (प्रकाशित वाय : २० : ४, ६) यह वही समय है जिस के विषय पौलूस प्रेरित ने कहा है – ‘‘सन्त लोग जगत का न्याय करेगे।’’ (१ कुरिन्थी ६:२) ख्रीस्त के साथ मिल कर वे उनके पापों का लेखा जोखा खाता खोल कर करेंगे बाइबल से और उसी के अनुसार निर्णय करेंगे। इसके पश्चात् दुष्ट लोग अपने किये कर्मों के अनुसार सजा पायेंगे। यह उनके नाम पर मश्त्यु की किताब में लिखा हुआ है।

(16) इस निर्णय में कौन शामिल होगा?

क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? सो जब तुम्हें जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं? क्या तुम नहीं जानते, कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या सांसारिक बातों का निर्णय न करें? (1 कुरिन्थियों 6:2-3)

पौलुस प्ररित लिखता है कि शैतान और बुरे दूत भी खीस्त और उसके लोगों के द्वारा न्याय किये जायेंगे। ''क्या तुम नहीं जानते कि हम दूतों का न्याय करेंगे ?'' (३ पद) यहूदा भी कहता है कि जिन स्वर्ग दूतों ने अपनी पदवी स्थिर नहीं रखी वरन अपने जिन निवास को छोड़ दिया, उसने उन को भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में जो सदा काल के लिये है बन्धनों में रखा है'' (यहूदा ६ पद)

(17) 1000 साल की अवधि के करीब क्या होगा ?

और जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए तक तक शेष मरे हुए न जी उठे; यह तो पहिला मृत्कोत्थान है। (प्रकाशित 20:5)

हजार वर्षों के अन्त में दूसरा पुररूत्थान होगा। उस वक्त दुष्टों को मश्तकों में से जिलाया जायेगा और न्याय के लिये ईश्वर के सामने उपस्थित किया जायेगा। इस प्रकार से यूहन्ना नबी (प्रेरित भी है) धर्मीयों के जी उठने के बाद कहता है – ''बाकी दुष्ट मश्तक लोग जब तक हजार वर्ष पूरे नहीं हुए तब तक जी नहीं उठे'' (प्रकाशित वाक्य २:५५) यशायाह नबी भी घोषणा करता है, ''दुष्टों के सम्बन्ध में वे बन्धुओं की नाई गड्हें में इकट्ठे किये जायेंगे और बन्दीगश्ह में बन्द किये जायेंगे और बहुत दिनों के बाद उनकी सुधि ली जायेगी।'' (यशा. २४:२२)

पवित्रशास्त्र ने मुझे उन महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बताया है जो इस महान विवाद को समाप्त करेंगे। मैं समझता हूं कि इस संघर्ष के बंद होने से पहले प्रत्येक व्यक्ति ने एक निर्णय लिया होगा कि वे किसके प्रति वफादार होंगे।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मुझे एहसास है कि मेरे विनाश के लिए उसकी खोज में शैतान मुझे धोखा देने के लिए अपनी शक्ति के भीतर हर तरीके को नियुक्त करेगा और जब ये विफल होंगे तब सतावट शुरू होगा।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मैं आभारी हूं कि परमेश्वर उनके प्रेम और दया में अपने लोगों को बेबीलोन के झूठे सिद्धांतों से बाहर निकाल रहा है और उन सच्चाइयों का खुलासा कर रहा है जो धोखे को रोकेंगी। मैं पवित्र आत्मा से गलती के सत्य को समझने के लिए मार्गदर्शन की प्रार्थना करता हूं ताकि मैं छल के बीच न रहूं।

घेरा लगायें:   हाँ   निर्णय नहीं लियें

मुझे एहसास है कि सभी मानव जाति ने निष्ठा के बाद परमेश्वर का फैंसला इस धरती पर उजाड़ देगा। मैं उसकी कीमत की परवाह किए बिना उसके प्रति वफादार रहना चाहता हूं और अपने उद्धार के लिए उसके वादों के लिए आभारी हूं।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

पाठ 13

संघर्ष का अंत

एक हजार वर्ष पूरे होने के बाद फिर ख्रीस्ट इस पश्थ्वी पर लौटता है। उसके साथ उद्धार किए हुए लोग हैं। असंख्य दूत भी उसके साथ हैं। वह अपने भंयकर गौरव के साथ उतरता है और दुष्टों को कब्र से उठाता है कि वे अपने दुष्टता के काम का फल पावें। वे कब्र से उठते हैं। उनकी संख्या बहुत है। उनकी भीड़ समुद्र के बालू के समान है। पहले पूनरूत्थान में जितने उठाए गए थे उनसे इनकी गिनती में भिन्नता है ! धर्मी लोग नहीं मूर्झाने वाले यौवन और सुन्दरता के वस्त्र से आभूषित हैं। इसके विपरीत दुष्ट लोगों में रोग और मश्त्यु के लक्षण हैं।

(1) सत्य की शक्ति से प्रेरित अनिच्छुक होठों से कौन से शब्द निकलेंगे ?

देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूं; जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे॥ (लूका 13:35)

बड़ी भीड़ के सभी लोग परमेश्वर के पुत्र की महिमा को देखने के लिए उसकी ओर अपनी दशष्टि डालते हैं। जब दुष्टों की भीड़ एक स्वर से चिल्लाती है, ''धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।'' यीशु के प्रति प्रेम से प्रेरणा पाकर वे चिल्लाते हैं ऐसी बात नहीं है, पर सत्य की शक्ति उनकी अनइच्छुक ओठों द्वारा इन वचनों को उन्हें उच्चारण करवाती है। जिस भावना से भर कर दुष्ट लोग मरे थे उसी भावना से वे कब्र से निकलते हैं अर्थात् ख्रीष्ट के प्रति वही वैरता की भावना और वही उपद्रव की आत्मा है। उन्हें फिर दोबारा जाँच का अवसर नहीं मिलेगा कि वे अपने पिछले जीवन की दुर्बलताओं को दूर कर सकें। इस समय यदि उन्हें अवसर मिले तो इससे उनका लाभ नहीं है क्योंकि उन्होंने जीवन भर आज्ञा नहीं माना। उन्होंने अपने जीवन अवधि में अपने हृदय को कठोर किए रहा। यदि उन्हें दूसरा अवसर दिया जाए तो फिर भी वे अपने जीवन को वैसा ही व्यतीत करेंगे। जैसा उन्हों ने पूर्व में बिताया था अर्थात् वे स्वयं तो ईश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानेंगे - और दूसरों को भी उसका विरोध करने के लिए उन्हें उभाड़ेंगे।

(2) स्वर्ग से ''पति के लिए तैयार दुल्हन" के रूप में क्या उतरता है ?

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। (प्रकाशित 21:2)

यीशु उसी जलपाई पर्वत पर उतरता है जहाँ से वह पूनरूत्थान के बाद स्वर्ग उठा लिया गया था। यहाँ से स्वर्ग दूतों ने उसके लौट आने की बात कही थी। नबी कहता है, ''मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा और सब पवित्र लोग उसके साथ होंगे।'' ''और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर जो पूरब और यरूशलेम के सामने है पांव धरेगा, तब जलपाई का पर्वत पूरब से लेकर पश्चिम तक बीचों बीच से फट कर बहुत बड़ा खड्डा हो जाएगा ... तब यहोवा सारी पश्थ्वी का

राजा होगा और उस समय एक ही यहोवा और उसका नाम एक ही माना जाएगा।'' (यकर्याह १४:५, ४, ६) नया यरूशलेम अपने बड़े बैभव के साथ स्वर्ग से उतर कर आता है और उस स्थान पर ठहरता है जो पवित्र किया गया है और वह उसे ग्रहण करने के लिए तैयार है। खीष्ट अपने लोगों और दूतों के साथ पवित्र नगर में प्रवेश करते हैं।

(3) जब 1000 साल खत्म हो जाएंगे और दुष्ट फिर से जीवित हो जाएंगे तो कौन सी गतिविधि फिर से शुरू होगी ?

और जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात गोग और मगोग को जिन की गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी, भरमा कर लड़ाई के लिये इकट्ठे करने को निकलेगा। (प्रकाशित 20:7-8)

शैतान अपनी श्रेष्ठता प्राप्त करने के उद्वेश्य से अंतिम बड़े युद्ध के लिए अभी तैयारी करता है। अभी वह शक्तिहीन हो गया है, वह धोखा देने का काम नहीं कर सकता इसलिए दुष्ट राजकुमार बहुत उदास और दुःखित है। पर जैसे वह मरे हुए दुष्टों की बड़ी भीड़ को जी उठे देखकर अपने दल में खड़े हुए पाता है उसकी आशा जाग उठती है और वह इस महान संघर्ष में हार नहीं मानने का दश्ढ़ संकल्प करता है। तब वह फिर खाई हुई सेना को अपनी योजना को पूरा करने के लिए संगठित करता है। दुष्ट लोग शैतान के बंदी है उन्होंने खीष्ट को अस्व. ीकार किया और उपद्रवी नेता की शासन प्रणाली को ग्रहण किया था। अभी वे उसके सुझाव के अनुसार करने के लिए तैयार हैं। शैतान पहले से ही धूर्त है और वह इस बात को मानना नहीं चाहता कि मैं शैतान हूँ। यह अपने को राजकुमार बताता है और इस दुनियाँ का उचित उत्तराधिकारी मानता है। वह कहता है कि उसका

जो अधिकार था उससे अवैध रूप से छीन लिया गया है। जिन लोगों को वह अपने भ्रमजाल में फंसा कर उसने अपनी प्रजा बना ली है उन्हें वह अपने को उद्धारकर्त्ता बताता है। इस समय उन्हें वह यह विश्वास दिलाता है कि उसने अपनी शक्ति से उन्हें कब्र से उठाया है और निकट भविष्य में उन्हें जिस निर्दयता से अत्याचार किया जाएगा उससे उन्हें वह बचाएगा। इस समय खीष्ट की अनुपस्थिति में शैतान अपने विचार को समर्थन करने के लिए आश्चर्यकर्म करता है। वह दुर्बलों को बलवान बनाता है और सबों में अपनी आत्मा और शक्ति देता है। उन्हें यह बताता है कि मैं संतो के शिविर का आक्रमण करने में अगुवाई करूंगा। वह उन्हें बताता है कि हम सब मिल कर परमेश्वर के नगर पर अधिकार जमा लेंगे। वह पैशाचिक आनन्द प्रकट करते हुए असंख्या लोगों को निर्देश दे कर कहता है देखो हमारी इतनी बड़ी संख्या कब्र से उठी है, हमारी नैतश्त्व मे इतनी बड़ी संख्या की सहायता से अवश्य उस नगर को पराजित करके उस सिंहासन और राज्य को हम प्राप्त कर सकेंगे।

(4) पवित्रशास्त्र खोए हुए लोगों का महान सिंहासन की तुलना किससे करता है ?

और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात गोग और मगोग को जिन की गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी, भरमा कर लड़ाई के लिये इकट्ठे करने को निकलेगा।(प्रकाशित 20:8)

इस बड़ी भीड़ में जलप्रलय से पूर्व की वो जातियाँ हैं जो बहुत दिन तक जीवित रही थी। इसमें बड़े लम्बे चौड़े डील-डौल वाले और बड़े बड़े बुद्धिमान ज्ञानी और प्रतिभा सम्पन्न लोग हैं। वे पतित दूतों के हाथ में बिक गए और उन्होंने अपनी योग्यता और अपना ज्ञान अपने को ऊँचा उठाने के लिए प्रयोग किया। उस दल में ऐसे-ऐसे लोग हें जिनके चमत्कार पूर्ण कला

कौशल के कारण दुनियाँ उनकी प्रतिमा बनाकर पूजने लगी थी, पर उनकी निर्दयतापूर्ण और पैशाचिक अविष्कार से पश्थ्वी अपवित्र हो गई और उनके प्रभाव से परमेश्वर का रूप मिट गया। इसीलिए परमेश्वर ने विवश होकर उन्हें अपनी सश्ष्टि की हुई पश्थ्वी में उनकी नहीं रहने दिया था। उस भीड़ में राजा और सेनापति हैं। उन्होंने बहुत देशों पर आक्रमण कर उन्हें अपने अधीन कर लिया था। उस भीड़ में ऐसे साहसी योद्धा है जिन्होंने लड़ाई में कभी हार नहीं खाया था। उन अभिमानी तथा लड़ाकुओं के आगमन का समाचार सुनकर समस्त राज्य में लोग भय से काँपने लगते थे। ऐसे लोग मर कर भी कब्र में परिवर्तन होने नहीं सके। जब वे कब्र से निकल आते हैं तब उनका सोच बिचार फिर वैसा ही होता है जैसा मरने के समय था। मरने के समय शासनकर्त्ता को पराजित करने की जो भावना उनके मन में थी वही भावना कब्र से उठने के बाद प्रबल होती है। शैतान अपने दूतों के साथ विचार विमर्श करता है। इसके बाद वह इस भीड़ के राजाओं योद्धाओं और बड़े साहसी लोगों से सलाह लेने को जाता है। वे अपनी ओर की संख्या और भुजवल पर गर्व करते हैं और यह घोषणा करते हैं कि नगर के भीतर जो सेना है उसकी संख्या हमारी तुलना में बहुत थोड़ी है। इसलिए उन्हें पराजित करना कठिन नहीं है। वे उस समश्द्ध और महिमायुक्त नए यरूशलेम को अपने अधिकार में करने की योजना बनाते है। अचानक सभी युद्ध की तैयारी में जुट जाते हैं। लोहार और सोनार युद्ध के लिए हथियार की तैयारी करने लगे हैं। सेनाओं के सेनापति अपनी पूर्व विजय के यश (ख्याति) के बल से भीड़ में लड़ने वालों को दल-दल में बाँट कर युद्ध के लिए तैयार कर रहे हैं।

(5) यह विशाल सेना शैतानी आदेश के तहत क्या प्रयास करती है ?

और वे सारी पृथ्वी पर फैल जाएंगी; और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी: और आग स्वर्ग से उतर कर उन्हें भस्म करेगी। (प्रकाशित 20:9)

अंत में सब तैयारी होने के बाद आक्रमण के लिए आगे बढ़ने की आज्ञा दी जाती है। आज्ञा सुनकर असंख्य लोगों की सेना आगे बढ़ती है। इस पश्थ्वी में जब से युद्ध आरम्भ हुआ है सभी युग की सभी जाति के लोगों की मिली जुली इतनी बड़ी सेना किसी विजेता ने संगठित नहीं कर सका था। शैतान जो सब से बड़ा रणवीर है सब से आगे-आगे जाता है। उसके दूत सेना को संगठित कर अंतिम युद्ध के लिए उसके पीछे पीछे जाते हैं। राजा और योद्धा युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध हैं दल बाँध कर वे उनके पीछे हैं। प्रत्येक दल का एक अगुवा है। युद्ध के समय सेना को नियम का पालन करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है ठीक उसी प्रकार शैतान के पीछे-पीछे लोग पश्थ्वी की ऊबड़-खाबड़ भूमि पर चलते हुए परमेश्वर के नगर की और बढ़ते हैं। यीशु की आज्ञा से नए यरूशलेम के फाटक बंद कर दिए जाते हैं। तब शैतान की सेना नगर को चारों और से घेर लेती है और आक्रमण के लिए तैयारी करते हैं। अब फिर बैरी ख्रीस्ट को देखते हैं। बहुत दूर नगर में, साफ चमकते हुए सोने की नीव पर एक सिंहासन बहुत ऊँचा दिखाई देता है। इस सिंहासन पर परमेश्वर का पुत्र बैठा है। उस सिंहासन के चारों ओर उसके राज्य की प्रजा हैं। ख्रीस्ट की शक्ति और गौरव का कोई भाषा वर्णन नहीं कर सकती, न किसी की कलम उसका चित्रण कर सकती है। अनंत पिता की महिमा अपने पुत्र को ढंक दिया है। उसकी महिमा का तेज नगर में भर कर फाटक के बाहर निकलता है और सारी पश्थ्वी भी उस तेज से प्रकाशित हो जाती है।

(6) वे कौन हैं जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े विशाल सिंहासन को गिना रहे हैं?

मैं ने उस से कहा; हे स्वामी, तू ही जानता है: उस ने मुझ से कहा; ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकल कर आए हैं; इन्होंने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लोहू में धो कर श्वेत किए हैं।

(प्रकाशित 7:14)

सिंहासन के निकट वही लोग हैं जो बड़े उत्साह के साथ एक समय शैतान का काम करते थे वे परन्तु आग से निकाली हुई लकुटी सरीखे थे जिन्हों ने अपने त्राणकर्त्ता को भक्ति के साथ पीछा किए थे। इनके बाद मसीही हैं जिन्होंने झूठ प्रपचं और नास्तिकताबाद के सिद्धान्त को प्रचार करने वालों के बीच में रह कर मसीही चरित्र का अदर्श रखा। उन्होंने उस समय जब कि मसीही जगत व्यवस्था को व्यर्थ ठहरायी, उसका पालन किया और अपने दश्ढ़ विश्वास के कारण सभी युग में लाखों शहीद बने। इस दल के , बाद ''हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिन, और अपने हाथों में खजूर की जो डालियाँ हैं वे उनकी विजय को संकेत करती है। सफैद वस्त्र यीशु खीस्ट की धार्मिकता का चिन्ह है। उस वस्त्र को वे स्वयं पहने हुए हैं।

(7) छुड़ाए गए हूए लोगों के होंठों से आराधना का कौन सा वाक्यांश गूंजता है ?

और बड़े शब्द से पुकार कर कहती है, कि उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय-कार हो। (प्रकाशित 7:10)

उद्धार किए हुए लोग प्रशंसा का एक गीत गाते हैं जो आकाश में गुंज उठता है, ''उद्धार के लिए हमारे परमश्वेर का जो सिंहासन पर बैठा है और मैम्ना का जय जयकार हो।'' (प्रकाशित वाक्य ७:१०) दूत और सराफ एक साथ स्वर-में-स्वर मिला कर उसकी भक्ति दिखाते हैं। उद्धार किए गए लोग अभी शैतान की शक्ति अनिष्टता को देखकर स्पष्ट रूप से यह समझ जाते हैं कि यीशु खीस्ट को छोड़ कर कोई दूसरा उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता था। इस बात को उन्होंने पहले नहीं समझ सका था। उस चमकती हुई भीड़ में कोई ऐसा नहीं था जिसे यह कहने का साहस था कि मैंने अपनी भुजबल

से या भले होने के गुण या काम से इस उद्धार को पाया है। कोई यह उच्चारण करने का साहस नहीं करता है कि मैने कष्ट भोगा है और मैंने ऐसा था वैसा काम किया है। उनके हर गीत का कोरस (भजन की टेक) है उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जयजयकार हो।''

(8) किस महान घटना के लिए दुष्ट मरे हुओं को जिंदा किया जाता है ?

फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया। (प्रका 20:12-13)

पश्थ्वी के लोगों और स्वर्ग के निवासियों समूह के सामने परमेश्वर के पुत्र का राजाभिषेक होता है। उसे अभी महिमा और शक्ति से अभिषिक्त किया जाता है। राजाओं का राजा अभी अपने राज्य के विरूद्ध विद्रोह करने वाले उस दुष्ट विद्रोही पर दंड की घोषणा करता है और उन लोगों पर न्याय चुकता है जिन्होंने आज्ञा उलंघन की है और अपने लोगों को सताया है। परमेश्वर का नबी कहता है, ''फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसकी जो उस पर बैठा हुआ है देखा, जिसके सामने से पश्थ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिए जगह न मिली। फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे

हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तक खोली गई , और फिर एक पुस्तक खोली गई , अर्थात जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।''

(9) महान निर्णय पर क्या चिज का प्रकटीकरण होगा ?

क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्‌वारा किए हों पा (2 कुरिन्थियों 5:10)

जैसे विवरण की पुस्तक खोली जाती है यीशु खीष्ट की आंख दुष्टों पर पड़ती है, उन्होंने जानबुझ कर पाप किया था। कोई ऐसा पाप नहीं था जिस के विषय में वे यह नहीं जानते थे कि वह अनुचित था। वे यह देख पाते हैं कि किस स्थान से वे पवित्र मार्ग से भटक गए और विपत्तगामी होकर अपने घमंड में चूर हो कर उपद्रव करने लगे और परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने लग गए थे, मानों आग के अक्षरों से लिखे गए अपने हर एक काम को वे अपनी आंखें से स्वंय देख रहे हैं कि उन्होंने स्वयं पाप तो किया लेकिन दूसरों को भी पाप करने के लिए फंसाया आशीर्वाद पाने के साधन को भ्रष्ट किया, परमेश्वर के समाचार वाहकों (प्रचारकों) से घश्णा की, चेतावनी की बातों का ध्यान नहीं दिया, अपने हठ्ठी हृदय से दया की धारा जो उनके पास प्रवाहित होती थी उसे नहीं आने दी, और अपश्चातापी बने रहे।

(10) इन आयतों में बताए गए कौन-से तथ्य न्याय दिवस पर खोए हुए लोगों के दिलों में आतंक मचा देंगे ?

वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग

उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना॥परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। (यशायाह 53:3, 5)

सिंहासन के ऊपर क्रूस दिखाई देता है, चित्रों की लम्बी पंक्ति के समान दश्श्य दिखाई देता है। आदम की परीक्षा में पड़ने और पतन के दश्श्य के बाद किस उद्धार की योजना में एक के बाद दूसरी घटना घटती है उनका दश्श्य दिखाई देता है। त्राणकर्त्ता का एक दरिद्र घर में जन्म होता है, उसका आरम्भिक जीवन में आज्ञाकारी और भोले-भलेपन का दश्श्य, उसका यर्दन नदी में बपतिस्मा लेना, उसके उपवास और जंगल में परीक्षा, उसकी जनसेवा का कार्य, जिसमें यह लोगों को स्वर्ग का बहुमूल्य आशिष प्राप्त करने के रहस्य को बताता है, उसके सेवा कार्य के दिन में प्रेम और दया के काम भरे है, किस तरह वह रात को प्रार्थना करता है और निर्जन स्थान पहाड़ पर ध्यानमग्न होकर एकान्त पसन्द करता है, बैरी षड़यन्त्र रचते हें, घश्णा करते हैं, सारी दुनियाँ के पाप के बोझा से भयंकर रहस्यपूर्ण यातनाएँ गेतसिमानी के बाग में सहता है, हत्यारों के हाथ में किस प्रकार वह फंस जाता है, भयंकर रात्रि की घटनाएँ - यह निर्दोष कैद किया जाता है, उसके अपने प्रिय शिष्यगण के विरह का दुःख, फिर किस प्रकार उसे यरूशलेम के रास्ते से होकर ले जाया जाता है, परमेश्वर के पुत्र को महायाजक हन्ना के राजभवन में अपराधी के समान खड़ा करके जय ध्वनि करते हैं उसके बाद पिलातुस के न्यायालय में ले जाते हैं और फिर डरपोक तथा निर्दयी हेरोद के सामने ठट्ठा और अपमान करते हैं और कष्ट-यातनाए देकर मश्त्यु के दंड का अपराधी ठहराते हैं - इन सभी दश्श्यों का स्पष्ट चित्रण किया जाता है। अभी डांवांडोल भीड़ को अंतिम दश्श्य दिखाया जाता है - धीरज धर करके यीशु

कलवरी की ओर बढ़ता है, यह स्वर्ग का राजकुमार क्रूस पर लटका है, घमंडी याजक, गुंडों को ले कर उसके प्राण निकलने की क्रन्दन ध्वनि को सुनकर ठट्ठा करते हैं, तब घोर अंधकार हो जाता है, पश्थ्वी की गड़गड़हाट भरी आवाज से पत्थर फट जाते हैं, कब्र खुल जाते हैं। इस प्रकार घटनाएँ उद्धारकर्त्ता की मश्त्यु के चिन्ह स्वरूप होती है।भयंकर दश्श्य अपने रूप में दिखाई देता है। शैतान, उसके दूत और उसकी प्रजा के काम का जो चित्रण किया गया है उसे परिवर्तन करने की उनमें शक्ति नहीं हें। इस बड़े नाटक में प्रत्येक अभिनेता ने नाटक का जो अभिनय किया उसे वह स्मरण करता है। हेरोद उस बात को स्मरण करता है कि उसने इस्राएल के राजा को मार डालने के उद्देश्य से निर्दोष बच्चों को मरवा डाला था, : उस दुष्ट नीच हेरोदियास का अपराधी प्राण, युहन्ना बपतिस्मा देने हारे के लोहू पर टिका है। मन का कच्चा, व्यर्थ का समय बिताने वाला पिलातुस, ठट्ठा करने वाले सिपाही, याजक और प्रधान उस अंधी भीड़ जिसने चिल्लाया था, ''उसका लोहू हमारी सन्तान और हम पर पड़े।'' – सब अपने आपको अपराधी देखते हैं। वे अभी उस महिमायुक्त चेहरे से व्यर्थ अपने को भेट करना चाहते हैं। उसके चेहरे में जो चमक हैं वह सूर्य की महिमा से भी तेज है। उसके सामने उद्धार किए हुए लोग अपने मुकुट को निछावर (अर्पण) करते हुए कहते है, ''वह मेरे लिए मरा।''

(11) दुष्टों का अंतिम भाग्य क्या है ?

और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया॥ (प्रकाशित 20:15)

क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्‌वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्‌वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। (गलातियों 6:8)

समस्त पापी दुनियाँ अभी परमेश्वर के

न्यायालय के सामने अपराधी के रूप में चुपचाप खड़ी है। उन पर स्वर्ग के राज्य के विरूद्ध राज्यद्रोह का आरोप है। उनके पक्ष में बोलने वाला कोई नहीं हैं। वे दोषी हैं। इसलिए उन पर अनंन्त मश्त्यु के दंड की घोषणा की जाती है। सभी को अभी यह बात स्पष्ट हो जाता है कि पाप की मजदूरी स्वतन्त्रता और अनन्त जीवन बना नहीं है पर दासत्व, नाश और अनन्त मश्त्यु है। दुष्ट अपने जीवन भर के उपद्रव के कार्य में लगे रहने के कारण क्या खो दिया था उसे आँख के सामने देखते हैं। जब उन्हें बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया गया था उसका उन्होंने लाभ नहीं उठाया। उन्होंने उसे तुच्छ किया, अभी वह उनकी दशष्टि में प्राप्त करने योग्य मालूम होता है। नष्ट होने वाले लोग दुःख भरी आहें भरते है, ''हम सब भी इन्हें प्राप्त कर सकते थे पर हमने इनको अपने से दूर कर दिया, हाय ! हमने किस मोह में पड़ कर ऐसा त्याग किया हमने शान्ति आनन्द, सुख आदर मान के बदले दुर्भाग्य, बदनामी और दुःख भरी आहें भरते हैं, और दुःख एवं निराशा को चुना। ''वे यह समझ जाते हैं कि स्वर्ग से बाहर रहना, अपने ही निज के काम का फल है। उन्होंने अपने जीवन के काम से यह घोषणा की ''हम यह नहीं चाहते है कि यह आदमी (यीशु) हमारे ऊपर शासन करे।''

(12) प्रशंसा के किस गीत को ऊॅचें स्वर में गाया जाएगा ?

और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, कि हे स्र्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य बड़े, और अद्‌भुत हैं, हे युग युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है। (प्रकाशित 15:3)

मुर्छित स्थिति में पड़े हुए दुष्ट लोग परमेश्वर के पुत्र के राज्याभिषेक संस्कार को देखते हैं। वे परमेश्वर की व्यवस्था के दो पटियों को खीष्ट के हाथ में देखते हैं। वे वही व्यवस्थाएॅ हैं जिन्हें उन्होंने तुच्छ समझकर के उल्लंघन किया था। वे उद्धार किए लोगों के आश्चर्य, आनन्द और

भक्ति की सेवा को देखते हैं। नगर के भीतर उद्धार किए गए लोग। मधुर गीत गाते हैं। उनकी ध्वनि शहर के बाहर की भीड़ तक गुंजती हुई पहुँचती है। इस के बाद उद्धार किए हुए लोग एक स्वर से पुकार कर कहते है, ''हे सर्व शक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य बड़े, और अद्भूत हैं, हे युग युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है,'' ''और दंडवत करके जीवन के राजकुमार की उपासना करते हैं।

(13) शैतान के चरित्र का कौन सा गुण अंत में ब्रह्मांड के सामने आएगा ?

जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चालचलन में निर्दोष रहा। परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भर कर पापी हो गया; इसी से मैं ने तुझे अपवित्र जान कर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और हे छाने वाले करूब मैं ने तुझे आग सरीखे चमकने वाले मणियों के बीच से नाश किया है। सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और वैभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी। मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं के साम्हने तुझे रखा कि वे तुझ को देखें। (यहेजकेल 28:15-17)

उपद्रवी ने अपने आपको उचित बताने की सदा कोशिश की है और ईश्वर की शासन-प्रणाली को ही उपद्रव का कारण प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। इसी उद्धेश्य की पूर्ति के लिए उसने तीव्र बुद्धि से सारी शक्ति का प्रयोग किया है। उसने बहुत सोच-विचार कर क्रमानुसार काम किया है और अद्भूत सफलता भी पाई है। बहुत दिनों से चल रहे महान संघर्ष

के विषय में उसका जो अपना मत है उसे सभी को ग्रहण करने की सलाह देता है। हजारों वर्ष से षड़यन्त्र कर्त्ता ने झूठ को सच्चाई कह कर बताया था, पर समय आ पहुँचा है जब कि उपद्रव को पूरी तरह अंत करके शैतान के जीवन चारित्र को स्पष्ट रूप से बताना है। ख्रीस्ट को सिंहासनच्यूत करने (राज गद्दी से उतारने) उसके लोगों को सत्यानाश करने और परमेश्वर के नगर को अपने अधीन कर लेने का प्रयत्न ही उस महाछली का सब भेद खोल देता है। जितनों ने उसका सहयोग दिया सभी उसकी असफलता को देखते हैं। ख्रीस्ट के अनुगामी और उसके विश्वासी भक्त दूतगण परमेश्वर के राज को उलट देने का उसका जो षड़यंत्र था उसे पूरी तरह देख कर समझ जाते हैं। अब वह सारी सशष्टि में घशणित समझा जाता है।

(14) हर रचे जाने वाले जीव की प्रतिक्रिया क्या होगी ?

कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥ (फिलिप्पियों 2:10-11)

शैतान को अभी पता लग जाता है कि उसने जो स्वयं उपद्रव आराम्भ किया था इसी कारण वह स्वर्ग में प्रवेश करने योग्य नहीं ठहरा। उसने परमेश्वर के विरूद्ध लड़ने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग किया था। स्वर्ग में जो मेल, शान्ति और पवित्रता है उसे सोच कर उसके मन में अति पीड़ा है। वह परमेश्वर के न्यायी और दयालु होने के कारण उसे अपराधी ठहराता था पर अब वह समझ गया है और इसलिए चुप्पी साधी है। परमेश्वर की निन्दा करने के लिए उसने भरसक प्रयत्न किया पर अभी वह स्वयं निन्दा का पात्र बन गया है। इसलिए वह अपना सिर झुका कर यह प्रकट करता है कि वह स्वंय दोषी है और उसे जो सजा मिल रही है वह उसका फल पा रहा है।

(15) परमेश्वर की शासन और चरित्र के बारे में क्या सच पूरे ब्रह्मांड के लिए स्पष्ट हो जाएगा ?

बादल और अन्धकार उसके चारों ओर हैं; उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है। (भजन 97:2)

सत्य और असत्य के संबध में जितने प्रश्न बहुत दिन से चल रहे थे, वादविवाद में उठते थे सभी उतर अभी स्पष्ट हो गया, उपद्रव का परिणाम, ईश्वर की व्यवस्था को तुच्छ करने का फल जो परमेश्वर के बैरियों को मिल रहा है उसे सशष्टि किए हुए सभी लोग देख रहे हैं। वे अप. नी आँखों से देखकर अभी समझ गए कि यह सब उसके काम का फल है। परमेश्वर के राज्य-शासन और शैतान के शासन में क्या अंतर है उसे सारी दुनियाँ के सामने स्पष्ट दिखा दिया गया है। शैतान के अपने काम ही ने उसे अपराधी ठहराया है। परमेश्वर का ज्ञान, उसका न्याय और उसकी भलाई के काम सब उचित प्रमाणित किए गए हैं। अभी यह स्पष्ट हो जाता है कि महान संघर्ष में परमेश्वर ने अपने लोगों के अनन्त लाभ और सशष्टि की हुई सब दुनियाँ के हित का ध्यान रखते हुए आचरण किया है। ‘‘हे यहोवा, तेरी सारी सशष्टि तेरा धन्यवाद करेगी और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंग. े।’’ (भजन संहिता १४५:१०) पाप का इतिहास युगानुयुग के लिए लिखा रहेगा। वह यह गवाही देगी कि परमेश्वर की व्यवस्था को पालन करने में ही उसकी सब सशष्टि किए हुए लोगों का सुख और शान्ति है। महां वादविवाद की सब बातों को देख और समझ कर अभी सारी दुनियाँ के भक्त एवं उपद्रवी दोनों एक स्वर से घोषणा करते हैं, ‘‘हे युग युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है।’’

(16) जब उसके चरित्र और सच्चे इरादों का खुलासा हुआ है तो शैतान द्वारा धोखा देने वालों की प्रतिक्रिया क्या ह?

देश देश के लोगों में से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए; तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा। (यहेजकेल 28:19)

यद्यपि शैतान को परमेश्वर के न्याय को ग्रहण करना पड़ा और खीस्ट के प्रभुत्व के सामने सिर झूकाना पड़ा तथापि उसके चरित्र का परिवर्तन नहीं हुआ। उपद्रव की आत्मा झरोखे के समान फिर फूट कर भंयकर रूप धारण कर ली। आवेश में आकार वह (शैतान) इस महान संघर्ष में हार नहीं मानने के लिए मन में दश्ढ़ संकल्प करता है। स्वर्ग के राजा के विरूद्ध अंतिम लड़ाई का समय आ पहुँचा है। शीघ्र ही वह अपनी प्रजा की भीड़ में दौड़ कर प्रवेश करके अपने सामने उनके कोप का शीघ्र होने वाले युद्ध के लिए उतेजित करता है, पर उसके लिए यह दुःख की बात है कि लाखों में से जिन्हें उसने उपद्रव के लिए फंसाया कोई ऐसा नहीं है जो उसके प्रभुत्व को मानने के लिए तैयार है। उसका शक्ति का अंत आ गया है। दुष्ट लोगों के मन में परमेश्वर के प्रति वैसा ही क्रोध और घश्णा की भावना भर जाती है जैसा शैतान के प्रति हो वे तो यह समझ जाते हैं कि उनका उद्धार पाने के लिए मन फिराने का अवसर चूक गया। वे परमेश्वर के विरूद्ध लड़ नहीं सकते हैं इस लिए शैतान और भरमाने वाले शैतान के सहायकों के विरूद्ध उनका कोप भड़क उठता है और वे क्रोधातूर होकर उन पर टूट पड़ते हैं।

(17) परमेश्वर द्वारा शैतान के अंतिम भाग्य का खुलासा करने के लिए क्या वाक्य दिए गए ह?

तेरे अधर्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्र स्थान अपवित्र हो गए; सो मैं ने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से तू भस्म हुआ, और मैं ने तुझे सब देखने वालों के साम्हने भूमि पर भस्म कर

डाला है।देश देश के लोगों में से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए; तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा। (यहेजकेल 28:18, 19)

(18) जिन लोगों के नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं उन पर क्या निर्णय सुनाया जाता ह?

और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया॥ (प्रका 20:15)

''क्योंकि युद्ध में लड़ने वाले सिपाहियों के जुते और लोहू में लथड़े हुए कपड़े सब आग का कौर हो जाएंगे।'' ''यहोवा सब जातियों पर क्रोध कर रहा है, और उनकी सारी सेना पर उसके जलजलाहट भड़की हुई है, उसने उनको सत्या नाश किया, और संहार होने को छोड़ दिया।'' ''वह दुष्टोंपर फन्दे बरसाएगा, आग और गंधक और प्रचंड लूह उनके कटोरों में बांट दी जाएंगी।'' (यशायाह ९:५, ३४:२, भजन संहिता ११:६)

स्वर्ग से आग की वर्षा होती है। पश्थ्वी फट जाती है उसमें जो छिपाए हुए हथियार थे वे दिखने लगते हैं। पश्थ्वी के हर खुले द्वार से भस्म करने वाली आग की ज्वाला निकलती है। यहाँ तक कि चट्टान भी आग से जलती है। वह धधते भट्ठे का सा दीन आता है। तत्व बहुत ही तप्त हो कर पिघल जाएगा, और पश्थ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे। (मलाकी ४:१,२ पतरस ३:१०) पश्थ्वी जल कर एक पिघला हुआ ढेर सा प्रतीत होती है एक उबलती हुई आग की झील सी दिखाई देती है। यह अधर्मी लोगों के न्याय और विनाश का समय है, – ''पल्टा लेने को यहोवा का एक दिन, और सिय्योन का मुकदमा चुकाने के लिए बदला देने का एक वर्ष नियुक्त है।'' (यशायाह ३४:८)

(19) परमेश्वर के फैसले और न्याय के अंतिम वितरण का आधार क्या होगा ?

वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। (रोमियो 2:6)

दुष्टों को इस पश्थ्वी पर फल मिलेगा। (नीतिवचन ११:३१) वे ''अनाज की खूंटी बन जाएंगे, और उस आने वाले दिन में भस्म हो जाएंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।'' (मलाकी ४:१) कुछ लोग क्षण भर में ही नष्ट हो जाऐंगे, दूसरे बहुत दिनों तक कष्ट पाते रहेंगे। सभी को ''उनके काम के अनुसार दंड दिया जाएगा। धार्मियों का पाप शैतान के ऊपर डाल दिया जाएगा। वह न केवल अपने उपद्रव के पाप का, पर उन सबों के पापों का जिन्हें उसने परमेश्वर के लोगों को करवाया था सजा पाएगा। जिन्हें उसने पाप कराने के लिए फंसाया था उसने बहुत अधिक दंड शैतान को मिलेगा। उसके धोखे के जाल में फंस कर जितनों ने पाप किया उनके नष्ट किए जाने के बाद भी जीवित रह वह (शैतान) कष्ट पाता रहेगा।

(20) सफाई की लपटों के थमने के बाद शैतानी और सारी बुराई क्या बची रहेगी ?

तेरे अधर्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्र स्थान अपवित्र हो गए; सो मैं ने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से तू भस्म हुआ, और मैं ने तुझे सब देखने वालों के साम्हने भूमि पर भस्म कर डाला है। (यहेजकेल 28:18)

अंत में दुष्ट लोग साफ करने वाली ज्वाला में भस्म हो जाएंगे उनकी जड़ और डालियाँ दोनों भष्म होंगे शैतान जड़ है और डालियाँ उसके अनुगामियाँ है। व्यवस्था को उल्लंघन करने वालों को दंड दिया गया, न्याय पूरा हुआ। स्वर्ग और पश्थ्वी अपनी आंखों से देखकर यहोवा की धार्मिकता की घोषणा करते हैं।

(21) पवित्र शास्त्र दुष्टों के अंतिम भाग्य का वर्णन कैसे करता ह?

पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएं, और दुष्ट लोग आगे को न रहें! हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह! याह की स्तुति करो! (भजन 104:35)

(22) क्या वादा किया है जो सभी पाप की तबाही का अनुभव किया है खुशी से दावा करेंगे ?

तुम यहोवा के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो? वह तुम्हारा अन्त कर देगा; विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी। (नहूम 1:9)

शैतान के काम का सदा के लिए पूर्ण रूप से अंत हो गया। छह हजार वर्षो तक उसने अपनी इच्छा अनुसार काम किया और पश्थ्वी में विपत्ति और दुःख को भर दिया और दुनियाँ में शोक और पीड़ा फैलाया। सारी सश्ष्टि अब तक मिल कर कहरती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती रही। अब परमेश्वर के प्राणी सदा के लिए उसकी परीक्षाओं से बच गए हैं। ''अब सारी पश्थ्वी को विश्राम मिला है, वह चैन से है, लोग ऊँचे स्वर से गा उठे हैं।'' (यशायाह १४:७) आज्ञाकारी पश्थ्वी से प्रशंसा और विजय की ध्वनि ऊपर गुँज उठती है। '' भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुनाई देता है हल्लेलुयाह, इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्व शक्तिमान राज्य करता है।'' (प्रकाशित वाक्य १९:६)

(23) क्या गुजरता है और नए द्वारा बदल दिया जाता ह?

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। (प्रकाशित 21:1)

पश्थ्वी में जब नष्ट करने वाली आग जल रही थी उस समय धर्मी लोग पवित्र नगर में सुरक्षित थे। जितने पहले पूनरूत्थान में कब्र से उठे थे उन पर दूसरी मश्त्यु का अधिकार नहीं है अर्थात् उनकी दूसरी मश्त्यु नहीं होगी। परमेश्वर दुष्टों के लिए भस्म करने वाली आग है वह अपने लोगों के लिए सूर्य और ढाल है।

(24) क्या पाप की एक भी याद मसीह कभी भी सहन कर पायेगें ?

जब और चेले उस से कहने लगे कि हम ने प्रभु को देखा है: तब उस ने उन से कहा, जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं, और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा॥(यूहन्ना 20:25)

एक ही स्मरण करने वाली बात रह जाती है, वह हमारे उद्धारकर्त्ता के क्रूस का चिन्ह। उसके सिर के घाव का चिन्ह उसके बगल में वेधे जाने का चिन्ह, उसके हाथ और पाँव के कीलों के चिन्ह रहेंगे। ये पाप के कठोर काम के चिन्ह हैं। खीस्ट की महिमा को देखकर नबी कहता है, ‘‘उसके हाथ से किरण निकल रही थी और इनमें उसका सामर्थ छिपा हुआ था।’’ (हबक्कूक ३:४) उसके बागल में जो लाल रंग की धारा बह निकली थी उसी ने मनुष्य को परमेश्वर से मिल. ाप किया – वही त्राणकर्त्ता की महिमा है, उसका सामर्थ छिपा हुआ है। जिस प्रकार उद्धार के लिए बलिदान करके उसने ‘‘ उद्धार करने की शक्ति’’ प्राप्त की है उसी प्रकार वह उनका न्याय करने का सामर्थ रचाता है जिन्होंने परमेश्वर की दया

को तुच्छ किया। नम्रता के जो उसके पास चिन्ह हैं वे उसके लिए बड़ी प्रतिष्ठा की वस्तुएं हैं, युग युग कलवरी के क्रूस का घाव उसकी प्रशंसा और उसकी शक्ति की घोषणा करेगा।

(25) वफादार लोगों के लिए मसीह क्या तैयारी कर रहा है ?

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। (यूहन्ना 14:2)

भविष्य में हमें प्राप्त होने वाले अधिकार को अधिक भौतिक रूप देने के भय से बहुतों ने उस सच्चाई को सत्य नहीं माना जो हमारे ध्यान को उस अनन्त घर की ओर केन्द्रित करता है। खीस्ट ने अपने शिष्यों को यह अश्वासन दिया था कि, ''मैं तुम्हारे लिए पिता के घर में रहने का स्थान तैयार करने जा रहा हूँ।'' जितने परमेश्वर के वचन की शिक्षा को ग्रहण करते हैं वे उस स्वर्गीय अनन्त घर के विषय में आज्ञान नहीं रहेंगे। फिर भी उसे ''आँख ने नहीं देखी, और न कान सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की है।'' (१ कूरिन्थी २:९) धर्मियों को जो प्रतिफल मिलेगा अपनी भाषा में वर्णन नहीं कर सकता। उसे वही अनुभव करेंगे जो उसे देखेंगे। परमेश्वर के परादीश की महिमा को कोई सीमित बुध्दि समझ नहीं सकती।

(26) विरासत की भुमि की तूलना में क्या है ?

जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं। (इब्रानियों 11:14)

जो जय पाए, उस मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊंगा; और वह

फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा। (प्रकाशित 3:12)

उद्धार किए हुए लोग जिसे प्राप्त करेंगे उसे बाइबल एक देश कहती है। (इब्री ११:१४–१६) वहां स्वर्गीय चरवाहा अपनी झुंड को जीवते जल के पास ले जाएगा। जीवन का पेड़ प्रत्येक महिमा अपना फल देता है। उसके पते जातियों की सेवा के लिए हैं। वहाँ सदा प्रवाहित होने वाली धारा है। उसका जल साफ है। उस नदी के दोनों तट पर इधर उधर डोलते हुए पेड़ हैं जो उस रास्ते पर अपनी छाया देते हैं जो प्रभु के उद्धार किए हुए लोगों के लिए तैयार किए गए हैं। वहाँ पर फैली हुई तराइयाँ है जो छोटे पहाड़ों और परमेश्वर के ऊँचे पर्वतों की शौभा को बढ़ाती है। इन शान्तिमय तराइयों पर जो कि जीवते नदियों के दोनों ओर हैं परमेश्वर के लोगों का जो इतने दिन यात्री बन कर इधर उधर भटकते थे घर होगा।

(27) नए यरुसेलम देखने में कैसा होगा?

परमेश्वर की महिमा उस में थी, ओर उस की ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाईं स्वच्छ थी। (प्रकाशित 21:11)

(28) जिस देश में हम निवास करते हैंए वहां का वातावरण कैसा होगा ?

मेरे लोग शान्ति के स्थानों में निश्चिन्त रहेंगे, और विश्राम के स्थानों में सुख से रहेंगे। (यशायाह 32:18)

वहाँ, ‘‘जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मरूभूमि मगन होकर केसर की नाई फुलेग. ी।’’ ‘‘तब भटकटैयों की सन्ती सनोवर उगेंगे, और इस देश से यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह होगा और कभी न मिटेगा। (यशायाह ३५:१, ५५:१३) ‘‘तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और सिंह पाला–पोसा हुआ, बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा।’’ न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा।’’ यहोवा कहता है। (यशायाह ११:६, ६)

(29) छुपी हुई गतिविधियों से नई पृथ्वी में प्रदर्शन करने की खुशी क्या होगी ?

वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे। (यशायाह 65:21)

(30) पाप के अब कौन से 4 सबूत मौजूद नहीं होंगे ?

और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। (प्रकाशित 21:4)

स्वर्ग के परिवेश में पीड़ा नहीं रहेगी। वहाँ न कोई आँसू बहाएगा, न कोई मरे हुए को गाड़ने ले जाएगा और न कोई शौक का तगमा अपने शरीर पर लगाएगा। ‘‘वहाँ मश्त्यु न रहेगी, पहली बातें जाती रहीं। (प्रकाशित वाक्य २१:४) ‘‘कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूँ, और जो लोग उसमें बसेंगे, उनका अधर्म क्षमा किया जाएगा।’’ (यशायाह ३३:२४)

(31) परमेश्वर के नगर में प्रकाश का स्रोत क्या होगा ?

और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा: और वे युगानुयुग राज्य करेंगे॥ (प्रकाशित 22:5)

उस शहर में, ''रात न होगी।'' वहाँ किसी को विश्राम करने की आवश्यकता नहीं होगी, न ही कोई विश्राम करना चाहेगा। वहाँ परमेश्वर की इच्छा पूरी करते करते और उसके नाम प्रशंसा करते कोई नहीं थकेगा। वहां भोर की जैसी स्फूर्ति सदा अनुभव करेंगे। उसके अंत नहीं होग. ी। ''उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोंजन न होगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा।'' (प्रकाशित वाक्य २२:५) वही सूर्य के प्रकाश से भी तेज प्रकाश होगा उससे आँख चौंधिया नहीं जाएंगी। फिर भी इस प्रकाश का तेज दिन के दो पहर के प्रकाश से भी बढ़कर होगा। परमेश्वर और मेम्ने की महिमा से पवित्र नगर प्रकाशित होगा और उसका प्रकाश कभी कम नहीं होगा अनन्त दिन के सूर्य रहित महिमा में उद्धार किए हुए लोग चलेंगे।

(32) किसकी दिव्य उपस्थिति अब सांसारिक मंदिर का पर्दा नहीं उठाएगी ?

और मैं ने उस में कोई मंदिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मंदिर हैं। (प्रकाशित 21:22)

''मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्व शक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना उसका मंदिर है।'' (प्रकाशित वाक्य २१:२२) परमेश्वर के लोग पिता और पुत्र से आमने सामने बातें करेंगे। ''अभी हमें दर्पण में धूंधला सा दिखाई देता है।'' (१ कूरिन्थी १३:१२) हम परमेश्वर के रूप को उसके कामों में और मनुष्यों के साथ व्यवहार करती आइने में प्रतिविम्बित होने जैसा देखते हैं। परन्तु उस समय आमने से देखेंगे, बीच में कोई पर्दा नहीं रहेगा। हम उसके सामने खड़े होकर चेहरे की महिमा को देखते रहेंगे। वहाँ

उद्धार किए हुए जैसे हैं वैसे ही पहचाने जाएंगे। परमेश्वर ने स्वंय मनुष्यों के हृदय में जिस प्रेम और सहानुभूति को दिया है वहाँ उनका अपना रूप दिखाई देगा। वहाँ उद्धार किए लोग - स्वर्ग और पश्थ्वी के एक घराने (इफिसी ३:१५) के समान बड़े सूरत से रहेंगे। पवित्र लोग आपस में बातचीत करेंगे, धन्य दूतों के संग युगों के विश्वासी एक साथ मिल कर सामाजिक जीवन व्यतीत करेंगे। विश्वासी लोग जिन्होंने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लोहू से धोकर श्वेत किए हैं वे मेम्ने के लोहू से एक साथ पवित्र वंधन में बांधे गए हैं। वहाँ अमरणहार मन अनंत सुख के साथ सश्जनात्मक शक्ति के चमत्कार का और उद्धार करने वाले प्रेम के रहस्य का ध्यान करेगा। वहां परमेश्वर को भूल जाने की परीक्षा करने के लिए कठोर धोखा देनेवाला नहीं रहेगी। वहाँ हमारी हर एक ज्ञान इन्द्रियों का विकास होता और योग्यता बढ़ेगी। ज्ञान प्राप्त करने के बाद हम लोगों का मन नहीं थकेगा अथवा न हमारी शक्ति दुर्बल होगी वहाँ लोग बड़े अद्भूत साहसिक कार्य में लगेंगे। वहाँ उच्च्य अभिलाषा और आकाक्षांए प्राप्त होंगे फिर भी नई ऊँचाई प्राप्त करने के लिए हमारे सामने रहेगी, नए चमत्कार जिसकी हम सदा प्रशंसा करेंगे, नई सच्चाई खोज करने के लिए उपस्थित होंगी और लक्ष्य की पूर्ति करने के लिए उपस्थित होंगी और लक्ष्य की पूर्ति करने के लिए हमारे तन, मन और शरीर की शक्तियों की आवश्यकता होगी।

(33) अनंत काल के लिए छुड़ाये जाने से क्या गवाही होगी ?

और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है।

(प्रकाशित 5:12)

परमेश्वर के उद्धार किए हुए लोगों के अध्ययन के लिए आकाश मण्डल का खजाना जाएंगे खोल दिया जाएगा। मश्त्यु से मुक्त होकर वे दूर दूर की दुनियाँ में नहीं थकने वाले पंखों से उड़

उड़कर जाएगें। उन दुनियाँ में जाएंगे जो मानव दूःख को देख कर दुःख से कांप उठी थी, और एक प्राणी के उद्धार का समाचार पाकर अनन्द के गीत की ध्वनि से दूसरी दुनियाँ गुंज उठी थी। अवर्णनीय आनन्द के साथ इस पश्थ्वी के लोग पतित नहीं हुए लोगों के साथ आनन्द और ज्ञान में सम्मिलित होते हैं। परमेश्वर की सशष्टि के काम को ध्यान करते वे युगों की अर्जित समझ और ज्ञान का प्रयोग करते हैं। वे स्पष्ट रूप से सशष्टि की हुई वस्तुओं की महिमा को देख सकते हैं, जिन में सूर्य, तारे और अन्य मंडल जो अपने ध्रूव (घूरी) में परमेश्वर के सिंहासन के चारों और घूमते हैं। छोटे से बड़े सभी वस्तुओं में परमेश्वर का नाम लिखा हुआ है। उन सभी वस्तुओं में उसकी शक्ति की प्रचूरता दिखाई गई है।

(34) महान विवाद के परिणाम को दर्शाते हुए सभी ईश्वर के छुड़ाने वाले होठों से कौन सा गीत प्रवाहित होगा ?
फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे। (प्रकाशित 5:13)

वर्षों के बीतने पर युगानूयुग तक उन वस्तुओं से परमेश्वर और ख्रीष्ट के विषय में महिमायुक्त बातें प्रकट होगी। जैसे – जैसे ज्ञान की वशद्धि होगी वैसे–वैसे प्रेम, श्रद्धा और सुख की भी वशद्धि होगी। जितना अधिक परमेश्वर का ज्ञान मनुष्य को प्राप्त होगा उतना ही अधिक वे उसके चरित्र के गुणों की प्रशंसा करेंगे। जब यीशु उनके सामने उद्धार की बातों को बताएगा और शैतान से जो विवाद (संघर्ष) चल रहा था उससे जो सफलता मिली है उसकी चर्चा करेगा, तब

इसे सुनकर उद्धार किए हुए लोगों का हृदय उस पर अपनी भक्ति दिखाने के लिए रोमांचित हो जाएगा। वे सब बातों को सुनकर आनन्द से विह्वल होकर सोने की अपनी अपनी वीणा लेकर आनन्द प्रकट करेंगे। हजारों हजार और लाखों लाख एक साथ मिल कर प्रशंसा का गीत ऊँचे स्वर से गाते हैं। ''फिर मैंने स्वर्ग में, और पश्थ्वी पर, और पश्थ्वी के नीचे, और समूद्र की सश्जी वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें है यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका और मेम्ने का धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे।''(प्रकाशित वाक्य ५:१३) महान संघर्ष का अंत हो गया। पाप और पापी इस पश्थ्वी पर नहीं रहे। समस्त पश्थ्वी पवित्र (विशुद्ध) हो गई। सारी सश्ष्टि में आनन्द और मेल की एक नाड़ी हो गई जिसमें उनका ही स्फूरण आर्थात् एक ही विचार और भावना हो गई है। जिसने पश्थ्वी को बनाया उसी से जीवन और ज्योंति और आनन्द की धारा प्रवाहित होती है और अंत नहीं होने वाले राज्य में वह बहती रहेगी। छोटी–सी–छोटी और बड़ी–सी–बड़ी दुनियाँ, सभी वस्तुएँ, चेतन और अचेतन अपनी मौलिक सुन्दरता और पवित्र आनन्द से घोषणा करते हैं कि, परमेश्वर प्रेम है।

मैं आभारी हूं किए प्रेम मेंए परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के माध्यम से महान विवाद के जीवन-ज्ञान का खुलासा किया है। मुझे एहसास है कि इस संघर्ष का अंतिम युद्धक्षेत्र मेरा दिल है और विवाद का अंतिम मुद्दा मेरी निष्ठा है ।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

अब मैं समझता हूं कि विवाद कैसे शुरू हुआ, सिद्धांत शामिल थेए यह कब तक जारी रहेगा और यह कैसे समाप्त होगा। मैं आभारी हूं कि मैं अब शैतान

के धोखे से अवगत हूं और उन महत्वपूर्ण निर्णयों को तैयार करने के लिए बेहतर हूं जो मेरे अनंतकाल के लिए भाग्य का निर्धारण करेगा।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मैं अनंत काल का जीवन का इंतजार कर रहा हूं कि परमेश्वर और मसीह के ज्ञान में एक समृद्ध और उसके भी अधिक शानदार रहस्योद्घाटन होगा।

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

मेरी सच्ची प्रार्थना है, प्रिय प्रभु, मैं एक विनम्र भेंट के रूप में अपना जीवन देता हूं। अपनी कृपा से मुझे अपनी स्वरूप में बदलें। कृपया मुझे दूसरों के साथ संदेश देने वाले इन जीवन को साझा करने का विश्वास दिलाएं। मुझे अपने पवित्र नियमों का पालन करने के लिए ज्ञान और अनुग्रह प्रदान करें। मुझे किसी भी कीमत पर इस महत्वपूर्ण दृढ़ विश्वास के प्रति वफादार रहने की ताकत दें। कृपया जल्द ही प्रभु यीशु आइये!

घेरा लगायें: हाँ निर्णय नहीं लियें

परिशिष्ट

विवेक की स्वतंत्रता को धमकाया गया

प्रोटेस्टैन्ट धर्मावलम्बी आज रोमन कैथोलिक धर्मावलम्बियों को पहले की अपेक्षा आधिक मान्यता दे रहे हैं। उन देशों में जहाँ कैथोलिक धर्म का अधिक बोलबाला नहीं है वहाँ पोप के लोग अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये अपना रोब (प्रभाव) डाल रहे हैं। सेशोधित प्रोटेस्टैन्ट कलीसियाओं और पोप के पुरोहितों के बीच में धर्म के सिद्धान्तों सम्बन्धी काफी भिन्नताएँ हैं परन्तु एक मत में लाने के लिये यह कहा जा रहा है कि जैसा जाता रहा है वैसा मुख्य सिद्धान्तों में ज्यादा भिन्न नहीं है। इसलिये जब हम अपनी ओर से थोड़े रियायत कर देंगे तो रोम के साथ अच्छा समझौता होगा। यह उस समय की बात थी जिस वक्त प्रोटेस्टैन्ट लोग विवेक की स्वतन्त्रता पर अधिक महत्व दे कर कहते थे कि विवेक की आजादी बहुत बड़ी कीमत देकर प्राप्त की गयी है। वे अपने बच्चों को सिखाते थे कि पोप के साथ सम्बन्ध रखना, ईश्वर के साथ विश्वासघात करना होगा। परन्तु अभी उनका विचार कितना अधिक बदल गया है।

पोप के पक्ष लेने के लिए लोग यह घोषणा करते हैं कि कलीसिया बिगड़ गयी है और प्रोटैस्टैन्ट जगत के लोग भी इसे स्वीकार करने के लिये सहमत हो रहे हैं। अधिकांश लोगों ने उसके अज्ञानता और अंधकार के युग के राज्य में जो घश्णा किया और झूठा आरोप लगाया उसे आज कहते हैं कि वह अनुचित था। उसके क्रूर सताहट की भयंकरता को उस जमाने का रही (उचित) आचरण समझकर उसे आज का सभ्य समाज अपने विचारों को बदलने की अर्जी करता है।

क्या इन लोगों ने पोप के उस घमंडी शक्ति को जो आठ सौ वर्षों तक यह दावा करता आ रहा था कि पोप गलती नहीं कर सकता है इस उक्ति को भुला दिए ? इतने दिनों तक इस दावे को मुक्त रखा गया था परन्तु उन्नीसवी शताब्दी में इसे पहले से अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। रोमी मंडली कहती है कि पोप ने

कभी गलती नहीं की है और न कभी कर सकती है।

जॉन एल वॉन, धार्मिक इतिहास का लेखक के द्वारा लिखित किताब ३, ११ शताब्दी, भाग २ के मुताबिक पोप कभी गलती नहीं करता है "और न करेगा" इसे रोम की मंडली स्वीकार करती है। अब कैसे वह इस सिद्धान्त को जिसके अनुसार वह बीते युगों तक चलती आ रही थी उसे छोड़ने को तैयार हो रही है ?

पोप की मण्डली अपनी इस दावा को छोड़ने के लिये कभी राजी नहीं होगी कि – "पोप कभी गलती नहीं करता है"। उसके सिद्धान्त को जो लोग नहीं मानते थे, उनको वह दण्ड देने का अधिकार समझती थी और सताती थी उसे क्या वह दुबारा लागू नहीं करेगी। अभी जिस सरकार का अधिकार रोम राज्य पर है यदि वह हठाया जाए तब रोम को अपना पहले का निरंकुश राज्य और सताहट को लागू करने का तुरन्त अवसर मिल जाएगा। विवेक की स्वतन्त्रता देने के संबंध में पोप के पुरोहितों का ऐसा विचार है जिसे एक प्रसिद्ध लेखक ने वर्णन किया है। इसी सिद्धान्त को देखकर अमेरिका को भी पोप के नीति का डर है। बहुत से लोग हैं जो अमेरिका में रोमन कैथोलिक लोगों के सिद्धान्त को मानने में प्रारम्भ से ही डरते आ रहे हैं। अभी वे कह रहे हैं कि अब रोमन कैथोलिक लोगों की शत्रुता हमारी संस्थाओं को बिगाड़ नहीं सकेगी और न बशद्धि में गम्भीर प्रभाव डालेगी। अब चलिए हमारी सरकार के मूलभूत सिद्धान्तों को कैथोलिक मंडली के सिद्धान्तों से तुलना करें।

अमेरिकी सरकार अपनी प्रजा को धर्म मानने की स्वतन्त्रता प्रदान करती है यानी विवेक की स्वतन्त्रता इससे बढ़कर कोई दूसरा सिद्धान्त लोकप्रिय या विशेष महत्व का नहीं है। पोप पियुस ६ वाँ ने अपने प्रेसिन पत्र १५ अगस्त सन् १८५४ ई० में यह कहा कि धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये पोप की गलती दिखाना गलत नीति है और यह देश के लिये खतरनाक है। उसी पोप ने पुनः अपना ८ दिसम्बर, १८६४ ई० के पत्र में लिखा कि जो लोग विवेक की स्वतन्त्रता और धर्म मानने की स्वतन्त्रता पर जोर देते हैं उनको कलीसिया मानने के लिये जोर जुल्म नहीं करेगा। पर अमेरिका के प्रति रोम के इस सहानुभूति के

वचन उसके हृदय को नहीं बदलेगा। जहाँ वह असहाय हो जायगा वहाँ वह सहानुभूति दिखलायेगा। बिशप ओ कोनर कहता है कि धार्मिक सवतनन्त्रता सिर्फ वहीं तक सहन की जायेगी जहां तक कैथोलिक मंडली पर कोई आँच या संकट नहीं आता है। .... सेंट लुईस का आर्च बिशप ने एकबार कहा धर्म सुधार की बातों पर विश्वास करना एक दण्डनीय अपराध है विशेष कर कैथोलिक धर्मावलम्बी धर्म के नियम कानून के समान है जो इसका उल्लंघन करेगा उसे दण्ड दिया जायेगा।

कैथोलिक चर्च के हर डीकन (कर्डिनल) बिशप और प्रधान बिशप पाप के प्रति विश्वस्तता का यह शपथ लेते हैं कि रोमन चर्च के सिद्धान्त को जो नहीं मानेगा या उससे अलग हो कर दूसरे तरह से विश्वास करेगा, जैसा हमारा प्रभु

(पोप) कहता है या उसके पहले के धर्माधिकारी कहते हैं या कहे हैं तो मैं उनका यथा शक्ति विरोध करूँगा और सताऊँगा भी'' (जोसियाह स्ट्रींग अवर कन्ट्री, अध्याय ५, पाराग्राफ २-४) में यह बात लिखी है।

यह सच बात है कि कैथोलिक समाज में भी कुछ अच्छा क्रिश्चियन हैं। हजारों लोग ऐसे हैं जो जैसी ज्योंति मिली है वेसे ईश्वर की आराधना तन-मन से करते हैं। उन्हें पवित्र शास्त्र पढ़ने नहीं दिया जाता इसलिये वे सत्य क्या है उसे अभी तक नही पा सके हैं। उन्होंने कभी भी जीवित हृदय से आराधना करना नहीं सिखा सिर्फ दस्तूरी ढंग से माला फेर कर आराधना करते हैं, वे सेवा करने की तुलनात्मक विधि को नहीं देखा है। ईश्वर उन्हें दयनीय दश्ष्टि से देखकर तरस खाता है, कदाचित सच्ची आराधना को देख सकें। वे धोखेपूर्ण और असन्तोंषजनक विश्वास में पाले गए हैं। जो घने अंधकार से घिरे हैं उनके लिये ईश्वर ऐसी सच्चाई की ज्योंति भेजेगा जिससे वे देख सकेंगे। उनके बीच में उस सत्य को प्रकट करेगा जो यीशु में है और बहुत से लोग यीशु को पहचानेंगे जो अब तक ठीक से नहीं पहचानता हैं।

परन्तु रोमन कैथोलिक धर्म न पहले, न अभी, कभी भी यीशु के सुसमाचार के अनुकूल नहीं रहा है। प्रोटेस्टैंट चर्च के लोग इस चालाकी को समझने के लिये काफी अन्धकार में पड़े हुए हैं। कैथोलिक मंडली अपनी अधिकार जाताने की

दिशा में काफी हद तक चली आयी है। दुनियाँ को अपने अधीन में करने के लिये वह हर उपाय को लागू कर रही है और भयंकर और निश्चित संघर्ष के लिये अपना प्रभाव और शक्ति को बढ़ा रही है। वह सताहट को फिर से आरम्भ करने और प्रोटेस्टैंट लोगों के काम को समाप्त करने के लिये ही यह चेष्टा कर रही है। कैथोलिक धर्म का प्रभाव चारों ओर अब फिर से फैल रहा है। प्रोटेस्टैंट देशों में उनके गिरजेघर और प्रार्थना सभा के भवन बढ़ रहे हैं। अमेरिका में ही देखें कि उनके कॉलेज और सेमीनरियों का कितना बोल बाला है। बश्टेन में ही धर्म की रीति रिवाजों एवं प्रोटेस्टैंट और कैथोलिकों के बीच में बहुधा दर्जा के प्रति संघर्ष को देखें। इन सब घटनाओं को देखकर विचाराशील लोगों के मन में यह जागशति होनी चाहिए कि सुसमाचार का सरल और पवित्र नियम क्या है ?

प्रोटेस्टैंट लोग आज पोप की रीति रिवाजों को मानने के लिये तैयार हो गये हैं। उनके लोगों के साथ रीति रिवाजों को कुछ मानने के लिये, कुछ छोड़ना और लेना भी स्वीकार कर रहे हैं। इसे देख कर कैथोलिक लोग आश्चर्य भी कर रहे हैं। रोमन कैथोलिक धर्म की वास्तविकता को देखने के बदले लोग अपनी आँखों को बन्द किये हुए हैं, फिर इसका होने वाला भयंकर परिणाम को भी नहीं देख पा रहे हैं राज्य और धार्मिक स्वतन्त्रता पर खतरनाक परिणाम लाने वाला इस दुश्मन के आगमन को रोकने के लिये लोगों को जागने की आवश्यका है।

अधिकांश प्रोटेस्टैंट लोगों का मानना है कि कैथोलिक धर्म की आराधना विधि नीरस और अर्थहीन होता है। इसमें सिर्फ रीति-रिवाजों की ही भरमारी है। यहीं वे गलती करते हैं। जबकि इसकी आराधना की विधि धोखे पर आधारित है। यह सूखा और कुरूपता से भरा हुआ नहीं है। रोमन कैथोलिक धर्म की आराधना विधि रीति दस्तूरों से भरा हुआ आकर्षक विधि है। इनकी चमक-दमक रीति-दस्तूरों के दिखावे से आदमी मुग्ध होकर अपनी तर्क-शक्ति खो देता है। आँखें चकाचौंध हो जाती हैं। भब्य-गिरजा घर, तड़क भड़क जुलूस, सुनहैली बेदियाँ और रूपक संस्थाए, सुरूचिपूर्ण रंगे हुए मकान, अत्यधिक सुन्दर गढ़ी हुई मुर्तियाँ आखों को बरबश लुभा डालती हैं। कान भी सुनकर मुग्ध हो जाते हैं।

अतुलनीय संगीत वाद्य या गाना बजाना होता है। मधुर स्वर का धनी बिगुल बाजा जब अपने मधुर स्वर से ऊंचे गिरजे घरों की दीवारों और चौखटों से टकरा कर गुंज उठता है तो किसी को भी श्रद्धा और भक्ति से मन्त्रमुग्ध करने से नहीं चुकता है।

इस प्रकार का बाहरी दिखावटी, गौरव और ऐश्वर्यपूर्ण विधि सिर्फ पापों कै रोगियों के प्रति मजाक बनती है, ये भीतर भ्रष्टाचार को दिखाने वाली होती है। यीशु ख्रीस्त का धर्म तो ऐसे तड़क – भड़क को मान्यता नहीं देता है। क्रूस से जो रोशनी चमकती है उसमें सच्चे मसीह का रूप सरल और पवित्र दिखाई देता है जिसमें ऐसी सजावट की जरूरत नहीं है। ईश्वर की दश्ष्ट में तो पवित्रता की सुन्दरता और आत्मा की नम्रता से बढ़कर दूसरा कोई नहीं है।

उच्चविचार और शुद्धता का प्रतीक चमक–दमक या दिखावटी आचरण नहीं है। विश्वास को प्रदर्शन करने की कला रूचि को बढ़ने का क्षणभंगुर स्वाद जो मन में बैठता है वे प्रायः पार्थिव और बौद्धिक होते हैं। ये प्रायः शैतान के द्वारा लोगों की आध्यात्मिकता को भुलवाने और भविष्य की चिन्ता (धर्म के विषय) से मन को हटाने के लिये प्रयोग किये जाते हैं। इसमें मनुष्य की अमरता पर जोर देकर यीशु की सहायता को इन्कार करना, और सिर्फ इस दुनियाँ के
लिये ही जीना रहता है।

जिसने यीशु मसीह के जीवन की सरलता से अपना हृदय नहीं जोड़ा है उसके लिये यह ढोंगी धर्म आकर्षक लगता ही है। कैथोलिक धर्म की आराधना में जो ऐश्वर्य और दस्तुर हैं ये आकर्षक और सुखदायक जरूर हैं पर बहुत से लोग इससे ठगे जा रहे हैं। वे इन आकर्षक दस्तूरों को देखकर यह समझते हैं कि वे स्वर्ग के फाटक के पास पहुच गए हैं। इसके इस प्रकार प्रभाव से वे ही लोग बच सकेंगे जिन्होने अपने पाँव सच्चाई की नींव पर डाले हैं और अपने हृदय को पवित्रात्मा से जोड़ा है। हजारों लोग ऐसे होंगे जिन्होंने यीशु को जानने की अभिज्ञता प्राप्त नहीं की है वे ईश्वर ज्ञान होने का ढोंग तो रचेंगे पर उनमें शक्ति न होगी। इसी प्रकार का धर्म मानने के लिये बहुत लोग चाहते हैं। रोमी कल. ीसिया पापों को क्षमा करने का दावा करती है जिससे उनके सदस्यों को पाप करने का मनमानी

छुट्टी मिल जाती है। पापों को स्वीकार करने की विधि है। इसके बिना पाप-क्षमा की गारेन्टी नहीं है। अतः उन्हें बुराई करने की इजाजत मिलती है। एक व्यक्ति जो पतित मानव (फादर या पाद्री) के सन्मुख अपने गुप्त पापों (कामों व विचारों) को बताने के लिये घुटना टेकता है तो वह अपने माननीय पापों को जब एक पाद्री (फादर) जो पापपूर्ण, मरणहार प्राणी उसका चरित्र का स्तर भी गिरा हुआ होता है, उसे बताता है तो वह भी बुराई के परिणाम से बंचित नहीं रह सकता है। ईश्वर के लिये उसका ख्याल एक पतित मानव के समान बनता है क्योंकि वह ईश्वर का प्रतिनिधि के रूप में खड़ा होता है। यह नीच पाप स्वीकार जिसको एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से करता है, एक ऐसी समस्या है जो बुराई की बढ़ती समस्या है जो सारे जगत में फेल कर अन्तिम विनाश के लिये तैयार कर रहा है। पर हाँ जो लोग इस ओर लापरवाही की दशष्टि रखते हैं उनके लिये ईश्वर के पास जाकर पापों की क्षमा मांगने से बढ़कर मनुष्यों के पास पाप-स्वीकार करने में ज्यादा खुशी होती है। मनुष्य का स्वभाव में पाप को छोड़ने के बदले कष्ट सहना अधिक पसन्द योग्य होता है। मनुष्य की शारीरिक वासना को क्रुस पर चढ़ाने के बदले अपने शरीर को नाना प्रकार से ताड़ना देना आसान समझते हैं जैसे बोरा (टाट) से ओढ़ना और कष्टदायक जंजीर पहनना। दुष्ट दिल यीशु मसीह का हल्का जुआ ढोने के बदले भरी जुआ ढोना पसन्द करता हैं।

यीशु के प्रथम आगमन के समय रोमी कल. ीसिया और यहूदी धर्म में कुछ प्रमुख बातों में समानताएँ थी। यहूदियों ने जब चुपचाप ईश्वर की व्यवस्थाओं को रौंदा तो दूसरी और बाहरी रीति विधियों को मानने के लिये इतना जोर दिया कि उनको मानने की बोझ से लोग तवाह हो गए। जिस तरह से यहुदी लोग कहते थे कि हम व्यवस्था का आदर करते हैं वैसे ही कैथोलिक लोग क्रूस का जहाँ ये यीशु के दिखाए हुए मार्ग का तिरस्कार करते हैं। पोप और उसके लोग क्रूस को अपने गिरजे घरों में, वेदियों में और अपने वस्त्रों में भी स्थान देते हैं। सब जगह क्रूस के निशान दिखाई देते हैं। सब जगह इसे दिखावटी रूप से आदर और सम्मान देते हैं। परन्तु खीस्त की शिक्षाओं को बेमतलब के

परम्परा रीति विधिओं के पालन, गलत धारणाएँ और कठिन संस्कारों के नीचे छिपा देते हैं। यहूदियों के वारिसदारी के सम्बन्ध में यीशु ने जो वचन कहे हैं वे अब कैथोलिकों पर भी लागू होते हैं ''वे एक ऐसे भारी बोझ को जिनको उठाना कठिन है, बान्ध कर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते हैं।'' (मत्ती २३:४) सचेतन लोगों को हमेशा ईश्वर के विरोध करने के डर में रखा जाता है जब कि चर्चों के बहुत से प्रमुख लोग ऐश आराम का जीवन बिताते हैं।

मूर्त्तियों को पूजने की विधि, सन्तों से प्रार्थना करने और पोप की महिमा गाना तो शैतान के ऐसे उपाय हैं जिससे ईश्वर और यीशु की उपासना करने से भटका देता है। उनके बर्बाद करने की इच्छा से ही शैतान, जिस यीशु की उपासना करने से ही उद्धार मिलता है उस से उनके मनों को भटका देता है। वह उन्हें यीशु जिसने कहा था - ''हे बोझा से दबे और थके मन्दे लोगों मेरे पास आओ, मैं तुझे विश्राम दूँगा।'' (मत्ती ११:२८) की उपासना करने के बदले किसी दूसरे व्यक्ति की उपासना करवाता है जैसे मरियम, पोप आदि।

यह शैतान का ही लगातार प्रयास - है कि वह ईश्वर के चरित्र को पोप के स्वरूप में गलत प्रदर्शन करते हैं। यह कुछ नहीं पर, यीशु के साथ शैतान का महान वाद-विवाद या महान संघर्ष है। उसका झूठा तर्क स्वर्गीय व्यवस्था को मानने से रोक कर पाप में गिरने के लिये मदद करता है। दूसरी ओर वह ईश्वर को एक डरावना पिता के रूप में दिखा कर उसकी व्यवस्था की बातों को प्रेम से मानने के बदले घृणा करवाता है। जो क्रूरता का आचरण उसमें है उसे वह ईश्वर पर मढ़ना चाहता है। इसे धर्म मानने का दस्तुर के रूप में अपनाया जाकर प्रचलित किया गया है। इस तरह से लोगों को अंधा बना कर शैतान ईश्वर के विरूद्ध लड़ने के लिए अपना प्रतिनिधि तैयार कर रहा है। स्वर्गीय शिक्षाओं के बदले हुए दस्तुर और धोखेबाज विश्वास ने मूर्तिपूजक राष्ट्रों को ऐसे भ्रम की ओर अगुवाई की है जिसमें वे मनुष्य की बलि देकर अपने देवताओं को प्रसन्न रखना चाहते हैं। इस तरह विभिन्न मूर्तिपूजकों के बीच भयंकर और अमानवीय हत्याएँ हो रही हैं जिनसे पाप हो

रहा है।। रोमन कैथोलिक मंडली मूर्तिपूजकों और क्रिश्चियन के रीति विधियों को एक में मिला रही है और ईश्वर के चरित्र का गलत प्रदर्शन कर रही है। वह क्रोध करने और ईश्वर का विरोध करने में आगे है। कैथोलिक धर्म के एकाधिकार के जमाने में सताहट लाकर अपने धर्म में लाने या स्थिर रखने की एक युक्ति उसके अधिकार या दावे को स्वीकार नहीं करते थे उनको खूँटे में बाँधकर जलाते थे। सामूहिक हत्याएँ होती थी जिसका पता भी नहीं लगता था जब तक कि न्यायालय से खबर नहीं छपती थी। मंडली के प्रमुख लोग अविश्वासियों को सताने के लिये शैतान के साथ मिल कर नई नई युक्तियाँ खोजते थे जिस में सताये जाने वालों की जान तो नहीं लेते थे पर बहुत कठिन ताड़ना देते थे। बहुत से नारकीय तरीकों के ताड़नाओं में मनुष्य की सहन शक्ति से बाहर दण्ड दिये जाते थे जिससे दण्डित व्यक्ति मर जाना ही अच्छा समझता था।

रोम के दुश्मनों की यह दुःखदायी स्थिति थी। अपने विरोधियों के लिये शासन का कोड़ा, भूखा रखकर कमजोर बनाना, हर तरह के शारीरिक यातनाएँ और दिल को बीमार करने वाले तरीके थे। स्वर्ग का आशिर्वाद पाने के लिये पश्चातापी प्रकशति का नियम भंग कर ईश्वर की व्यवस्था को भी तोड़ते थे। उनको एक नियम के अन्तर्गत सिखाया जाता था जिसमें वह लोगों को आर्शिवाद देता था कि जगत से जल्दी कूच करने में ही उनकी भलाई है। गिरजा घर का आंगन उन हजारों से भरा रहता था जिन्होंने अपने जीवन में व्यर्थ ही स्वभाविक प्रेम को दबाकर ईश्वर का विरोध समझ कर अपने सगे सम्बन्धियों से सहानुभूति नहीं रख सके थे।

यदि हम शैतान की क्रूरता की झलक देखना चाहें जो सैकड़ों वर्ष पहले हिन्दुओं पर नहीं पर मसीहियों के प्रति दुनियाँ के चारों और दिखाई गई थी, तो रोमन कैथोलिक मंडली के हतिहास को देखें। बुराई का राजकुमार ने धोखेबाजी के विशाल तरीकों के जरिये ईश्वर के नाम की निन्दा कराने और मनुष्यों को दुर्दशा में डालने में सफलता पाई थी। जैसे हम देखते हैं कि उसने किस तरह से भेष बदल कर चर्च के नेताओं के द्वारा बाइबल के विरोध में काम करने में सफलता पायी , उसे समझते है। यदि यह किताब पढ़ी जाती है तो लोग ईश्वर के प्रेम और

अनुग्रह को देख सकते थे। तब यह भी देखा जाता कि ईश्वर अपने लोगों पर अधिक बोझा डालना नहीं चाहता है। ईश्वर को तो टूटे और पश्चातापी हृदय, नम्र और आज्ञाकारी मन ही पसन्द है। यीशु ने अपने जीवन में स्त्रियों और पुरूषों के लिये मठों और घरों के अन्दर बन्धे हुए रहने का नमूना नहीं दिया है। उसने यह कभी शिक्षा नहीं दी कि प्रेम और सहानुभूति को दबाए रखें। यीशु का जीवन प्रेम से उमड़ जाता था। जैसे ही एक पापी शुद्ध होने के लिये उसके पास आता तो वह उतना ही अधिक उत्सूकता से मिलना चाहता था और उसके पापों को क्षमा कर सहानुभूति दिखाता था। पोप अपने को ख्रीस्त का सहायक या उत्तराधिकारी मानता है पर उसका आचरण या चरित्र यीशु से कितना भिन्न है ? क्या ख्रीस्त ने कभी किसी को जेल में डाला था या क्या जो उसको स्वर्ग का राजकुमार नहीं मान कर आदर नहीं देते उसे सजा देता था ? क्या उसने उन्हें जो उसे नहीं ग्रहण करते थे मश्त्यु का दण्ड देता था ? जब वह सामरी लोगों के द्वारा तिरस्कार किया गया, तो यूहन्ना के क्रोध से उसे कहा था - प्रभु क्या हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे, परन्तु उसने उन्हें डाँट कर कहा - तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो, क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों को नाश नहीं पर बचाने आया है'' (लूका ९:५४, ५६) यीशु ख्रीस्त का ढोंगी उत्तराधिकारी का चरित्र उससे कितना फर्क है।
कैथोलिक मंडली आज अपने पुराने क्रूरता के इतिहास के प्रति क्षमा मांग कर दुनियाँ के सामने स्वयं को निष्कलंक दिखाता है। उसने यीशु ख्रीस्त का भेष धारण तो किया है पर उसका चरित्र बदला नहीं है। पोप का हरेक सिद्धान्त जो

पहले था वह अभी भी बरकरार है। अंधकार युग में जो सिद्धान्त बनाये गये थे वे आज भी मौजुद हैं। अतः कोई इसमें धोखा न खाएं। वही पोप अभी भी है जिसने धर्म सुधार के समय उसकी गलतियों को दिखाने के लिये अपने प्राणों को न्यौछावार कर सत्य के लिये खड़े होते थे उन्हें सजा दिया करता था। अब प्रोटेस्टैंट लोग उसी का आदर करना चाहते हैं। वह अभी तक उसी घमंड और अंधविश्वास्तता की ढिठाई में बना हुआ है जिसको उसने राजाओं और राजकुमारों पर लादकर अपने को ईश्वर का विशेष

उत्तराधिकारी बनाया था। उसका मन अभी भी वैसा ही क्रूर और निरंकूश है जैसा वह स्वतन्त्रता चाहने वाले ईश्वर के सन्तों को उस समय कुचल डाला था।

पोप का काम ठीक वैसा ही है जैसा अन्तिम दिनों में उसके विषय भविष्यवाणी की गई है (२ थिस्सलुनी २:३-४) अपने उस मतलब को पूरा करने के लिये ही उसने इस तरह का चरित्र अपनाया है परन्तु गिरगिट की तरह विभिन्न प्रकार का रंग बदलकर वह साँप का विष भी अपने मुख में रख लेता है। वह घोषणा करता है कि विश्वास का धोखा नहीं होना चाहिए और न रखने का सन्देह हो। (लेफन्ट भेल्युम १ पश्ष्ठ ५१६) क्या यह शक्ति जिसका इतिहास हजारों वर्षो से सन्तों के खून से लिखा गया है वह आज खीस्त की मंडली में गिनी जायेगी ?

बिना कारण ऐसा दावा नहीं किया गया है कि जिन देशों में प्रोटेस्टैंट रहते हैं उनसे रोमन कैथोलिक चर्च की उपासना में थोड़ा ही अन्तर है। कुछ तो बदलाहट आई है पर पोप के मन नहीं बदले हैं। हाँ, अभी के प्रोटेस्टैंट धर्म और कैथोलिक धर्म में कुछ समानताएँ हैं क्योंकि प्रोटेस्टैंट धर्म, धर्मसुधार के बाद अब तक बहुत बातों में लुढ़क गए हैं।

जैसे प्रोटेस्टैंट चर्च के लोग दुनियाँदारी वस्तुओं की खोज

में है वैसे ही उनके मन भी झूठे प्रेम से भर गए हैं। वे सत्य को नहीं देख सकते। इस कारण सब बुरायों में जो अच्छाई स्वरूप दिखती है उसी पर विश्वास करते हैं। इसका परिणाम अन्त में यह होगा कि सब अच्छाईयों में बुराई पर विश्वास करने लगेंगे। प्रारम्भ में सन्तों को जो विश्वास दिया गया था उसकी रक्षा करने के बदले वे अभी रोम के गलत आचरण के बारे जो आरोप लगाए थे, उसके लिये क्षमा मांगने लगे हैं। एक बड़ा दल जो कभी रोमन कैथोलिक धर्म का पक्ष नहीं लेता था अब उसकी शक्ति और प्रभाव पर थोड़ा संकट आने की सम्भावना को देख रहा है। मध्य युग में जो बौद्धिक और नैतिक अंधकार था उसे बहुत से लोग मानते हैं कि उस समय रोमन धर्म को उसके अन्धविश्वास, अधिकार और सताहट को फैलाने का अवसर मिला। अभी के विस्तश्त ज्ञान महान शिक्षा पद्धति और धर्म सम्बन्धी स्वतन्त्रता की बढ़ती धार्मिक निरंकूशता

और असहिष्णुता की जागशति को माना करते हैं। ऐसा ख्याल होता है कि यदि इस प्रकार की चर्चा इस शिक्षित समाज में चले तो एक मजाक की बात है। यह सच बात है कि इन विकासशील और विकसित देशें में सच्चाई की बड़ी ज्योति, बुद्धि, नैतिकता और धार्मिक ज्योति फैल रही है। ईश्वर के पवित्र वचनों के द्वारा स्वर्ग से ज्योति जगत में उंडेली जा रही है। परन्तु यह बात भी जान लेनी चाहिये कि जितनी बड़ी ज्योंति फैलेगी उससे कहीं बड़ा अंधकार भी उन पर आएगा जो इसे हन्कार करेंगे या बदलेंगे।

प्रार्थना पूर्वक बाइबल का अध्ययन ही प्रोटेस्टैंट के लोगों को पोप के असली चरित्र को दिखायेगा तब वे उसे इन्कार करेंगे। पर बहुत से लोग धोखे में इतना पड़े हुए हैं कि सच्चाई की खोज करने के लिये ईश्वर के पास नहीं आते हैं। जो प्रकाश मिला है उसी पर रहने का घमंड करते हुए, वे बाइबल और ईश्वर की शक्ति से अनजान हैं उनका विवेक को शान्त करने के लिये कोई जरिया होना चाहिये। इसलिये वे कम अध्यात्मिकता वाली किताबों का शरण लेते हैं। उनकी जो चाह है, वह तो ईश्वर को भूलने का तरीका पर वे उसी ईश्वर को स्मरण करने का तरीका बनाते हैं। इन सब बातों की जरूरतों को पूरा करने के लिये पोप के पास बहुत सी सामग्रियाँ हैं, यह दो वर्ग के लोगों के लिये सारे जगत में तैयार किया गया है। एक तो वे हैं जो अपने गुणों से बचाये जायेंगे और दूसरा वे लोग होंगे जो अपने पापों से बचाये जायेंगे यानी पापी होने पर भी बचाये जायेंगे। यहीं पर उसकी शक्ति का रहस्य है।

पोप के काम में सफलता प्रदान करने में अज्ञानता का वह बड़ा अन्धकार का दिन सहायक सिद्ध हुआ। यह भी दिखाया गया है कि बुद्धि का प्रकाश भी इसकी सफलता के लिये कोई कम न होगा। प्राचीन समय में जब परमेश्वर के वचन तथा सत्य का ज्ञान नहीं था उस समय हजारों लोगों की आँखें नहीं खुली कि उनके पैरों में जाल डाला जा रहा है। इस युग में बहुत से लोगों के मन या सोच मनुष्य की काल्पनिक आशाओं की चकाचौंध में डूब गई है इसका प्रभाव विज्ञान है। वे बिना जाने ही इसमें फंसने जा रहे हैं। ईश्वर चाहता है कि बौद्धिक शक्ति का उपयोग मनुष्य सच्चाई और धार्मिकता के

कामों में लगावें, क्योंकि ईश्वर ने इसी मतलब से उसे मनुष्यों को दिया है। मनुष्य इसे प्राप्त कर घमंड और महत्वकांक्षा से भर जाता और परमेश्वर के वचन से अपने सिद्धान्तों को ऊपर उठाता है। इस समय ज्ञान, अज्ञानता से अधिक हानि पहुँचाता है। यही तो झूठे विज्ञान की कारामत है जो बाइबल की वातों पर विश्वास करने से भटकाता है। यह पोप के कामों पर विश्वास करने की तैयारी करता है।। अज्ञानता के अन्धकार युग में जैसा पोप ने अपनी शक्ति बढ़ायी वैसे ही ज्ञान-विज्ञान के युग में भी वह बढ़ायेगा।

यह आन्दोलन अभी अमेरिका में कलीसिया को व्यवहार करके, राज्य को मदद करने के लिए संस्थाएँ स्थापित की जा रही हैं। प्रोटेस्टैंट लोग पोप की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। इतना ही नहीं पर अमेरिका के प्रोटेस्टैंट लोग पोप के लिए एकाधिकार की शक्ति को स्थापित करने का दरवाजा खोल रहे हैं जिसे उसने पुरानी दुनियाँ में खो दिया था। इस आन्दोलन का प्रमुख उद्धेश्य यह होगा कि अन्त में रविवार पालन के लिये जोर जुल्म किया जायेगा। यह रिवाज रोम में पैदा हुआ और यह पोप का अधिकार का चिन्ह है। पोप का उद्धेश्य है, कि दुनियाँ की रीति को पालन करवाना, ईश्वर की आज्ञा से मनुष्यों की रीति रिवाजों को अधिक आदर दिलवाना, प्रोटेस्टैंट मंडली को इसी ओर अगुवाई कर के, रविवार पालन पर विशेष जोर देना, यही उसका लक्ष्य है जिसको पहले से ही वह करता आ रहा है।

यदि पाठकगण शीघ्र होने-वाले महान संघर्ष का दूत इसे समझता, तो वह उन जरियाओं का पता लगाता जिनको रोम ने अपने उद्धेश्य पूर्ण करने के लिये प्राचीन काल में किया था। यदि वह जानता होता कि किस तरह रोम और प्रोटेस्टैंटों की एकता जो उनके अधिकार को नहीं मानते हें, और सब्बत पालन करने वालों के प्रति कड़ा विरोध अपनायेगा तो एकता कायम नहीं करता। राजकीय कानून, महासभाएँ और कलिसिया की विधियों को दुनियाँ की शक्ति से मदद मिलेगी जिसके तहत मंडली में संसार के पर्वो को मान्यता मिलेगी। जन साधारण पर सर्वप्रथम सब से बड़ी जबरदस्ती हुई थी वह था कन्सटीनटाइन का ३२१ ई० का रविवार पालन

की आज्ञा। इस कानून में सिर्फ शहर वालों को रविवार को काम बंद करना था परन्तु गाँव के किसानों को खेती बारी करने की इजाजत थी। यद्यपि सांसारिक रीति थी, राजा नाम मात्र के लिये क्रिश्चियन हुआ था उसी ने रविवार पालन की आज्ञा निकाली थी।

राजकीय आज्ञा को स्वर्गीय आज्ञा पर हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं था। इसलिये बिशप इसेबियुस जो कन्स्टेनटाइन राजा की चापलूस दोस्त था, उसके साथ मिलकर यह आज्ञा निकाली कि ख्रीस्त ने सब्बत को रविवार में बदल दिया है। इस नए सिद्धान्त को प्रमाणित करने के लिये बाइबल से एक भी पदस्थल नहीं दिखाए गए। बिशप इसेबियुस ने अनजाने में ही रविवार सब्बत का झूठा दिन है इसे स्वीकार करता है और इसके बदलने वाले को भर बतलाता है। वह कहता है कि जो कुछ भी सब्बत को करना था, उसको हमने प्रभु के दिन में बदल दिया है (रोबर्ट कोक्स सब्बत नियम और सब्बत ड्यूटि पश्ष्ठा ५३८) रविवार के तर्क वितर्क में कोई कारण नहीं है पर लोगों को प्रभु के सब्बत को कुचलने के लिये साहसी बनाया गया। जो दुनिया में प्रशंसा पा चाहते थे उन्होंने दुनियाँ के लोकप्रिय पर्वो को मानना शुरू किया।

जब पोप का प्रभुत्व जम गया तो रविवार मानने की रीति चल पड़ी। कुछ वर्षो तक लोग गिरजा न जा कर अपने खेती बारी के काम में लगे रहते थे, परन्तु शनिवार को ही सब्बत मानते थे। पर धीरे धीरे इसमें बदलाहट आया। जो मजिस्ट्रेट या वकील कचहरियों में काम करते थे उन्हें रविवार के दिन में न्याय करना बंद किया गया। इसके तुरन्त बाद यह आज्ञा निकाली गई कि आम जनता को भी इस दिन काम नहीं करना होगा और यदि कोई करेगा, और यदि वह नौकर हो तो उन्हें कोड़ा मारा जायेगा। अखिर में यह आज्ञा निकाली गई कि जो धनी हैं और आज्ञा नहीं मानते हैं उन्हें अपनी आधी सम्पती खोना पड़ेगा और इसके बाद भी नहीं मानेंगे तो उन्हें गुलाम बनाया जायेगा। निम्न वर्ग के लोगों को यदि रविवार नहीं मानेंगे तो उन्हें सदा के लिये देश से निकाल दिया जायेगा। कड़ाई से पालन करवाने के लिये यातनाएँ भी लायी जाने लगी। जो किसान रविवार को अपना खेत जोतेगा उसे हल के फाल जो लोहा का होता है उसे

उसके हाथ में दो वर्षे तक बांध कर लटकाए हुए रहना होगा। वह इसे बड़े दर्द और शर्म के साथ ढोये रहता था। (फ्रान्सिसवेस्ट ऐतिहासिक व्यवहारिक प्रथा प्रभु के दिन का प०० १७४)।

अंत में पोप ने पेरिस पाद्रियों (फादरों) को आदेश दिया कि जो कोई रविवार का पालन नहीं करते हैं उन्हें गिरजा जाना और प्रार्थना करना होगा और यदि ऐसा नहीं करेंगे तो ऊपर या अपने पड़ोसियों के ऊपर संकट लायेंगे। इतिहास की एक कौंसिल की रिपोर्ट बतलाती है कि उन दिनों में एक व्यक्ति रविवार को अपना खेत जोत

रहा था उसी समय उस पर बिजली गिरी और वह मर गया तो लोग सोचने लगे कि प्रभु के दिन रविवार को तोड़ने के कारण उसको दण्ड दिया गया। प्रभु का क्रोध उसकी आज्ञा को नहीं मानने के कारण उसको दण्ड दिया गया। प्रभु का क्रोध उसकी आज्ञा को नहीं मानने के कारण उस पर भड़का है। तब से राजाओं, पादरियों सेवकों और सब विश्वासियों को यथा शक्ति इस दिन को पवित्र दिन करने की अर्जी की गई। विशेष कर क्रिश्चियनों को इसे और अधिक सम्मान करने के लिये कहा गया। (थोमस मोरर डिस्क्रोस इन सिक्स डियालोग्स ऑन दॅ नेम नोशन एन्ड ओबजरवेशन ऑफ दॅ लोडर्स डे प०० २७१) जब कौंसिल की आज्ञा कमजोर पड़ी तो राजा की और से आज्ञा निकलवायी गई जिस से लोगों को डर लगने लगा कि रविवार पालन नहीं करेंगे तो सजा मिलेगी। जब रोम में एक कौंसिल (सभा) हुई तो पहले जितने भी निर्णय लिये गये थे उन्हें सख्त पालन करने के लिए कहा गाया। इन्हें धर्म के इतिहास में शामिल कर के राजा की और से सभी क्रिश्चियनों को मानने के लिए कहा गया (हेलीन हिस्ट्री ऑफ दॅ सब्बत प०० टी २ अध्याय २५ भाग ७) रविवार पालन की कोई बाइबलीय आधार न होने के कारण कभी कभी धर्म गुरूओं को बड़े शर्मनाक स्थिति का सामना करना पड़ता था। लोगों ने अपने धर्म गुरूओं के अधिकार पर प्रश्न उठाया कि वे यहोवा की घोषणा को कि, ‘‘सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर के लिए विश्राम दिन है’’ उसे क्यों बदलकर

सूर्य की उपासना के दिन रविवार को पवित्र मानने के लिए ठहराया है ? बाइबल से प्रमाण न दे सकने के कारण इस के बदले उन्होंने दूसरे

किताबों को जल्दी से लाया। रविवार मानने वाला एक वकील १२ वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में इंगलैण्ड की मंडलियों की यात्रा की परन्तु वहाँ के विश्वासियों ने इसका विरोध किया। इस प्रकार वहाँ इस शिक्षा को फैलाने में वह असफल हुआ तो कुछ वर्षो के लिये लौट आना पड़ा। लौटने के बाद उसने पुनः वहाँ जा कर जो कुछ भी थी उसे पूरा किया तब उसे पूर्ण सफलता मिली। उसने अपने साथ एक दस्तावेज या रिपोर्ट भी लेकर आया था जिसमें लिखा हुआ था कि उसे ईश्वर की और से रविवार पालन को बताने के लिए भेजा गया है और इसका विरोधियों को भयंकर सजा भोगने का डर है यह मूल्यवान दस्तावेज संस्था को मदद करने का नकली रूप था। जिसके विषय कहा गया कि स्वर्ग से येरूशलेम के संत शिमोन का गिरजा घर जो गलगथा में है वहाँ गिरा था, वहीं पर उसे पाया गया था। परन्तु जब इस रिपोर्ट को ठीक से जाँच किया गया तो पाया गया कि यह पोप के ऑफिस रोम से ही निकाली गई थी। पोप के पाद्रियों के द्वारा उसकी शक्ति और नियम कानून को फैलाने के लिये झूठऔर छल का प्रयोग मंडली के अन्दर हर युग में चलता रहा।

इस दस्तावेज या रिपोर्ट के अनुसार शनिवार को तीन बजे से लेकर सोमवार सूर्य उगने तक काम बन्द करने का कानून पास हुआ। जो इसको नहीं मानकर अधिक काम करेंगे तो उन पर कोई न कोई रोग, जैसे अर्धांगी का प्रकोप होगा, यह कहा गया। इस में कई आश्चर्य कर्म भी दिखाई दिये। एक व्यक्ति इसका उल्लंघन कर के अपना आंटा चक्की चला रहा था तो अचानक बिजली रहते हुए भी चक्की बन्द हो गई और आंटा के बदले खून गिरने लगा। एक स्त्री रोटी पकाने का ओवन (चुल्हा) में पाव रोटी पका रही थी पर आग के रहते हुए भी रोटी नहीं पकी। एक और औरत के विषय कहा जाता है कि पाव रोटी बनाने के लिये आंटा गुंधकर शनिवार के तीन बजे तैयार की लेकिन सोमवार तक के लिये नहीं पकाने की इरादा से अलग रख दी तो इश्वर की शक्ति से रोटी स्वयं पक गई। एक दूसरा व्यक्ति जिसने शनिवार को तीन बजे पाव रोटी पकाने के मतबल से ओवन में रखा और दूसरे दिन सुबह खोला तो उसमें से खून गिरने लगा। इस तरह की मन गढ़न्त और झूठी कहानियाँ रविवार

पालन के उल्लंघन के सम्बन्ध से दी जाने लगी तथा रविवार को पवित्र कर, के मानने पर जोर दिया जाने लगा। (देखे रोजर को होवेन्डन अनासलस स्कॉटलैंड में भी इंगलैंड की तरह प्राचीन काल के सब्बत के कुछ भाग को लेकर रविवार पालन पर जोर दिया गया। पर पवित्र रखने के समय में भिन्नता थी। स्कॉटलैंड के राजा ने एक नियम की घोषणा की जिसमें शनिवार १२ बजे से लेकर सोमवार सुबह तक पवित्र माने जाने को कहा गया और किसी व्यक्ति को इस अवधि में कोई काम नहीं करना था। (मोरर पश० २६०–२६१)

रविवार को पवित्र दिन मानने के सब प्रयासों के बावजूद भी पोप के लोगों ने मान लिया कि सब्बत तो ईश्वर का ही स्थापित किया हुआ दिन है और दूसरा बदला गया दिन तो मनुष्य का काम है। इस बात को १६ वीं शताब्दी में पोप ने स्वंय कौंसिल में घोषणा की – ''सब क्रिश्चियनों को याद करना चाहिए कि सातवां दिन ईश्वर का पवित्र किया हुआ दिन है जिसे यहुदियों को ईष्वर से मिला और वे तथा दूसरे लोग जो इश्वर की सेवा आराधना करने की इच्छा रखते हैं वे इस को माने हैं। पर हम मसीहियों ने इसे प्रभु का दिन कह कर बदला है।'' (आईविद पश्ष्ठ २८१ - २८२) जो लोग ईश्वर की व्यवस्था के साथ ऐसा खेलवाड़ कर रहे हैं वे अपने बुरे कामों से अनजान नहीं है। वे जानबुझकर अपने को ईश्वर से ऊपर उठा रहे हैं।

वाल्डेनसी लोग जो सब्बत को मानते थे उनके प्रति रोम की सताने की कहानी हृदय को स्पर्श करती है क्योंकि वे रोम की आज्ञा मानने से इन्कार करते थे। चौथी आज्ञा के प्रति विश्वस्त रहने के कारण दूसरे लोग भी इसी तरह से

सताये गये। विशेष कर ईथोपिया और अबीसीनिया की मंडली का इतिहास इस बात को बताते हैं। अंधकार युग की धूमिल रोशनी में मध्य अफ्रीका के क्रिश्चियन, जगत से भूलाये गये थे और वे बहुत वर्षो तक अपने विश्वास में स्थिर रह कर स्वच्छन्दता पूर्वक धर्म मानते थे। जब रोम के पोप को पता चला कि वे अब तक सब्बत मान रहे है तो उसने अबीसीनिया के राजा को बताया कि वह यीशु ख्रीस्त का उत्तराधिकारी है। इसके बाद उसका नियम आने लगा। एक राजकीय नियम लिखकर सुनाया गया

जिसमें सब्बत मानने वालों को कठोर सजा भोगना पड़ेगा (देखें मिकाईल गेडेस चर्च हिस्टरी ऑफ ईथोपिया प॰ ३११-३१२) पोप की निरंकुशता एक दुःखदायी जुआ बन गया जिसे अबीसिनिया वासियों ने तोड़ कर फेंकने का निश्चय किया। वहां बहुत भयानक लड़ाई हुई इस के बाद पोप को वहां से भगना पड़ा और वहाँ के लोगों को अपने पुराने विश्वास के मुताबिक धर्म मानने का अधिकार मिला। मंडली अपनी स्वतन्त्रता पर आनन्द करने लगी। वे पोप की निरंकुशता, धोखेवाजी और उसके पागलपन की शक्ति को कभी भूल न पाये। अपने अकेले राज्य में वे दूसरे क्रिश्चियन जगत के लोगों से अनजाने रह कर सन्तुष्ट थे।

अफ्रीकावासी सब्बत को वैसा ही मानते थे जैसा रोम के पोप के पतित होने के पहले लोग मानते थे। जब वे सातवे दिन को ईश्वर की आज्ञा मानकर पालन करते थे तो रविवार को भी दूसरे मंडलियों से सहमत होने के लिये काम नहीं करते थे। पोप ने एकाधिकार की शक्ति डाली और अपना दिन ठहराये परन्तु अफ्रीका की कलीसिया एक हजार वर्षो तक रोम के पोप के अधीन नहीं हुए। जब कभी भी वे रोम के दबाव में आ जाते थे तो उन्हें रविवार मानने के लिये जबर्दस्ती की जाती थी पर अपने संघर्ष में जीत कर स्वतन्त्र हो जाते थे तो फिर सब्बत मानना शुरू कर देते थे। (अपेन्डीक्स में देखे)

प्राचीन काल के इतिहास बतलाते हैं कि रोम ने किस तरह से सब्बत मानने वालों तथा रक्षा करने वालों को सताया और अपने चलाये हुए दिन को मनवाने की कोशिष की। ईश्वर का वचन दिखाता है कि जब पोप और प्रोटेस्टैंट लोग अन्त के दिन में फिर से मिल जायेंगे तो ये ही बात दुहरायी जायेंगी। यानी रविवार पालन पर जोर डाला जायगा।

प्रकाशितवाक्य १३ अध्याय की भविष्यवाणी की वह शक्ति जो मेमना स्वरूप पशु है जिसके सींग हैं, वही पश्थ्वी के लोगों को पोप की आराधना करवायेगा जिसे चीता के समान जानवर कहा गया है।'' वह पशु जिसका दो

सींग हैं वह भी पश्थ्वी के लोगों को पशु की मूर्ति बना कर उपासना करने के लिए कहेगा और अन्त में धनी या गरीब, छोटे या बड़े, बन्धुए या

स्वतन्त्र सब को पशु की छाप लेने को कहेगा (प्रकाशित वाक्य १३ः११–१६)

यहां दिखाया गया है कि अमेरिका की शक्ति ही मेमना स्वरूप पशु का सींग है। यह भविष्यवाणी उस वक्त पूरी होगी जब यह रविवार पालन के लिये जोर देगा। यह रोम की एकाधिकार शक्ति का विशेष दावा है। पोप को आदर देने में सिर्फ अमेरिका के लोग ही नहीं रहेंगे। जिन देशें में पहले पोप के राज्य का प्रभाव था और उन्होंने उसके प्रभुत्व को स्वीकार भी किया था पर वे नष्ट होने से वच गये थे। भविष्यवाणी बतलाती है कि वहाँ पर उसकी शक्ति का पूर्नजागरण होगा। मैने एक सिर को देखा जो घायल हो कर मर रहा था पर उसका घाव अच्छा हो गया। तब दुनियाँ के सब लोग उस पर ताज्जूब करने लगे। प्राण घातक घाव जो था वह १७६८ ई० में पोप को कैद किया जाना या उसके पतन को बताता है। इसके बाद नबी कहता है कि उसका प्राण घातक घाब अच्छा हो गया और सारी दुनियाँ इसके पीछे उमड़ पड़ी। पौलूस का कहना है कि पाप का पुरूष अपने काम को यीशु के द्वितीय आगमन तक जारी रखेगा (२ थिस्सलुनी २ः३–८) दुनियाँ के ठीक अन्तिम समय में वह धोखा देना शुरू करेगा। प्रकाशितवाक्य का लेखक भी पोप के काम के विषय बतलाता है जो इस पश्थ्वी में रहते हैं और जिनका नाम की पुस्तक में नहीं लिखा हुआ है वे सब पोप की आराधना करेंगे। (प्रकाशित वाक्य १३ः८) सारे देश के लोग पोप के चलाए हुए दिन रविवार को उपासना कर के उसकी बड़ाई करेंगे। उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग से ही अमेरिका में भविष्यवाणी के विद्यार्थी इसकी गवाही दे रहे हैं।

अभी जो घटनाएँ घट रही है उनसे पता लगता है कि यह भविष्यवाणी बहुत जल्दी पूरी हो रही है। प्रोटेस्टैंट शिक्षक लोग भी रविवार पालन पर वही स्वर्गीय दावा पेश करते हैं। जब कि पवित्र शास्त्र से इस दावा का कोई प्रमाण नहीं दे सकते हैं। यह ठीक रोमन कैथोलिकों की तरह ही लोगो को भ्रम में डालने के लिये बेतुकी तर्क देते हैं। उनके विचार में यह है कि जो लोग रविबार को सब्बत नहीं मानते हैं उन पर ईश्वर का न्याय पड़ेगा यानी दण्ड। यह दुहराया जायेगा और रविवार पालन करने के लिए कहा जायेगा।

रविवार पालन का आन्दोलन बहुत जल्दी शुरू होने वाला है।

रोमन कैथोलिक पोप की अजीब धूर्तता और चालाकी देखी जा रही है। वह समझ रहा है कि क्या होने जा रहा है। वह देख रहा है कि प्रोटेस्टैंट मंडली के लोग उसके झूठे सब्बत को ग्रहण कर उसका आदर कर रहे हैं। इस प्रकार से प्राचीन काल में उसने जो एकाधिकार शक्ति का प्रयोग किया था उसे फिर लागू करने में मदद देंगे। जो लोग सत्य के प्रकाश को इन्कार करेंगे वे पोप की उस स्थापित शक्ति जो कभी गलती नहीं करती है, मानने के लिये तैयार होंगे। पोप कितनी जल्दी इस काम को पूरा करने के लिये प्रोटेस्टैंट लोगों की मदद करेगा इसे अनुमान लगाना कठिन नहीं है। पोप के पाद्रियों को छोड़ कर कौन इस से अच्छी तरह समझ सकता है। उन लोगों के प्रति क्या करना है, जो

कलीसिया के नियम का उल्लंघन करते है।

रोमन कैथोलिक मंडली सारी दुनियाँ में अपनी विभिन्न शाखा संस्थाओं के द्वारा पोप की बातों को मानते हुए आराधना की विधि ठहरा कर सब को वेसा ही करने के लिए कहेगा। हर देश में इसकी लाखों शाखाएँ होंगी जहाँ से यह बात कर सकेगा तथा सबको एक में मिला कर पोप के प्रति विश्वस्त बने रहने की आज्ञा देगा। चाहे उनकी जो भी जाति या राष्ट्र के प्रति ईमान्दार बने रहने की शपथ भी क्यों न लिये हों, तौभी यदि वे पोप की बातों को नहीं मानते हों तो वे शत्रु समझे जायेगें।

इतिहास साक्षी है कि पोप अपनी शक्ति को राष्ट्रों के बीच मजबूत बनाकर अपना उद्धेश्य को पूरा करने के लिये बड़ी चालाकी से प्रयास करता है। इसके लिये चाहे राजकुमार या लोग बर्बाद हो जाएँ, उसे परवाह नहीं। १२०४ ई० में पोप इनोसेन्ट ३ रे ने आरागोन का राजा पीटर २रा को यह शपथ दिलाया उसका अंश यह है : ‘‘मैं शपथ लेता हूँ कि अपने प्रभु पोप का सदा विश्वासी बना रहूँगा और उसके उत्तराधिकारियों का तथा चर्च का भी। इसी के आधार पर अपने राजा को सुरक्षित रखूँगा तथा इसके विश्वास की रक्षा के लिये इसके विरोध करने वालों को दण्ड भी दिया करूगाँ। ‘‘(जॉन डौलिंग हिस्ट्री ऑफ रोमानिज्म चप्टर ६, सेक्सन ५५)। रोमन के शत्रुओं के लिए शक्ति के दावा सम्बन्धी यह एक

समझौता था। इसके तहत उसके लिये किसी सम्राट को हटाने, उसे अपने विश्वास प्रजाओं के बीच अधार्मिक शासक ठहराने का भी अधिकार था।'' (मोशिम बी ३, सेन्ट २ पी. टी. २ चेप्टर २ सेक्सन ६ नोट १७) (अपेन्डिक्स भी देखे)

यह स्मरण करना न भूलें कि यह रोम का घमंड है जो कभी नहीं बदलता है। पोप ग्रेगोरी ७ वां और इनोसेन्ट ३रा के सिद्धान्त अभी भी रोमनों के बीच बरकरार है। यदि उसको अधिकार मिल जायेगा तो पहले की भाँति ही उसे लागू करेगा। प्रोटेस्टैंट लोग नहीं जानते हैं कि क्या होगा जब वे रोम की शक्ति को ग्रहण कर रविवार मानने पर जोर डालेंगे। जब वे अपने मतलब को पूरा करने के लिये तूले हुये हैं वैसे ही पोप अपनी पुरानी शक्ति को पाकर उसे पुनः लागु करने की ताक में बैठा है। एक बार अमेरिका में पोप की शक्ति होने दें, तब वह सब राष्ट्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने लगेगा। चर्च के नियमों का पालन राज्य की ओर से होगा अर्थात चर्च और राज्य दोनों मिल कर लोगों के विवेक को दबायेंगे और इस प्रकार देश में रोम की विजय निश्चित रूप से होगी।

ईश्वर के वचन में आनेवाले खतरे की चितौनी दी गई है अतः सावधान हो जाना चाहिए। क्योंकि प्रोटेस्टैंट मण्डली के लोगो को पोप की चालाकी को समझने के लिये बहुत देर हो चुकी होगी तब तक तो वे उसके जाल में फंस चुके होगे। वह चुपचाप अधिकार हासिल कर रहा है। उसके सिद्धान्त पर्लियामेंट में , मण्डलियों में, और लोगों के मन में घुस रहे हैं। वह ऊँचा और मजबूत नींव गुप्त स्थानों में बना रहा है जिससे वह अपनी पुरानी सताहट का काम जारी करेगा। धीरे और अनापेक्षित रूप से अपनी शक्ति को बढ़ा रहा है। जब तक कि सताहट लागू करने का समय नहीं आ जाता। वह एक घात लगाने का स्थान चाह रहा है और प्रोटेस्टैंट लोग इसे देने के लिये तैयार हो रहे हैं। हमलोग जल्दी ही देखने पायेंगे कि रोम के पोप का उद्धेश्य क्या है। जो कोई ईश्वर के वचन पर विश्वास कर के उसके अनुसार चलेगा उसे तो अपमान और सताहट झेलना ही पड़ेगा।

This Language Name in English and the name as known in your language:
_Hindi_____हिंदी_________________

<u>अध्यन मार्गदर्शिका का नामः</u>

महान संघर्ष बाइबिल अध्यन

<u>शिर्षकः</u>

पीडीएफ निशुल्क डाउनलोड करें
निशुल्क बाइबिल अध्यन मार्गदर्शिका

अपने अनंतकाल का भाग्य का निर्णय ले

मोबाइल अनूकुल पीडीएफ

व्याकुलता मे शांती कैसे पाये

<u>दीर्घ शिर्षकः</u>

आत्मिक युद्ध सत्य है और यह आपके उपर है

व्याकुलता का संसार मे आगे क्या हैं?

<u>विवरणः</u>

भ्रष्टाचार से भरी दुनिया में तूफानों के यहाँ तक की शांति पाये ।

भविष्य को जाने ताकि आप तैयार हो सके

<u>व्यवासाय का नामः</u>

रिविलेशन पब्लिकेशन